श्रीगुरुभ्यन्मः

THE HISTORY OF JEYSALMERE.

श्री श्री १०८ श्री हजूर अनवर महारावलजी श्री बैरीसालजी साहब बहादुर जैसलमेरा धीशों के अहदमे यह इतहास

जिसका नाम



सेवक लखमीचन्द जी ने बहुत बरसों की महनत और प्राचीन समय के इतहास व सरकारी कागजात से इकट्ठा करके श्री महता नथमल जी साहब बहादुर मदारुलमुहाम अर्थात प्रधान राज्यजैसलमेर की आज्ञा अनुसार व सहायता से तैयार किया और सम्वत ३८ विक्रमी मे ग्रिन्थ करता की आज्ञा अनुसार

चिरागराजिस्थान व राजपूताना गज़ट यंत्रालय अजमेर मे मोलवी मुहम्मद मुरादअली हाकिम यंत्रालय के प्रबन्धसे छपा

कीमत फी जिल्द ८ — अव्वल दफे ५०० कापी

॥ श्री ॥

श्रीगुरुभ्यनमः

कबित स्तुती

धन्य वल्लभाधीस धन्य विठ्ठल गिरधारी
सातू धन्य स्वरूप-सर्णा भव पार उतारी ॥
धन्य वैष्णवा धर्म धन्य जे जन उर धारी ।०।
कृष्ण नाम द्रढ कियो सबै जंजाल निवारी ॥
पुष्टि प्रकास प्रगटे प्रभु आप कृष्ण श्री अंसको
दासनुदास मैं हूं सही श्रीवलभके वंस को

दोहा

मेरे मन में तुम बसो ऐसी क्युं कहि जाय
याते यह मन आप के लीजे चरन लगाय ॥

दफ़े १ दीवान मुहतानथमलजी के खान्दान का इतहास ॥ व कारवाई का हाल

इतहास

ज़ाहिर हो कि भर्थखंड के दखन गुजरात देस में हलवद मोरवी नामी स्हर में सोम वंसी कोम झाला मकवांणा गोत्र के राजपूतों का पुराना राज ॥१ श्रीजैगोपाल जीने छोटे भाई को देकर आप जैगोपालगढ सहर बसाय राज्य धानी करी इनके कुं- ॥२ धर्म पालजी वो देस ही त्याग कर गढ किरोहर में भाटी राव श्री केहरजी पास आये और गढ नानरा ननवांणा बहोरों से लेकर राज बांधा ॥३ देहरायजी के दीवान ओस्वाल

परमसीने गढविक्रमपुरमें जैन का मन्दर सं० ८९९ सावरा सुदि ५ बनाया ॥ ४ शिवसिंह जी ने बाई केशरकुं- की शादी महारावलजी श्री देवराजसिंघजी से करी ॥ ५ हरराय जी गढ नानण्ण छुटनेसे महारावलजी मौसूफ पास देरावर मे आरहे अवल नम्बर के उमरावो मे राव भए टावर की गांम पटे मिलनेसे कोमटावरी कहलाए ॥ ६ माधोरायजी ॥ ७ रावमालदेजी श्री देवराजसिंघजी के साथ गढ लुद्रवे आए और साथ ही स्वर्ग सिधाए इन के छोटे बेटे अनाडजी के तो टावरी राजपूत है और बड़े ॥ ८ राव हमीरजी को महारावलजी श्री मंधजीने म्हेसरीया साम्लकरके दीवान की पुत्री परनाय दीवान किया जबसे मलाकी कुलदेवी चांधरा को कुलदेवी व गुरु विशा को गुरमानते है म्हेसरीया मे ७२वी थांप टावरी जो ४०० घर यहां व फ्लोधरा पाली व व्रज वगैरे मुल्को मे है सो हाल श्री मधजी के हाल में लिखा है (१) हमीरजी (२) मुरादास (३) राजसी (४) मूलचंद (५) विजैराव ६ सारग (७) आमकर्न (८) दामोदरदास (९) केशवदास जो मूलराजरतनसी के साका मे नवाव उवडयान को मारकर आपही जुभार हुवा (१०) जस्वतसिघ इनके तिलोकसी के साका मे मरे (११) गगाधर (१२) मथुरादास श्री घडसीजी के वक्त मे मारे गए (१३) सुजानसिंघके दो पुत्रमें बडे (१४) बरजंगजी (१५) ठाकुरसी (१६) सघनदासके ४ पुत्र (१७) गगादासके ३ पुत्र बडा घुरका ने महारावल भीमसिंघ के दीवान था राज व न्यात मे बहुत मर्यादा बांधी जबसे ब्रा मुसफा म्हेस्रीया को जीमते है व कथा वाचते है इन्से थाप घुरका हुए (१८) हरदास (१९) हेमराजके छोटे पुत्र तिलोकसी के जस्वत सिंह का जीवराजोत (२०) सुरदासके ३ बेटे के थाप सूरदासोत है (२१) जगदास (२२) वन जी (२३) अर्जुनसिंग जी (२४) फत्ते सिंघके फत्तेसिंगोत व पाचवे बेटे भीमसिंघके भीमसिंघोत हुए (२५) ज्हैकिस्न जी (२६) सरूपसिंघजी (२७) साल्मसिंगजी बडे नामी धामी हुए (२८) लछमन सिंघ जी (२९) सवीतसिंघ जी जो सदरासायर पर है (३०) उमेद सिंग (३१) सुरतान ॥ सुजानसिंग के छोटे ॥ १४ सगजी ॥ १५ ठाकुरदास ॥ १६ वालजी ॥ १७ सदारामके छोटे बेटे का थाप

कुलड्डरिया ॥ १८ देवचंद ॥ १९ पचानजी ॥ २० सूर्जमलके मंझले बेटे वंद्रावन के-
केई घर आगरे में हैं जैशालमेरियां से सगपण नहीं रहा पर गोयंदाणी कहाते हैं ॥
तीसरे भागचन्दके भी गोयंदाणी हैं ॥ २१ गोयंद जी मोजे नेहड़ाई में क्लोचों के कटक-
से वित कुरुाय वाकोमार के आपही काम आये उहां तलाई पर दो वडी साल वचौतरा सं०
१९२९ में नथमलजी ने वनाया दो बेटे थहारूदास व अषेराज के गोयंदाणी हैं ॥ २२ ॥
थहारूदास ॥ २३ धनजी ॥ २४ दामोदरदास ॥ २५ बालकिसन जी ने श्री बालमकुन्दजी की
सेवा पधराई सो विराजे हैं जबसे हर पीडी में वसीकृत करते हे कि श्री ठाकुरजी की सेवा व श्री
हजूर साहबको भी ईश्वर समझकर वंदगी तन मन से करली और सालम चन्द जी ने इतनी वधती
कही कि किसी की बुराई मत करो अगर कोई बुरा करै तो भी उस की भलाई करके शरमिंदह
करना चुनाचे सेवाके धणी ने आजतक तो असेही निभादी है ॥ २६ सरदारमलजी ॥
२७ अजवरामजी के बड़ा सालमचंदजी व छोटा ॥ २८ बिजैचन्दजी ॥ २९ नथमलजी
जो ९ वर्ष की उमर सं: ३ से नोकरी अच्छी देने लगे तो इज्जत व कदर पाते २ सं० १७ में वड़ा
वाप की जगे दीवान होकर सं० १९ में असतेफा दिया फेर १ महीना कैद व डंड हुवा वाद
जनाब कलां साहब बहादुरजी पास वकील गये साहब मदद ह खुश हुए सब हाल किताब व
रपोट में लिष कर सनद खुशनूदी व राजकी सची खैरख्वाही का खरीता व खत लिखा दिया
फेर सं० २१ से दीवान का काम करते करते सं० २७ में छोडा तद पिथ्राजी साहबकी उमर-
दराज़ हो कदरदानी व निरंतर म्हरवानी से दीवान इनकोई परता और ज[illegible] व रजीडंट साहब
से सलाह व सिफारिश करके लैरिख मीर मुनशी को बुलाया जब फेर सं० ४० जेठ सुदी १२
तीसरी दफै दीवान होकर बमूजिब हुकम आका यनामदार सं० ४१ के मिघर वदी १ से म्हसूल
सायर का नये कायदे मूजिब जारी किया कि जबसे खजाने में नगद रुपये आने से दीवान को
कामका बडा ही आराम हो गया फेर मान्न ओहदों के अगले हिसाब का तो चोपानीया बनवा
लिया और आयंदे नया हिसाब हरवक्त तैयार रहने की तजवीज़ बहुत ही सुगम कर दी-फेर

आनदनी आवादी मे तरक्की और रईयत के आसूदगीव सुधारे कीवाव मे सरहातदवीरे कई तो जारीकरी जिनका खुलासा मौके पर लिखाहै व कई लिखरक्खी कि मुनासिववक्त परजारीकीजावैगी ज्युई इस साल प्रभुकी कृपा से मुरादवर आई कि पलीवालजाट-विसनोई चमार वगैरे हजारो घर इलकेगैर से आकर आवाद हुए और वहुत दूर दूर के-लोग आनेको त्यार होये चुनाचे केई तो आकर मिलगये व केई अरजी व कागद मोजूद हैं त्याद० हांजा मे वहुत से नये कुवे ववधा त्यार हुये ॥ व आमदनी मे भी षालसा वा तरक्की भई करजा भी करीव १लाष रुपयेके उतारागया इस की हाजरी जनाव रजीडय साहव कर्नल पोवलट साहव वहादुरजीको मालूम होने पर साहव मौसूफ ने साहव कलां वहादुरजी को रपोट मे अपना फषर ज़ाहर किया कि हम ने नथमलजी को दीवान किया जिससे यह नतीजा भ्वा इसवात से अंदेषस या मुत्सद्दी पोरा व वदख्वाह लोगो की रफ पैदा हुवा तो खाई नखाई शिकायतां व काम मे हरकत करने लगे उनका भी किसी तरह से हतक व हरज नहीं करके फायदाही किया जिससे दीवानी फोजदारीका काम सुस्त चलनेलगा इस का तो वन्दोवस्त जनावसाहवमम्दूह सेमदद लेकर करना चाहा-परन्तु ४ सालतक मुतवातिर कहतसालिया और १॥ वर्ष से तो मात्र कारवाईही अवतर हो गई तो भी वहुतसे निकलगये अगरचे मालयरसात तुंतारू कावगैरे के रुपये करीव १लाष लोगो मे लेनाहै सो जमानां अच्छा आने से वसूल होगे लेकिन विलफेल तो आमदनी घटनेवरखर्चे ज्यादे लगाने वगाय विराहोनै कर्जा करीव ६० हजारके होगया ॥ अमर लाचारी है और कहावत सच है कि नरचीती रीती रहै हरचीती ततकाल । जिगकिये स्वर्ग लोक को वल पूंहोंचे पाताल ॥ मगर कारखाई की तरफ इन्साफकी निगाह से गौर कियाजावे तो वखूवी मालूम होता है कि मुलाज़मान आलव अहदनःकिस ४० पीढ़ि तनखा के सिवाय वधताई व अपगली खर्ची मे कितने रुपये मिले हैं तथा हर एक काम व कारखानो मे और हरएक देहात व कोम व जमीन पडीन वगैरे मे कहा

तक निगाह पहुंचाकर वैसी नीयत से उम्दा २ तदवीरें सोची हैं और षेती बढ़ाने - व रईयत को दू। गैर से वुलाने व सीरवाचां को वुला कर के वां के वास्ते देहात देषाने व विसा पूनमचन्द को भेजकर करसा वुलाने और ऐसे ही वेपार की तरक्की में और बहुत वरसों की गई हुई रियाया पलीवाल साहूकार सुनार वगैरे की आमदरफ़ में सरकारी षाष व आपस के क़रज़े वगैरे तकलीफ़ात मिटाने में वगैरे २ कहां तक कोशिशें की गई मगर श्री वरांग कर महेवां जैसे सब उपाय एक लागसे सेवा व महेसरीयां की आमदरफ़ के काम आधी हासिल न हुई जिस का सबव ऊपर लिखा ही है अब भी श्री ईश्वरनाथ ज़माना अच्छा करें और हाकिमवक़ सिदक़ दिल से काम में मदद देकर लोगों को हुकुम व क़ायदे के पाबन्द और ख़ैर ख्वाही व सुधारे की तरफ़ रजू करें तो उमेद- क़वी है कि रोज़ बरोज़ तरक्की होकर चन्द साल में आबादी दुचन्द व आमदनी- सह चन्द बल्के ज़्यादः और लोगों को आराम व फ़ायदा व हर तरह का सुधारा भी षातर ख्वाह आसानी से हो सक्ता है और नथमलजी के सरीर में बहुत मुदत से बी- मारी के बायस काम को संभाल जैसी कि चाहिये नहीं हो सक्ती और षयाल भी गूंगे को सपना सा होगया है मालूम होता है कि ज़माना अच्छा बंध जावे तो इस्तीफ़े की अर्ज़ करेंगे शुभं ॥ ३० कलेयाणमल को गोदलिया ॥४॥

श्री गुरुभ्यन्मः श्रीरामकृष्णायन्मः

दफ़े २ तवारीष महाराजगान रियासत जेसलमेर ॥ व जुग़राफ़िया मुल्क माड

सेवक लखमीचन्द वल्द षेतसी ने म्हता नथमलजी दीवान राज मोसूफ़ की सहा यता व कबिराज शिवजी दानजी महता रूपजीतसिंहजी परोहित बुधलालजी व्या- स गणेसदासजी म्हता इंदराजजी की सलाह व मदद से बनाई सो सब साहवान पसंद करी सं० १९४५ का वैसाख सुद ३ बार भ्रगु मुताबिक तारीख ३ मई सन १८८९ ई०

यह किताबबाचने व सुनने वालों से बीनती है कि तहरीर वगैरे मे नुक्स हो सो माफ फ़रमावें क्यों कि अव्वल तो मैं कोई इल्म पढ़ा हुआ नही कि १ ज़ुबान मे तहरीर-व क़ायदे से नकसा कर ता दूसरे तवारीखी हाल भी पूरा पूरा हाथ नलगा - कहते है कि सब हाल की ह्यात थी सो जनाब यड साहब बहादुर तर्ज़ुमा करने को लेगये थे उस का खुलासा बदूरूरी ही बहुत तहकीकात करके टाडनामे मे लिखा है परंतु वो किताब-पीछी न आई सुना है कि मेवाड में १ जती पास थी सो बीकानेर में जती पास है वो मांगने की तदबीरें करी मगर पता नलगा लाचार दूसरी किताबों मे मुख़्तलिफ़ हाल देखा व वाकिफ कारों से सुना जिसका सोध कर के थोड़ा २ खुलासा इस मे लिखा है तद्दपि इतना तो बेशक है कि दूसरी किसी १ किताब में नही है॥ और ज़ुग़राफ़िया तो नया ही बनाया है जिस में कुल देस के गाम वढानी मय आबादी व नीवान मंदिर डुंगर नदी दरख्त घास चारे तक वगैरे २ जो इस वक़्त मौजूद है सब लिखा गया है गामों की आमदनी का हाल मालूम नहीं हो सका सो आयंदे के लिये तरकीब ठीक निकाली है सो हो गई तो मालूम हो जावेगा सिवाय इस के बाज़ बातें जैसे मारवाड रपोर्ट मे है

यह किताबवाचने व सुनने वाले जिसबात के ग्राहक हों सूची पत्र देखकर समझले और कार मुख़्त्यार को तो भूत वर्तमान की वाकफी के सिवा राज व लोगों के आराम व फायदे के लिये आयंदे वरतने की जो जो राये इसमे मौके २ पर लिखी है गौर से देखकर वाजिब जानें व हो सके सो करें शुभम्॥

इतने शब्द आदि के सकवरों से लिखे हैं सो वाचने मे ख्याल रहे। इ॰लाका॥ कुं॰वर। प्रो॰हित। प्र गना। सं वत। वा रीख। ठा॰कुर। ख डीन। उ॰र्फ। को॰स कू वा। क़ु॰द। मी॰रा। त लाव या वलाई। वेरीयों। पु॰से। पू॰र्व। अ ग्नि। दक्षिण ने ऋत। प श्चम। वा यव। उ त्तर। ई शान। गा॰व। जमीदार। भो मिया- कई शब्द अंक याने अदद से लिखे है सो तहरीर में हरूफ वांचने चाहिये

दफे २

अथ बंसावली श्रीमद्भागवत अनुसारेण

प्रथम १ श्रीआदि नारायणजी के नाभि कमल से ।।२ ब्रह्मा ।।४ अत्रि ।।५ सोमसे । चंद्रवंस हुआ ।। ६ बुध ।। ७ पुरूरवा। चक्रवर्ती हुआ। तस्य । पुत्र । छः । श्रुतायु ।। सत्यायु । रय । ज्य । विजय ।। ८ आयु ।। पाटबैठा ।।तस्य ।। पुत्र । च्यार ।। रंभ ।। अनेन ।। रज ।। ९ निघूष । पाट ।। १० ययाती ।। तस्य ।। पुत्र ।। च्यारका वंसचला ।। अनुसे । अनवंस ।। द्रुधु ।।से द्रुघवंस।।मलेछ हुवा ।। तुरवंससे ।। तुरवंस ।। ११ यदु । पाटवीथा । परन्तु । पिता । की ।। विप्रीत आज्ञा । नही । मां नर्गोसे । पिताकी । गादी । नहीं । पाई । न्यारा । राज । बांधा ।। यादव । कहींजे ।। यदु के । दोयपुत्र । हुवे ।। शाहस्राजीता राजावांसे । सहस्र । जुध । जीते ।। १२ क्रोष्ट । पाट बेठा ।। १३ व्रजमान ।। १४ स्वाती ।। १५ उस्नक ।। १६ चित्ररथ ।। १७ सशिबंदु ।। १८ प्रथुश्रवा ।। १९ धर्म ।। २० उषा ।। २१ रुचीक ।। २२ ज्यामघ ।। २३ विधर्भ ।। २४ क्रथ ।। २५ कुंत ।। २६ ध्रष्ट ।। २७ निव्रति ।। २८ दरसाह २९ व्योम ।। ३० जीमूत ।। ३१ विक्रति ।। ३२ भीमरथ ।। ३३ नवरथ ।। ३४ दसरथ ३५ सकुन ।। ३६ कारंभ ।। ३७ देवरात ।। ३८ देवक्षत्र ।। ३९ मधु ।। ४० कुरुवंस ।। ४१ अनु ।। ४२ पुरुहन्न ।। ४३ आयु ।। ४४सात्वतके पांच पुत्र हुवे ।। भजमान ।।देवाव्रध ।। महाभोज । का । भोजबंशि ।। व्रषण ।।४५ अंधक । पाट ।। ४६ भजमान ।। ४७ विदुर्थ ।। ४८ सूर ।। ४९ समी ।। ५० प्रतिक्षत्र ।। ५१ स्वयंभोज ।।५२ हृदीक ।। ५३ देवमीढ ।। ५४ सूरसेन ।। ५५ वसुदेव के बडे पुत्र राम यानेबलदेवजी जो श्रीशेष भगवानका अवतार और दूसरे ।। ५६ श्रीकृष्णचंद्र ।। से पिछला हाल मुख्तसिर नीचे लिखा है ।।

श्रीकृष्णचंद्र पूर्णपुर्षोत्तम अवतार का हाल वेद पुराणादि सब शास्त्रों से ज़ाहर है मथुरासे द्वारका पधार राजधानी करी कुनणापुर के राजा

भीष्मक की पुत्री रुक्मणी जो लक्ष्मी को अवतार के स्वयंवर मे मात्र राजाजमा हुवे श्री क्रिष्णचंद भी पधारे तो सत्कार नही होनेसे क्रतकैथ के घरडेराकिया स्वर्ग से इन्द्र ने लवाजमा भेजा वहां ही राज्या भिशेष हुआ जरासीधके सिवाय सवराजावा भेटां दी वाद लवाजमा पीछा भेजा। १ मेघाडंबर छत्र रखलिया कि यह रहेगा जवतक राज वंश रहेगा सोमोजूद है इसी से छत्राला जादम व राजावां मेशिरोमणी है तथाकुलदेवी कालिका को माहणी कहतेहै श्री कृष्ण की साहिता मे जरासिंधसे स्वांगसे आई जबसे स्वांगणहियां व स्वांगीयां कहीजी। २ प्रद्युमन कामदेवको अवतार। ३ अनुरुध। ४ वज्रनाभ को अर्जुनके साथ-भेजा सो मथुरा मे राज वैठे वाकी सवयादवां को लेकर प्रभास गए जहां यादवा-स्थल हुआ। ५ प्रति बाहु। ६ उग्रसेन। ७ सूरसेन। ८ सुखेनके गोद प्रतिवाहुके दतवाहुके वाहुवलकावेटा। ९ नाभवाहु वैठे। १० सुबाहु शिकार को गए सुवर के पीछे पाताल पधारे वहां वाराह भगवानु का दर्शन हुआ जवसे सुवर की तलाक है और नाग कन्या परन्या जवसेसु नागसेणा व नागमरायां का हार देकर कहा कि दूजा विवाह मत कीजे फेर कुंवर रज हुआ वाद दूजा विवाह संभर मे राजा की वेटी सुभागसुदरी से हुवा जवजस लेखा पाताल गई और कुंवरको वरदान दीया जिससे पश्चम-समुद्र तक तुरको से जीत धरतीलीवी फेर देपुत्र हुए १ खीर का चूडा समा सरवइया सोरठ देश गुजरातमे भोमीया जादम है पहिले गिरनार में राज था दूसरे जदभाण का जादव माता अंबाकी कृपा से वे याने डांग[×] बहेडे का राजा हुआ अव करोली हैं। ११ रजकुंवर राणी सुभागसुन्दरी उजेनके राजा वैरसी की पुत्री स्वप्ने मे गजसिंगारीया देखा राजा कही कुंवर गज प्रतापी हुसी॥ खुरासान के वादशाह फरीदशाहसे दो जुधजीते श्री स्वांगीयांजीकी क्रपासे फेर ३ कुंवर हुए भीमजत राणावसेन विक्रसेन। १२ गजवाहु श्री स्वांगीयांजी की आज्ञासे युधिष्टर संवत

[×] अबरस मुकामको डीग कहते है मगरते कि यह वही डांग हो जो इसाके भरथपुरमे है॥ वन्द-मुराद अली होशियार

२०९ में गजनी वसाई गढ वरणाया दोहा ॥ तीन सत्त अतशाक धरम वैशाषे सित तीन । रवि रोहिणी गजवाहु ने गजनी रची नवीन ॥ १ ॥ खुरासान की मदद रूम से फौज आई कुंज सहर में लडाई हुई ३०००० तुर्क ४००० हिन्दु खेत रहे फौजसाही भागी गज की फते हुई जव से पश्चम का पातस्हा कही जे ॥ कंद्रपकेल राजा कश्मीर से जुधजाच्या सोन हुआ कन्यां परन्या फेर श्री स्वांगीयांजी कही तुरकोंका खून वहुत हुआ है सो अव वह वधेंगे तेरे पोते से गजनी छुटेगी । १३ रुज्ज सेन । १४ प्रतिवाहु से गजनी छुटी । १५ सूत्तवाहु । १६ वाहुवल । १७ सुभाय । १८ देवरथ । १९ प्रथीस्हा । २० महीपत । २१ म्रजादपत वहादुरी व दातारी में नाम मशहूर किया ७ लाख सवार थे गजनी भी लीवी थी ॥ जेहल भाट को क्रोड पसाव दीया ॥ मात्र राजा जमा करके जिग किया सगपरण की म्रजाद वांधी पंजाव में हकूमत जमाई थी । २२ सेवात्त सेन । २३ सूरसेन । २४ उदीपसेन । २५ अप्राजित ने गजनी व पंजाव व कावुल में आध यवनां से लिया ॥ अवधास सहर वसाया ॥ मथुरा-लाहोर मुलतान गजनी वगैरे वहुत से मुल्क में राजरहा । २६ कनकसेन । २७ सुमन्न सेन । २८ मघवानजेत ने मथुरा में राजा जमा करके जिग किया और अवधास में श्वावडी व वागात् महलात् वणाया । २९ क्षतसेन । ३० भगवान सेन । ३१ विदुर्य । ३२ विक्रमसेन ने पिंडीरां को निकालकर लाहोर में राजधानी करी मथुरा खालसे रक्खी । ३३ कुमोदसेन के कुं० गजसेन का वेटा । ३४ ह्रजपाल राज वैठे पंजाव में वनपुर गढ वनाया और वंगाले के राजा हरिसिंह से जुधजीता ॥ यवना को हिन्दोस्थान में आने नहीं दिया । ३५ वजीतजी के कुं० ८० में २७ का वंस चला पांचवां कुं० । ३६ मूरतपाल राज वैठे । ३७ रुकमसेन । ३८ कनकसेन । ३९ उग्रसेन गजनी में पाट लाहोर खालसे । ४० प्रेवायतसेन । ४१ प्रतसेन । ४२ रामसेन । ४३ स्हदेव । ४४ देवसवाय । ४५ पांकरदेव । ४६ सूर्यदेव । ४७ प्रतापसेन । ४८ अवनीजत । ४९ भीमसेन से गढ

वनपुर व गजनीं छुटी लाहोर मथुरा अवधास में राज रहा ॥ यवनांसे जुधमे सतलज परकाम आया । ५० चंद्रसैन यवनासे वैर लिया । और पंजाब के राजावो को तावे किया। ५१ जगसवात लाहोर मे पाट । ५२ वैरा । ५३ देवजसके कुं० नही था जगसवात के कुं० कांकलदे का पोता । ५४ मूलराजमथुरामें राज । ५५ रायदेव । ५६ सतुराव के कुं० नहीं था अवधाससे काकलदे के वंसका । ५७ देवनंद लाहोरमे राज । ५८ नगभूप । ५९ वुध । ६० रोहतास । ६१ प्रतसैन । ६२ महोतन । ६३ वासुदेव । ६४ अलभाग । ६५ वीरसेन । ६६ सुभेव मथुरामें पाट । ६७ सुरतसैन । ६८ गुणपयोध लाहोर । ६९ जगमाल के भाई भार्थसैनको मथुरामे धभा सतीरान ने चूक किया औरवयाने के राजाब्रजपाल को मथुरा दी उन्होने ३१ पीडी राज किया । ७० भीमसैन के कुं० असिंह का वेटा । ७१ तेजपाल । ७२ भूपतसैन । ७३ रसान्नप के न्यावें कुं० रत्नसी यवनांसे गजनी लेकर पिताकी आज्ञासे न्याराराज था धारून वे कुं० सालवाहनने सालकोट सहर वसाय रहवास किया । ७४ चंद्रसैन । ७५ मूलमन । ७६ लाल मन । ७७ सारंगदेव । ७८ देवरथ । ७९ जसपत । ८० जगपत । ८१ हसपत ने विक्राम सम्यत २मे हसार गढ वणाय राजधानी करी ॥ तीर्थापर घाट व वाग वणाया । ८२ रेवाकर सं ४६ । ८३ भारमल सं ७१ । ८४ सुमाण स ९५ । ८५ नफर्जन स १२६ । ८६ जुजसैन सं १५२ । ८७ गजसैन सं २९० कुलदेवीकी आज्ञासे कुं० सालवाहन को श्री ज्वालाजी की यात्रा के वहाने भेजकर शालवाहण गढ वनाय राजधानी कराई और हंशार में हकूमत जमाई ॥ पिंडी गजनीमे रहे ॥ सहरसे ५ कोस पर यवनांसे भारी लडाई हुई वादशाह १ लाख आदमियो और गजसैन २० हजार लोक साथ परलोक को सिधास पीछे वादशाह का शाहजादा जलालुदीन वहुत फौज ले कर आया जव गजसैन का भाई सहदेव कई दिन लडे वशाका कर मरे गजनी मे वादशाह का सूवा रहा ॥ शालवाहण सं० २५१ शालवाहणमें राज वैठे-

तस्य पुत्र ११ में बड़ा रिशालु तो फिरता ही रहा बहुत राजावों से जुद्ध करके अमर जीता-
वाज़ २ की कन्या परन्या परं० १ राजा भोज की पुत्री सिवाय सब का त्याग किया कि
जिस का जिस से शक् हुआ उस को उसके हवाले की दोहा: फूलवती हठीयो धस्यो
धारू धस्यो सुनार । सांगादे मत रास्वीयो राजा भोजकुमार । १ इनसे रिशालु ने
बहुत से प्रश्ना किये सब का माकूल जवाब दिया प्रश्नोत्तर छप्पः कोन तूलते तुछ-
मंगन
कोन काजलसे कारो-कोन लोहू ते कठन-कोन सोनासे सारो-कोन बिछू पर डंक-कोन
कलंक सूम सपूत कुवचन काम
महरा ते मातो-कोन रवि पर तेज-कोन अग्नि से तातो-कोन दूध ते ऊजल-कोन जिभ्या
ज्ञान क्रोध जस सज्जन
अमृत भरी अर्थ बतावो इण तिणों सक्कर ते पहिली कवन गरी ॥१॥ दोहा ·
गरज
कहा न अग्नि में जले कहा न सिंधु समाय । कहा न अबला कर सके काल कहा नहीं
धरम मन पुत्र नाम
खाय ॥ कोन पुर्ष जननी बिना कोन मोत बिन काल । कोन सागर पाल बिन कोन
अलप नींद विद्या पवन
फूल बिन डाल ॥२॥ की धीया चोपड़ी की वाल्हो वीरा । की कपासा को वलो-
आव वा कर
की ठंडो नीरा ॥३॥ अलाहाज़ुलकयास बहुत से पुश्नोत्तर होचुके तो कुंवर बोला
नेह
कि चुनड़ी का पल्ला पानी में भिगोय चिराग पर जलावो सो पानी जल जावे चुनड़ी
को दाग न लगे चुनांचि ऐसा ही किया फेर कुंवरराणी ने भी कहा कि आप ही पघड़ी
का पल्ला ऐसे जलावें जब कुंवर ने भी ऐसा कर दिखाया इस की वार्ता बहुत लम्बी मशः
हूर आम है कि चारणां डूम वगैरह सब जानते हैं ॥ दूसरा कुं० वालबंध राज वैठे -
वाकी धमांगद - सीहवछ - कालक - पार्ब - रूप - सुषेण - लेख - जसकर्ण - नेम
- अमाट - नीपक - गंगेव - जोगेव - यह १३ ही दूसरे राजावां का मुल्क लेकर
राजा भये सो पंजाब में पटियाला · कपूरथला - नायगा ※ महेसर वगैरह पहाड़ी
राजा हैं वाईका तो ठिकाना बहाल हैं कई बीत गये और जो हैं पटियाला · कपूरथला ·
वगैरह अगरचे शिष वगैरे मत के वा इस राजपूताने में रिशतेदारी नहीं रही ताहम
जैसलमेर को अपना बुज़ुर्ग जानकर ऐसा ही वरताव रखते हैं और यह रियास्तें-॥

※ अवलहीलफ़्ज़ सरमोर नाहन है पहाड़ी रियासत मशहूर है ॥ बन्दः मुरार अली अफ़ी अनहू

※ १-॥ [illegible]

होशियार ज़माना साज़ बहुत है चुनांचे बादशाहाना दिल्ली व सरकार दौलतमदार अंगरेजी की मदद व हाज़री करने से खिलत खिताब व तगमा व लके मुल्क बहुत सा पाया है ॥ जोगीराज गोरषनाथ व पूर्ण भगत की कृपासे अटक पर भारी महलात व बागात् व क़िला बनाया पिता का बैर लेगज़नी में दखल किया जलालुदीन का सूबा गाज़ीखान १४७०० लोक से और १०००० हिन्दू खेत रहे ॥ कु० वालबंध को गजनी मे बैठाय आप पीछा आय स्वर्ग पधारे जब वालबंध साल वाहण आए कु० भूपत को गजनी में रक्खा जिसके पुत्र चिगता के ७ पुत्र देवसी · भारू · खीमखांन लहार · जुपाउ घारसी बीजल भए चार मुल्क लेने व यवनो की सोहबत से बुखारे के उजबक बादशाह की शहज़ादी से शादी करी उसका लड़का शाह मुहम्मद बुखारे का बादशाह और चिगते के आठ ही बेटों का चिगता कौम मुसल्मान हुआ फेर बीजल के बेटे गोरी ने बलख से ४० कोस गोर शहर बसाय बादशाह हुआ और कोम गोरी कहीजे दिल्ली मे गोरियों ने अव्वल बादशाही करी ॥

। ८९ वालबंध सं० २९१ दिल्ली के राजे जेपाल की पुत्री राजकुं० व संभर के राजा की पुत्री बिलैकुं० च्हुवान वगैरे १२ रानीथी ॥ पुत्र १० बडे नामी भए एक भाटी श्री भाटी जी दूसरे समाजी सिंधदेश मे गढ़ सम्बाहूण बलोमेर बनाया पंडहारों को जीतकर जामपदवी ली कोम समात में मोजे नगरथटे किले कोट मे सं० ९०१ लाखा फुलाणी हिन्दुवा सूर्ज कहीजिया नेक बख्त व दातार ऐसा हुआ कि आज तक सुबह को लाखे फूलाणी की वेला कहे है इनके वंस मे कोम जाड़ेजा का देशकछ व नगर भुज में राज है उन्हों के इतिहास मे दूसरी तरह लिखा है जिसका हाल अलग लिखागया ॥ तीजे मगरीये के ४ बेटों के कोम मगरीये कहीजे ॥ चोथे कलूराव कलूरकोट कराया ८ बेटों के कलर हे ॥ पांचवे जभा जंभला कोट कराया ७ बेटों के जभ ॥ छठे भेसंडेच के भेसंडेच ॥ सातवें लषड के लषड ॥ आठवे जेहू जांवधकोट

कराया जेह हुआ ॥ नव में भूपत का हाल ऊपर लिखा गया ॥ दशवे असूराव का पोता भाट गिरराज के खोले दिया भाटीजी से आदि जेह तक आठों ही के वंस के भाटी कहीजे आगे यादव कहलाते थे ॥×॥ ९० भाटीजी सं० ३३६ लाहोर ७ रानी पड़िहार मंडोर के राजा भीमदे की पुत्री हंशावती व राजे पुनपाल की पुत्री कछवाई व पड़िहार अनड़जांम की पुत्री वगैरे ॥ छोटा कुंवर सिंगराव ने कस्बा सरस्वा उर्फ़ सरसा पंजाब के कांठे आबाद किया ॥ सं० ३४२ में गढ़ भटनेर बनाय राजधानी करी ॥ बघेले राजा वीरभान को मार कर दाहरा जुद्ध जीत कुनराणपुलूरा और १४ प्रवाड़े जीते ॥ कुं० मसूरराव के सारां का सारां जाट हुआ और अभैराज अभौर गढ़ कराया अभौरिये भाटी हैं ॥×॥ ९१ भूपत सं० ३५२ भटनेर रानी राठोड राजा चंद्र की पुत्री गढ़ महोबा - पुवार राजा सूर्ज की पुत्री गढ़ आबू - ॥ कुं० भांभरा सी व अतैराव का अतैराव भाटी है ॥×॥ ९२ भीम सं० ३९५ भटनेर रानी ५ दहिया-राणी राजा मेघ की पुत्री दयापुर पटरा गोड़राजा मांराकदे की पुत्री गढ़ श्रीनगर - चावड़ी राजा लखरासी की पुत्री कछवाई राजा पालरादे की पुत्री नरवर बड़गूजर राजा हरीसिंह की पुत्री ॥×॥ ९३ सतोराव सं० ४१६ भटनेर ४ रानी चहूवांरा राव सियाजी की पुत्री कछवाई राजा आसलदे की पुत्री चावड़ो गोड गेहलोत कं० फूलराव भांगासी ॥ श्री स्वांगीयाजी के वरदान से गजनी जीवी तथा पंजाब में हकूमत जमाई शहर मुलतान वीरान था सो आबाद किया महलात व दो मंदिर - श्री आदिनारायरा जी व श्री नरसिंहजी का तथा लाहोर में भी भारी मंदिर बनाया - भटनेर में ४ बावड़ी व बाग बनाया श्री गंगाजी पर सदावर्त वगैरह बहुत पुन्य किया ॥ ९४ खेमकर्ण सं० ४५४ भटनेर ३ रानी गेहलोत पुवार गढ़ पूगल की मक-वांराी गढ़ विठं‌ऊे की ॥ कुं० मांडरा जूरूड़ ॥×॥ ९५ नरपत सं० ४९२ लाहोर २ रानी सोलखरगी - तुवर दिल्ली की - तुवर ॥ कुं० गजू व बजू दोनों के राज का

तकरार हुआ हजारां मनुष्य मरे जब सब की सलाह से मेघडंवर छत्र तो गजू के और राज कजूके रहे नामी सरदार छत्र के साथ बुखारे गए सुवर मारने से बादशाह नाराज हुए जब अर्ज कराई कि भाटी व पडेहारों के सुवर की तलाक है पूजा के लिये जीता पकड़ा है फिर श्री स्वांगीयांजी की कृपासे सुवर जीता दिखाया तब खुश होकर फोज साथ दी सो कजू से मुल्क लेकर गजनी, लाहोर, अवधास में राज किया और हंसार व भटनेर कजू को दिया। बाद कजू के जो गढ नरवर के कछवाये राजा पाजणादे का दोहता कुं॰ मूलराज व झंडु डांगवहेडे वालों से जुद्ध जीतकर मथुरा मे राज वैठा ॥ ॥ ९६ गजू सं॰ ५२२ लाहोर ७ रानी पडेहार राणासूं केकी पुत्री गढ मंडोर मकवाणी राजा मांघकी पुत्री दइयाणी राजा सूर्जकी पुत्री व ४ दूसरी। लाहोर का राज कुं॰ लोमनराव को देकर आप गजनी वैठे ॥ कुं॰ सात ॥ ९७ लोमनराव सं॰ ५३१ कुंवरानी पुवार राजा वीरसिंह की पुत्री गढ लुद्रवा ॥ कजू का कुं॰ झंडु बुखारे से बादशाह जादी को ले आया जब ईरान, खुरासान, बुखारे से फोजां आई ७ लडाई के बाद गजू गजनी में लोमनराव लाहोर में मूलराज मथुरा मे झंडु हंसार मे जगस्वाय भटनेर मे शाकाकरके काम आये दुतर्फा लाखों आदमी मरे व घायल हुए पांच गढ छूटे। यवनों व यादवों के हरजमाने में बहुतसी लडाइयां हुई और यादव जीतते रहे यवन हिन्दोस्थान का मुह देख न सका इसका हाल किताब शाहनामे वगैरह मे लिखाही है आखिर कई यादव हीज मुल्क के लालच से यवन होगए वाद वो चकतै आने से अव फतेमंद है। फिर ममा मंगरीया लघड। कलर। जंभ वगैरह बहुत मुसल्मीन हुये कई हिन्दु रहे व कई भाटी वेपारी व जाय वगैरे आन जात हुए। लोमनराव का कुं॰ रैणसी मेघडंवर छत्र व आदिनारायण का स्वरूप जो श्री कृष्णचंद्र के सिव्य है लेकर भाग निकला था वह स्वरूप हमारे श्री गढ जैसलमेर टीकमजी के मंदिर में विराजे है* हरराजोतों की वार तक तो हर दसमी को

* हमजर सन १८८६ ई॰ मे जैसलमेर गोगरुभे तब श्रीजी हुजूर महारावल वैरीसाल जी मारवा मंदुवनसे - इस मे पारस्थर बनकी भी न्यारत (दर्शन) की थी ॥ मुहम्मर मुराद जसा हींगम्भर मडी दरान पुनाना धनर प्रनम

रेवाडी यानी पूजन काठाउ दशेरे मूजिब होताथा फेरही मुजरा मालुम वगैरेरीत
थी अवतो सिर्फ़ पात्र मंदिरमेंगावें तथा श्री दरबार साहिवां के प्रोहित निशक केंऊ
पंच शाव्दीया साथ होवेहैं ॥ भाटी का मुल्क गजनी चकतो को-मथुरा वेयानेंके या
दवों को- दूजा देश पंजाब याकों पडेहारों पिडिरों वाराहों झालों वगैरह कोदेकर
फ़ौजां पीछी गई ॥ ॥ ९८ रावरेशासि सं० ५३५ ॥ ९९ भोजसी सं० ५५६
१०० मंगलराव सं० ५७६ विरवें में मुमणावाहणा गढ़ वनाय राज बांधा दो रानी
पडेहार रांणा मूंज की पुत्री गढ़ जूना पुवार राजा सांवत की पुत्री गढ मंडोर ।७ कुं०
हुए यवनों की फौजां आई जब मंगलरावजी कुं० मंडमराव कोले भागे दूजा कुं० सेठ
श्रीधर के घर में छिपे यकमती दास की चुगली से वादशाह तलब किये जब सेठ ने
कुं० खालरसी मूढराज शिवराज कोतो जादों के फूल को नाईयांके केवले को कुंभा
रां के परनाए सो खालरसी का खीलहरी मूढका मूढजाट के वलेका केवला कुम्हार
हुआ ॥ १०१ मंडमराव सं० ६१६ पुवारां की धरती किनारे दरीयाव टूकडे के सं० ६५६
में गढ मरोट वनाय राज वांधा । पुंगल से पुंवारां जांधें से भुटां लुद्रवे से लोद्रा पुवारां
विठंडे से वाराहां वगैरह राजावों टीका भेजा और धार से सोढा हाजर हो कुंवरजी
के विवाह का नारियल दे तावेदार हुए जबसे सोढा अव्वल दर्जे के भाटीयों मूजब
उमराव हैं और हर पीडी में राजा सोढे परणीजरो से खांपलायक बनीरही वर-
ना-यवन होजाते क्यों कि उनको परनातेथे सं० १९०८ मेंरा । राज श्रीकेस
रीसिंहजी साहवां तलाक़ लिखवाई कि अबकोई यवनको परनावे तो दूजा सोढा-
उनको जातिवाहर करै नहीं तो भाटी आदि सोढां से सगपण नरक्खें । तथा जो
पडोसी पुवार वगैरह अदावत रखते मान्न को नेस्त नावूद किये ॥ १०२ सूरसैन-
सं० ६६७ मरोट ७ राणी । चहुवांण राजा सुजान की पुत्री गढ से भरमक वाराणी राव
सिंघल की पुत्री ५ दूजी ॥ १०३ रघुराव सं० ७०२ मरोट ३ रानी । सोलखणी

राजा मांडराकी पुत्री गढ बिरनाल गोयलराव जामकी पुत्री गढखेड-झालीरा-
जा आभडकी पुत्री गढ हलवद ॥ १०४ मूलराज सं० ७१२ मरोर ३ रानी-दईयाणी
राव धारुकी पुत्री द्रोणपुर पुंवारराजा उदैराजकी पुत्री गढ मंडोर तुवरराव शंकर
की पुत्री गढसातलमेर ।कुं० गंगेव घोटड का घोटड हुवा ।मुमराणावाहणा-
व भटनेर पीछा लिया ॥ १०५ राव उदैराव सं० ७३९ मरोर ७ राणी-वोडाणी राणा
केसवदासकी पुत्री गढपाटण सोलखणी राव देपालकी पुत्री गढलोद्रा ५ दूजी-
कुं० सिंगराव का सींगराव है तीजे जालणासी ॥ १०६ मंझमराव स० ७८६ मरोट
दोराणी झाली २ वाघेली राजासमनकी पुत्री गढ थराद की ।कुं० जेगो गलीनीजे मू-
लराजके बेटे लडवे का लडवा चूहलका चूहल चोथे राजपालके बेटे गोगीके खंगार
का खंगार धूकडका धूकड कुलरीये का कुलरीया वगैरह उभेचड मुसलमान हे ।
परन्तु नवरात्रिमें स्थापना वगैरे हिन्दुपणेकी रीत करे हैं ।कुं० केहर व मूलराज ने
सोवतके ५०० घोडे पाडे सो जालोर के देवडे आलणसी की पुत्री परनी जिजवल्या
गमें दिये मूलराजकी पुत्री वाराहराव जसभद्र के कुं० जूते को परनाई ॥१०७ राव-
केहर सं० ८१६ मरोट ४ राणी सोनगिर झाली पुंवार सोलखणी-पाटवी-
कुं० तणुजी हुवा । छठे कुं० आंमके वंशका वारीयां भाटिया जो साहुकार
में लायक है हाल अलहदा लिखा है । दूजे कुं० उतेराव के सोमकासीम औरस्से
से जीये वीखे अजे का उतेराव भाटी है । तीजे कुं० चनहडके केलड भारू भो
जा शिवदास का चनहड ॥ चौथे कुं० खापरीये के दो बेटों का खापरी
या व पहीमके ३ बेटे का पहीम हुआ - कोट किरोहर सं० ८२७ जेष्ठ वदि ५
कराया वाद देवी तिणोटीयों की आज्ञासे बडे कुं० तणु के नामसे कोट
तिणोट बनाय शहर बसाय राजधानी करी व तणोटीयो देवी का मंदिर बना
या सो मौजूद है स० ८८७ प्रतिष्ठापुर कोट बणातां बाराह फौजां लाया सो हार

गया ॥ १०८ राव तराफजी सं० ९६२ तराोट ९५ रांणी सोलखणी राव उ-
दयाइत्त की पुत्री गढ जांधे गेहलोत राव भोगादत्त की पुत्री गढ चीतोड़ १२
दूजी ॥ दीवी बीझासरणीयों की कृपासे कुं० विजैराज हुआ इनको वताय गढ की
आज्ञाकरी सो सं० ९७३ में गढवीझणोट कराया तथा फौज कार चढे सो बि
ठंडे के वाराह बहुतसे मारे बाकी भागे फतह पाय विजैराव पीछे आसे फेर वाराह
लांगाह वगैरह फौजकर आए जय श्रीस्वांगीयों जो चूड़ दीवी जिससे जुद्ध जीते
चूड़ाला विजैराज कहीजे फेर वाराह राव जूले के पुत्र नगई ने साथ हुसेन साह की
भेजी गजनी के बादशाह की फौजां मुल्तान से आई जब देवीपालंब के रूप विजैरा
व के घोडे की किनोती बीच में बैठ जुद्ध जीताया फौजां सारी हार तलाक खाय
पीछी गई जबसे पाटवी घोडे पर पालंब का चिन्ह मंडे है बहुतसे भाटी काम आ
सब भागे तथा आनजाति हुये । कुं० मायड़ के मोल्है व महेपै कामाव.ड़ सूथार
और आलके ४ बेटा देवसी थिरपाल भूराभी देवीदास वीझणोट में सांटांचार
णो से रेहवारी तथा रखेचे के राजपाल का ५ बेटे गजहथ कल्यांरा धनराज
नाठै हेमराज काराखेचा साहूकार और फुला फागा चूड़ा तीनों ही का मह
जन मढे है श्री फुलाफागा चांमक हुआ । कुं० जैतुंग के बेटे रतनसी बचाहड़ ने
कोट बिकमपुर सूनाथा कब्जे किया फेर चाहड़ के बेटे कोल्है गा० कोलासर ब-
गिरराज ने गा० गिरराजसर बसाया जैतुंग कहीजे और प्रतापी हुआ केई गांव
बसाए सो हिनोज है । तराोट में श्री लक्ष्मीनाथजी का मंदिर कराय तराफजी तो
सेवा अखतेयार करी विजैरावराज बैठे ॥ १०९ कुं० विजैराव सं० ९७० । ७ कुंव
रांणी भुटी राव जजे की पुत्री गढ जांधे दईयाणी राजा भोज की पुत्री गढ पार
कर पडेहार राणा जीवण की पुत्री राठोड राजा लाखण की पुत्री वाराह राव
भाराजी की पुत्री गढ विठंडे । ४ कुं० देवराज मांगळराव गाहड घोरड हुआ

चूड के प्रताप १००० तलवार गैब मे चलती थी इरान खुरासान के बादशाह व भालां वाराहां वगैरे से २२ परवाडे जीते भाला पुवारां वगैरे की ज़मीन दबाद ॥ गढ तरोट मरोट फिरोज़पुर भटनेर मुंमराबाहण बीझरगोट मे राज रहा पुवारां भालां वाराहां वगैरह ने सलाह कर भंवर देवराज को नालेर भेजा जान विठडे गई वहां चूक हुआ १३ सो लोक से बिजैराव काम आये श्री स्वांगीयां जी के हुकम से देवराज को राई का नेग ले भागा सो खेत में प्रोहित देवायत को सोंप गया सो ने दान करन लगा पीछे से बाहर आई पागी बोला यहां से सांढ इकलास हुई बाहरू वां पूछा चोर यहां रहा देवायत कही ५ वेटे रूठा मैं हूं वहारू बोले भेले जीमो जब दो देनने वेटे देवायत का वेटा रतनु देवराज भेला जीम्या जिससे रतनु न्यारा हुए सो पोलपातपाटवा है और दूसरे वेटा का प्रोहित आज तक जीइज्जत वसु साहिब हूर और दो पर रहते हैं । वाराहां पुवारां भालां वगैरे की फौजां तरोट आई तराक जी साको कर काम आए रूद्र गढ़ छुटे सं० ८९८ मे ॥ तथा राई के नेग के करने से देवराज की माता श्री आदिनारायण का स्वरूप व मे घाडंबर छत्र लेकर पीहर गढ जा धेगई देवराज भी वहां आकर १० वर्ष छिपे रहे फेर देवायत विठडि गया देवराज की सासू रवा से मिला और वाराहां से वचन रावलजोगी रतन्नाथ सिद्ध की मारफत ले देवराज को वहां ले गया जोगीराज तो कश्मीर गये थे फरकं-था व रसकुंपा की झोली रवा की मेडी मे थी जहां देवराज सोता था ५ मही ने वहां हु रद्द बना कही जेजव झोली चुराके मेडी को आग लगाय जा धेन्चले आये पीछे से जोगीराज विठडे आये वाराहां व रवा कही झोली जल गई सिद्ध बोले नसीब मे थी उसको मिली । देवराज जो उपवास कर कुलदेवी आराधी जब प्रषण हो राज तेज वढने का वर्दान व शत्रुजीतने के लिये खड्ग दिया उससे ५२ प्रवाडे जीते पीछे हीहर पीढी में फ़तह पाई नाचे घडसी जी से दिल्ली मे इस खडग के प्रताप बादशाह

राज विराजे दोहा सिद्ध बचनवर पायके सिद्ध भए देवराज । रतन्नाथ हथ तिलक किय कह्यो भूपति शिरताज ॥ १ ॥ जबसे आजतक राजअभिषेक में अव्वल भेष जोगी का मुद्रावो चोला आसा खड़ाउ वगैरह धारे सो तो आयसजी आस के मठको दें फेर दानपुन्य करके राजा परो की पोसाक पधराय श्री आदि नारायणाय ने-श्री लक्ष्मी नाथजी व श्री स्वांगीयां जी का दर्शन करके आम दरबार में तख्त बिराजे जब खूंनका तिलक भाटी करे बाद कुंमकुमका तिलक पार पुरोहित करे और तोपों की सलामी व भेर धाव व नजर नोछावर हुवे हे तथा दूसरी निशानी जोगी की मौजूद हे कि गढ में कोठा २ अन्नपूर्णा के नीचे रतन्नाथका थान और तंबू किनातव घोडे कैटपुर व हरकारे की छडी दुरंगी का फूंदा भगवा और दो ठकाणा १ आयस का मठ श्री दरबार साहिब के गुरु २ दरीया नाथ की बावडी वाले राजवीयों के गुरु हें पार उत्सव में व गमी के कार्य्य में नाथों का सत्कार सब से पहिले होता हे । देवराजजी बडे ही प्रतापी हुए नवकोट पुवारों के लिये जब से नवगढ नरेस कहीजते हें फेरतो और ही बहुत से गढ व प्र० लीये तथा जहीद किये सो नीचे लिखे हें ॥ नगोट के सेठ जस कर्णधार के राजा के गुरूर पर जवाब दिया कि मेरे मालिक देवराज पास स्वेत हाथी वगैरह बहुत ठाठ हे राजा ने सेठका घर जब्त किया और गलेकी हडी में वाली डालके कहा कि हाथी लायां छूटेगा सेठ ने आकर सब हाल कहा सुनते ही देवराज ने प्रतज्ञा ली कि धार लूटके पानी पीऊंगा फोजें फोजकर चढे १२५ कोस पहुंचे जब हमराहियों की अर्ज से आटे की धार बनाय उस में सेली के वगैरे १४० पुवारों को मार जल पिया वहां धारवी नाम से गांम आबाद किया सो मौजूद हे फेर वहां जाकर लडाई जीत धार लूटी पुवार अज भान को साथ लाये । लुद्रवे के राजा जस भांन का प्रधान पुरोहित विमला की सलाह से शादी के बहाने १२ सो ज्वानों की दरवाजे एक सो शहर लुद्रपुर पटण में दाखिल हो लुद्रों को मार के राजधानी मुकर्रर करी और विमले को

किलेदारी व गंगाजल की नोकरी और ब्रह्म भोज मे दक्षिणा कड दोरा बंध परदेश पैठों को भी देनेका तांबा पत्र कर दिया सो आजतक है बिमले की औलाद कोम आचार्ज पुष्करणा ब्राह्मण है फेर महारावल सवलसिंहजी गाम मोकला तशांसन दिया ॥ गढजालोर सोनगिरो को देरावर भांनेज दईयो को मंडोर पडेहारो को दिया नवकोटी मारवाड मे आंण फेरी दूजा गढ लुद्रवा पूगल सातलमेर किरोहर भटनेर, बीकूंपोर खुमणावाहण मरोट किराडु पारकर राडूडी भखर वगैरे खालसे रखवे थे ॥ **कुण्ड्या** ॥ देवराज थपे दुरंग लुद्रवां आप घरलाय संमबा हणत्रय सिंधजूनो पारकर जमाए भड जालोर हु भजे मारे नृप मंडोर गढ अजमेर हु गंजे पूगल गढ लीधो प्रधर कतल बिठंडे कीजिये देवराज भूप चढते दिवस रतनु अज्ञा धरलीजिये ॥ १ ॥ इसे ही दातारी में सानी नहीं रक्खा चुनांचे तालाब प्र० रामगढ में दादा तणुजी के नाम से तणुसर व पिता बिजैराव्जी के नाम से बिजैदासर व आपके नाम से देरासर तथा प्र० देवासे कोट से पश्चिम को सेडेठ राणीजी के नाम से लखीसर व वेशाले से ४ कोस किराडु के नजदीक देराशर जहां अब देराशर गांव है सिवाय इसके और ही परगनों मे कहीं तालाब वगढ व कुवां व गाम बनाये और प्रतिष्टा पाने बडा जिगर कर के एक दिन में इतना दान किया ॥ **दोहा** ॥ क्रोड इकवीस अर्ब इक पैंसठ लाख पसाव । दीधा सिह देवराज सी रीधे भाटी राव ॥ १ ॥ (**कुण्ड्या**) रीधे भाटी राव अर्ब इकरतनु अपे रीधे भाटी राव क्रोड देहगाथपे रीधे० क्रोड दोय भाटां दिधी सातक्रोड इक साथ विका पिरा विप्रां लिधी कोट एक दूजा कावि कवि कवित्त इम उच्चारे सता दान भाटी विना कौन भूप दूजा करे ॥ २ ॥ कई गांम शांसन व पटे दिये तथा मुतफर्क दान दिया सो कहां तक लिखा जावे क्योंकि इस वक्त कंथा व रस कृपा के बाइस द्रव्य चाहे जित्ना हो सक्ता था ॥ १२१ वर्ष राज्य किया बाद ग्रकार गये पे कोम चन्न के कटक से सापली में

मुक़ाबिला हुआ १४० भाटी वराव मालदेजी भाला साथ सं० १०३० मिघर सुदि स्वर्गपधारे ॥ राज गादी मंधजी बैठे और ५३ वर्ष राज किया यहां ग्यारः वर्ष गुज़रनेका ख़याल हुआ और तलाश करी तो सुना गया कि जोगी राजका वरदान था- तथा १ पोथी में संवत जैशलजी तक पीढ़ीयों में कमबेश भी लिखा है सिवाय इसके यह भी क़रीन क़ियास है कि देवराज के पाखी कुंवर छैना जी था शायद मंध छैने का पोता होगा कि हक़दार वाजिब गादी बैठने में बेटा हुआ तथा इसी ज़माने में नंद अनंद के सम्वत का फ़र्क़ ९१ वां हु वर्ष का प्रथीराजरासे में लिखा है ज्युं होगा ख़ैर क्यों ही हो यहां तो श्रीदरबार की पोथी मुजब लिखा है ॥

१११ महारावल श्री मंधजी सं० १०३० सुद्रबे

(१ मसूपुत्रपोलसराम २ हमीर जोरावरी)

१	पुवार	हंसावती	रावगजराजी		१	वाछुजी		
२	सोनगरी		रावबिसलजी	गढ़जालोर				
३	चावडी	राजकुं०	रावभांणासी	पाटरा				
४	सोलखराी	शिशेकुं-	राजा सज्जन		२	राजपालके वंश		
५	सोढी	बिलेकुं०	राणाम्हेरावरा			कालोहा बुध		
६	सीसोदराी	रामकुं०	राणाअडसीजी	गढ़चीतोड़		पहेन्ड-		
७	चौहान	मालणकुं	राव मांरा।					
८	पुवार	रंगकुं०		गढ़जूना				
९	गेलोत		रावकल्यांण	खेड़				
१०	पुंवार	हेमकुं०	रावधारूजी					

अवलच्यंनों पाचडे - १६०० को मार कर वैर लिया कई भाटी खेत रहे बहुतसा वित-लाये पीछे राज बैठे । राव मालदे के बेटे हमीर को सबनर हसेलायक़ राजकाज के-

समभ्का परन्तु दूर अदेशी से मुनासिबजानकर दीवान मह्रपुरुषोत्तमदासकी बे
टीपरनाय महाजन महेसरी याने टावरी मुंता किया और वचन दिया वलके त
लावकरी कि भाटी के राजमे दीवान तेरीही ओलादका होगा जबसे मुखत्यार-
तो भाई वगैरे औरभी हुसे लेकिन दीवानतो टावरी ही रहा नाम हर पीडी के नकशे
में लिखे है बाकी हाल अलहदा लिखागया मगर अब वह हाल आयंद कोउमेद
नही है तथा हमीरजीने खुईयालेमें लाख रुपये की हलदीपैदा करी जिससे कोट
वरकडोनका नामलाखीना हुआ तथा नलकी औलादके ४० घर मलव कोठारी
है और जबसे वाजे २ राजकी नोकरीमेंतवेला व हकूमतों पर रहे है ॥ सिंधमे नाले
परमुंधकोट बनाया कई पुश्तोंबाद अमीरों सिंधने लेकर उघडका कोट किया
सो हिनोज है। यहाहाकम व्यास था कोट खोयआया जबदेशपार किया सो मेंड त
कारहा ॥ ४॥

११२ महारावल श्री वाछुजी स० ११२२ लुद्रवे

१	सोलखणी	राजकुवर	राजा वलभसेन	पाटण	१	दुसाज	१	सूर्जकु० भटचोंताट०
२	पुवार	कवलवती	राजा नौधण		२	(सिहरावकासिंहराव)	२	रत्नकु०
३	चोहान	हसकुं०	राजा भैरुंजी	अजमेर	३	बपेराव का पाहु		
४	पडेहार	जामकुं०	राणा वीसलदेजी	मडोर	४	दुर्गाधका दूगाध		
५	देवडी	पदेकुं०	रावनाहाजी	सीरोही	५	मूलपसाकामूलपसा		
६	सोढी	विलेकुं०	राणा गजधरजी	अमरकोट				

वा कुंदी नामी कोट बनाया था जिसका निशान शाहागढ से पश्चिम ४ कोसपर
मौजूद है ॥ कई घोडे सौदागरसे खरीदे उसके कहनेसे कुंवर दुसाज व दूगाध
नगरथटे जाकर गाजीखान बलोचको जोबहादुरी मे दबाया मारके १४० घोडा
लेगये थे ॥ फेरगांम वहेडे वेरम्बाजड़ा की नौ सौ खांचीयो समेत मार -

बिक्रमपुर केजैतुंगों का बैर लिया और शहर लूट बहुत सा वित्त लाए ॥ दूसाजी इराधा सिंहराव तीनों भाई खेड के राजा प्रतापसिंह गोयल के परने ॥ सिंहराव के नामसे कस्बा सिंहरासजो रोहेडी से ८ कोस है आबाद कर मय परगने बकार याने गाम २४ मद्रूयदों को खैरात में दिया सो हिज़ उन्हों के पास हैं । तथा सिंहरावके पुत्र सचेराव का बेटा भालेरावकेबेरला व राजहथ ने मंडोर के पडेहार जगन्नाथ को मार सांढ वगैरा बहुत सा माल ले आये ॥ कुंवर बपेरावके पुत्र पाहू व मांडण और पाहू के सोढल का वीरमसी तलपसी को महारावल बालरा ने देश पार कीये सो सीरोही गए वहां वीरमसी पहाड़ में जोगीराज से पीर सा पाय पीछा आय बिक्रमपुर से फोज लेकरचढे सो खोखरों से स्वार बारा मय १४० गामों के बजोईयों से मुल्क लिया वारिव्य जाल जो पूगल से ८ कोस है हद कायम कर रहवास किया जबसेवह देश पाहूबेरा कहलाया ॥ तथा पबेरावने प्र० रामगढ में बडासर नामी तालाब बहुत भारी बनाया सो मौजूद है ॥ पंडा बाळु जी ब्राह्मनों की फरयार पर चढे सो खडाल में करीमखां को मय ५०० बलोचों के मारे दोसौ भाटी खेत रहे फतै पाई ॥

११३ महारावलश्रीदूसाजजी सं० ११५५ लुद्रवे

१	सीसोदणी		रावलकर्णजी	डूंगरपुर	१	जेसलजी	१	मानकुं०
२	गोयल	लषमादे	रावजैतसी	खेड़				
३	चौहान	राजकुं०	रावजैसिंह	सांभर	२	बिजैरावजीपाट		
४	तुवर	मानकुं०	राजासुदपाल	दिल्ली	३	पबाजीकापबा सरा	२	सतूकुं०
५	दई पारणी		करणजी	देरावर	४	पहोडजी		
६	चावडी		रावजैतसी					
७	सोढी							
८	रांणावत		रांणामोकलजी	मालवे				

सोढदिया लूटे था पिंडानाकर गांमधुहडी पास छा॰ हमीरको ७०० ॰ ॰

।॥जोगी राज की कृपा व पहू सोढलकी सलाहसे छोटे कुं॰ विजैरावकोराज

ी गजनी के साह अलाउदीन गौरी के भाई शहाबुद

॰जारहे॥

१९४ मगरावलश्रीलाञ्जो विजैरावजी सं॰ ११७९ लद्रवे

१	पुवार	गमरु-	राजा तिलोक	धारनगर	१	भोजदे पाट	१	लाछां दोनोर
		वर-	चन्द		२	रहाडजी का राहड वडे भूपतका	२	लाग
						र॰ हाजावैभऊतेहराजका र॰वी		त को शक्तिको
	सीसोदराणी	सिसकुं	रावलकरण सम	गढचीतोड		कानेर मे कोटकरो दमकन र॰ लिख		के समाजभेजा
						गांवरोहड कीनो र॰ सेपुरसे १॥		दिधी सकदिन
			सीजी पोत			कोस रहे जमीदारशाह मोहमद मदे		भोजदे जीपी
३	चौहान		रणाञ्जालणा	वीव	३	हदेजी का हया		के गये जब आ
			सीजी		४	मगलजी का मंगलीया कोथलकी		पदियो वि॰ नि
						जमीन मे कोट चानरा पजहा		र्थिहोस्य कह
४	चावडी		रावलुराजी			अब सहागढ हैवरवसा		गई आकाशमें
५	सोलख		राजा सिधजै	अनहलपुर	५	भीवरा भीया भीये		
	णी		सिंहजी	पटण				

।रके राजा तिलोक सिंह की पुत्री परन्या वहासी सोदिया राणाजी व सोलखी

सि ॰ जैपाल भी परनीजन आये थे राणाजी ॰ ॰

नोरव चोरव होनेसे कईमन कपूरवा कडीयों मेंडलाया व अपार

नेसे लांझा कहाया ॥ और पाचवां बिवाह पाटण सिद्धराज जैसि

की पुत्रीसे हुआ जब सोलखीयों पुवारों सीसोदीयो वगैरे ने बादशाह के ओ

से उत्तमभड किवाड कहा सो किड दहनोज है ॥ मौजै गिरदे के पास वि

नामी तालाब व शिवका मंदिर सहस्रलिंग बनाय बडा जिग वदान किया अ

व दोहा कहा ज्यौहो है दोहा यह सह हाले पांखती भूप अनेकन भाल

आयो धणी बंधायसी किंजड़ा सरी पाल ॥१॥ कुंवर मंगलराव का मंग लीया मुसलमान हुआ **दोहा** तेसुं वेडने सूंमरा लांझो विजैराव । मागण ऊपर हथड़ा वैरी ऊपर घाव ॥१॥

११५ महारावल श्री भोजदे जी सं० १२०४ लुद्रवे

१	सोलखणी	विसै कुं०	राजा गहलदेव	गढ पाटण		कुंवर नहीं हुआ			[illegible]
२	सोढी	सुभ कुं०	राणा जांम						
३	चोहान		राजा विजैपाल	नीमराणा					

नगरथटे से शहाबुदीन की फौज मजूजखान व करीमखान साथ गुजरात में सोलंखियों वगैरे पर जाती से उत्तर भड किवाड़ के लिहाज से वनांनगों के बचाव के लिये लडाई करी जोगी के वचनां व बाई राज साक व लांग दे आपके वाड़ स ७०० लोक साथ शाका करके भोजदे जुझार हुए सो हनोज़ पूजीजै हैं बहुत यवन व मजूजखां भी फौत हुए श्री जैसलजी फौज साथ थे सो राज वैठे जब शाहु की लूट फौज से पीछे ली **सोरठा** गोरी शाहबुदीन भिडीया रावल भोजदे । लांख उमर रखलीन वारै सेन व लुद्रपुर ॥१॥

११६ महारावलजी श्री जैसलजी सं० १२०९ लुद्रपुर पटण

१	सोढी		राणा हंसराज	पारकर	१	कालराजी पाटवीथा पर पाहु वीमैसो-तलपसीने कोढ कुंवर	१	सामकुं०	८ [illegible]
२	पडेहार	उदै कुं०	राव भांण	गढ नांगोद					
३	चौहान	विलै कुं०	राव चनड	नीमराणा	२	शालिवाहण को पाट बैठाया			
४	वाघेली	जांम कुं०	राव नोघण	गढ पावा					
५	पुवार		राव धारुजी						

सं० १२१२ श्रावण शुदि १२ लुद्रवे से ५ कोस पूर्व गोरहरे पहाड़ पर गढ की नींव दी जिससे गोरहरा और सं० १२१९ में राजधानी करी जैसलराजा का नाम मेर

कहै है पहाड को सो जेसलमेर व तीन खू़णे पहाड के बाइस तिखूणा कोट व त्रकुटाचल वत्रकुटगढ़ भी नाम है गढ़ लुद्रवा तीन दिन मे टूटा था जिससे भा री गढ़ बनाना वाजिब जानकर डूंगरी मोलासर पर काम जारी किया था जब ब्राह्मन ईसाने जो १२० वर्ष की उमर व दिया मे भी वृद्ध था ॥

यह जगा बताई कि श्री कृष्णचंद्र व अर्जुन ब्रह्मा के जिग ब्रह्मकुंडो पर आस जब इस पहाडी पर आकर चक्र से जेसलू नामी कूवा किया सो हिनोज है ॥ तथा पत्थर पर दोहा लिखा कि ॥ जेसलनामा भूपती यदुबंशी इक थाय । कोई कालरे अंतरे सथ रहेसी आय ॥ २॥ दिखाकर कहा कि श्री कृष्णचंद्र के बचन है कि यहां राज अन्चल रहेगा जेसलजी बहुत खुश हुए ईसा को गढ़ से पश्चिम आध कोस पर जमीन दी वी थी सो ईसाल कहीजे है ॥ चांनीया व बलोच भारी कटक ले दिअलूने को गाम खूडी आये की खबर होताही पिडा पधारे कटक के मांझी वगेरे को मारे और दूसरे डारी २ कहने व मुह में घास लेने से जान्दा बचे ॥ जेसल सर तालाब बणाया ॥

११७ महारावलजी श्री शालिवाहनजी संवत १२२५ गढ़ जेसलमेर									
१	सोढी	पिलेकु०	राणा नागोदर	अमरकोट	१	वीजलदे पाट			मूलचंदजी
२	चावडी	उदेकु०	रावजांझारपसी	गुजरात	२	बादरजी का बादरगांव डाभले ॥			
३	राठोड	भांराकु०	रावधूहड		३	हंसराज का वेरामन रूपपहाडी गजावरूप जके गोद गया			
४	सीसोदणी	राजकुंवर	महाराणा भैसिंहजी	गढ़ चीतोड	४	मोकलजी का मोकल गा० मोकले			
५	बाघेली	सूर्जकु०	रावपूंजाजी	गढ़ धीणोर		चंद्रकाव पूरथले राजे है पास वा मिायडाहाले - ब्रमन्ग सुपारी परनी तिटाटाजात था सनूर सूथार हुए			
६	देवडी	-	रावमूंडरासी	गढ़ सीरोही	५	सातलजी का मरहालन गा० म्मा मलार			

* इस कूवे को सन १८८० ई॰ में इसने भी किसि के मान्दरदरवा था ॥ वन्द महम्मद मुराद उसी मदार राजपूताना गजेटियर
२ यानें जेसलनामे राजा गाजाबो पूरो वन्सी म्यान्दानकाहाल कुछ अर्से के बाद पहा आकर रहेगा ॥ म॰ मु॰ द॰ दी॰
३ यहां कथूर धना जाणजाव मे बाके है ॥ म॰ मु॰ द॰ हो॰

+ जिसतरह इस अजमेर है कि अजा नामी राजा ने बसाया था - अजा राजा का नाम और मेर पहाड को संस्कृत मे कहते है इसलिये अजमेर कहलाया ॥ म॰ मु॰ स॰

छोटे कुं॰ चंद्र का कपूरथले राज को मशिष्य है श्रीदरबारसाहिबां को बुज़ुर्ग समझकर ऐसा ही बरताव रखते हैं टीका नूंता सोग़ात वकील वग़ैरे आना जाना बख़ूबी जारी हैं सं॰ १९१४ सन १८५७ ईस्वी के ग़दर में सरकार दौलत मदार अंगरेज़ी की ख़ैरख़्वाही व मदद दिलोजांन से करी कि सरकार ने महरबानी व क़दरदानी से फ़रज़िंद ख़ास का ख़िताब व तग़मा और रु॰ लखनऊ में कई लाख का मुल्क इनायत किया चंद्र से आज पर्यन्त गादी धरों के नाम अलग लिखे हैं पांच में कुं॰ हंसराज का बेटा मनरूप नायरा॰॰॰ के राजा वछराज की गोद गया सो रास्ते में फ़ौत हुआ कुंवराणी हामला थी पलास के पेड़ नीचे पुत्र पैदा हुआ सो गादी बैठा जिससे पलासिया भाटी पहाड़ी राजा वाजे हैं बाकी नस्ब नामा वहां होगा जालोर के सोनगरों से जुद्ध जीते और चोयाले के काठी जगभान को वफ़ात (-) दे बहुत सा वित्त लाये गाम हाभले से पश्चिम १ कोस पर तालाब व उपर ठकानां बनाय बहुत सा दान किया ७ गाम उदग दिए । और सुना है कि गांम कोटड़े के ठाकुर बुध भाटी ने चंदा मुल्क लूटता था खेड़ में राठोड़ रायपाल ने क़ैद किया याने रोहडीया इसी अरसे में वरसड़े मावल की बेटी झीमां ने चारन से सादी की तलाक़ ख़्वाई जब रायपाल ने अपनी बेटी कर के धोखे से चंदे को परनाय रोहडीया चारन किया उसकी औलाद का राठोड़ों का पाट बारट रोहड़ीया मशहूर है इसका बदला लिया कि तालाब की प्रतिष्ठा पर एक राठोड़ को बहुत सा द्रव्य देके अपना ढोली डगा के जो मथुराजी से साथ है शामिल कीया । बलोच खिदरखान से खाडाल में जुद्ध हुआ खिदरखान घायल व ५०० बलोच खेत रहे व ३६० लोक साथ पिंडां स्वर्ग पधारे । कुं॰ बिझलदे पाट बैठा बाद दो माह के धभाने चूक किया जब जेसलजी का बड़ा कुं॰ कालराजी राज बिराजे ॥

॰॰॰ याने सरमार ना हन जो ज़िले कांगड़े में है और इन दिनों वहां के महाराजा श्री शम्शेर प्रकाश साहब-जी॰सी॰एस॰आई॰ हैं ॥ मुहम्मद मुराद अली होशियार अफ़ी अनहू ॥ याने मारकर ॥ म॰ मु॰ अ॰ हो॰ ॥

११८ महारावलजी श्री कालराजी सम्बत १२४७

१	वाघेली	भाराकुं०	रावहूमराज	गढथराद	१	चाचगदेजी पाट	१	रैराकुं० राम पुरे	श्रीपुत्रीयां
२	चौहान	सोनकुं०	रावधारूजी		२	पालयाकेजसोडजी कमलपूजा से शिवप्रसंण हुके पुत्रवसकपीडीयन-का वरदान दिया॥ डुंदो-पतिलोवासी॥राजोरिया॥सागेरा॥वागरा॥अ-सकनै नरानदास॥रन चाकूके वशकाजसहूमय हूरहै			
३	सीसोदणी	भजबकुं०	राणाप्रथुमस जी॥	गढ चीतोड			२	गंगाकुं० चद्रावत कुंपरनाया	
४	सोढी	रत्नकुं०	राणाआसलजी	अमरकोट					
५	गोयल		रावजैतमाल	खेड	३	जैचन्दके एकलूणगका जैचन्दहे दूसरे कमसीके लासकासोहूदनकेदोवेननि-कमसो-अगमसीकासोहूदहै			
६	चावडी	सूजकुं०	राव दूधाजी	भाद्राजण[×]	४	आसराव का भरा कमस			
					५	पियम			
					६	चद्र			

शालिवाहणजी के बैर लेने की सलाह करी सो सुनकर माथेलैसे रिवदरखान ५००० कटकसे चढ़ आए खडाल का वित्तलीया जबकालराजी बहुत फौजले चढे-सो रिवदरखानको मरा ५८५ बलोचोंकोमारे और ९०० घायल किये २०० भाटी काम आए परन्तु वित छुडाय पर वाडेजीत वहुतसा धोडा पड उले फते का डंका बजाते पीछे पधारे

११९ महारावलजी श्री चाचगदेजी स० १२६९

१	गोयल		रावहदफ	खेड	१	तेजसीजी कुंवरपदे रहलतफर-माई इनका पुत्र हुआ एक जैतसी॥ दूजे करणरा पाट-हुवराणी अमरकोट आरहीथ सो व ना राज वैठा जब आवेर केटेसे दहा दि कुम्मो हे मेरा पु-रूरावनी और मानमर के दला-को राती कासे रे मारना मवी। कि-गढो वेत नहीं दिया था उनाचे ऐसाही किया	१	राजकुं०	पु०
२	सीसोदणी	रूपकुं०	धवलपूजा	डूंगरपुर					
३	हाडी	सूरजकुं०	रावसतारदे	माहलगढ					
४	सोढी	लाभकुं०	राणाहमीर						
५	राठोड		रावतीडाजी	खेड					

[१] शायद चर दरी भाद्राजून है जो अब रलाके मारवाड मे है॥ मरम्मद मुराद अपसी होशियार॥

सोढा व चांनिया व बलोच मुल्क लूटे था जुनाचे नगर थरे के रास्ते में आरिया- बुलाकीदास का माल रुपये ५ लाख का लूटा जब फौजकर पिंडां पधारे १६०० चांनिया व बलोच को मारकर माल मुदई व खर्च दंड में माल मवेशी पीछा लिया फेर अमरकोट के सोढे (१३००) को वफ़ादारी वाकी ताबेदारी में हाज़र हुए अर्ज करी कि राठोडों ने गोयलों से खेड छीन ली व राव छाडा हम से भी अदावत रखते हैं फ़ोरन वहां पहुंचे तो छाडा जी ने दसलाह कुं० तीडाजी फौज खर्च दे वेटी परनाय सुलह करली। कुं० तेजका बड़ा बेटा जेतसी तो बादशाह की नोकरी में अहमदाबाद गया और करण अमरकोट से आकर राज बैठा ॥

१२० महारावलजी श्री करनजी सं० १२९९

१	सोढी	हंस कुं०	महपाल	पारकर	१	लखणसेनजी पाट	१	भानकुं० नरवाके रोज्या	भारमलजी
२	पडेहार	कंवलावती	राणा डुजा						
३	राठोड·		राव छाडा	खेड·					
४	बाघेली	केसवकुं०	राजा म्हेरावण-जी	गढबांधो			२	जसकुं० के	
५	झाली		भगवानदास		२	सतरंगदे का लूणराव		कछवायां	
६	चौहान		राव धारुजी						

नागोर वादी के बारांह भगवती प्रसाद पर मुज़फ़र खान सूबेदार ने जुल्म किया कि ज़बरन उनकी बेटी परन्या व देश से निकाला सो यहां आया जब पनाह दी और पिंडां पधारकर मुज़फ़र खां को मारा ५०० पठान १३०० भाटी काम आये शहर नागोर लूटा और भगवती प्रसाद वगैरे बारांहों को पीछा आबादकर उसकी छोटी बेटी परनीज पीछे पधारे ॥

—— याने मारकर ॥ महम्मद मुराद अली·

१२१ महारावलजी श्री लखणसेनजी सं० १३२७						
१	सोढी	सुगणादे	राणादेसल	अमरकोट	१ पुनपालजी पाट	आसकरनजी
२	चोहान	प्रेमकुं०	राणादेहड	वाव	२ कल्याण	
३	सोनगरी		रावकांनडदे	जालोर		
४	सोढी					
५	से०					
६	से०					
७	से०					

काकलुद्र जानते थे गऊ जालोर के कांनडदे को राणी व कुं० के जहरसे (८) पहरके वायदे ओठी भेजके बचाया । श्री स्वांगीयों जी के आपसे सानिये होवराणी सोढी के बसी होने से सोढे ही सोढे पास रहते थे वेईमानों ने श्रीजी को चूक करके सोढीजी से कहा कि तांह्ले भाईयों में चायेजेनां राजडे सोढेजी हिकमत अम्लीसे ७ बीसों सोढों को बुलाके १ महलमे बंध किये और भाटीयो को श्रीजी की लास देखाकर कहा कि एक २ सोढा एक २ गधा बाधके कोटडी के कूवा में डालो जुलाचे एसाही किया ॥×॥

१२२ महारावलजी श्री पुनपालजी स० १३३१						
१	पडेहार	पेपकुं०	राणाभैराजजी-	बेलवा-	१ लखमसीके राणगदे २ भोजदेजीका पूगलीया	रामदेवजी ५
२	देवडी	जामकुं०		सीरोही	३ चरडेजीका चरडा ४ लुणरावजीका लूणराव	
३	सोढी		राणारतनपाल	पारकर	५ राधीरजीकारणधीरोत चानगदेजीके कुवर तेजजीका बेटा जेतसी जाराज बेटा ॥	

राज नीत नहीं चलणो से सीहड़ विकमसी ने जैतसी जी को अहमदाबा
द से बुलाय राज दिया और पुनपाल जी किसी गांम में जारहे ॥ फेर कुं०
लखमसी का बेटा रांगागदे आली हिम्मत हुवा जमीयत कर चढ़े सोगढ
मरोट जोईयों से व पूगल भीलों से व मुंमणा वाहणा लेकर रावबणा बैठे दूजे
कुंवरों की औलाद के दू० बीकानेर में हैं तथा राव रांगागदे के कुं० तादो जी
बड़ा ही बहादुर हुआ मुफस्सिल हाल अलहदा इतिहास में लिखा है ॥

१२३ महारावलजी श्री जैतसी जी सं० १३३२

१	सोढी	रामकुं०	रांगासोभस जी	पाकर	१	मूलराजजी पाट
२	राठोड़	फूलकुं०	रावतीडीजी	खेड़	२	रतनसी का कुं० घड़सी
३	सोलखणी	सिरणगारदे	रावदेपाल जी	पोरबंदर		जी तो पाट बैठे अरकानड़
४	चौहान		राव झोवा	रणपाबा		देका कांनड़ उनड़
५	सोढी					मचा की ला हमीरोगारे
६	से०					खां पांहुई गाव हाबूर वस
७	से०					ला व काता वगोगरे वहमी
८	वाई०		रावशिवनारायण			रों में हैं ॥

राज याने हकूमत कुं० मूलराज व रतनसी करते थे नाम रखने के लिये
मुल्कों में धाड़ा पड़ने लगे बादशाह की ५५० खचरों पर मोहरें नगरथ
टे से मुलतान व माजी साहिबा मक्के जाती को लूटली जब सं० ३९ में फी-
रोज़शाह खिलजी की फौजें २५ लाख नवाब महबूब खां दिल्ली से – और
करीम खां अलीखां मुलतान से ले आये १२ साल लड़े मूलराज का कुं० धन
राज फौज पर धावा मारता व रसद पाता रहा सं० ४९ में जैतसी जी मरे

गढ़ मे ही दाग हुआ इस जमाने मे प्रधान व सरदार जैचन्द राहड़ जैतुग पाहू भराकमल सीहड़ तथा जसोड़ आसकर्न वगैरे केई ही अकलमंद व सूरवीर थे आसकर्न कारमुखतार था म० वकारका रु २५०००) उडाने की झूठी चुगली पर तिलोकसी ने मारना चाहा तो व सलाह श्री मूलराज जी की माजी साहिबा आसकर्न नाराज होकर ईडर जा रहा था सो ही आकर आका मे शामिल हुआ ॥

१२४ महारावलजी श्रीमूलराजजी सं० १३४९

१	बाघेली	रामकु०	रावपालजी	थराद	१	देवराजजी के कु० हमीर का तो पहले नो तप हमीरोत और दूजा केहर जी था सो घड सी जी के पाट बैठा -	२	राजकु०	[illegible]
								सामकु०	
२	चौहान	राजकुं०	ठाकुर केहरजी					वगैरे जो कंवारी थी	
३	सोढी	जसकु०	राणा सत पाजी	अमरकोट	२	धनराजजी		राठोड़ साथ	
४	पडेन्हार	सूर्जकुं०	राणा पातलजी	मंडोर	३	वनराजजी		बोयजो तावेदारी	
५	कछवाई	साजनदे	राव कसांण					मे थे शाका की सन्ध होने पर शादी करी उनके हाथो से कतल हुई ॥	
६	सोढी								
७	से०								

नरय १॥ में सामान हो चुका तो कारमुखतार सीहड़ विकमसी ने मोती रलाय सू हरीयो के दूध मे मिलाय गढ़ से फेंके फोज वाले खीर समझ निरास होपीछे रवाने हुए थे भारी भीमदे ने १ लंघैसे सुनाई में कहाया कि तोल दे फौरन लौट आये रतनसी जी नवाब महबूब खां से पघडी बदल भाई थे हमेशा रात को सलाह करते थे कुं० घड सी व कानड़ का बाजू सी पासो दिल्ली ले गये मूलराज का कु० देवराज के पुत्र केहर व हमीर नाने रे मौने कायरा मे पडे हार रारो रूपडे

पास थे सो बचे बाकी सब शाका में काम आये हज़ारों औरतें क़तल करके दूजे दिन मूलराज रतनसी व कांवर भांवर प्रधान वग़ैरे कई हज़ार लोक केसरया कर गढ से निकले अद्भुत जुद्ध में स्वर्गगामी हुए नवाब करीमखां-अलीखां व फ़ौज शाही के लोग बेतादाद मरे व घायल हुए गढ में बादशाह का थाणा बैठा **सोरठा** शाह फ़ीरोज़ जलाल मूल रत्न जेशान गढ। शाकों कीध कराल तेरह से इकावने ॥१॥ जसोड़ का बेटा दूदा को तिलोकसी-इस मनशा से ले निकले थे कि फेर शाका करेंगे पारकर में बैठ कर दौड़ने लगे रसद व काग़ज़ गढ में न जाने दिया जब पांच में वर्ष थाणे वाले गढ छोड़ गये की खबर १ फ़कीर जो नवाब के साथ था पोहकरण से बिछुड़ा उनसे सुनते ही राठोड़ जगमाल खेड़ से ७०० गाड़े सामान के रवाना कर के पिंडा गांम भू: के पार वपड़े में जो शहर से ५ कोस है देपारा टालने को रहा था और रतनु आसराव के इत्तला देने से दूदा व तिलोकसी पारकर से रवाना हो रस्ते में पाहू तोले के पास बहुत सवार थे आधा राज देना कर साथ ले गढ में दाखिल हुये-अर गाडा भी पहुंचा सामान ले के जगमाल को कहलाया कि आप जैसे गनायत हो सो ऐसी मदद दें-गाडों वालों को पेटीये का गेहूं एक २ धोवा सहाजांनी सेर २॥ होगा दिया जब से भू: वग़ैरे गांमों में इस तोल का माप मांणा नाम से जारी है और भू: का बेघारा भी कहावत रह गई ॥ फेर जगमाल-भी आकर मिले और पीछे जाते गांम सांगड़ व आोलेन्चा चारणों को दे गये सो सही खवे पर लेत लाल थे कई पुस्तों बाद महारावल भीम दिल्ली से-पीछा आकर तांबा पत्र कर दिया ॥ तिलोकसी ने तोला को वफ़ात दी ॥ और रत्नसी ने रत्नसर तालाब शहर से १॥ कोस बासणपी के रास्ते में बनाया



१२५ महारावलजी श्रीदूदोजी सं० १३५६

१	सोढी		राणाघडसी	अमरकोट	रत्नसी जैतसी होतकाकुं० घडसीजी राजगादी विराजे ॥		जसवंतसिंघजी
२							
३	मागलीयांणी						
४	राठोड		ठाकुरराजसी	सेतरावे			
५							
६							
७	कर्मसोत			रवीवसर			
८							
९							
१०							
११							

नगर थटे के पहाड मे कुंगरा बलोच जो देवथा मारकर लखी घोडियोंगैर शहर जालोर वसीरोही लूटके बहुतसा माल व गुजरातसे ५००० भैंसां व पारन से बर्ग तथा हांसी हंसार व भटनेर से सांढा वगैरे माल लाये अलाहाजुलकुयास दिल्लीके नजदीक मौज़े रेवाडीसे बंधां पकडी अजमेरके थांणोसे कुंकजीत नागोरका देस लूटा और मुकाबिले में तिलोकसी ने कहीं पीठ नहीं दिखाई ओ जो माल लाया दूदेजीने फौर्न दातारीमे देदिया सुदा कि दूदे तिलोकसी ने बहादुरी व दातारी में नाम किया ॥ दूदेजीका शाला मौज़े सेतरावे का राठोड हापा राजोतसे तिलोकसी चौसर खेलते हाथमे चूडे की चोल करी हापा नाराज़ हुय करहसे सांढां लेगया पीछे से तिलोकसी गांम ओटीनीयें पहुंचकर १५० राठोडो साथ हापे को मारा दूदोजी नाराज हुआ कि शाकाका

वैरा पूरा करो जब तिलोकसी ने मुल्कों में यहां तक लूट मचाई कि मुकाम-
अजमेर में एक गूजरी दूधलेकर बादशाह अलाउद्दीन दिवलजी के जाती
को लूटी और खासा घोड़ा लाया जिसपर नवाब कमालदीन लखनऊ व मलक
काफ़र मरहृया बहुत फौजले आये छः साल लडने के बाद अर्ज हुई कि अब
कालवी जुवार रही है याने गढ में रसद न रही जब राणी कर्म सोतके सिवा-
मात्र औरतों हर कौम की को अगाड़ी रवाने कराय पीछे से ५५०० लोक साथ
शाका कर स्वर्ग पहोंचे यवन बेतादाद खेत रहे जसोड़ उत्ते ने बडी बहादुरी
करी कि शिर पडे बाद कई यवन मारे फेर गुली नो खने से धड पडा सो-
देवली बिला माथे की दरजी पूजे हैं राणी जी ने चारण हूं फे जी शादू से जोबरदा
ई कवीसर था कहा कि खीवसर से आप साथ आते कांचली देने का वचन लि-
याथा सो अब दो याने श्री दरबार का शिर लावो हूंफे जी ने नवाब से दूदे जी-
का शिर मांगा नवाब बोला सागी पहचान लो हूंफे जी कहा शिर बोलेगा चुना
चे बिडदावने से मुंड हंस्सा दोहा सांदू हूंफे शेबीयो साहब सुलतान सल्ल।
बिडदां माथो बोलीयो गीतां दूहा गल्ल ॥१॥ माथो लाया जब राणी साहि-
बा सत्ती हुई और गढ में बादशाही दखल हुआ ॥ सोरठा ॥ खिलजी-
अलाउद्दीन दुर्जनशाल तिलोकसी । शाको भारी कीन तेरै से अठसठ
में ।१। ऐसे ही दूसरा मुल्कों में भी बहुत जगह शाका किया गढ चीता
ड सं० १३३१ में सीसोदीया राणा गढलखमरासी व कुं० रत्नसी आदि ले
१३ पीढी झडी गढ पावे मुल्क गुजरात में पत्ते जी चोहांन गढ आबू में
अडसी पुवार गढ जालोर में वीरमदे सोनगरे गढ पाटण में अर्जन सो-
लंखी गढ गागरूण में अचलेखीची वगैरे २ ॥ दिल्ली से घडसी जी
इ केला भाटीयो से मिलने को जेसलमेर आते थे मंडावर से १ नाई के साथ

होनेसे मौजे खेड के बागमेंजाकर कुं० जगमालसे मिले बाद मलीनाथ
जीपास कई महीनारहे खेड पर बादशाह की फौजे आई और लडाई हुई
फौजे तो हारकर पीछी गई इसका हाल मुफसल बीरमाण में लिखा है-
घडसीजी ज़खमो से अचेत था मलीनाथजी की बेटी विमलादे जो श्रीरोही-
परनायोडी यहां ही थी हमबगल करी तो चेत हुआ तब बिमलादे ने अरज-
करी कि मे ताबेदार होचुकी हूं घडसीजी कही मे कुवारा हूं फेर जब जगमाल
की पुत्री कमलादे से शादी करके विमलादे को भी रखली फेर मलीनाथजी
की सलाह से दोनो रांणियो को खेड मे छोडी और जैचन्द के बेटे लूणाग को
दू० बीकानेर से व रहाड डूंगरसी के बेटे पनराज को जेशलमेर से बुलाकर सा
थले दिल्ली गए दोनों ही बरदाई आजानबाहु जोधार तो थे ही किसमत
की खूबी से गजनी बुखारे के बादशाह के दूका को जीता व मस्त हाथी को जेर
किया व कवांरा जो करामात की थी चडनकर तोडी और बादशाह को पक
डाया जिस पर दिल्ली के बादशाह मेहरबान होकर गजनी का जैतवार खिलत
दिया और कहा मांग तो घडसीजी ने माफ मागकर जैसलमेर मिलने की अर्ज
करी बादशाह ने फरमाया कि गुजरात वगैरे दूसरा मुल्क ले भूखलमेर मे क्या
है मगर घडसीजी ने कहा कि बुजरगो का ही वत्त मिले जब नवमहोरा फरमान
व खिलत व दोरास घोडे इराकी व फील जंजीर व तलवार कटार वगैरे इनायत
किया सो लेकर जेशलमेर से पूर्व कोस १ मगरे पर डेरा कर फरमान नवाब को
भेजा नवाब बोला तीन हुकम आनेसे गढ मिलेगा एक शकुनी बोला
कि आदमी भख दिये काम सिद्ध होगा इतने मे दिल्ली से खबर हुकम लाया
कि गढ मत देना घडसीजी ने कागज लेकर खबरों की कबरे यहां ही करी सो खबर
मगरा मशहूर हुआ फेर नवाब के बेटे को कुंभारी के घर मे पकडा जब नवाब ने

गढ तो खाली कर दिया पर बचन लिया कि बादशाह नाराज हुआ तो मैं यहां आ रहूंगा चुनान्चे नवाब पीछा आया जब वजीर का खिताब व नहवर कोट व नकारा वगैरे कुर्ब दे कर उमराव किया सो श्री अखैसिंह जी के अहद तक तो आठ मिसलों में रहा मगर शाक होने से हाकम भी रखा गया था श्री मूलराजजी के ज़माने सं० १८२० में हाकम व्यास सचराम व वजीरों ने किल्ला दावदपोत्रों याने बहावलपुर के नवाब को देना चाहा तो फलोधी का थानवी जैतसी ने कहा कि खर्च में दूंगा किल्ला मत दो परन्तु दे ही दिया जब से कोम वजीर लायक न रही नहवर-किशनगढ-मूलागढ नाचणो वरसलपुर वगैरे में कोटवाल कहलाते हैं और जैतसी को बुलाकर लरणोत में बसाया फेर शहर में सगपण कराय नोकरी में रखा जब से थानवी आज तक जी इज्जत अहोदों पर मोजूद हैं ॥

		१२६ महारावल जी श्री घडसी जी सं० १३७३						
१	राठोड	विमलादे	राव मलीनाथ जी	खेड-	।	कुवर नहीं हुआ श्री मूलराज जी के कुं: देवराज का कुं: केहर जी राज बैठा ॥		[illegible]
२	से०	कमलादे	कु० जगमाल जी	से०				
३	वाघेली		राव बहारु जी					

शाका के समय मुल्क वीरान कर बहुत से कूंवे व तालाब बुराये तोडाये थे सो पीछा आबाद करने की पूरी २ कोशश की परथा जैसा न हुआ ॥ जसोड के बेटे पोते वगैरे भाटी फरंट रहे जिस में मली नाथ जी के कु० कूंपा व जगपाल को जो श्री दरबार के साले थे खेड से बुला कर पास रखे और कोटडा व बहाडमेर व गिराब मय परगने देकर आठ मिसलों में नगार बंध उमराव किये

व शहर में हवेली बनवारी श्री दरबार के अदीठ पश्चया चार
णी शक्ति देवलने मिटाया और कहा कि कुंमर की धार देखो जहां
पाज बांधजो तो अखे पुन्य व अम्मर नाम रहेगा चुनान्चे घडसीसरता
लाब बणाया वहां जसोड तिभे के वेटे आसकरन चूक किया सो शिर
गिरने बाद घोडा भगाय गढमें आगिरा जब दाग मे रांणी कमलादे
वदो खवास सती हुई और रांणी विमलादे ने बडी हिम्मत व होशि
यारी करी कि जसोड जाति का नाम भाटीओं के भाट की बही से निक
लाया व तिभे की औलाद का गढ में रात न रहे की तलाक कराई । और
गांम कांयरा से केहर कोलड क पने में जंगल मे सोते पर सांप ने कत्र
किया था प्रतापी जानकर सबी सब बुलाकर राज बैठाया तथा सब
तरह राज का बन्दोवस्त करके छः महीने बाद तालाब की प्रतिष्ठा करा
य सती हुई सं० १३९२ मे ॥ मुल्क दक्षिण का तो सालों को दिया
पूर्व जसोडो दबाया कि शिकार ही नहीं लेने देते उत्तर जैतुंग महेपे
को कि जिसने बिखे में तन मन व धन से हाजरी करी थी भेजा कि दबा
सके सो तेरा है पश्चिम का लूणाग व पनराज को देना चाहा तो अर्ज
हुई कि कुछ राज को भी रखेगे या बस जब महेपे को तो लिखा कि ५
कागज़ पूगो पीछे अगाडी दबावे सो तेरा चुनान्चे मोजे चतुसे आगे राख
सीये की सांढ पर सवार होकर बीठनोक तक पहोन्चेथे । लूणाग व पन
राज को कहा कि एक दिन में घोडा फेर ले वीच की जमीन तुमारी सो लू
णाग तो गांम पारेवर के चौकोसी में रहा और पनराज ने ४० कोस के घेरे
मे जोरहाड की मधा दूर है लेली जब पुगंना गाम वालो नाखालसे रखा

---

१२७ महारावलजी श्रीकेहरजी सं० १३११

१	सोढी	सूजकुं०	रांणा नोधरा जी	
२	चौहान		रांणा अलसी पावा जी	
३				
४				
५				
६				
७				
८				
९				
१०				
११				
१२				
१३				
१४				
१५				
१६				
१७				
१८				
१९				
२०				
२१				

१ सोमके तेरे पुत्रोंका सोम हुआ १ रूपसी २ देवराज ३ रतनों- ४ जेतमाल ५ भोजदे ६ जीवो ७ पर्वत ८ राजो ९ खेलसी १० जेसो ११ महाजल १२ हरखो १३ वीरमदे ॥

२ लखमराजी पाट

३ केलणके २४ पुत्र मय १३का वंश चला जिसकाहाल अलग लिखा ॥

४ कलकरणके जैसेका जेसा भाये मारवाड़में उमरावगाम लवेरे- वावडी वगेरे तथा सांवतसीके रूपीयाव सांवतसी हुआ

५ सातल

६ किजो

७ तणके गोपालदे का गो पालदे दूजेराजपालकेल खणपाल कीर्तसिंह साधार

८ तेजसी का तेजसी

१ राजकुं० महाराणा ला खाजीको परनाया मे ची तोड़

२ किजेकुं० देवडे रावको परनाया गढ सीरोही

३ कल्याणकुं० रेवड़के रावल जगमाल को परनाया

छोटा भाई हमीर के कुं॰ जैतसी व लूणकर्ण को पास रखा था मेवाड में कूंभलमेर के रांणो कूंभेकी बेटी से जैतसी की सगाई हुई सो परनीजण जाते शकुनी साले के भमारो से नाई को ओरत का लिबास कराय लाल मेवाडे की खबर मंगाकर १ मन्जल ओलीतर्फ वड दरसाय पीछा आते गाम सूजंडे राव राणगदे के प्रधान सांखले म्हैराज की बेटी परनी जै यह खबर होने से रांणो जी तो बेटी की शादी गागरूणके खीची अचले से करी और यहां से श्रीदरबार ने कंवरो को कहलाया कि मुंह मत दखावो जब दोनो साले १ तो शीरोही दूबड राव रतनसी व दूसरे सांखले आलणि ऐ को साथले पूगल जाय राव रांणगदे से कहा कि १ कोट दोगे ज्युं हीलेगे इसपर तकरार हुई जैतसी व लूणकर्ण व दोनों साले वगैरे ४ सो मनुष्य दुतर्फे मर्रा गए रावजी काला ओढ तीर्थ न्हाय यहां आए श्रीदरबार श्री देशणोकजी के दर्शनको पधारे थे रावजी को गाम रासलो मे बेठाय आप मात्मी को पधारे काला उतराय फरमाया कि कुंवर आपही के थे बेवकूफी से मरे अन्देशा मत करो फेर जेसलमेर लाय भारी पाव दे सीख दी जब पूगल गए सो खला म्हैराज आलणिये के मरने व रावजी के बोलणां हां से बिलाई धणी मरे है से नाराज हुय राठोड अर्डकमल पास जा रहा ॥

कुं॰ केलणजी राठोड मली नाथजी की पुत्री परनी जे व हां साले जगमाल से आपके बैन की सगाई करी श्रीदरबार नाराज हुए जब लुद्रवे में व्याव कर के केलणजी यहां से रवाने हुए सो शहर से १२ कोस पूर्व आशणी कोट की नीव दी फेर सिगराव सातल महपालोत की सलाह से ७ सौ सवार साथ मुल्क का बन्दोबस्त करने को गए सो गढ मय परगना कई तो हुकम अदूलों से और कई अजमेर नो कबजे किये चुनान्चे अव्वल तो

विक्रमपुर में दखल कर बडे भाई सोम को कोट की एवज़ गाम ग्राधी दी
तथा पली वालों का गाडा साथ था सो भेजा व बाप वगैरे कई गाम बसाए
फेर ख़बर लागी कि राव रांगागदे की सोढी मुलतान के नवाब को बुलाती है
जब हिकमत अमली से गढ पूगल में क़ाबिज़ हुए सोढी को भीत में चुनाई
और सोढे सादी करने की तलाक करी सो १८ पीडी बाद जूझारसिंह राव
बिकमपुर व धनराज राव बर्सलपुर का परनीजे - कोट मरोट व खारबा
रा में पका अमल करके कोट नांनरण व मुंमरण बाहरण में थाणा बैठाय
क़िले देरावर में दाखिल हुए दरीयाव तक हद्द जो आगे थी क़ायम
करी पीछे कोट किरोहर व माथेला व मुंमरण बाहरण भीलाबे कियातथा
गढ भटनेर दखल में लेकर किसी क़दर प्र० हिन्सार में भी अमल किया-
अलाहाज़ुल क़यास कारर बाई का मुफ़स्सिल हाल अलाहदा इतिहास में-
लिखा है ॥ १ केलणजी के बहादुरी व अकबाल की ख़ूबी का हाल कालि
खीजावे वाद शाही फ़रमान में राव किलजी लिखा है बडे ही प्रतापी व-
स्वाम धर्मी हुए केलणजी के छोटे भाई तणुजी का कुं० राजपाल वा
उम्मर साथ रहा उसको १ गढ देराण का हाथा परन्तु दोनों स्वर्ग बासी हुए
केलणजी का बडा कुंवर चाचाजी राव हुआ सो भी बडा बहादुर था चुना-
चे वज़ीर कालू से भारी जुद्ध जीता फेर राजपाल के बेटे किर्तसिंह ने घोष
सं का घोडा ४ चुराय जोइये लूणे को सोंपा खोखरों का कटकलूणे का
५० घोडा व बिस्तले गया जब चाचे ने खोखरों के राव कालू थिरपालोतको
वफ़ात दी उसकी पुत्री किर्तसिंह को परनाय मुल्क ले दीया फेर किर्तसिंह
के बेटे पोते मौज़े बूर व पूरथल सलेमपुर अर्डकपुर वगैरे में रहे बादशा
ह अकबर ने इन्हों को तुरक किया तदपि कई पीढी तक भाटी पैकी रीत

बरते था याने दीवाली होली आखा तीज दसेरे को जैसलमेर की त-
रफ़ सलाम कर गादी पर बैठे था । चाचाजी जैसलमेर हाजर हुए श्री
जी से सलाम कर रावपिरो का ग्रार पावले गया बाद जंझ बाघे की नाल
सपर सहूता से कुमक लेकर गढ सातलमेर के राठोड ब्रजाग के तीनो कुं-
वरो को पकड़ा कई राठोड मारे गये तथा ३ सो घर सारू कारो के ले जा
कर पूगल देरावर सुमरणबाहणा में बसाए और ब्रजाग के तीनो पुत्रो
को परधानो के परनाय पीछे सातलमेर भेजे । केलणजी के २४
पुत्रो मे १२ का वंश चला और बडे प्रतापी हुए केलण बरसिंघ खींया-
कि सनावत वगैरः खापों मशहूर हुई तथा बरसलपुर-बिकमपुर वगैरः राज सर
ग्रांधी बागडसर सिरडां बावडी वगैरे बहुत से गाम जो इ० हाजा मे
है शजरे व नकशे में लिखे अलावे इसके इ० बीकानेर व मारवाड
में बहुत हैं । कु० विक्रमायत भी विकमपुर के राव बडे ही दातार सूर्य
का इष्टी व बरदाई थे १ दिन तालाव पर इकेले खडे थे १ चारन दुश्म-
नों के सिखाने से आकर कई घोडे मागे कि इसी वक्त दे जब सूर्य का आरा-
धन किया तो १४० घोडे आ मौजूद हुए जब १ साल का खर्च भी देकर सब घो-
डे चारन को दे दिये.

१२८ महारावलजी श्री लखमणजी सं० १४५१

१	सोढी	भीमकु०	राणा राजपाल	अमरकोट	१	बैरसीजी पाट	१	राजकु०	सुजानसिंह
२	बाघेली	नर्बददे	रावजसपाल	सारंगपुर	२	रावत रूपसी का रूपसी इसके कु० मडलीक — काजैमलने दिलीमे हाथीको हाथसे पकड हिलाया जब बादशाहने रूका कहा जिससे खापरूका कहीजे सो प्रपोह कराफलोधीमे रहते है॥			
३	झाली		राजा नैसल	हलवद	३	राजधर का रायधर			
४					४	सादूल का परवत	२	चपाकु०	
५					५	दूभेका दूभा			
६					६	अमरजी			
७							३	मोनीकु०	
८									

श्रीलक्ष्मी नाथजी का स्वरूप मेड़ते में ज़मीन से प्रगटे और सेवग सेराफल के गाडे पर यहां पधारे तब गढ में मंदिर बनाय सेवा महाजन में हे सरीयों परस्ख नित खर्च का राज से मुकररी के अलावा न्यात में शादी गमी व ज़मीन के बिकाव वगैरे पर लाग व मनोर्थ भेट वगैरे का पैदा खर्च का भंडार व हिसाब का संभाल १२ ही सेठ रखते हैं परन्तु चंद साल से हिसाव नहीं हुआ हज़ारों रुपये लागों में हे सो अब ससी तदबीर होगी कि पैदा बधे व हिसाव हरवक्त साफ रहे ऐसे ही टीकमजी रणछोड़जी आदि का भी होगा - और पूजारी सेवक मज़कूर के बंश का १० ही धुडा हर महीने बारी से करता है सं० १४९४ में प्रतिष्ठा याने भारी जग व बहुत दांन पुन्य किया जब से राज का मालिक श्रीलक्ष्मी नाथजी व उनका दीवान महारावलजी है जैसे उदैपुर में रावलबापाजी से आदि ले मालिक श्री इकलिंगजी और दीवांन महाराणाजी । ब्यास राम रिष देवरिष दिल्ली से आस पाजी के अरीठ पद्म मिदाया जब पुरोहित पैलाज की बेटी लखुबी रे की बैन बगडी से देवरिष का विवाह कर पाट व्यास कीया उसके ४ बेटों का करीब २२०० घर है १ पोपे का जोधपुर शाहर व इलाके में १००० व दूजे जूठे का बीकानेर ३२५ व तीजे नउं का यहां व देशावर ८०० व गदा धर का इलाके किशनगढ में है नउं के परपोते हरखे व्यास ई बेटी और भतीजा मधुबन काशी जी से विद्या पढ आया जब महारावल श्री अमरसिंहजी ने पाट व्यास किया उस की औलाद के हनोज़ हैं ॥

१२९ महारावलजी श्रीवैरसी जी सं० १४९६

१	सीसोदणी	अगरकुं०	रावपूंजाजी	मुंगसपुर	१	चाचोजी पाट	१	भांराकुं०	बाईजी
२	सोढी	साजनकुं०	राणा नोहट		२	ऊगेजी का केलायचा			
३	राठोड़.	पैपकुं०	राणा भोजराज	गुढे.	३	मेलेजी का भेसडेच -			
४	चावडी		रावदेसल		४	वरीसिंजी			
५	झाली	राजकुं०	राव अलसी	वढवांण					
६	चौहान	सूजंकुं०	राणा भोजराज	वाव					

गलतनामा जो शुद्धाशुद्ध पत्र

जोकियग्रथके छपनेसे मात्रा वर्ने के सिवाय मजमूनमेंही वहुत गलतीयें रही सोतो पाठकजन क्षमा करावे ऋोरजो इगमेलिखींहै सो किताव मेंमोकार पर कलमसे लिखवा कर पढ़ेंगे तोठीक होगा ऋो॥ ऐसी दोदो लकीरो के वीचमें ऋ क प्रथमतो सफेका दूसरे सतरका तीसरा पङ्क्ति मे जितवे हर्फ से पीछे गलती है सो हर्फ भी लिख कर फेर वर्ने लिखे हैं जिस्से विंदीये लगी है सोतो गलत ऋौसाफ है सो सही समझेंगे ऋो मरगनात् व देहात् की कैफियतमे हाल चथ ती लिखाहै सोतो दुवारह छपने मे ठीक होगा इस्में कहातक लिखा जावे॥

प्रथमभागतवारीखमें

मर्वनीचे) वैकुंठवासी॥(२ १६-०३ न) हैं हो॥(२-०७-२०न) हीं॥३-१-३२सो) मापदाको॥(३-६-२७डाएंको व॥३-११-२०ण) ठ पा॥ (३-१४ २०इ) नें वट॥(३-१७-३० के) सिवाय ॥ (३- २० - २१ ले) की॥ ३- ५- २० लु-) हुंइ॥(३-१४-२६ ही) युधमे ॥ ४-१-२ मा) म)॥(५-५-२६ ई) की॥(५-१४- लो) ग ॥ ५-१६-१७ वि) रा रुध॥ ५-१६-२० ने) से॥ ६-२-२१ ७ फें कू॥(६।६-१ व) मंग डाठा ॥ ६-६-२२घा) घसायरात् के महसल॥(६-१५-७ भ) ऋालाहुक्मसें॥(७-१२-३२ह्रे) इस्से भी है ॥८-२४ १८ है) ऋथतवारीखजो कि चड्वश ऋनिपगोत्र यजुर्वेद माध्यं— नी शाखा गुरुगर्गाचार्य थे ऋव शांडिल्यस्य है॥१०-१-२८ ऋ) न ठ॥(१४-२-२३ या) मोवश वेलीया भाटजोजागा इ०मेवा डमे कोनवइवा है ऋो राणीमगा द हाजा गा नोरवसेहै॥(१४-८-१२ह) इहा ऋप॰ नही धरलाटीखग धाव जत पाटो पाटिया जिके रजिद भाटी राव॥(१६।१६।३१ ही) इ०पमरोगो वरसानयू गटजेसल नदगाम रांनी सोटी राधिका ऋर्यदजादम साम॥ १७-८-२३ कु- द॥(१७-८-२७ सी) कागोगलीहै॥(१७-२२-१० पा) पुर हुई॥ १८-३-२ दा दे॥(१९।६-२१ मे वाराहो कू॥ १९-७-३२ इ) इतामे रतनु की वद्द भातो लाई सा याहरुवों को चोर वतानीथी पर देवरराजमूजो हू नहार था) थपड मारी कि मरजे हे वाभी इये हास चार ने दाने कि नाशेनवसभागिन हसबोली कि देवर थे मूरवा हुवा हुसो॰ इस्से सक होनेसं(१९-१२-१० वा) रट॥(१९-१९-६जी) पाव॥(२१-२- २२ ग) जेरां ज्या॥(२२ ८-५ मे) कोठा २ कोठार॥(२२-१४-२ ण) नें॥(२२-२०-१० फो) राजदेसंट का घर॥(२२-२२-१० हां) फर॥(२३-८-१२ ऐ) ऋावू फेरीऋाण॥(२४।७-१९ या) हुं नवे॥(२७-२०-२७ स) चूडाले विजेरावका॥२७-२१-५ व) परकोटामे पत्थर पै स काहैसो विक्रमसे ३३६ वर्ष पीछे भाटीजी से भाटका लिखते थे सो द्रे॥(२७-२१-१४ह) सं ऋ॥२८-२-८ आ) उस समय ऋमर कोटमे सोटा समराजी दानारी व ऋरतमे फरदही था उसं यधनी होने का॥(३०-२०-११ रे) श्री सिरोही से परनीज पधारे तव कुं ने धउ वा की सलाह से गढमे नही ऋानें दाया सो नलाव पैरह ऋा कहा कि गोला सरवता पांव गाऋ हीहु मा कि ३६।२२।२१ मण) थां पी॥(३०।२२।२३ ऋा) श्रा ति लोकसी की ऋगुली पगके ऋगूठे व ऋगुली के वीचमें लेकर तोडी सो तिलोकसीने सताम र्ये सोगन्ध करके देश छोडना चाहा तव दूजाजीने म्याफ मांगकर कहा॥—

॥३-१०-६ था) १दादूदाजीनें ॥ ७ में भुयंग कोपगसे रून्दाडा तो फूं भी नहीं कीया सो समस्या क री कि ॥ में जागंदे अंसलीयो-(हुंका) विषहर कुपर पाव सो छिसली धीमो तणी आवे खाव स्वाय॥ उनसे॥ ३६-२-२स) लारा नव परिदया सेपहचांन होकर॥ २६-२-३०ड) श्री बडसीजी हीलडे सो ३६-२-२६ या) जिसमें बादशाहनें भरी की चाडी से लिखाया था॥ ५१-२-१०पा) और उसे वहन मूजिब सबसामान देकर सुसराल गां० अमरकोट पोचाई ऊद॥ ५१-२-१७म) र कुम॥ ४६-२७-३ ण) जोलुइ चाके रह वास में है॥ २१४-४ रा) औ मना॥ ५१७-१२) जसवंत॥ ५२-६-१० द) जै दे॥ ५२ २४-२१व) ऐसे ही बीकानेर के लीये श्री करनीजी का वेण था कि मुगल से बुराई बीदासर पे फौज औ रगढ की मोल पाधा खत्री की दुकान व नींब के पेड का होना और दर्वाजा खुलना से राज का भख त्यार जावेगा सो हुआ॥ ५७। २५-६ डी) कल्याणपुर उ०)॥ ५६। ८। ६ जी) तंग दशा में भुसरार मौ जै नर्वर थे वहां कुं० अमर सिंहजी जन्मे सो आंवर भंडार ने द्रव्य मिला जब दान पुण्य करके जमी अत रखी औ०॥ ६३-१७-७ आ) जब सोढी सती होने आप दीया कि इस राज में निज स्वार्थी सुखी औ प्रभु स्वार्थी अन्त में दुखी होगा सो ऐसे ही हुवे हैं॥ ६४-१-१७ र) वमो को गुरु॥ ६६-१-१६ सं) १८ १७७८॥ ६७-२२-३३ व) दान॥ ६८-३-१६ से जो मा शाल भाई था॥ ६६-३-११म) दे ही येवं॥ ७१-२-६ स) श्री गजसिंहजी साहवों नें श्री रत्नसिंहजी साहब से पीछा दिलाया परं नावे उन्हे के रहा औ०॥ ७१ ७-१० डे) वेटके॥ ७६-७-१६ का) वेरा॥ ७१-८-४स) पंद इष्टमित्र॥ ७२-२६-२० कि) महासिंहजी के॥ ७२-१६-२६-र) मेंतो॥ ७७-६-३ज) सेकीया॥ ७४-२२-१० द, सफे ११८ ॥ ७५। ६-६ देवचंद॥ ७५ २०। १५ दे) बेडेर देवचंद॥ ७६ श्री देवीसिंहजी के महल खाने में कुदते हुं डाढे रखदी जो मिडेज घो हिनदे डिसदे हैं॥ ७८ श्री राणावतजी) इन का जन्म विहा विध्वा पन स्वर्ग वास महीने अषाढ ही में हु आ॥ ८०-४-२ ड) सो गां वासणपी सों॥ ८०-१५ १५ च) चौलेसिंह गवोलासि॥ ८०-२२-७ न) भूं पें वमूत॥ ८०-१-१० जी) कीतो सहा के वरावर औ सहा के नीचे॥ ८१-१३-२३ ए) तथा किसनगढ से मेहता माईदासजी भी इसी काम को सोगान व खरीता ले आये थे॥ ८१-२७-३५ हे) औ बूंदी इंदोर रतलाम भरतपुर वगेरह से टीका तो नहीं तहरीर जारी है औ डूंगरपुर विहाव कुपा परं तहरीर ख रीना की नहीं है॥ ८४। १३-२३ वो) से॥ ८५-१०-३३ जे) बीदासर ठा० बहादुरसिंहजी व॥ ८६। १-६ रे) सब सामान॥ ८६। १-१६ श्री) केशरीसिंहजी व श्री॥ ११३-१-४ ड) अरीकों॥ ८६-२-२४ या) सो यह हैं कि वशी अत नामा में श्री हल सूं सही कराय लिखाया है कि नथमलजी मुखतार व कोन्सल में दृष्टी रखे॥ ११३-२०-२४ ये) तव॥ ११४। १२ सुरु में) श्री केसलणजी॥ ११४-२२-३४ री) सो॥ ११५-३-२६ हे) औ १५-६-२७ के) परं॥ ११७-१२-१६ ड) औ जिंससे॥ १२१-२-५ तो) पूर्न कर्न प्रतीत उ० छप्प सीचाण इ क समय दोड कपोत दवायो।

॥(१२२. ग्रनमे) ऐसीहीनर्ह से श्री प्रभुजी कोवीनती करी· दूहा· स्वांग कीया विध २ सकल चौरा सी लख चाल कुसम कायनै। रीभकर भस्म नहीं तोपाल ॥ गै श्रीजी साहवोंके ५४ रईसो से मित्रता थी सो सब साहव सल्हा लेते थे॥(१२३-६) महारावलजी श्री वैरीशालजी साहवोंने रावलो तो की वेदी डोलेन देने कीमनसा से महाराज श्री प्रतापसिंहजी सहासे जो सं ४४ मे जेसलमेर आये थे सल्हा करी तो कहा कि हमने तो वेदी ग केठा को दी है जब श्री मानसिहजी की वाई का वि हा कुडले रावजी से देगमेकाण कि ग्रव राज ची वरावलोन सारी खे गिनायत को घरे वुलाय क न्या परनायदे =

॥भागदूसरा युग राफियादिहालानमें॥

॥(१२७-५-७ है) सो एक वर्नसे लिखा है॥(१२७-३-७ न) ग्र॥ १२७-२) श्रीजी साहवोने सेठजी को आवूजी पे वुलाये तो भी न आये॥(१५७-१३-१४ है) थली यीं मे अज्ञान मनुष नहीं चलता क्यों कि मार्ग चूके सो रेतमें दव मरे है॥(१६२-२३-१०) म्होर जात वेदी म्होर को ही ज दे है॥(१७०) सूना गां० की कैफियतमे) ख्वाडालमें गां २४ सो २० वरस ८४हुए थे सो दुरवस् सं १८६० से घटने लगे फेर सं ८८ मे श्री राना वतजी साहवा के धउ वाकचोलाने ग खीवलसरमे ब्र को हडो से पिछवाए तब सब गावों के नलाक कर निकलेव आप दिया कि हमारे गावोंमे घटेहीगा फेर श्रीजी हजूर साहव गा जेसराणे पधार कर पीछा वसाया पर घटने ही गये सो थोडे कालमे बीजही नहीं रहेगा प्र वापवधे है सो ८४ खेडे से जुदे है॥(१६९ सूना गावों की कैफियतमें) इन गावो के केलण विकनपुर रावजी की सल्हा से रूपावतो का कटक लाया सो वारुदा भोजराज मारे गये जब गा· वीराण हुरो सो जमीन दे कर वैर कटा गै दा जेठमलजीने पिताके वैरमें रावजी को ही मारा गै श्री दरवार से गांवो की सीमा ही निकलवादी पर केलण गावोमें नहीं वसे· राजकी रकम टीलाडा वुना तिशाला नजराणा ३ पीडी से वाकी ल्हेना है॥ सफो ८८ वाप स १६१ सीहडसर १६२ लाठी॥ ये तीनु परगना समूलही लिखा है सो नम्वर (न)(प) (फ) का जुदा है बीचमे लकीर खींच कर हासीया पर म कर्ना॥(२०० मे गलती जादे है॥(२०१-२६-२२रु) गाडे फी गाड जिस ॥(२०२ २१-२व) है॥ २०२-१५-२न) रामगढ ॥ २०३-५-२७र) घ॥(२०३-१८-२५ल) गुलावगिरने॥(२०३-२०-८न) ई नीनसर से तीनतक॥२०४-७-२१) हकहीं का॥२०५-८-२०तो) यो मा ख०॥२०६ १८-२७म) हा दा॥(२०७-२१-५र) खम वव॥२०७१८-८जी) केसहने मे साहवोने॥(२१०-१४-७ के लाव॥२१०-२७-६ज राजें॥(२१०-२१-४वा) काल्का अनिमेचोया॥(२१३-१७-६के) दगा गो रोरे की मो कनीरामजी के =

॥२१३-२०-१२स) वेंसे ॥(२१६-२१-१६ग्र) हैं मल ॥(२२४-८-९ली) पाले ॥(२२५-१९-१६ग्र) सीपा ॥(२२३ में खोटे बहुत हैं ॥२३४-१९-२७द) गांमें में चान ॥२३६-१७-१भी) ओसवालों को ॥(२४१-४-२ डे) पड़े ॥(अजायबवालोंमें) अथा पानी भी कमाल ही करते हैं कि ग्वाल व शिकारी तो जनावरों का खोज भारकर व पानी में से निकालते ही है और बाज २ सखस तो चोपाये की नसल पांच पुस्त का अनुराग व पस्म को चीनते हैं व १ पागीने चोर के हाथ का च न आटे में देखा था फेर कई वर्ष बाद उसी का हस्त आटे पै लगा सो देख के पकड़ लीया औ पशु पखेरू का खोज देख के नर मादा व गर्भ वती है ज्युं कह देते हैं औ बाज २ ऐसे भी है कि दूर २ गामों की निशानक शामें लकीर ज्युं बताते व जरूरत में संधि पर जाते भी है = औ ऐसे ही थे कित्सी का गान दूर से सुन कर उन्में कुंवारी पर्नी व हामला या विधवा वगैरह जैसी २ जिन्ती २ है कहते थे =॥(२५४-२१-१३न) सोनी खर्ची दर्जी जाते हैं १ औ चैतवद १ छालोडी की वाडी में श्री भेरूजी के थान मालियों का मेला व घूमर हुवे है सो पुष्कर ज्युं कि ॥(२५५-१०५स) नंकत ॥(२५७-९-६को) नांपे ला व ॥(२५८-२०-२४न १९१६ ॥(२६९-१५-३-ला) लीका ल ॥-(२८० अंतमें) दूहा - तत्व वेद ग्रह इंदु सन नियसित माधव मास लक्ष्मी वर सेवक लषम किय पुर्न इतिहास ॥(पुनः॥ ग्रह युग निधि अज सम मधु कृष्ण चोथ कुज स्यात् मतवाला मदसुगदमें छप कर भयो विख्यात (१८२ विक्रमपुर का दो इतिहासमें) १ रूहैं

तीसरा भाग मौलवीजीने ठीक ही लिखा है सोधना जरूर नहीं

॥ जमीजामें ॥(२-१-१९में) रहतीं न न रखा दी जावे ॥(२-४-८ह) नोकरी में रखे तो न न रखा दी जाय ॥(२-११-२२से) १९ आदमी ॥(२ अन्तमें) सोतनोट व ड० सिंध में हैं ॥(५ में नीमा नामी ॥ पंमें फोरें कोई ॥पं ३ में स्हर गैर रहरा सहरसे गोरहरा ।पं ६ में जांयगा जांयगा ॥ पं ८ में होतेहैं कहाते है ।पं ९ में भेजीटे भड़ेटा ।पं ११ में सची चधी ०।औ महा का पुत्र काक व चवन के आश्रम रहने से काकनय व चुंधी का न्हाला कहीज्या ॥ जमीमाने १ पिछला हाल में ॥(१-४-११ग) जों ज ॥(२-६ अंतमें) बुराई बडआई ॥(१-७-११ अहरवान ॥(१-१० अन्तमें) वमें वडे ॥(४-१६-२३ने) लगायां लीया ॥(५-४-२७ग) जों ज ॥(५-२१-१४च) भी ॥(६-२-१४क) ही ॥(६-१-२०सी) जौ न ॥(६-५ अंतमें) हैं की ॥७१५-११व) टींह ॥ आदिके सफा ४ तकमें ॥(२-१७-२० ही ॥(२-१९-२०गो) रें र ॥(४-१४-२६ज) तैं ह

४-१६-१२के, मताच सात चे ॥ पिछला हाल में ॥(२-४ अंतमें) ३-३ ॥(४-२०-२ना) वि व ॥(७-१२-५क) चि स: ॥५-१९-२के) थु ॥

मंडोर के राठोड राव रिड मलजी तो गढ चीतोड में मारे गए कु॰ जोधाजी भाग कर यहा आरहे मंडोर मे सीसोदियो का दखल हुआ था यहांसे फौज साथ देकर मंडोर लेदी जब जोधेजी कहा दोहा सुपहन वांगढ वैरसीपिड अरि देययरा प्रबोध। राव मंडोवर राखियो जेसरणा गतजोध ॥१॥ तवै कमधलखमरा सुतन नरपति माड नरेश। निजऊपर कर जोधने - दीध मडोवर देश ॥२॥ राणियों के नाम से मदिर सूर्यजी व रत्नेस्वर महादेवजी का व कूवा बूलीसर उरफ बूला वरांणीसर गढ में बनाया॥

१३० महारावलजी श्रीचाचोजी सं॰ १५०६								
१	राठोड॰	दूणभेकु॰	पेसाजी	गढईडर	१	देवीदासजी पाट	१	पेमकु॰
२	चौहानह डी	विलेकु॰	रावजेतसिंह जी	मांडलगढ				
३	राठोड	रूपकु॰	रावजोधजी	मंडोवर				
४	देवडी	विलेकु॰	रावसांईदास	सीरोही				
५								
६								
७								
८								
९								
१०								
११	सोढी	जामकु॰	राणप्रियाग	अमरकोट				

अवकाश

अमरकोट परनीजरा पधारे सोढां चूक किया दोसो भाटी साथ पिंडां स्वर्ग सिधाए कुं॰ देवीदासजी फौज कर गए राणा मांडण मए सोढा ५ सो कोंमार बैर लिया और गढ पाड ईटां लाय महल दरशार में लगाई पीछे राज वैठे और सोरांतावदारी महा-

१३१ महारावलजी श्रीदेवीदासजी सं० १५१३

१	सीसोदणी	दलकु०	रांणाकुंभाजी	गढचीतोड	१	जैतसिंहजी पाट	१	पंहोपकु०	
२	सोढी	सदाकु०	रांणासुजाणजी		२	बडसी			
३	झाली		राजाजोगीदास	झालावाड	३	भातल का भातलोत			
४	चौहान	दाडमदे	राव कांनड		४	पातल			
५	गोड		राजा मालदे	अजमेर	५	मदे का मदा	२	रामकु०	
६	चौहान	भांणकु०	रांणाजसवंतजी		६	ठाकरसी का ठाकरसोत			
७					७	रांमुं का देवीदासोत गाम सगाधरी में			
८					८	दूदे का दूदा गामढचरी याने सोंमेरी पर बेहद । वकु वाम्ह			सुजनराम
९									
१०									
११									
१२									
१३									
१४									
१५									

चानिया व बलोच मुल्क लूटे या पिंडा पधार १३०० को व फातदी भारी प्रवाडे जीते । वाहड मेरो व कोरडीयों को चश्म नुमाई करके महेचो से दंड वडोला लिया वहां ही खबर लगी कि राठोड राव बीकाजी — पूगल की ज़मीन में गढ बनाते हैं फ़ौरन वहां पधारे वीकाजी तो भाग गए गढ मिसमार कर किवाड तो वरसलपुर के दरवाज़े में लगाया तुलांर यहां लाकर सदर सायर में रखी — वाद पूगल रावजी श्री दरबार को तो धोखा देता रहा कि गढ नहीं होने दूगा —

मगर शक्ति करनी जीकी मरजीसे वीकेजी को मना नकिया जिससे ग
ढ वीकानेर वनगया ॥

१२२ महारावलजी श्री जैतसिहजी सं० १५५३

१	वाहडमेरी	लाछमदे	रावतरतीजी	वाहडमेर	१	कर्मसीजी दिन १५रा जवेठा	१	मानकुं० श्री रोही रावमालदे को परना या	
२	सोढी	सिणगार कुं०	वैरसी		२	लूणकरणजी पाट			
३	राठोड	सूर्जकुं०	रावतवणीदास	इडर	३	नरसिहदास			
४	झाली	जसकुं०	राजा भांण	नीवडी	४	म्हैरावण			
५	चावडी	रजकुं०	रावसावत	जसपुर	५	मंडलीक का जैतसी होत	२	वीरकुं०	[illegible]
६	हाडी		रावकान्हडदे	माडलगढ	६	म्हैराजका स०			
७					७	वैरीसालका स०			
८					८	प्रतापसिहजीका स थाट			
९					९	भानीदासका स०			
१०									
११									

भाटी सोढे बाहडमेरे मुल्क तो लूटे हीथे खासकर खरीगेमे नजैत शरसेकु
जी का घोडाही ले गये तो भी दरबार ने कुछ न किया कुंवरजी नाराज हुए नवा
बगलीखां पास खंधार गए और पगडी बदल भाई हुए इस अरसेमें बीकाने
की फौज आई शहर से ३ कोस त० राजबाई पर कई दिन रही फेर गाम सोम
ले आई लूटवार पीछी गई १ दिन श्री दरबार शिकार पधारे थे १ वहाला जहां
जीराणा है बाहडमेर रावत के तानेपर सं० ७० मे तलावकी बुनीयाद डाली
वजैत बंध वंधेका नाम दिया काम शुरू हीथा कि पिंडां स्वर्ग पधारे कर्मसी
जी गादी वैठे बाद दिन १५ के लूणकर्नजी खंधार से ८ सो पठान साथ लाए

कर्मसी जीको उठाय आपराजविराजे पठानयहांरहे सो सिपाही खनधारी मशहूर हैं ॥

१३३ महारावलजीश्रीलूणकर्णजी सं० १५८६

१	राठोड	हंसकुं०	रावजैतमालजी	गढईडर	१	मालदेजीपाट	१	रामकुं० जोधपुर
२	सोढी	नामकुं०	राणाकुंभकर्ण		२	हीगलीदासका रावलोत लूणकरणोतमशहूरथा -		मालदेजीको परनाया -
३	राठोडबीकी	अमृतकुं०	लूणकर्ण	वीकानेर	३	रायपालका स०	२	उदैपुर म्हाराणा
४	झाली	सूर्जकुं०	राजा चंद्रसेन	वीकानेर	४	सूर्जमलका स०		उदैसिंहजीको पर
५	सीसोदणी	शारसकुं०	महाराणासांगाजी	गढचीतोड	५	रायमलका स०		नाया
६					६	दुर्जनशालका स०	३	ऊमांदे जोधपुर-
७					७	शिवदासका स०		महाराजमालदेजी
८					८	दूदो-जीका दूदा		कोपरनाया म्हाराजकहींमितो भा
९					९	हरदासजी		रमली केवास्ते आसथे जिससे
१०								महाराजसाथन
११								हींगई नानारो-
१२								गढचीतोड जाबैठी सोमहाराजफोतहुआ जबरातीहुई

भाटी सरदार सायरके रुपये बांटलेतेथे सो कुजगारकर के सायर में आनाही बंदकिया । जैतबंध त्यार हुआ परन्तु कैलबना रहा जब गढमें कोठार भवराडा वडन खीरसर वीरसर विलावल अंनपूर्णा मेडी वगैरे वडे ही नामी बनाए । गुरु पलीवाल हरजाल था इसवक्त पुरोहित खेतसी खेतपाल के इष्ट से वेदी के नीचे गध्धेका मुंडबता नेसे पुरोहित गुरु हुआ सोहेई प्रतिष्ठाका मुल्कों में इश्तहार भेजा कि जोजो हिन्दू ज़माने की गर्दिससे मुसल्मान हुए है इस जिगपर आवेंगे हिन्दुकर लियेजावेंगे चुनाचे ऐसाही

हुआ और बाहरमेरसे रावतजी हाथो मे अठीयो डालकर हाजिर हुआश्री दरबारने फ़रमाया कि अंदेशामतकरो तुम्हारे तानेसे यह भारी कामतुरत-बनगया । बधके दूसरीतरफ़ बागलगाया सो बडाबाग वबाडी कहीजे है बध के नीचे रामाल नामी नालामे ज्यादेबारिशसे पानी भांवरखाय गिरनेकी अजब कैफ़ियत होती है और ज्यादे बर्षाकी सिफ़त है किवाडी भवरीये आई परन्तु बडी कवाहूत है कि बंधका पत्थर अनघडके कारण पानी निकलजाता है सो-रोकनेको अगाडी दूसराबध घडेपत्थरोकाबधाया परन्तु नरुका अबगौर करने से मालूम हुआ कि दोनोंबंधोंकेबीचमें पत्थर भरे है सो निकालकर बीचमे या अगाडी मिट्टी भरादी जावेजबरुकेगा तोहेवायश के सिवाय बागव बाडीयो के कूवोमें पानी ज्यादे रहनेसे बडा फ़ायदाराजव मालीयों वगैरे काहोगा इसकी लागतभी कुल ५ रू हजाररुपयेतक है जिस्मे तालाबबहुत खुदेगा व बाग भी मिट्टी गिरने से बधजावेगा सं० १९४१ मे इसकी तजवीज भीकरीथी परंतु कहतसाली यांने नहीं होनेदी रामनालकी हवा सरद व बाग़की सबजी आबू जीसे भी बढकरहै मगर जगह बहुत तंग है इसबाग का आंबजोधपुर महाराज मालदेजी वारगयेथे वदलालेने पूगलराव जेसिंहजी को भेजे सो मडोरके बाग मे ३ दिनरहे फेर हरपेड के नीचे तो १ कुल्हाडा औरऊपर १ कपडा रखकर चले आये गातहै कि वाढीयानहीअरू वैरावत ओढाडे कीधो उपगार तथा कोठारऐसे है कि जोधपुर महाराज श्री तखतसिंहजी साहिबांभी देखकर फरमाया कि ऐसा किल्लाव कोठार दूसरी रियास्तों मे नहीं है सं० १६०७ मे नवाबअलीखां जोश्रीदरबारके पगडीबदल भाई थे खंधार कूटनेसे यहां आय किशनघाटरहे औरकहा कि हुरमेरानी साहिबांसे मिलना चाहती हैं दरबार नेकहा अच्छा जबमहाजांन गढमे आई तो दगा था फौरन राणीयोंकृतलकीयें

और कई अधर्मीयों कोमारकर श्रीदरबार दो सो भाटी दो सो खंघारी १ सौ दूसरे लोग चारण भाट पुरोहित कामदार वगैरे साथ स्वर्ग पधारे इस अर्से में कुं मालदे जी बागसे आये नवाबको मारे बांका लोग जो बचे थे किल्लेसे निकाल दिये॥ गीत॥ अली बिना कुरा दुरंग आंगमें माल बिना कियम अली मरे॥ यह शाका आधा हुआ कहते हैं कि इसगढ में साढा तीन शाका होगा जिसमें १ मूलराज रत्नसीका दूजा दूजे सिलोकसी का और आधा यह हुआ १ फेर ज्ञानी जाने कब होगा पुरानी साखी है कि॥ हलचल दुनी हेकंप हुय होसी ईइका फेर। बाधो रूधो जावसी जादवां जैसलमेर।१। ऐसे ही साखी थी कि॥ आथुराण ऊगुणो पांचे कोसे गांव। ओपालटे ओमंडे सो जेसानगढ नांव॥२॥ सो तो मिली ज्यों ही सिंध की साखी मिली॥ के कारा के कहरा उभरेंदा जडें तडें सिंघड़ी तोंखो भूरा भेरींदा॥ तथा शहर मुल्तानकी साखी है कि॥ हंसपुर जगपुर सामपुर चौथ्यापुर मुलतान। बल्लभ जते घडेसी आरासूर मुलतान॥ अबकहते हैं कि॥ आथुराणउ ऊगुणो पांच को से गाव। ऐपालटे ओमंडे जैरो ओलापत नांव॥

१३४ महारावलजी श्री मालदेजी संवत १६०७

१	वाहडमेरी		राव पनराज	वाहडमेर	१	श्रीहरराजजी पाट	१	कनककुं०	
२	वीकीजी	राजकुं०	रावजैतसीजी	वीकानेर	२	भानीदासजी			
३	भाली		देवीदासजी		३	खेतसीजीका खेतसीहोत			
४	जोधीजी	सूजकुं०	राव मालदेजी	जोधपुर	४	नारणदासजीका नारणदासोत			
५	सीसोदणी	चैनकुं०	राणाउदैसिंहजी	उदैपुर	५	सेसमलजीका सेसमलोत य- मालदेपोत			
६	सोढी	नवलकुं०	राणा सूर्जमलजी		६	नेतसीजीका नेतसीहोत गाम	२	सोनकुं०	भीमजी
७	देवडी	जैतकुं०	राव हमीरजी	सीरोही	·	रतनसियसी			
८	चावडी	मांणककुं०	भीमदेजी		७	डुंगरसीजीका डुंगरसोत गाम पांचू रु० वीकानेर			
९	मेडतणी	लाडकुं०	ठा: जैतसीजी	मेडता	८	पूरणमलजी			
१०	चोहांन	पेमकुं०	रावमांडणजी	काल्याणपुर					
११									
१२									
१३									

मांगराकराव कोठार परधोलेर महलसे उत्तर घोडो का तवेला बनाया बीच में नालके पत्थर में लिखा है कि हाथरणी करावी मासेच्यारे नीपनी श्लोक निर्योरहस्त्यं पगार निच: राज ग्राही सर्व धना प्रधान. तथा खंधारी सिपाया को इतबारी समझ कर १ शख्स को गुप्त खजाने की कुंजीयां सौंपीं कि शिवा वक्त ज़रूरत के भेद न खुले उसने भी ऐसा धर्म रखा कि मरते वक़्त १ बेटे को वाकफ़ करता था कई पुश्तों बाद मूलचन्द राऊ वांनी ने बेटे को १ जगा जीते ही बतादी उसके कहने से म्हेतेजी ने भेमसे नीकपूर निकाला जब दूसरी वाकफ़ी न करी अब कोई वाकफ़ नहीं है शायद यह साखी मिलेगी ॥ पाघा और पघार बिच मो नई यालरवच्यार । कालयसे वूरी वाकरी कालयसे कारदकार ॥१॥

१३५ महारावलजी श्री हरराजजी सं० १६१८								
१	सोढी	चंपाकुं०	राणावणाभीर	पारकर	१	भीमजी पाट	१	गंगाकुं० बीका
२	बीकी	मानकुं०	राजाकल्याण मल	बीकानेर	२	कल्याणमलजी भीमके पाट		नेर राजा राय सिंहजी कोव
३	जोधी	हरखमदे	रावमालदेवजी	जोधपुर	३	भारथसिंहजी	२	चंपाकुं० राजा
४	मेडतणी	साहबकुं०	ठा विजेराव	मेडते	४	सुलतानसिंहजी		के भाई मथुरा
५	सीसोदणी	पेपकुं०	मराराणा माधोसिंह	उदेपुर				ज को परनाया
६	झाली	लालकुं०	राजामानसिंहजी	गढगूढे			३	नाथुबाई नाना
७	चौहान	मयाकुं०	रावनाडाजी	गढपावा				रो गढ जोधपुर रही-
८	वाघेली	म्होकमकुं	रावजसराजजी					
९	कोरडेची	किसनकुं०	रावपुहोमल					
१०	चांपावत	रूपमावत	विजैसिंह					
११	चावडी	सोनकुं०	राजसिंह					
१२								
१३								
१४								
१५								

कुं० सुलतानसिंहजी दिल्ली गए वादशाह अकबरशाह ने कसबा फलोधी मय परगने इनायत किया नेरावतचन्द्रसैनजी १० हजार सोनइयाले कर ठिकाणा पहोकरण गिरवी रखाया जिसपर जोधपुर की फौज आई सो हार के पीछे गई कोरडा रवालसे कर के फेर बाघजी को राणा थापीया। अमरकोट का राणा गंग को ज़ेर हुकम कर ताबेदारी में रखा सो जैसलमेर में हीफ़ोत हुआ। बाहड मेरों को नसीहत दी। घोलेर के अगाडी सतीयों के पगथ्यां ऊपर म्हेल बनाया सो हरराज जी का मालीया मौजूद है। तथा रवाकडीयों की हवेली शहर में बना दी॥

१३६ महारावलजी श्री भीमजी सं० १६३४

१	वीकीजी	फूलकुं०	राजा रायसिंहजी की वैन	वीकानेर	१	नथुसिंहजी ७ वर्ष का था श्री दरबार देवलोक पधारे रानी वीकी जी कुं० को लेकर फलोधी जारही चेचक याज़हर से कुवरजी फोत हुआ वीकी जी वीकानेर गई फलोधी में वीकों का दखल रहा यहां से तो वीकी जी के नाराज़ होने का लिहाज़ रखा जोधपुर वालों ने फलोधी लेली जब से मय परगने उनके कबज़े में है॥		छतरी
२	मेडतणी	लालकुं०	ठाः प्रतापजी					
३	सोढी	हंजूकुं०	ठाः राजसिंह					
४	महेच्ची	राजकुं०	रावल कल्याणमल	जसोल				
५	चौहान	विलेकुं०	राणा प्रथीराज					
६	वीकी	अजबकुं०	नाराहादास					
७		सुजानकुं०	राजा नारणदास	ईडर				
८	कछवाई	रतनकुं०	राजा भेरूदास	आंबेर				
९	राठोड़	हीरकुं०	राजा मानसिंह	किसनगढ़				

पिंडो सं० ३६ में दिल्ली गए वीकानेर महाराज रायसिंहजी के भाई प्रथीराज जी कहा **दोहा** दूजा राजा शाहरे कर में लेदारी॥ भारी भीम छोडायदी नवरोजे नारी॥ चुनाचे ऐसा ही किया कि वादशाह अकवरशाह ने नवरोजा लेने की तलाक लिखदी और कमदाए होडी मये किले बंसर व परगना किनारे

सिंधतक वरवशिश(करीसरहद्द का नामरगवलदंग हूनोजकहीजेहै तथा खिल्लत भारी व हाथी व घोडा तलवारकटार अता फरमाया । जैसलमेर में पका गढ बनाना शुरू कियाथा सो ३ दरवाज़ा सूर्जपोल व गणेशपोल उर्फ भूतापोल वरगपोल उर्फ हवापोल ववैरीशाल आदि ७ बुर्ज व कमरकोट वम्हलात वगेरे में ५० लाख रुपये लगे फेर आप दिल्लीसे पीछे पधारे जबकाम बंद किया कि दूसराकोई भी आवे तो मैं मैदानमें बैठा जवाब दे सक्ता हूं और दिल्ली का धनी आवे तो कैसाही गढ होरहसके नहीं फेर घडीसरपर नीलकंठ महादेव का मंदिर बनाया बाद मनहरदासजी ने ९२ बुर्ज पका कच्चा बनाय कुल ९९ बुर्ज से गढ सम्पूर्ण किया सो मौजूद है सानीन्हीं हुवरा का गीत है कि

गीत संसार कहे पतसाह साभलो शिरपाकडे निको समसेर आज बनै दुनियान ऊपरे मानकवर नै जेसलमेर ।१। कावरो गुर बड गातकलावत जग पुड नयरा पतीरा जोय गोरहरे सारीख निको गढ नृप मनहरसारीख नकोय ।२। वाहु प्रलव जोध अतुलीवल मोजस मद जादम मनमोय मान मरूर सिर हर मडलीका कोटा सिरें तिखुरणा कोट ।३। खाग त्याग मीरुता नवखंड जादमसारीखो जेसांरा मनहर तरणा भुजाडंड मोटा मोटा बुरजो तरणा मडारा ।४। ॥१॥ नगरथटे बादशाही फोज खान खानासाथ श्रीदरबार व बीकानेर महाराजकु० दलपतसिंह जी रहे सिंधदेश का बन्दोबस्त अच्छा रखा बाद हूं हरपाडीमें दरबार के भाइयों मेंसे कोई साहबनोवारी मे बनारहा आखिर मे श्री जसवंतसिंहजी के भाई हरिसिंहजी रोहडी से आए श्रीतेजसिंहजी को चूक वारके आप भी मारेगये की खबर पहुंचते ही उसदेश वालोंने २० थाने १दमनरा दिये ॥

महारावल कल्याणदासजी नामके राजा हुएकहवत है कि मनजांणो कल्याण
णो- अजां मंडाई अध- कु० मनहरदासजी राजकाज कीया

१३७ महारावलजी श्री कल्याणदासजी सं० १६८०

१		पाटमदे			१ मनहरदासजी			सुरदासजी
२		अमृतदे						
३	कोटडेची	मरघकुं०	करमसी	कोटडो				
४	मथेची	लाडकुं०	रावल दूदो	जमोल				
५	सोढी	सिरेकुं०	ठा: मानसिंह	अमरकोट				
६	वाहडमेरी		रामसिंह	वहाडमेर				
७								
८								
९								

१३८ महारावलजी श्री मनहरदासजी सं० १६९०

१	जोधी	उदेकुं०	ठा: केसरीसिंह	भाद्राजण	१ कुंवर नहीं हुआ-	१	उदेकुं० जो	जगदास
२	मेडतणी	सदाकुं०	ठा: केसवदास	रेयां	महारावलश्री		धपुर राजा	
३	सोढी	अतरंगदे	रांणा भोजराज	अमरकोट	मालदेजीके कुं०		जी गजसिं-	
४	चोपावत	सुजानकुं०	ठा: गोपालदास		भोनीदासजी के		हजी को पर	
५	कोरडेची	सींहादे	रांणा जोगीदास	कोरडे०	संगजी का कुं०		नाया	
६	पोकरणी		राव नीबाजी		रामचंदजी राज			
७	झाली	गुलाब	[illegible] सिंह		बैठा ॥			
८	बीकी	रतन	सुरजमल					
९								

जब श्री भीमकी रानी कुवर कोलेगई तो सीहड़ रघुनाथ व हमीर दुर्गदास वगैरे सरदारों ने श्री कल्याण दासजी से गादी बैठने का कहा सो नहीं माना और कुंवरजी रजू हुआ परन्तु जती खिलवत में था इसके हुकमसे बोला कि १४ वर्ष गढ़ में बाहर न रहें ॥ बलोच व बंगुलखान बिकमपुर राव के भाई हुआ वेरवो फ़मुल्क लूटे था । रवेत सिंहजी के बेटों ने राज लेने की सलाह बिचारी सो दयाल दासजी ने अर्ज भी करदी परन्तु रघुनाथ की सलाह से दयाल दासजी को बाडी मे चूक कराय- पगके अगूठे से खून का तिलक किया कि काके जी के राज तिलक की मन में थी इससे राज का हक़ सबल सिंहजी का बाजिब हुआ कि मनहरदास जी पगायता दिया ॥ वर्ष १४ के बाद मनहरदासजी पिंडा नाचणो पधारे त० राज बारीपर ५ सौ बलोचों सुधां बंगुलखां को मार मामे सादूल व भूपत रवावडीये का कि जो दिल्ली से आते को बंगुलखां ने मारे थे वैर लिया प्रवाडे जीते दो सौ भायी मरे ॥ फेर- लो हर ४ तर्फ पका बन्दोबस्त रखा उस जमाने मे तरफ़ पूर्व कोस ४२ गाम मडले से अगाडी बारह का गाम व म्हैरु वनाला वगैरे व ओठोनीया उच पधरा सांस्न दिये और दक्षिण कोस ४४ गाम हरसानी से आगे तथा पश्चम कोस १२५ सिंध मे रावल दंग तक व उत्तर कोस १२५ किले देरावर व पूगल का इलाक़ा और बीच में कमो वेश याने बाहडमेर जूना पारकर वगैरे २ तक दखल इस राज का था सो आईन अकबरी में लिखा है और हर परगने में बहुत से गाम बसे तथा गाम नीवाण मकानात वगैरे जरीद बनाये बाद हर पीढी में घरकी फूटके बाइस फ़ लोधी पहोकरण आदि बहुत सा मुल्क कबज़े से निकलता गया हां श्री

गजसिंहजी साहिबों के इकबाल से किषागढ व शाहगढ मसबछिया-
छोड़ घड़सीया व घोटड़ु पीछा आया जिसका हाल मौके पर लिखा है ॥
गढ में महेलात व घरसीसर में सर्वोत्तम भवन महल व बडे बाग में रानीजी के-
नाम से कूवा मानसर व महल बनाये जोधपुर वालों ने बादशाह का फ़रमान-
भेजाया कि पहो करा पीछी देदो मगर जवाब ही नहीं दिया सं० १७०४
में स्वर्ग याने बाडी पधारे तो वह जती सूली डूंगर से सवारी देखने लगा उसी
जगह खडा २ मरसिया कहता २ ढाई महीने में मरा सोरठा कर २ भगवा-
काप देखालो किरा नु देवां मन भग वों माबाप कर ग्यो राव कल्यान उत
॥१॥ इस वक्त सबलसिंहजी तो नानेरे किशनगढ महाराज रूपसिंहजी
पास थे रामचंद्रजी राज बिराजे ॥ डूंगरी निभसे खडीन बुज व मुहार दे
खकर कहा कि दोनों १ घर चाहिये जब छोटा भाई खेतसीजी ने पटा मु-
हार का नज़र किया ॥ इस ज़माने में ३ मंगरीया शबिरडी याने ४ फकीर वि
की योंने करामात दिखाई चुनाचे १ ने तो जो उसकी सांढी भारी चोर ले गये
राज से दाद रसी न हुई जब ६ महीने बाद त्रपोलीये के पास मालीया गिराने का
बोल निकलतां ही दीवार फटी फ़ौरन उसकी बहिन ने रोक दी सो चिराड़ मौ-
जूद है[※] दूसरे ने दरीयाव के बीच रेती का टिबा करके साथियों को बचालिया-
तीजे ने मौसम सरमा में जालीयां पे पीलु लगाया ४ ने तनाज़े पर कोभ महो
रांको देस पार कीया **बेत** एक बिकीयो इस बारी जैजां धोरे रम धकः है:
महङरारी जें दरीयाव में की ढिकः है: पनु वांरारी जें कुमधी कीमकः है:
जूणरारी जें म्हर लंघाया लक इन्होंकी औलाद के १००० घर २४ पांडो में
बिकीया मशहूर हैं ॥

※ नोट—यह चिराड़ (या दराड़) दीवार की नींव से लेकर ऊपर तक साफ़तौर पर नज़र आती है सेकडों वर्ष हुए बावजूद फटे जाने के दीवार को कुछ नुकसान नहीं हुआ हमने भी सन १८८९ ई० में इसको देखा था ॥ मः

१३९	महारावलजीश्रीरामचंदजी सं० १७०९									
१	सोढी	चांदकुं०	ठा भोजराज		१	सुंदरदासजी	इनस्याऊ	१	रामकु०	
२	पातावत	लछकु०	ठा॰ देवीदासजी		२	दलसाहजी	की पौसाद		बीकानेर-	
३	सोढी	अरजनकुं०	राणासनसिंघ	अमरकोट	३	चत्रभुजजी	कारेरावरया		राजाको	५
४	राठोड	पुरहादे	पा देवीदास		४	रायसिंहजी	सोगडीयासें×		परनाया	
५						×है औरमहारावलश्री मालदेजी केकु० षेतसीजीके दयालदास जी काकु० सबलसिंहजीराजबैठा-				
६										

सबल सिंहजी दिल्ली जाकर बादशाह शाहजहां से राजका फ़रमान लिखाय फौज ले आये परगने बाप त० सर पर लडाई कर पीछे गये जब रघुनाथ व दुरंगदास वगैरे सरदारों ने सबतरह लायक व वाजिब जानकर राज देने का बचन लिखा कासिद की भूल से कागज़ नराबत सबल सिंह के हाथ जोधपुर महाराजश्रीजसवंत सिंहजी को पूगा जब धोखा दिया कि फ़ोज साथ देवां जैसलमेर आपको आयां पहोकर्ण म्हांकी पाछी देदीजो फेर सबल सिंहजी यहां आय राज बैठे ॥ जोधपुर की फौज पहोकर्ण आई यहां दुराजे होनेसे मदद नहीं पूगी भाटी प्रतापसिंह खांपजैतसी होत जो किलेदार था ११ मनुष्यासे काम आया दरवाज़ेके आगे चौतडा मौजूद है पहोकर्ण में मय ८४ गामोके जोधपुर का दखल हुआ ॥रामचंदजीको देरावर भेजे इनके माधोसिंहजी २ के किशनसिंहजी २ रायसिंहजी से देरावर सिकारपुरके कुरेसीयाने दावद पोत्रे खांन फ़तेखांन लेली जब मौजे गडीयाले इलाके बीकानेर में आरहे रु २०) रोजका रायसिंहजी के रघुनाथसिंहजीके ज़ालमसिंहजीतक तो नवाब खांन ब्हावलखां दिया फेर भोमसिंहजी २ के बभूतसिंहजी २ के नथुसिंहजी २ के बूलीदानजी

में हनोज़ जारी है सरहद सिंध में दोहा सखर भखर रोहड़ी साकोरी सीयां । ओली रावल अमरसी पैली भरमीयां ॥१॥ भाई राजसिंह जी दिल्ली गया बादशाह आलमगीर याने औरंगज़ेब से फ़रमान लेने पहोकर्ण व फलोधी का हासिल करके बादशाह की फ़ौज साथ ले दिल्ली से चले रस्ते में नवाब से कहा था कि बडी जंग होगी परन्तु जोधपुर आया-तो राठोड़ दुर्गदास क़िला छोड़ महाराज अजीत सिंघजी को लेके पहाड़ों में जा रहे और राजसिंघजी क़िले में जाकर फ़ौज से लड़ मरे पीछे नवाब क़िले में दख़ल किया कई बर्ष तक जोधपुर व मुल्क मारवाड़ बादशाह के ख़ालसे रहा इस से पहोकर्ण व फलोधी में जेसलमेर का क़बज़ा नहीं हो सका कहवत सच है कि भाटी भोला है सो ऐसे बने हुए मतलब को खो बैठते हैं और सिरफ़ इरा रखीला पणो से बात रखणी व बहादुरी करणे-को ही भारी मतलब समझ रहे हैं ॥ रामानंदी साधु इरात रामजी सिद्ध को गुरु मान कर ठिकाना राम कूंड व मंदिर श्री रघुनाथ जी का बनाय सरणा किया सो हनोज़ है ठिकाने में महंत पालखी नशीन नंग रहे हैं तथा गऊ वों का दूध दही व पराया जावे बिलोवणा नहोवे वग़ैरे मरजादां बांधदी तथा लांगसर त० वरामदड़ो व भगतालाती नो रवडीन लुद्रवे के कुंवे रवन्नु के नज़दीक है पटे किया और इलाके जात के साधों पर हुकम व जुरमाना महंतजी का है तथा पुरोहित जेठमल व ब्यास पहोकरदास व भाटीया बस्तपाल व चारण देदा बग़ैरे इस मंडली में से बस्तपाल ने एक कूंवा व एक छत्री बनाया और देदे ने तलाव देदानसर नीव दकार म्हैता गोविंदा रायों को सुपरद किया सो भारी बन गया व बनता जाता है ※ और दरबार ने सिद्ध जी से बीनती कुंवर होने की की तो सिद्ध ने कहा कि ४१ दिन मेरे पास मत आना पश्च ठारवेही

※ इसी देदानसर तालाब पर जो जैसलमेर से मग़रबी गोशे में है महेता जी श्री नथमल जी साहब दीवान रियासत-व मुसन्निफ़ किताब हाज़ाने पुख़्ता घाट और उम्दा २ इमारतें बनवाई है जिन में सेयाह और साधू वग़ैरे आराम पाते हैं तालाब को भी महेता साहब मौसूफ़ ने औंड़ा कराया है चुनाचे बारह महीने निहायत शफ़्फ़ाफ पानी इस में रहता है ॥ मः मुरादअली

दिन पधारे सिद्धजी कोटडी मे मंत्र साधता था व तप मे भी धूजता था सो तप तो ओढने की गूदडी को दिया कि राजा से बाते करके पीछा लेलूगा गूदडी धूजने लगी सो इनोड़ पूजी जैहै और दरबार से कहा कि मी आर तक नही आते तो एक पुत्र प्रथ्वी जीत होता अब होगे तो १९ परन्तु एक देसी राजा र हेगा चुनाचे ऐसा ही हुआ ॥ रमता गुसांई हरबस गिरजी आए नाथों सेज्यादे सिद्धाई दिखाकर इकरार कराया कि अब किसी साधु अतीत वगैरे को यहां रहने से मनान करे इनके चेला लाल गिरजी महंत हुआ ११ पीडी हुई नगर हले हैं शहर से बाहर काज़ीका तकीया था जहां भूतेस्वर महादेव - स्थापकर मठ बनाया सो सहर ज्यारे आबाद होने से अब म्हांतों के पास मे है ॥ ता॰ अमरसागर का बंध व ऊपर अमरेस्वर महादेव का मंदिर व महे- लात व अमर बाव नामी बावडी व रानी जी के नाम से अनोप बाव वगैरे ठकोना सं॰ १७५६ में बनाय बडा दान पुन्य किया ॥ बीकानेर पर फौज लेगस

बरसलपुर विकमपुर राव माथणे दो लडाई जीते मौजे जजु तक हद सुकर्र करी थी और पूगल राव हाज़िर न होने से सज़ा देकर आयंदे ताबेदारी में हा- जिर रहने का पका बन्दोबस्त कराया फेर कोटडीया व बाहड मेरा हुकम- अदूली से पेश आए जब वहा पधारे गोशमाली करके कदीम मूजब ताबे दारी करने की नबिश्त लिखवाली - ॥ यई चात के चाले से रुघनाथ सी- हड को चूक हुआ घर लूटा सांढी दगाई जब पाली का गाम ८४ दानी वी- रान कर तलाक खाय रहवारी देस से निकले थे जब से आल के वंश मे रे बारण खांचाला चूडा नही पहरे है स॰ १९ १४ मे ठाकरो राज श्री केसरी सिंह जी- स्हाने बाघजी सीहड को भेजकर तलाक भजाय रहवारीयो को पीछा- बुलाय गाम रावते मोदे बसाय वर्गसोया फेर तो बहुत सा राईका देस मे -

आरह्ला तथा पापसीहड दीवालीका तिंवार नही मानते हैं कौमचारों की परवरश व खातर यहां तक थी कि १ बार कहतसाली में चारों करयक वारवाराह मेसरकारीबंगलेगय तो पिंडांपधार फीसद रुप्या वीस खुरी- कादेपीकीलीं तथा १ चारणा को वैरमें गामवेसाले के बाहडमेरे साहवेको मरवाया - अलाहाजुल्लकयास आखिर वसीयत में महाराजकुमार कोचारों वखिआया की भलांवरा दी -॥

	१५२ महारावलजी श्री जसवंतसिंहजी सं० १७५९							
१	महेची	रूपकुं०	रावलभारमलजी	जसोल	१	जगतसिंहजीकुं०पदरह- लतफरमाई १भाबुधसिंहजीपाट- २अषैसिंहजीपाट ३जोरावरसिंहजी- कागामसतोयरावलोत -	१	वदनकुं० उदै सुरराणासंगराम सिंहजीकोपरना या
२	सोढी	सूर्जकुं०	राणाजैसिंहजी	अमरकोट	२	सुरतसिंहजी का गाम भरूडीये सेः	२	सुरतकुं०
३	कोटडेची	रतनकुं० मासली	राणाहरीसिंहजी	कोटडे	३	ईसरसिंहजीकागाम लाठी -		
४	सोढी	राजकुं०	ठाःगंगदास		४	तेजसिंहजीवकुं०सवाईसिंहजी- पुधसिंहजीकेपाटवैठायागामलुहारपी		
५	वावडीयाणी	रंभाकुं०	ठाःसार्दुलसिंह	गेराव				
६	चौहांन	लाडकुं०	राणाराजसिंह	बाव	५	सरदारसिंहजीकागामथारीयेवमार- वाड मेरावलोतभगवानसिंहोत	३	इंद्रकुं०

औरसमगा

भाटी व सोढा मुल्क लूटने वहुकमअदूली करने व अनीत चलने में धुंधमचाई जब अव्वल तो भाटीयों से सोढा नारणोतों को मरवाया बाद भाटी वलूद्वाको त-व अन्चले महासिंह सूरजोत व पीथे पचांनोत व दुर्जन का नरामोत व काम लके सोत व मूलचंद राजसिंहोत वगैरे कोलो त० सरपर केलणों व रसीगों से और तेजमाल रामसिंहोत को गाम हाबूर में वफात दिराई और उदैसिंह राम सिंहोत सरसे भाग निकला भीलमाल वगैरे के भीलों को साथ लेकर मुल्क लूटता रहा फेर रामकुंडा के महंत इशतरामजीरी मारफत कदमेंलगा ॥ खेड के राठोडों को शिकस्त दे फौज खर्च लिया - बडा कुंवर जगत सिंहजी के ३ कुं० हुए पीछे सातवीं शादी उदैपुर महाराणा जैसिंहजी की पुत्री सुर्जकुं० से हुई

वहांरावासमें कुवरजीके तसवीरकीतारीफ़ हुई कि मानो कामदेव को अवतारहै जब महाराना जी बोले किऔर तो सब बातेंठीक है ठिकानाकदीमीहैई पर रिजक थानेखजाना नहीं है जिसपर कुंवरजी ने गामकुल धरो के पलीवाल पर १ कोठे रोलाख रुप्ये की हुंडवी लिखी राणेजी साहिबो डाकवैठाके ओठी भेजा तो पलीवाल कही-मेरी मेवाड मे दुकाना है वहा ही रुप्ये लेलेते इतनेके लिये यहा क्यो भेजा मगर खैर जिससिकेका हुकम होलेजा वो कोठडीखोलकर रुप्ये दिखाये ओठीयो पीछे जाकर अर्ज करी तो महारानेजी फ़रमाया किऐसी रईयत है सञ्चा खजाना उनका है पीछा पधारकर कुवरपदों मे महल बनाये थोडे ही दिनो मे स्वर्ग पधारे ३ कुवरानी दो खवास-स्ती हुई ॥ महता अर्जन सिंघको जोधपुरकी मदद भेजाया पर रिसाके वीचमे-डेराकर अव्वल महाराना जी वालो उदैपुरसे मिला फेर महाराजा जीसे मिलकर हिकमत अमली से दोनो रईसोंकी सुल्हे कराय आया पीछे से भेद खुला तो दोनो राजावो ने अहसानमानने का खरीता भेजा जब अर्जनसिंह को दीवान किया ॥

ओदरबारका देहात हुआ जब तेज सिंहजी ने ईसरसिंह जीसे कहा कि वुधसिंहदाव रहै नाजरो डावडियो का हुकम उठाईजे नही आपराजवैठें इन्होने इनकार किया तो आप मुंह धोया लेकिन सवारी साथवाडी गया पीछे से वुधसिंहजी राजवैठे जब तेजसिंहजी वागी हो वाव्डीसेवाला ७ सिंधमें जारहे और देसलूटते थे ॥

	१९३ महारावलजीश्रीवुधसिंहजी स० १७६७						
१	सोढी	रुपमाव	नहारषा			कुंवरनहींहुआ			फतेसिंहजी

वाद १७ सालके तेजसिंहजी गामकुलधरो से अस्नी लिखी कि कसूर माफ करावे व महेताजी आकर बचनदे तो कदमे हाज़र होए जब अर्जन सिंहजी को भेजा सो जिंदा मारकर पीछे सिंध चले गये फेर दो वर्ष वाद भीतर से वुधसिंहजी को जहर हुआ और तेजसिंहजी आपराजवैठे सो नावाजिव जानके देहडी भरासे काका हरीसिंहजी आये

श्री अखै सिंहजी को राज बैठाने की सलाह विचार सं० १८ आषाढ वदि १३ घडसीसर
पर तेज सिंहजी को चूक किया जबसे तालाव की पाल से श्री दरबार नहीं पधारे हैं हरी
सिंहजी भागे पीछेसे नायक लखा पहुंचा श्री तेज सिंहजी के चेत होने से कहा काकाजी
मरे नहीं पर जांमडे जाकर फरारी दिखाई से पहिले ही गाम मूलाने में मारे गये और तेज
सिंह भी फौत हुए बाद कुं० सुवाई सिंहजी राज बैठे जब अखै सिंहजी भागे गाम छोड के
पास घोडा थक गया सो छोड के वड के पेड पर चड बैठे और दरबारी कुसला वगैरे जा पहुं
चा मगर पिंडा की तपस्या व कुसले की खैर ख्वाही से यह तो पीछे चले आये पिंडां पै-
दल गाम खूहडे के डूंगर में जाकर पोकर्णो शिवदान को बुलाय लाखसा के खंधे स
वार हो साकडे पधारे जबसे पोकर्णा कहते हैं कि ऊंठ हां साकडे से मौजे ऊजलां हो
कर घाटे में जा रहे फेर १ बर्ष में सरदारों के लिखने से पीछे आ राज विराजे भेर घाव सु
नते ही सुवाई सिंहजी हाथ बांधकर हाज़िर हुए तो १ महल में रहवास दिया थोडे ही अर्से
में सरदारों की बेवकूफी के कलाम पर देवीकोट से यहां पधार सुवाई सिंहजी को सुधाम
भेज सवा सब पीछे गए सरदारों से कहा कि चाहो सो कर सको हो सरदार समझकर -
डरे और आजज़ी करने लगे फेर तो मुल्क का बन्दोबस्त व रिआया की परवर्श खातर
ख्वाह करते रहे   १ बकरे की चोरी पर ही पिंडां को शिक्षा करके मुद्दई की हक़रसी व चोर को
सज़ा फ़रमाते थे जिससे मुल्क की सरसब्ज़ी व रिआया आसूदह हुई और चोरी धाडे
का नाम ही नहीं रहा परन्तु पहिल बखेडे रहने से सिंध का मुल्क बहुत सा मियां क-
लोडे ने दबा लिया ॥ राथा रावलोत दौलत सिंह के वैर में चेला सरपर सुंदरदास
वगैरे सोढों को मारकर कहा कि उनके भाई में हूं फेर राजासिंह की बेटी परनीजे-
और शादियाने बजवाये ॥



१५४ महारावलजी श्री अखैसिंहजी संवत १७७९

१	सोढी	वनेकु॰	ठा राजसिंहजी	
२	से॰	भीमकुं॰	राणा हमीरजी	अमरकोट
३	कोटडेची	सरूपकु॰	ठा॰ भैरूंदासजी	कोटडे
४	सोढी	वषलकुं॰	से॰	खुहडी
५	महेची	वदनकुं॰	रावत अजरसिंह	जसोल
६	जोधी	सरूपकु॰	ठा॰ सूर्जमल	पारोधी
७	चौहान	सोनकुं॰	राणा पचाराणजी	चाव
८	से॰	लालकु॰	ठा॰ मानसिंह	होथीगा
९	जोधी	फूलकुं॰	महाराज भजीत सिंहजी	जोधपुर
१०	कारमसोत	वपलकुं॰	ठा जसकरनजी	तांतुवास
११	सोढी	रगकुं॰	ठा॰	लाखधीर भाले
१२	सोढी	हरकुं॰	इसरदासजी	
१३	बाडमेरी	वनेकुं॰	रावत लालसिंघ भारावत	बाडमेर
१४	सोढी	वगुकुं॰	मनवरदास	
१५				

१ श्रीमूलराजजी स॰ १८०२ मे जन्म
२ परमसिंहजी - स॰ १८०३ जन्म गामरांटे
३ खुसालसिंहजी
४ रतनसिंहजी गामलाठी ग्रा॰ गुमानसिंहजी के गोद विराजे

१ अमरकुं॰ नागोर महाराज वषतसिंहजी को परनाया स॰ १८०१ जानमे पनरे हजार लोक था पिण लैंगे परणा मिटा होगये ॥
२ चांदकुं॰ वीकानेर महाराज गजसिंहजी को परनाया ॥
३ औरवनेकु॰ महाराजकु॰ राजसिंहजी को स॰ १८१८ में परनाया स॰ १९ मे आंणो आया
४ किजैकु॰ जोधपुर महाराजकु॰ फतेसिंहजी को स॰ १८१२ मे परनाया स॰ १७ मे आंणे बुलाया ॥

पाटपरोहिताई वालजी कोरीजवसे वालजीके पोते पाट पुरोहित हैं वीकानेरसे वाहुराज चांद कु॰ व भारीज अजवासिंहजी सं॰ मे यहां आरहे जोधपुर महाराज श्री वरवतसिंहजीका जनाना व कुं॰ किजैसिंहजी तो यहां आरहे और श्री दरबार वहां पधारे सो पिडां तो गढका वन्दोवस्त रखा और महेता फतेसिंह को श्री वरवतसिंहजी के साथ भेजा सो दखिणायो सेलडाई मे मुडवे पर काम आया इन्नी मौजूद है सुंदकर्ई मे जोधपुर सेगाम हरसीयाड़ा रूप्ये पाचहजार का मिला था ॥ वाहडमेर वे ठा साहिबको

बिकमपुरराव हरनाथसिंहजी के वचनों में बुलाकर मरवाया था जबसे कहवत है कि वचन जिके रावजीका इसबाबत महाराजबखतसिंहजी राठोडों से रावजी की निसबत इशारा किया कि यह वह है रावजी अर्ज करी कि धणीके हुकम से बापको भी मारने में दोषनहीं महाराज साहब सुनकर चुपहोगये पलीवालों साहूकारों वगैरे रईयत से सालियांने के रुपये लेने की तादाद बांधदी मनमते का लेना छोडा सिक्का महम्मदशाहीथा सो अखैशाही संवत १८१२में मशहूर हुआ इसका हाल टकसाल के जिक्र में लिखा है मोजे गिराव में कोट दवे साले तथा सेतराउ में गडी बनाई और सं० १८१४ में धनराजोतों को खारज किया सो महेवे गया अब आरंग में है और कोरडा खालसे करके सं० १८१९ में स्वर्ग पधार्ता जेसागरसिंह व चीरम को पीछा बखशा और आधी पैदारालमें लेराणी कर धिवमें कचेडी कारायहाकम रखा फेर गरीबनाथका थान बनाया तथा नागुडदांके नाथको नवरात्री का लगमांन आसबा बडी के नाथां मूजब करा दिया सो हनोज जारी है तथा डाहाली में मोटेजी वफजको गढी बनादी ॥ और चौहोटरिणायां ने खोरवरों का विगाड किया जब पिंडां पधारकर सजादी फेर तावे दारजान कैद में लगाया और श्रीवाकलका थान बनाय दूधवी नाडी खुदाई केलामे घराज के बिखे में चाकरी पूगाया सो केले हेमराज की वदली में सेठ कियेव कुंजांनेमें घरे पधार कुरबदिया ॥ बिकमपुरराव हरनाथसिंह फोत हुए बाद कुंभकरणजबरनराव हो बीकानेर से साजिश रखने लगा सं० १८२६ में कुंभाको वफात दे कोरखालसे किया सं० १८ में सरूपसिंह लाडखानोत को दिया ॥ खुदाआबाद सिंधका कलोडा मियां नूरमहम्मद बेटा यारमहम्मदका सं० ११६७ हिजरी तारीख १२ सफर मुताबिक विक्रम सं० १८१० में वहुतसे फौजले आयाकि जेसलमेर व जोधपुर लेही गा शहर से ७ कोस गामनेहडीये आतेही सवारी का घोडा मरा फेर मिये के पेट में दर्द हुआ श्रीतेमडेरायके भोपों से कहनेलगा कि बीवडीयां झल्लो और चावो सोलो मेपीछा जाऊंगा परन्तु मरही गया जनाजाले फौज पीछी गई की खबर आई जब महाराजकुमार श्री मूलराजजी रस्तेसे लौट आये

हवापोल आगे त्रपोलिया ऊपर अखैविलास महल व राड विलाव अखैपोल वगैरे मकानात शहर में व मंडप वाडी मे और गढो मौजे देवे वरवा भे मे बनाया ॥ वाहडमेर से जो सीमा चोरो को बुलाके गाम टेहीये व लुद्रवे मे वसाये कि देसावरी मालकी कीतारी काहू खरईयत को नहो ॥ राजबिराजे जवगढ व मुल्क के सिवा खजाना व सामान कुछ भी नथा क्योंकि मुद्दत तक राजमे गडबडरही जब ईसरी सिंहजी वगैरेने खूब हाथ माराथा सिरफ हिम्मत व होशियारी से लाखों रुप्ये बालाई खर्च होने पर भी आगला कर्जा उतारा और सब तरह का दारु व सामान के सिवा खजाने में २५ लाख रुप्ये नकद छोडकर वैकुंठ पधारे ॥

१४५ महारावलजी श्री मूलराजजी स॰ १८१९

१	चापावत	रुपकुं.	ठाःसिरसिंह	
२	कोटडेची	फूलकुं॰	ठा॰वीरमदे	कोटडे
३	चौहान		राणा जैसिंहजी	वाव
४	चापावत	फतेकुं॰	ठा मानसिंहजी	पहोकरण
५	जाडेची	लाडकुं॰	ठा नथराज	पाटोधी
६	मेहेची	साहिवकुं॰	ठा ईसरसिं	जसोल-
७	जोधीजी	रूपकुं॰	राजा बहादुरसिंह-	किसनगढ स॰१८२९
८	सोढी	मयाकुं॰	ठा सुलतानसिंह	
९	चावडी	सुमानकुं	ठा रुघनाथसिंह	
१०	कोटडेची	सिरेकुं॰	ठा. दुरजनसाल	कोटडे

३	१	श्री रायसिंहजी स॰४०मे दाई महीना राज किया - महल १ वाहडमेरी २ किसनगढ महाराजकी पुत्री सं॰१८२९ कुंवर १ अभैसिंहजी २ जालमसिंहजी	१	रामकुं॰	सरदारसिंहजी गो॰ अर्जनसी - सालमसिंहजी
५	२	लालसिंहजी नानेरे घोडे से गिरमरा	२	मूहाकुं रतलाम के राजा परमसिंहजी को	
८	३	जैतसिंहजी के परिवार-कानकशानीचे लिखा है	३	कल्याणकुं रतलाम कुंवर प्रतापसिंहजी को सं॰१८४७ मे परनाया	

पासेवाना आठ पावा मटु जीउ जेठा अभु मूलां हस्तु सहजु

ख्यातों के देखने व बातों के सुनने से साफ २ जाहिर है कि हरपीडी मे राजके धणियों को भाटियों की परवाह व मुल्क की तरक्की मे हद से परे को शिश की है और भाटी मुल्क बरबाद करने या नेराजको रंवागत देने को लिये जमीन दूसरे राजकी करते रहे है खासकर इस वक्त में तो राजही

गमानेतक नौवत पहुंचाई थी कि सरदार तो मुल्क लूटणे में यहां तक रहे कि छोटा भाई खुद
पदमसिंहजी भी बगावत का डंका बजाते थे ऐसा मौका पाकर पडोसियों ने मुल्क दबाना शुरू
किया चुनांचे देरावर का जागीरदार जो न्यारो राजसमझता था यह देस लूटने व आपका वंदो
वस्त रखने को दावदपोत्रे नोकर रखे थे उन्होंने किले देरावर व मुमरा वाहनव वींझरोट
व मरोट वगैरे लेकर सं० ३० में नहवर तक आपहुंचे और केहरांणी दावदपोत्रे बुटे बहादुरखां
ने दीनगढ नामी किला इलाके दाज़ा में वनाकर कसवा आबाद किया था और अमीरान सिं
धने पश्चिम ४० कोस पर चानराव की जगह सं० ३२ में किला सहागढ व परगने में घडसी
या बछीया छोड तथा म्होरावरी में तले घोटडपुर कोट घोटडु सं० ४७ में बनाकर बहुत सा मु
ल्क दबा लिया था और इधर जोधपुर वालों ने भाटीयों के चाले व कोटडीयों की वदमाशी
से सं० १८२६ में परगने शिवकोटडा व सं० ३७ में रवावडीया रावत धनराज की बेईमानी-
से कोटगिराव वगैरे में यहां के हाकम म्हांता भानी सिंह को निकालकर कबज़ा किया यहां
से फौज गई तो महाराज श्री बिजै सिंहजी ने आधदेणा किया मगर कई बर्षों के बाद महारा-
जकुंवर व भाटियों के फितूर रहने से उन्हों का दखल जम गया हरचार तरफ से मामला गौर-
तलब हुआ जिससे फौज करनी व जफा फुरसत पर मुनहसर रखी और अव्वल भाटीयों को रस्तेपर
लाना विचारकर सं० ३८ में विकमपुर राव सेरसिंह को जो बीकानेर की हिमायत से हुकम अदू-
ली करते थे पिंडा पधारकर स्वर्ग भेजा और नहारसिंह के वेटे जूझारसिंह को राव किया दूसी-
तरह दूसरों के लिये भी मनशा थी पर वाज़ों ने और ही बढकर हरामखोरी की कि सं० ४० में मकर
शंक्रांति के रोज़ भाटीयों के बहकाने से महाराज कुंवर रायसिंहजी महता सरूपसिंह को-
मारकर राज बैठा श्रीदरबार को महल छवा निवास में कैद कीया बाद महीने ढाई के सरदार-
आपस में फूटे गाम बारू ठाकुर अभै सिंहजी के कुं० मेघजी साथ जंझून आली वगैरे कई सर
दार व तरोट के उनड व धांरांणी के वंभे वगैरे ने श्रीदरबार को राज वैठाया और कुंवरजीव-
कई सरदार वागी होकर मुल्क लूटने में धुंधमचा दी सं० ४१ में पूगल पर बीकानेर ने कबज़ा-

किया अगर चेराजजी ने तलवार नही बाधी बलकि फौज आई जब कजकर काम आये पीछे गढ-
रवालसे रहा सो सं० ४१ में सरदार कदमे लगा बाद स० ५३ मे कुवरजी को जोधपुरसे बुलायापर
दुतरफा मनरवा मिलने नही दिया कोर रेवे मे जारहे तथा भं वरम्भेसिह्जी व जालमसिहजी
को बाहड मेर पिडा पधार बरमाशो को सजादेकर सायलाय कोट रामगढ मे रखे सो नोहीने
रहलत फरमाई तो श्री दरबारके दिलमे कुंवर व भवरो के दुरव व भारीयो के फेल से ऐसी नाउमेदी
गालिब हुई कि मान्त्रकारखाने राजके अहल होगये खुलासा हाल टाड नामेमे है स०४०मे व्या-
स मनजी दास जो बेगडे वेया के श्री पुज्य के सिस जो वसका अचल दासको अहमदाबाद श्री
पुज्य पास ५६ बिद्या सीरवणे को भेजा श्री पुज्यने इष्टके परताप ब्यासजी को देरवते ही-
नामसे बतलाया फेर कुंड ली देरवकर नृपव कुंवर व दीवान की थी ज्योंही कही कि दीवान-
को तो मार डाला नृपको केद कर के कुंवर राज बेठा है परन्तु राज तो नृप ही करेगा कुवर की
उमर कम है पीछे व्यासजी को विद्या सिरवाई सो वन रही है ॥ महाराजश्री विजै सिह
जी के डर से भंवर भीम सिहजी व चापावत सुवाई सिंहजी ठा. पहो करण जोधपुरसे भाग
कर स० १८४९ मे यहां आये श्री दरबार ने बहुत खातरदारी से रखे और कहा कि आप तुर्त-
राजा होगे सुनाचे छ महीने मे महाराज के फौत होने की खबर आई जब भीम सिहजी को श्री
रायसिहजी की बाई सरागारकु० परनाय साथ जावले के जोधपुर पहुचा राज व नविश्तलि-
रवदी और धा भाई सेरसिंह को रख गये थे कि शिवबोटडा गिराव आपको पीछा लेलें-
जिसपर यहा से म्हेता भानीसिह को भेजा सो गिराब की गडी पाडी फेर रावत जीवराज को
पीछा कायम कर सक बुरज व सक कूवा करादिया और शिवमे भी हुकाम मुजब कब्जा होता
ही पर० जोधपुरसे श्री मानसिंहजी तो गढ जालोर मे जारहे और राठोड सरदार सब बागी-
हो यहा अरजियां धर्म इष्ट बहुत सी लिखके भेजी कि आप की मददसे बचाव होगा और आ-
पका परगना व गाव पीछे देवाया हम महाराज का सलाम करेगे जब श्री दरबारने बीकानेर
महाराज श्री सुरत सिहजी को भी सलाहमे शामिल करके खातरी का जवाब भेजा या-

और कहलाया कि श्री मानसिंहजी राजा होंगे तथा श्री मानसिंहजी को भी दस हजार रुप्ये खर्ची बारह मयाराम साथ भेजकर यही कहलाया था इस सबब से उचार खाली गया कि घोरवे में आके शिव से फौज पीछी बुलाली पीछे संबत ५१ । ५२ में चोडावत बहादुरसिंहजो धपुर का थाणा गालाया और भीमसिंहजी साहब अहसान व अपना वचन भूलके यह बदला देना चाहा ॥ कि फौज भेजके जैसलमेर हीलेलेना मगर नियत का फल मिला कि सं॰ ६० में फौत हुए श्री मानसिंहजी सा॰ राज विराजे ॥ जोधपुर की फौज अमरकोट स्वाय पीछी आती गाम बीझोराई लूटी जब यहां से फौज गई सो गाम सावरीझ लूटकर मंहे चांव गैरे से फौज खर्च लेवा हडमेरों को भी गोशमाली करी ॥ पुष्टिमारग श्री वल्लभकुल के सेवक हुए जब मेशा-हर में श्रास्नराम पुष्कर्णां वसाचोरे और महेश्री भाटीये वगैरे श्री हरराय जी की आष्टी हुई और श्री गिरधारी जी आदि शेवापधरायने ग वगैरे म्रजाद बांधी ज्यूं ही होवे है ॥ तथा जीवदया-ऐसी रखाई कि नवरात्रि में देवी की पूजा में भैंसे व बकरे बेतादाद होते थे सो सिर्फ एक महिष व कई बकरे के सिवा मारने की तलाक वतांवा पत्र लिखकर रईयत को सोंपी ॥ श्री नाथजी का दर्शन सं॰ १८५० में व श्री गंगाजी पर सनूं सं॰ ६५ में पधारे: जोधपुर महाराज श्री मानसिंहजी से मिलना हुआ और आपस में बहुत ही मोद रहा भंवरजी श्रीमहासिंहजी के तीसरे कुंवर-श्री गजसिंहजी को बलंद अकबाल जानके सं॰ ६१ में युवराज कर कुंवर पदे बैठाये बाद राज पर तबीयत रजू हुई और सं॰ ७२ में पेशीनगोई करी कि ७ ही कुंवरों की जन्म कुंडली देखकर फ़रमाया कि नम्बर १ । २ वैष्णव होंगे ४ । ५ का आयु कम है व ६ । ७ राजकाज करेंगे ज्यूं ही हुए व्यास लखमीधर को दिल्ली भेजा सो साई मुशतवाले आया सं॰ ६६ में फौज रवाना करी तो फजर अली खां वल्द बहादर खां यहां आय रुपये ५० हज़ार किलादीनगढ व २४ हजार में सामान दीया जब किसनगढ नाम रखा श्री लक्ष्मीनाथजी का मंदर बनाय कोट में थाणा का-यम करके फौज नहवर गई ५ महीना लडी किला कूटने पर था इस अरसे में खबर लगी कि दिल्ली आगरे वगैरे मुल्क में सरकार अंगरेजी का पक्का अमल हो गया है यह सलाह ठानकर फौज

पीछी बुलाली कि अहद नामा करके जितना मुल्क गया है सरकार दौलसमदारकी-
मदद से सब पीछा लेलैंगे ॥ भाटी दौलता सिंहजी वथा नवी मोतीरामजी को दिल्ली
भेजे सं॰ ७४ मुताबिक सन १८१८ दिसम्बर ता १२ सरकार दौलतमदार अंग्रेज-
कम्पिनीबहादुरसे अहदनामा जनाब नवाब मो अल्ला अलकाब मारकुइस आफहेस
किस्त गवर नरजनरल बहादुर के हुकमसे चार्लस व हाफलस मटकलफ साहब बहादुर
टिगज़ ॥ रियाया परवरी का हदसे परे खयाल था व्रसनो आदि शहर के मात्रकौमो मे
लेन देन व्यवहार कजगे ज़मीन के झगडे व शादी गमी मे खर्च वगैरे रीतरस्म रुपके साथ
पड पावके लिये मुजारवाधी सो हनोजजारी है और दाना वगरीव लोग दुवासे रवैरसे याद कर
रहे है हा बहुत मुद्दत याने ज़मानेकी हवा बदलने व कई गैतो औरतो के अख्तियार मे रह
नेसे बिगडी हुई है सो अब उमेदकवी है कि श्रीजीसाहबो की उम्मर दराज़ हो सब तरह से ख्
याल फरमाकर रईयत के सुधारे व खर्च के निभाव वगैरे श्की तजवीजें करावें होगे बरना-
पुरी खराबी है तथा लावारसका माल राजमे लेना अलीन किया कि उसके गोर लेना या पुन्य
लगाना सो अब मुफ्त खोरे खाते है उसके कानेतक भी नही देते सो मुनासिब है कि राजमे तो
लेना म्पलीन नही रहे परन्तु मुफ्तखोरे नखासके जहांतक होसके परव से तो खूब ॥ बरनाख़ु
ब्लूत ऐसे लगे कि सबका भला हो ॥ मकानात जदीदकी वडी सोक यो नकासीकी भात नवी
वन्ने हाथो से बना देते थे नफ़ासील जैल कमठा हुआ ॥ गढमेंरा का दोय पानी का व
म्हल सभानिवास भरा पाई बाग जहां अमर म्हलव पन्नर बाग था ऊपर मोती महलव मूल
विलास व सर्वोत्म विलास वगैरे व कुवर पदो मे तबेला व महलात व कुवरजैत सिहजीका
डेरा और तलेटी मे भवर म्हासिंहजीका डेरा व शहर पनाह मय कई बुर्ज व मीरैवच देसर
महादेव का मदर और घडसीसर मे गढी सं॰ ३५ से ॥ तथा श्री गिरधारीजी व वाकेवेहारी
जी आदि ११ स्वरूपो का मदर वल्लभ कुलके व म्हलात बहुत उम्दा व मदर देवी भवका व-
गोरख नाथ वगैरे का सं॰ ५७ मे तथा खवास आठ ही की हवेलीयो ॥ तथा शहर से बाहर-

पश्चिम दरवाज़ेसे १०० क़दम पर श्री हनुमानजी का मंदर और पौन कोस त० गंगासागर मय महलात सरकारी व कई ठिकाने और लोगों के व श्री गणेशजी का मंदर सं० ५५ में और दो कोस पर तालाव व कुंवां झालरा वगैरे व नीज़ मूलराजसागर मय महलात व बंगला मंदर वगैरे-सं० ३६ में जहां पुरोहित जगांनी व माली वसाये तथा जोरांन पर वडे महाराज का मंडप व मल्के के दरवाज़े पास राधाकुंड उर्फ़ मूल तलाव व पौन कोस दिस ईसान सं० १८२९ में किस्नघाट जहां वंधा वंधने से कई वेरे व मालियों का गाम हुआ ॥ तथा माजी श्री सोढी जीसाहिबा की तरफ़ से सं० १८२९ में कूंवा रामसर मय चौकी कोठा वंगला व श्री सीतारामजी का मंदर जेपुर के उस्तों से बनाये और मीठा माजी श्री चुहानजी के नाम से कूंवा चुहानसर व महेता सालमसिंहजी की हवेली तथा इलाके न्यात में कोट मूहनगढ व मंदर श्री लक्ष्मी नाथजी का कोट देवी कोट व गाः वी भोजाराम मे कोट फ़तेगढ व कोट लखा व मंदर देवीजी गडी हीगलाजगढ गाम महाजलार में कोट खुईयाला कोट रामगढ व मंदर श्री बलदाऊजी का समके ताडे व सोभ व मंडाई व खाभे में गढा और तीर्थों पर श्री गोकुलजी श्री मथुराजी श्री द्वारकाजी श्री पुष्करजी श्री गिरराज्जी की तलेटी श्री सोरंभजी श्री ब्रंदावनजी में जगावो सं० ६२ वेसाख वद २ ॥ म्हेता सांमसिंह ने अर्ज़ करी कि रुप्ये ८० लाख सालमसिंहजी व १८ लाख धीरतसिंह व दो लाख मेरे पास हैं सो लेराद वरना मेरा जीव सालमसिंह लेवेगा यारवाने ज़ादों का घर विगाडेगा श्री हज़ूर ने फ़रमाया कि यह धन तो तलेटी के कोठार में है सं० ७३ में सामसिंह कोट किस्नगढ में जा वैठा और हुकम नहीं मांनगो लगा म्हेते जी अर्ज़ करी कि कोट ही गमावेगा जुवराज श्री तेजसिंहजी सहा फौज ले गये सांमसिंह को जीवदान का बचन देकर निकाला सो मौज़े रामदेहरे में जा रहा फेर महेतेजी ने श्री महाराजकुमार श्री गजसिंहजी साहिवों की खातर से बुलाया सो कुंवर पदों में मारा गया श्री जी साहव सव शास्त्र ग्याता नीति निपुण वडे हीदातार थे पंडितों व कवीयों ने मूलविलास आदि कई ग्रंथ बनाये जिसमें से मुख्ते नमूना अज़ख्वर वारीयातें कीरत लिख्मी का संवार इसमें लिखा है ॥ यह महारावलसाहव इन्साफ़ परवरी में मश्हूर थे

सुनाचे दो मुकद्दमो के इन्साफ का अहवाल जो आपने फैसल किये थे नजीर के तौर पर हम नि-
हायत इख्तसार के साथ जैल मे लिखते हैं॥ १- सिवके दो लषी सेठ थे १ ने १० हजार रुप्ये
रोकड बही मे दूसरे के लेखे मडे है दूसरे की वही मे जमा नही सो झगडते २ दोनो सेठ बी-
कानेर दिल्ली जेपुर पाली वगैरे होकर यहा आए और कहा कि हम सिर्फ सही इन्साफ देख
ने को ही झगडा उठाया है सो चिट्ठी लिखनाया आधे आधे करने वगैरे ऐसे न्याव मजूर नही
जब ओसवाल † की सलाह से दोनो की वही के पाने काटे मे तुलवाए तो मुद्दायले ह-
की वही का १ पाना जो उसी तारीख के मेलका था १॥ रत्ती भारी हुआ व हरूफ भी १ ही कलम-
से नये लिखे मालूम होने से कहा गया कि वेशक रकम जमा थी सो उडाने के लिये नया पाना मि-
ला है ॥ मुद्दायले ह ने सच्चे इन्साफ की हद से परे तारीफ करी और दोनो सेठ शुक्र बजाते २ अपने
घर गये ॥ श्रीजी साहिबो ने † की काजी कालवाद व न्यात स्मधी तहरीर काजी
के हाथ से लिखी जाने का कुर्ब अता फरमाया सो ता हनोज जारी है ॥ २- गामका ठोडीका
१ पलीवाली से खेत में १ साहूकार ने रुप्ये चूकता लेकर खत पर कोयले से लकीरे खींची थी -
सो कपडे से साफ करदी फेर पलीवाली का बेटा परदेस से आया जब खत देखा कर रुप्ये मागे उस
ने कहा मेरी म्हा ने दे दीए है अदालत मे दोनो की वाते सुनकर खत का पाना पानी से भिगवाया
तो लकीरे दीख पडी साहूकार की बही खारज की गई +

नक्शा महारावलजी श्री मूलराजजी साहिबो के कुवर जैतसिंहजी के परवार का

ठाकुर				महल					बाईराज			
नम्बर नाम पिता	कौम ननेरा	सन पेदा	सन फोत	नम्बर व कौम	नाम	लकब व नाम पिता	ठिकाना	सन शादी	[illegible]	नाम	सन शादी	किससे किस ठिकाने
जैतसिंहजी	चापावत		[illegible]	१ सोढी २ वागेली	हरीयाकु चादकु	दुरजनसिंह भैरूसिंहोत सामसिंह	हरसोला वगाोडे			०	०	०
२ महासिंहजी जेतसिंहोत	सोढा			१ राणावत २ सोढी	दलकु राजकु	मूलचन्द वीरमदेव	पारे डाहला		१ २	चापावत गुलाबकु	० १९००पाष सुगन२	० बेटे महाराव रामसिंहजी

[illegible]

३ तेजसिंहजी महासिंहोत	नरावत्	१९०८ वैसाखसुदी ८	सुदी १२ १९१९	१९३४ सावण	१ सोढी	जीवकुं:	वीरदास	सुखाना		२	किस्न कुं:	१९१०	बीकानेरमहाराज श्रीसरदारसिंहजी
					२ राणावत	सगाणकुं:	महाराजशिवदानसिंहजी	वाघोर	१९७६	२	हुकम कुं:	सै०	सै०
४ देवीसिंहजी सै०	सै:		५	१९४३ सावण	१ वाहडमेरी	सै० ०	रा: पदमसिंह	वाहडमेर		१	जतन कुं०	१९५६	जैसुरचंद्रावतवलवंतसिंहअनंतसिंहोत
										१	मदन कुं:	१९९६	वूंदीराजेजेसिंहजी
१ भीगजसिंहजी साहवजविराजे-		१९०७ [illegible]	सुदी ५	१९२० सावण									
५ फतेसिंहजी सै०	नरावत				१ सोढी	पतुकुं:	सरूपसिंह	सुरतानगु		०	०		
६ जोधसिंघजी सै०	सै:			१९०७	१ सै:	राजकुं:	सेरसिंह	डाहली		१	अनवकुं:	१९०१	झालरापाटराराजसंगामदनसिंहजी
७ केसरीसिंहजी सै:	सोढा	१९१६ सावणसुदी		१९२६ पोषवद	१ महेची	अभैकुं:	मालसिंहजी	जसोल	१९०९	१	उदैकुं:	१९१८ भाद्रसुद ८	जोधपुरमहाराजश्रीतखतसिंहजी
					२ सोढी	विसैकुं:	मदनसिंह	वलेहाउ	१९९४				
८ छत्रसिंहजी सै० सेरसिंहजी के गोद	सै०	१९०७ पोषसुद		१९०७ फागणसुद ८	१ महेची	पनैकुं:	मालमसिंह	जसोल	१९०९	१	फूलकुं:	१९१८	जोधपुरमहाराजकुंवारप्रतापसिंहजी
					२ सोढी	पादलकुं:	गजसिंह	रामागादेर	१९०१	२	रायकुं:	१९३२ वै: सु:	सै० भंवरफतेसिंहजी
९ भीमसिंहजी तेजसिंहोत	सै:	१९०८	सुदी ८	१९०७ [illegible]	१ सोढी	०	आनडसिंह	सुहडी		१	मानकुं:		वाघोरमहाराजसमर्थसिंहजी
					२ सै:	मोतुकुं:	सै:	सै:					
१० मानसिंहजी सै:	रावावत	१९०० मिगसरसुद			१ वीकी	गोपालकुं:	भगवानसिंह	मही	१९१५ फा: व: ४	२	जडावकुं:	१९४९	कुंडलेझालारावसवाईसिंहजी
					२ राजावत	सिरेकुं:	किसोरसिंह	जगरूपदेसर	१९१६	३	हरकुं:		

				३ महेची	राणकु०	अखैराज	नसोल	१९२७ चै				
				४ सोढी	वादलकु	किजेसिंह	सुरता नाउ	१९३८ म्हा				
११ उमेदसिंहजी देवीसिंहोत	वाहडमेर	[illegible]	[illegible]	१ वीका	अमृतकु	उदेसिंह चंद्र सिंहोत	रीकसर	१९०१				
				२ सोढी	पजवकु	थानजी	डाहाली	१९१८				
१२ अनाडसिंहजी से जोधसिंहजीके गोद	से०	[illegible]		१ सोढी	-	हरीयालजी	[illegible]		२	सायवकु		
				२ से	गुलावकु	से०	से०					
१३ सरदारसिंहजी उमेदसिंहोत	वीका	[illegible]	[illegible]	१ चांपावत	म्हेतकु	गुमानजी	देसोक	१९२४				
				२ सोढी	चादकु	विस्नसिंह	सुहडी	१९२७				
१४ सालमसिंहजी से	से	[illegible]		१ से	वादलकु	म्होडसिंह	सुणार	१९३२	१	हवाकु		
									२	सरवनावाकु		
१५ खुशालसिंहजी से० क्रत्रसिंहजीके गोद	सोढा	[illegible]		१ से	राजकु	अभजीत हदरानोत	सुहडी	१९३६ म्हा				
				२ चांपावत	गुमानकु	मेघजी	पीलवे	१९४२ मगसिर				
१६ सिवदानसिंहजी अनाडसिंहोत	से	[illegible]		१ झाली	दोलतकु	मुझारसिंह	वारडावर					
				२ सोढी	रायकु	अरवजी	काहली	१९३५ पोष				
१७ अर्जुनसिंह से हमतसिंहजीके गोद	से०	[illegible]		१ पचागोत	०	धीरजसिंह						
१८ जसवंतसिंहजी सरदारसिंहोत	से०	[illegible]										
१९ जुवारसिंहजी से	से०	[illegible]										
२० सुरतानसिंहजी सालमसिंहोत	से	[illegible]										
२१ सामसिंहजी खुसालसिंहोत	से०	[illegible]										
२२ दानसिंहजी से०	चापावत	[illegible]										

१४६ महाराजाधिराज महारावलजी श्री गजसिंहजी सं० १८७६

१	सोढी		ठाः सादूलसिंह	अमकोट	१	छिजैराजजी सं० जन्मवर्ष डोरकारहलतकरी। भाई केसरी सिंहजीका कुवर श्री राणाजीतसिंहजी साहवराज विराजे		सालमसिंहजी-हिम्मतसिंहजी उम्मेदसिंह
२	से०	मोतुकुं०	ठाः सरूपसिंह	सुरतानाउ				
३	कोटडेची	म्हाकुं०	ठाः सोभागसिंह	कोटडे				
४	वाहडमेरी	सूजकुं०	ठाः भीमसिंह	वाहडमेर				
५	सोढी	हरीयाकुं:	ठाः जैसिंह	लखधीरआलि				
६	कनेति	साहवकुं:	ठाः भीमकरनजी	कांणोडे				
७	राणावत	रूपकुं०	महाराणाश्री भीमसिंहजी	उदैपुर				

पासेवानापात्रलिछमा ॥ सं० ७७ में वीकानेरकी फ़ौजगामवारू लूट ठाः जानसिंह-जीको मार पीछी जातीका शकहोनेसे म्हेता उत्तमसिंहजी कोट विक्रमपुरके जावते को गया-तोरावअनाडसिंहजीवें अदवी पेश आनेसे मुवहक़वी हुआ कि वेशक वीकोमें साज़िश है-हिकमतअमलीसे कोटखालसेकर हाकमरखा रावजीगाम गडीआले गया और मस्ज़चेचक से फोत हुए कई वर्षों वाद छोटा भाई शिवजीसिंह जेसलमेर आया पर कोट देना वाजव नहीं-जाना क्योंकि सं० ८८ में कोट परडाकाडाला था जिससे भरोसा न रहा फेर सं० ९७ में गामवजू रहवास दिया तो भी सं० १९०० आस्वन में वीकानेरकी मदद व वरसीगों कोलेके कोटमें दाखिल हुआ जव ठाः राजश्री केसरीसिंहजी स्हा व म्हेता उत्तमसिंहजी विसनसिंहजी फोजलेगए छः महीने लडने के वाद फागुन सुद ११ राक्जी वगैरे मुफ़सदों को जीवदान दे कोटसे निकाले राजका थांणा कायम किया सं० ७६ में गामकाणोडे परनीजे उनके वकील रस्तखर्च देना किया था सो म्हेतेजी मांगा तो ठाकुरों वकीलको कैद किया जव श्रीजी साहिवां खर्च माफ़ फ़रमाय वकीलको छुडाया ॥ पीछे पधारते गाम कोडियासर में पलीवाल मान्न गामों के थे भाटी सरदारों के जुलमों की अर्ज करी कि खेतसीजी के कुं० मेघजी गाम ऊंमे के व्राह्मणका तमा-मज़ेवर जवरीसे लिया १ वीटी अंगुली काटके लेली जिसपर खेतसीजी व सरूपसिंह खांप

उदैसिंहोत वरांमदान भोटे को फतैगढ में और मेघजी को जैसलमेर मे चूक हुआ दूजा ठा उदै सिंहोत बिषै निकले ॥ ईसी अरसे में उदैपुर से नालेर आया जब जनानी सवारी तो शहर को-करार्इ पिंडा देवी कोट से ७ सवा साथ सातवे दिन अेन वक्त लगन के उदैपुर दाखिल हुये चवरी पधार्इ त्याग वगैरे में द्रव्य ज्यादे खर्च ने से बीकानेर महाराज श्री रत्नसिंह जी साहब व किशनगढ महाराजकुंवार श्री महोकमसिंहजी को रञ्ज हुआ घास पर तकरार कराके दोनो रर्इ सलड़ने को चढ आये जब भाटी सरदार भी वगैरे इत्तला श्री दरबार के मुकाबले को त्यार हुये महाराणाजी श्री भीमसिंहजी साहब व महाराजकुमार श्री जवानसिंहजी स्हा को खवर होते ही सायपुरे के राजाजी वगैरे सरदारो को भेज के कहलाया कि अगर भाटी थोडे प्रार मो समझके आप दोनों साहिब जोर मारते है, सो खयाल आपका खाम है मुदा कि लडाई नही होने दी और दोनो ही को सीख देदी श्री ओसाहिबा को ४॥ महीने वहा रखे हद से कमाल मोद व अनन्द रहा ॥ स॰ ८० काती वद ११ मोती महल मे महता सालिमसिंहजी को खिये भाटी आना ने चूक किया-पर॰ जान नही निकली फेर याका हूटने से चैत सुद १४ फोत हुआ इस ५ महीने मे लाखो रुपये का द्रव्य म्हेतेजी ने घाटी रूपा वगैरे साथ निकाला सो रूपा तो मथुराजी जाकर बदल गया और दूसरे पुरोहित चारी वगैरे का पका पत्ता भी नही और रुपये का वेटा गोरधन दिलसे सफाई करनी चाहता भी है लेकिन किसी का विस्वास नही करता भाना कुमोत मारा गया तो भी किसी पर तहीं मव नहीं दी ॥ स॰ ८५ में सोढा भाटी वाहडमेर वगैरे गाम खाभा लूटा जब अमरसागर से पिंडारा खाभे हो हरसारी पधारे सरदारो के सूमाफ मांगमाल पीछा देना किया वहा ही खबर लगी कि बीकानेर की फौज आई फौरन जैसलमेर पधार के पुरोहित विहारीलालजी को वा पे भेजाया कि बीकानेर राज की सांढा भाटी विहारीदासोत वगैरे लाया है सो पीछी भेजावेगे और मुजर्मो को सरह सजा देगे फौज अगाडी न आवे पर॰ फौज मुसाहब बीका वेरीसालजी ठा महाजन व सूरांराणा अभैसिंह अमरचंद वगैरे ने नहीं मान कर गाल मारने लगे कि कपाट तुलाय के ख्वज घडसीसर को पाल घट जो जेवर से लदी हुई है लूटेगे उदैपुर मे बागड पर तकरार-

✗ नोट - म्हेता सालमसिंह ग्यारह वर्ष की उमर मे अपने बाप की जगह वजीर मुकरर हुआ था जवान होकर म्हेता मजबूर ने अपने बाप के कतल करने वालो को ढूंढ २ कर मारा महारावल मूलराजजी के बेटे रायसिंह को दोनो पोता †

होने से अपमान हुआथा सो स्वांरभी अब निकालैंगे चुनाचे देस का बिगाड करती हुई फौज १० हज़ार बीकानेर मए जमीयत ठाः पहोकरां जैसलमेरसे ५ कोस गामबासणापी आई और कई आंचड कर गाम भोजक व बडागाम व देवी कोट व हठावगैरे लूटा जब मुकाबले को फ़ौज भेजाई . सो लडाई में श्री स्वांगीयांजी के अदीठ चक्रों से ५ सो आदमी व सूरांगा नम्बरदो मारे गये छत्री मौजूद है तथा कई घायल हुए जब फौज तोपें छोड के भागी इस तरफ़ का सिर्फ़ रामचंद मोढा व बोलसिंह राई मरा और खोसों के ज़मीदार साहबखां का बेटा मिठुखां घायल हुआ जमादार बोला ऐसे हंगामे में कई मिठु फटेगा मुदा कि बेटेका कुछ खयाल न कर के ख़ूब लडा जिस पर नकारा व पालखी बगसा गया बाकी फ़ौज पीछी गई कि पोहकरां लूट ही ली नी पर ० ठाः बाघजी खेतसिंहोत ने व बाई सरिस्तेदारी के बचादी गाम थाट पर लडाई कर फ़तेका डंका बजाती हुई पीछी आई ॥ **दोहा** जातां जुगां न जावसी आसी के दिन याद । भडकम धां नही भूलसी बासणापी को बाद ॥ १ ॥ जबसे बीकानेर में कहवत होगई है कि कोई किसी पर किसी तरह से ज़ोर ज़ुल्म करे तो उसको कहे कि साला बासणापी की लडाई में किठे हो ॥ सं० ९१ में सरकार दौलतमदार की तरफ़ से करनेल अलवलीयम साहबबहादुर ने श्री जी साहिबां व बीकानेर महाराज के मुलाक़ात कां कड के गाम गिरराजसर वगडियाले के बीच में कराई जब रुप्ये ढाई लाख देस के बिगाड किये के ठहराये थे सो तो श्रीजी साहिब नहीं लिये और म्हाराज से पूगल का ठिकाना रावराम सिंह जीको पीछा देराया ॥ साहबान युरूपियन अव्वल जनाब कलां करनेल लाकट साहब बहादुर सं० ८८ में यहां रौनक़ अफ़रोज़ हुए जब से यहां का वकील कलां साहबकी ख़िदमत में रहता है बाद आजतक जो २ साहिब बहादुर जैसलमेर शाहर व इलाके में तशरीफ़ लाये सो अलग लिखे हैं ॥ साहिबकलां की सलाह से सं० ८९ में डाकुवों को सज़ा देने के लिये ५ सो सवार साथ पुरोहित ... ९।१ को भेजे सो मौज़े मशाधरी में रहे बार डीमे व भुजीये से फौजां व जमीयत राज मारवाड आते ९६। ५ -रावत भूपसिंह वग़ैरे बाहड मेरों को पकड लेगए और किले भुजीये में कैद।

।१। ।१९ - अभैसिंह व धोंकलसिंह को ज़हर देकर मारडाला - तेजसिंह देवीसिंह फतहसिंको जिलावतन किया और ... खुद गजसिंहजी को तख़्त पर बिठाया म्हेता सालमसिंहजी ने सात खन्ड का एक अजीब और ऊंचा मकान अपने लिये।

जैसलमेर का उमराव जानकार कँछ भुज महाराओ श्री देशलजी ने जामनी कर के-
छुडाये और भारी सरदार जो जो वागी थे यहां दोदी हाज़र होने से बचाए गए मगर जब से-
कारवा व धाडे का नाम ही नहीं रहा इस बाबत खरीता खुशनूदी मए खिलअत व पील-
जंजीर एक श्री सरकार दौलतमदार की तरफ से आया और मुल्क मालानी का सरकार
के खालसे होकर एजंट साहिब बहादुर के मातहत बहाडमेर मे हाकम रहता है और बहाड
मेर के शाला च्होटन जो कदीम से जेसलमेर के ताबे है सब तरह से बरताव विकमपुर व ब
रसलपुर राव याने उमराव मुजब चला आया फेर नमालूम क्यो कर अलम समझा गया है
सं० १८९४ मे मोजे वाप इ० हाज़ा व फलोधी इ० मारवाड की सरहद जनाब लडलु साह
ब बहादुर निकाली और पत्थर सीव पर रखाए फेर जोधपुर वालो दूसरा पत्थर औली
तरफ रख कर झगडा डाल दिया है सो हनोज़ सफाई नही हुई तथा गाम राकडी इ० हा
ज़ा व हडवा इ० मारवाड की सीव मालोयट साहब बहादुर निकाली पत्थर मौजूद है ॥
काबुल का बादशाह सुजाबल शाह सं० मे यहां आये किसन घाट डेरा किया औ
साहब डेरे पधार बहुत ही सतकार किया था फेर सं० ९१ मे आये जब ही गलाज मे याने पड
सी सर पर मुकाम कर रवाना हुए सरकारी फौजो काबुल पर गई जब यहा से ऊठ साथ रै
वगैरे हर तरह से मदद दी गई और अमीरान सिंध ने बे मदवी करी फोज पीछी आई जब लडाई
हुई हैदराबाद व मीरपुर के अमीरो को पकड ले गए मुल्क सरकार के खालसे किया खैरपुर
का अमीर अली मुरादखां खैर ख्वाही करने से बने रहे व इंगलस्तान जाकर कारमको सी हा
सल कर आए बादवाई चपो के सं० २७ मे सरकार दौलतमदार ने सनद दी वो किल्हो मुल्क
अब मीरसाहब के कब्जे है नसलन बाद नस्लन रहेगा ॥ सं० ९९ मे सरकार दौलतमदार के
हुकम से ठा० राजश्री रूत्रसिंह जी फौज ले गये किला घोटडु मए सीव आपादं मे कायम कि
या बाद मीर अली मुरादखां का खास खेली सुमार यहा आकर कूंचियां कोट स्हागर घडसी
या व छीपा छोड मए परगने सं० १९०० के मिघसर मे दे गया जब से खालसे है स्हागट का

† [illegible] - जैसलमेर [illegible] [illegible]
[illegible] १८९९ [illegible] [illegible] ।

उपाय अहलागया सिरफ़ दो ठ थमवरआस १ तो कुंवा बनाया सो गामपक्का हुआ दूसरा चौ-
पायेका काम ठीक हुआ ॥ ऐसे ही हुक्म का खयाल था कि अव्वल तो बेजा हुकम नहीं देते
थे और जो हुकम दिया तो सब ने माना ही पर० जिस किसी ने नहीं माना आंम नाकार के शहर
व देस से बाहर गया तो किसी काम नांगा नहीं हुआ उन्हों ने ही लाचार होकर हुकम मंजूरकी
अरज़ी भेजी तो फ़रमाया कि भलांई आवो जब पीछे आगए चुनांचे भारी ठदे सिंहोत तेज
मलोत व केलरा जसोड वजो सी सांचोरों का तो हाल खुलासा लिखा गया है और राजश्री
उमेद सिंह जी व उनडों का जांम आमदखां व सिपाही खंधारी व मुबा व चुहडा म्होर व रूपसी
व ओठी पल पन्नु व मुहारका सिपल आदिले शहरके पींजारे चमार व भंगी व देवीकोट वी-
झोराई के दढ भी निकले थे हां शहर के साहूकारों ने हरताल डाली जब पिंडा पधारे खातरी-
फ़रमाय उनके कारे मूजब २२ कलमां का परवांना उसी जगह लिख दिया था मेठ वी सानी-
सरदाराम जी को दिलमें होल हो गया तो परवाना ही पीछा नज़र किया फेर श्री गिरधारीजी
का मंदर जो ढयाथा बनाने के लिये व काकनय लाने को चीरा भी सहर पर कर दिया बहुत तारें
खैर खुवाई हाज़री दरवाई कि किसी तरह फ़ितूर किये की माफ़ी हो अगरचे ठा: साहिब
भी तसल्ली देते थे पर० होल नहीं मिटा जब परदेश गया और आसन पुष्करों आमने से ता
लाब पर जा रहे तो हज़ूरी गंगादास को भेजकर पीछे बुलाये थे ॥ सं० १९०४ पोहो सुदि
में जनाब कलां साहब करनेल सदरलैन साहब बहादुर यहां तशरीफ़ लाए श्री दरबार को सर-
कार दौलतमदार की तरफ़ से खिलअत यहां ही में लेकर दिया दिन २० मुकाम बहुत ही खुश व
महरबान रहे ॥ सं० १९०८ में जोधपुर जैसलमेर के मुकदमा चोरी धाडे के फैसल हुए पुरो
हित सरदारमल जी गये थे दुतरफा जूंना मुकदमा रदकार के रुप्ये ८ हज़ार दिये ॥
वरसिंह शिवजी सिंह के बेअदबी का शक पक्का हुआ जब ठा: राजश्री छत्र सिंह जी सहा फ़ौज
लेगए सो गडीपाड गांम वजूखालसे कीया शिवजी सिंह इ० बीकानेर में जा रहा था बाद कई
साल के गाम वजू का आध ठा: जेठमल जी मिराजसर वालों को बख़शा सो भारी गाम है ॥

। बकीया नोट- हलाक करनेको अवतार लिया है वह इबारत उंगली के मानिन्द मोटे कलम से ज़र्द रोशनाई से लिखी हुई है बावजूद सौ साल गुज़रने के ऐसी मालूम होती है कि अभी लिखी गई है हरचन्द करनेल टोट साहब वगैरे ने महेता मालमसिंह को ज़ालिम और खूंखार लिखा है लेकिन वह महमसमुंअली होशियार मंडिलराज पुलानाइट कजमें-

स॰ १९०५ मे कछ भुज मिरजा महाराव श्री देसलजी से दोस्ती हुई वाहड मेर केरा बभूतसिंह की मारफत टीका आया स॰ ८ मे टीका गया वादनापुरी परवट याने वकील से गानदोका नुवा आनाजाना बनरहा है फेर मागमलजी विशेष प्रीती बढाई चुनाचे बाई राजकाविवाह वसलाह श्रीजीसाहिबां स॰ २३ मे बीकानेर महाराज श्री डूगरसिंहजी साहिबा से प्रो॰ गिरधारीलालजी की मा हुवा और श्री खैघारजी भी श्रीजीसाहबको अपना बुजरगसमझते हैं ॥ बीमारी सं॰ ६ के आषाढ में हैजा व स॰ ९ के सीयाले मे तपकी से सदहा आदमी फोत हुए ॥ स॰ १०मे केलराा वडी के केरवरा तिसाला व खोपराटी खोरवरा हलोया खिखदीया किसरदारानवारु व ऊदे सिहोत तेजमालोत जो पडोसी है जबरन जमीन छीनते है सीव निकाली जावे जब बारुकी तरफ ठा राज श्री छत्रसिंहजी साहा व वसीयां की तरफ दीवान सालमचंदजी गया तोरुदे सिहोत तेजमालोत हुकाम अदूली से पेश आए और बागी हो जोधपुर वआवूजी नालसी गया जनाब कर्नल साहब ने हुकम दिया कि श्री दरबार का हुकम उठा लो जब पीछा आय अरजी लिखी कि सीवां निकलवारी व मुकदमो का रुप्या भरना मंजूर है और आयन्दा चोरी व हुकम अदूली नही करेगे जब कैद मे लगाये मगर उस साल सीवा नहीं निकली वास सं॰ १५ मे श्रीजी साहिबा देवी कोट लाठी नाचने का दौरा कराया देवी कोट मे दीवान सालमचन्दजी फोत हुए और नाचने से श्री छत्रसिंहजी सा॰ बारु पधारे सीवा निकाली सो केलगा नामंजूर कर विरचे निकले बीकानेर में रहकर देश लूटा कानाचिस्तोई को मारा ॥ स॰ १७ मे सीवा बनजरा नामन्जूर कर पीछे आस तथा स॰ १५ मे दारवाणी व सीवां की तरफ म्हेता नथमलजी जाकर खोरवराटी की सीवा निकाली और कोठा समूल ७ गा॰ की जमीन बाघनीका दबाई थी सो खालसे कर गाम गेहु लिखदिया सं॰ १२ मे मौजे बाप के खडीन धीगाणाव दांधायाके गेहु वापर जोधपुर की फौज आई तोभी जमीयत कायेम्हेता बिरदसिंहजी ने गेहु लेडीलीया फेर राजदी से चपडासी आया लडाई न होने दी और जोधपुरी ओकी ज्यादती की रिपोर्ट करी ॥ जैपुर से वैद्यराज भटजी गोकुलनाथजी को बनाय ग्रंथ राजनीतरत्नमाला तयार कराय व्यास भीमजी व देवीदासको पढाया ॥

सं०१२ में मौजे लखुवाले के रावर पोते खांन साहब के मांमे आकिलमहम्मद सरदारखां ह-
सदखां वगैरे नाराज़ होकर आये उनसे कहा कि रहना हो तो रु० २५) अखैशाही कि जिनके रु०
४५) हुए रोज़ व १ गांव लेवें व २५ घोड़े अलग नौकार करालें और खांन साहब से भी राजीपा करादेंगे
पर० १ सौ रुप्ये राज़ से कम मंज़ूर न कारके दो महीने ही न रहे बीकानेर होकर पीछे गये ॥ सं०१४ में
ठा: अमरसिंह जी जागीरदार महाजन इ० बीकानेर कुंवरां का विवाह ठा: मानजी जगमालो
त की बेटीयां से करने को गांम डांगरी आये थे सो यहां आकर दोनों बेटीयां बडी तो श्री हज़ूर से छोटी
श्री बैरीसाल जी से शादी करने की अर्ज करार्इ सो मंज़ूर हुई उनकी बाईयों के नानेरे गाम कोठा इ०
हाज़ा मे फागन बद ७ को विवाह होना ठहरा जब शावा नज़दीक आवा सब तरह से तयारी हो
गई तो जोधपुर महाराज श्री तखत सिंह जी साहब डाक बैठाकर लिखा कि अबल जोधपुर प-
धार बाई के सरकु० से शादी करावे जबाब लिखा कि अबलतो यहां होगी क्यों कि तेल चढग-
या फेर वहां आनेमें ढील नहीं होगी पर० मंज़ूर नहीं हुई इसी अरसे में बीकानेर महाराज श्री
सरदारसिंह जी का वकील जैतुंग भाटी खींव करन आया कि म्हांरे धधराजीये की बेटीं डोले मत-
परने बीकानेर के गढ़ में विवाह करेंगे ठा: अमरसिंह जी की अरज़ी आई कि महाराज के फ़रेब से
धोखे न रहे शादी कर ही लें जब वकील से कहा कि डोला नहीं है नांनांशा दादाशा में फ़रक़
क्या और इतने अरसे में बीकानेर पहुंची जे भी नहीं फेर आबूजी से जरनेल लारेन्स साहब बहादुर
का खरीता आया कि बीकानेर महाराज लिखते हैं कि जबरन डोले परनीजते हैं सो ठीक नहीं सा-
दी मुल्तवी रहे जवाब में लिखा कि डोला क्यों का लिखते हैं नांनांशा दादाशा इकसां है और ज-
बरन के जवाब मे ठा: मौसूफ़ की अरज़ी व जिन्स ही भेज के शादी करली फेर करनेल ईडन साहब
बहादुर जीने मिसल दफ़तर दाखिल कराकर बीकानेर वकील को हुकम दीया कि आयंदे ऐसी धो-
खे की तहरीर नहीं कीया करे बाद सं०१५ के आश्वन में ठा० अमरसिंह जी बीकानेर से भाग कर
यहां आए फेर कुंवर व कबीला भी बुला लीया जब गांम लांगोला रहने को दीया और श्री दुकान
पर खर्च की सदर हुवाली दी कि चाहे जितना उठावें सं० १७ में पीछे गये और जैतुंग खींवकरन

श्री महाराजके निकालने से यहा आया जब गाम चनु बिखादिया था ॥ स० १७ का जैष्टमे
राज का काम व्यास धनुजी को सौंपकर श्री ठा० साहब अपने डेरे तलोदी पधारे आषाढ वद २ को
काम म्हेता नथमलजी को सौंपा व श्रावण सुद ७ दीवानी का सरोपाव दिया दूसरे दिन नथ-
मलजी के घरे पधारे रुप्या की चौकी व जेवर पारचे की किस्ती नजर हुई बाद आरोग कर पीछे पधारे
स० १७ का फागुण मे चडा ठा० साहब तो रेवे होकर रामगढ पधारे यहा नवा कोट बनाने की नीव
दीवी पिन्डाडी श्री जी साहबा ने खुहडी का ठा० साहब दानजी सोढा की बेटी से सादी मदरो मे
कराई ॥ सं० १९ भाद्रवा सुद ८ ठा. राज श्री केसरी सिंहजी सहा को बाईराज उदै कु० का वि-
वाह जोधपुर महाराज श्री नखतसिंहजी साहबा से व श्री छत्रसिंहजी सहा की बाई मूल कुं० का
विवाह महाराजकुंवार श्री प्रतापसिंहजी सहा से हुआ ॥

पडोसी रियास्तो से सरहदात निकली तफसील जैल

स० १९०६ मे कपतान बीचर साहब बहादुर आकर सीव देख गये स० ७ मे चौहद्दे बंधी या गांव
मौजे महाजलार से ७ कोस नैरुतसे सरू करके सिंध हू० खैरपुर व हू० सरकार दौलतमदार
व हू० वहावलपुर से तिहद्दे राजबीकानेर जो वासलपुर से ८ कोस है वहा के तक सवी कोस
निकाली साहब मौसूफ मुनासिफ थे किसी तरह किसी से तकरार न हुआ ॥
स० १९०८ कपतान रिवल साहब ने पहोकरण हू० मारवाड से सीव निकाली सो सरासर जुल्म किया
कि गाम औडानीया वासरनु वाका व उनडा का जूना खेडा मरासीव य और ही बहुतसी जमीन
कई गाम की गमाई जिसपर पुरोहित सरदारमल नीकामरना हुआ और बरड गोवे भाटी सग-
तसिंह होतो को भाटी की बही से नाम निकलाय जात से खारज किया ॥ स० १९ या १९ मे हिम-
लटीन साहबने राजबीकानेर से सरहद्द बिहद्दे वांड के से तिहद्दे फदर तक सीव कोस निकाली
वासलपुर का राव जो हमेशा से साम धर्मी रहे है कि राव मानसिंहजी फोत हुए तब साहब दानज-
ड का था साहब दानजी की माजी यहा आकर बखौफ बीकानेर के श्री दरबार मे अर्ज कराई अब
वास्ते हिफाजत के म्हेता सामसिंह को वहां भेजाया था और दूसव के रावराजा नीत सिंहजी-

सही महेता नथमलजी ॥
सही म्हेता अजीतसिंह ॥

सनद के ऊपर श्रीजी साहबां की सही या म्होर या दोनों और गोशे पर ३ का आंक जो इसराज-
की निशानी होती है ॥ तथा ज़ेवर शस्त्र वगैरे का भंडार खुले जब श्रीजी साहब तो पधारें या
नहीं परन्तु म्हेता व सहा व थईयाव व हजूरी जो दरोगा हो यह च्यार ही होते हैं सो चीज़ निकाली
या रखी वही में जमा खर्च करके बाहर निकले जब झाड़ा लिया जावा है भंडार में बधावके लिये
म्होर थान नज़र हुए सो व सदर सायर -रकमालसे कई रुप्ये समूर्त के लेते थे सं० २७ से कोरांसे
भी समूर्त लिया गया फेर सं० ५१ से मात्र आमदनी में फ़ीसदी रु: २) लेणा किया परं० मन्या
थी कि कोई १ आमदनी जो ५ हज़ार से ऊपर हो इस तालुके की जावेगी जैसे कि श्रीजी साहबा-
का हाथ खर्च तालुके नज़र के रुप्ये व कोटा नोचने की आमदनी वगैरे है ॥ बडी ही दूरअंदेशी है-
कि दीवानजी ने नीचे सही और भंडार में दखल नहीं रखा ॥ तथा जमाखर्च का दफ़तर भी सहा-
म्हेता पास है लखा में लाग बंधी जो पुस्तों से है मगर अब यह भी चलने की सूरत नहीं ॥

१४८ महाराजाधिराज महारावलजी श्री वैरीशालजी साहिबां की उम्मर दराज रहो सं० १९२० जेष्ठ सुद ११

१	वीकीजी	डूगरकुं:	ठा: अमरसिंहजी	महाजन				नथमलजी
२	सोढीजी	तखतकुं:	ठा: विसनसिंहजी	रांगागढेर				
३	सीसोदणीजी	मरागारकुं:	रावलजी उदेसिंहजी	डूगरपुर				

ब वसीयत श्री बडा हजूर व मनजूरी श्रीवीकीजी साहिबा व सलाह सलाहकारान राज विराजे ॥
सं० २१ चैत में श्रीठा: साहब आंख के आराम होने से पांव प्यादे गामडे हरे आस जब श्रीजी साहब ही
पधारे थे ॥ राज का काम व मन्या ठा: राजश्री केसरीसिंहजी साहब के ठा: राजश्री छत्रसिंह
जी व म्हेता अजीतसिंहजी करने लगे और म्हेता नथमल को बडे साहब बहादुरजी पास भेजा श्रीला
ट साहब की मंजूरी का खरीता भी आगया पर श्रीजी साहब राज से इनकार कर क़िले से डेरे पधारे-
तो जोधपुर से एजन्ट करनेल निकस्न साहब बहादुरजी सं० २१ मिघर में आकर बहुत सा कहा-

पर नहीमाना बलकि एक चिट्ठी हाफजजी को दीथी किपेशकारदे मगर साहिब मौसूफ तो उदैपुर

ग्ए और इन्वीसाहबबहादुर यहा आए उन्होने नहीली फेर जनाबकलासाहब करनेल इन्डनसा-

हबबहादुरजी स० २१ कातीवद आबूजीसे तशरीफलाए कोटफतेगढमें ठा साहबसे मुला

कात हुई फेरयहा आते है। श्री जीसाहिबा को तखतनशीन किये सरकार दौलतमदार की जानब

से खिलअत इक्कीसकिश्ती जेवरपाचे वगक जजीरफील व रायरास घोडे सोन्हरी साष तवगक

किर्च देकर इसपीच सुनाया तथा श्री बडाठाकरोसाहब को वदस्तूर मदारउलमुहामकर के

यादराश्त लिखदी और म्हेता नथमलजी को कामन्यावतका सौपदो वगैरे सिफारशीखरीता वख-

त जिसमे सनद खुशनूदी साहबममदूहूवखैरख्वाहीराजकी व द्यानतदारी वगैरे हाल लिखदीया

और वकालत के काम पर म्हेता अजीतसिहजीको लेगये ॥ श्रीजी साहिबो के इकबालकी खूवी

व श्रीठा साहिबो के बडआईकी तारीफ कहांतक लिखी जावे विमुफसदो याने बखेडे करनेवालो

की कुछभी पेश नचली पर सबको वदस्तूर बनारखा किसी का किसीतरहसे हतकव हरज नहीकि

या स० २२ मे सायपुरे राजाजी गजसिहजी की बाई लछमनसिहजीकोवहिनके सगाईको

अलवरसे कामदार वपुरोहित वगैरे सोगातले आए पर मंजूर नहीहुआ तथा सं० २३ मे नरसिहगढ

से पशीयारवहुमलजीरीका पेशकीया और सगपराकीवातचीतकरीसोभीनवनी तथा इतनी

रियास्तोसे टीका आया जैपुर उदैपुर जोधपुर कोटा वीकानेर कछभुज परीयाला

कपूरथला व्हावलपुर खैरपुर नरसिहगढ (औरनमालूम कोलीसे क्यो बरहै)स०२३

बैशाषसुद १३ राज्याभिषेक हुआ जोगीका भेष वगैरे मामूली रस्मो के वाद राजगिर मे आम दर

बारकराय तखत बिराजे जब भेरघाव व तोपोका फैर होनेपीछे नजर नोछावर हुई श्रीठाकरसाह

वो घोडा नजर किया ॥ बाकी उमरावो सरदारो से घोडा व भोमीयो से घोडे की कीमतका रुप्या

वगैरे रिवाजका मुफस्सिलहाल अलग लिखाहै ॥ स० २५ मे वहुत भारी कहतपडा मारवाड

वगैरे की रिआया मुल्क सिंध व गुजरात व मालवे गई श्रीलक्ष्मीवरकी कृपासे यहा तलाव घडसी

सरभरगया और रईयत भीवनीरही श्रीठाकरसाहबो ने महुवाडो के सिंधपहुचने व कतारो की-

आमदरफ़्त के लिये रस्तों पर ज़ाबजा यागो व नये कुवे व कोटों में सदावर्त वग़ैरे कराये और खास शहरमें १४ सदावर्त वगरीबों के लिये षीचडे के कडावे चढते थे तथा विधीपूर्वक दानपुन्य हृदसेपरे कराया त्युनाचे हज़ारों सांमी व कई साधुमन यिछलपा गए और लागां की जमात केम्हैं सदेव भारथी को जो रिधीवालाथा कई बर्ष रहकर तलाव गजरूपसागर पर ही मरा स्या इस साल रस्ता गुसाई षेमानाथ को घडसीसर पर रख कर हज़ारहा रुप्ये उगाये ॥ सरकार दौलत मदार की तरफ़ से रसालदार ग्र्बास ग्रली कतारां की निगरानी को आयाथा सब हाल देखा सो लिखा जिसपर साहिब कलां वसाहिब रज़ीडन्ट बहादुरने मदर में तो रिपोर्ट करी और नेकनामी के खरीते यहां भेजे तथा हासिल बाबत जनाब कलां साहिब ने मोतमदों की कमेटी से मान्नरियास्तों में यह ठहराया कि इस माल व ग्रायंदे ही १० सेरनिर्ख होने पर विलकुल स्वाफ़ और हमेशा फ़ीमन राई आने लेवें और जैसलमेर से अबभी लेवें और आयंदे भी निर्ख ७ सेर से कम होतो कूर करे तथा हमेशे भी फ़ीमन साढे च्यार आने लेवें तदपि बनज़र रईयत परवरी व ग़ुरबा नवाज़ी बहुतों को तो छूट और बाकी से भी आधा लिया ॥ सं० २६ पोष बद ६ ठाकर साहब मौसूफ़ स्वर्ग पधारे तो शिवारखाने की सवारी के मान्न कार्य बडे हुजूर श्री गजसिंहजी साहिबां मूजब बलकि ज्यादे कराया इस साल तपकी बीमारी से शहरमें हज़ारों आदमी मरे ॥ सं० २७ में भी ९० मुल्क का दौरा कराया सो कोट समुसहागढ घोटडू खारा खुईयाला तणोट किसनगढ बूयली नाचणा भुंहनगढ देवा देखा के म्हासुद शहर दाखिल हुए* इसी साल चैत्र सुद १२ म्हेता नथमलजी की तरफ़ से न्यात में थाली मिश्री की लांवणा कराई और ज्येष्ट बद ० नथमल घरे पधारे भाद्र सुद नथमलजी कामका इस्तेफ़ा दिया काती बद जोधपुर से जनाब इनपी साहब बहादुर यहां तशरीफ़ लाए ॥

डूंगरपुर बिवाहका हाल सं० २७ में ठाकर गोपालजी सगाई का पैग़ाम लाया फेर गांधी शिवलालजी आके सेठ हिमतरामजी की मारफ़त रस्ता खर्च वगैरे की पक्की कर गया सं० २८ म्हा में म्हेता पुनमचंद प्रो- टीका लाया चैत्र बद नालेर झोलीया सं० २९ भाद्र व में पंडित भगवती प्रशाद

* यहां लों यह पुस्तक छपने पाई थी कि श्री महारावलजी बैरीशालजी साहब के परलोक वास होने के समाचार मिले १९ मार्च को १० ३ के दिन के स्वर्गलोक पधारे - शोक! महा शोक!! - मं० मुरादअली हेरी

आया स० ३० पोषवद १ जानचढी ४ दिन में आबूजी पहुंचे पोष सुद १ गाम वेडीवाडे ५ कोस रावलजीउदैसिहजी सामे आये दूजे दिन शादी हुई याद १ लाख रुप्ये त्याग के जिसमे ८० हजार तो वहा के नामदार नेहालचन्द जी को सोंपे और २० हजार मुतफर्क वहा वास्ते मे नकद व पाग्चे वगैरे दिये **दोहा** चवदे हार्गी चारणा मूंगरपुर दीधा । परनीजे जेसान पति कवि अभरी जी-धा ॥१॥ १० मुकाम रहे बाद सीरव जीवी वेडीवाडे न करावलजीमा पहुंचा गये ॥ गाम वडेली में ईडर महाराज वेसरीसिहजी आये कुरसियो की मुलाकात हुई और अपनी बहिन की शादी करनी चाही थी पर० महाराज के माईजी जो भुज महाराणो जी श्री देसलजी के वाईराज है उनके मना करने से मंजूर न हुई फेर आबूजी पधारे सिकत्तर वेली साहब बहादुर से मुलाकात हुई और बंगला १ आलीशान मय बाग व कुवा त्यार कराया तथा बम्बई देखने की मन्शा थी पर० सबु-ना रास्ता नहीं दीया ॥ श्री रांणीजी साहिबा अपने नाने रे सीरोही राव जी उमेद सिहजी से मिलन आए ॥ महासुद १२ बाग मूलराज सागर दाखिल हुए फेर अमरसागर ७ महीने बिराजे इसी सा-ल खान साहब के लात से रखीता व सौगात आने जाने का रावता हुआ ॥ ठा राजश्री छत्रसिंहजी म्हा की सलाह व म्हेता अजीतसिहजी की कोशिश से तलाव घडसीसर के आड की पाळो में बहुत से वेरे व ऊपर मकानात व बागात होने से जेवायश के सिवा आराम हूआ कि पानी की तकलीफ न-रही और तालाव पर वागीची वस्ती होने व कुत्ते वगैरे रहने से पानी खराव होता है ॥ स० ३१ मे जोधपुर महाराज श्री तखतसिंहजी साहिब के भवा श्री जोरावर सिहजी के कु० श्री फतेसिहजी यहा आकर ५ महीने बाग अमरसागर रहे अलावे दूसरे खर्च के रु० १ हजार हर महीने नकद रुपय खर्च को दिये गये और वैशाष सुद १२ ठा० राजश्री छत्रसिहजी महा की वाईराज श्री रायकुं० से शादी करी टीका दायजा वगैरे दस्तूर मूजब दीया जैष्ट वद ८ म्हेता नथमलजी के घरे पावरा दीया फेर राव-गोत मानजी की सला से सीरवले जोधपुर पधारे ॥ सं० ३२ में श्रीजी साहिबा की तवीयत अलील हुई जब जनाबर जोइन्ट वालटर साहिब बहादुर मए डाक्टर साहिब तशरीफ लाए ॥ स० ३३ मे माघ वद सन १८७७ ई० ता १ जनवरी को मलका मअज्जमा कुयईन विकटोरिया केसर हिन्द

काख़िताब लेने को दरबार दिल्ली में मात्र रईस इकठे हुए श्रीजी साहिब नहीं पधारे तो रज़ीडेन्ट साहब की एकज़ फौजका अफ़सर वान्लेसाहिब और नपुरसे यहां आके आमदरबार कराय सरकार दौल-त मदार की जानिब से स्पीच में इसखान्दानकी बडाई व बहादुरी की तारीफ़ करी जवाब में सर कारकी म्हेरबानियों का शुक्र अदा करके काम पडे हाज़री करने का कहा तथा आतशबाज़ी रोशनी वग़ैरे खुशी के सिवा यादगारके लिये क़ैसरहिन्द का मेला हरसाल तलाब गंगासागर पर होता है और प्रायसाहिब बहादुर व टार्न साहिब बहादुर जो पैमायश के कांम पर आए थे दरबार में थे इसीसाल भाद्रावद मेंनमक के कांम वास्ते म्हेता नथमलजी जोधपुर गये थे क़ैसरहिन्द की म्हेरबानी व-यादगार में वावटा याने निशान जनाब रज़ीडेन्ट साहिब मौसूफ़ पास आया हुआ था इनायत फ़र-माया सो लाया जब बडी ताज़ीम से वधाय के लिया ॥ सं० ३४ में भारी क़हत पडा ॥ सं० ३५ के फा-गुण में अजंट करनेल वारसाहिब बहादुर फलोधी से तशरीफ़ लाए उस वक़्त सरकार की चढाई का-बुल पर थी बारबरदारी के लिये यहां ऊंठ खरीद किये इसी साल कातीबद कलां साहिब करनेल-ब्राड फ़ोर्ड साहिब बहादुर जी तशरीफ़ लाए सो श्रीजी साहिब से बहुत ही खुश व रज़ामंद रहे ॥

श्री बीकानेर महाराजश्री रतनसिंहजी सहाने वडा हुजूर श्री रराजीतसिंहजी साहबांरी के कीरस्में बंद वारी थी सो श्री सरदारसिंहजी सहा सिदकदिलसे जारी करनी चाहिये चुनान्चे सोगात खरीता के बाद सं० २९ में टीका आया गया वकील पीछे भी नहीं पहुंचे थे कि महाराजश्री डूंगरसिंहजी म्हा राज बिराजे जब यहां से फेरटीका भेज के सोगही भंगाया परवडा महाराजके दिल में प्रीती थी सो न रही ॥ सं० ४३ के भाद्रावद ३० को स्वर्ग पधारे जब छोटा भाई गंगासहाजी राज बिराजे ॥

सं० ३९ के जेष्ट सुद १३ इतने ठिकानों की प्रतिष्टा हुई बडे बाग़ में मंडप श्री बडा हुज़ूर साहि-बांवढा: राजश्री केशरी सिंहजी सरा दो ज़नाना व राजश्री छत्रसिंहजी व दो ठकराणियों व बाईचांद-कु० - और तलाव राजरूपसागर तथा कोट देवा नाचणा लाठी हरजगह ब्राह्मणा भोजन मय दक्षणा फी आदमी १ रुप्या व पाट प्रोहितों को पहेरावणियों और कामदार गज्ज धरों दरोगों-महेंनतियों वगैरे को सरोपाव दीए ॥ सं० ४० के पोह में रोहोडी का पीर हिजबुलासहा जो सं० १५ में

भी आये थे ग्यारेई सालमे श्रीजी साहब डेरे पधारे हद से परे कादर खर्च व तबदाई १२ मुकाम किये हजारो सुरीदो के लिये रवाना शामिल होता था और सुरीदों की तरफ से दावत की नाग होती जब श्री दरबार से रवाना दिया जाता था जब से पीर साई सिरकारि से हुआ गो है ॥ स०४० मे-मुकाम साकडे रजीडन्ट कारनेल पावलट साहिब बहादुर से श्रीजी साहिबा मुलाकात करी रजन्टी का मीरमुन्शी महाजन जी ग्यारा महसूल सायर व दीवानी फौजदारी वगैरे काम कायदे से करने की सरदारो मोमीयो व सब रईयत के मुखीयो वगैरे से मजूरी कराई और जेठ सुद १२ म्हेता नथमल जी को दीवानी का सोपाव हुआ जब साहब ममदूह की तर्फ से मुन्शी जी ने खास व आम लोगो को इस्पीच सुनाया फेर मुन्शीजी व नथमल जी साहब मोसूफ पास गए काम की बाबत सलाह कर के पीछे आते मौजे महाजन इ० बीकानेर का ठा रामसिंहजी जो रूावगी और नपुर सरकारी बैद मे थे बडा साहब को श्री दरबार साहिबा की तरफ से जामनी देकर साथ लाये और मौजे गरेली ठा मेघसिंह जी को भी साथ लाने की साहब ममदूह से अर्ज करी तो फरमाया कि महारावल साहब के लिखने से सदर मे रिपोर्ट करी थी सो मजूरी भी आगई है लेकिन जैसलमेर जाने से इनकारी है फेर बहादुर सिंह जी तो अजमेर व मेघसिंह जी इ० जैपुर और रामसिंह जी जैसलमेर मे रहे खर्च के लिये रु०१५) माहवारी मा. रजीडन्टी ठिकाने से मिलता था प० कुलखर्च ४॥ वर्ष मे राजके लगे बाद मी आए के बीकानेर गए ॥

श्रीजी साहिबा की उमर दराज हो दातारी मे हद से परे नामवरी हासिल की है कि भाटो वगैरे को लाख पसाव वगैरे जो हर पीढी में देने का दस्तूर के सिवा हजारहा ऊंठ व सैकडो घोडे पचाई हाथी और गाम जमीन व नकद रुप्ये व जेवर पाचे वगैरे बेशुमार चारणों भाटो व मूमो वगैरे को दीये जिसकी साखामे बहुतसे गीत कवित दोहा वगैरे कहे है सोरठा जीनन्तर यमलाराा गोघकार्य री गावता । ते सांची तुडलाा सुह्व ग्राडी दैरमरा ॥१॥ रतनु शिवनीदान जी को कविराज का खिताब व ताजीम और गाम भू रुसारधीना जहवे गीगर मे म्हेता मतापजी दानी तथा लाख पसाव पैर मे सोना तक मात्र जेवर खास पोशाकी व हाथी घोडा ऊंठ व तनजाक्या

बंदूक वगैरे अता फ़रमाय सरदारों मूजब तनख़्वाह करादी अलाह्दा मुल्कयास ऐसेही सर दारान पर नवाज़िश फ़रमाई चुनाचे ठा० राजश्री तेजसिंहजी स्हाको पैंतालीसवें वर्ष बीकाने से बुलाय गाम सयावसी व खडीन लांरोला परे दिय तथा वरसिंह खेतसिंहजी शिवजीसिंहोत- जो तीन पुस्त से नाउमेद रु० बीकानेर में था सं० २५ में बुला के कोट बिकमपुर मए आठ गाम घल कोरके व ख़िलअत पैर मे सोना व घोडा व नकारा व छडी वगैरे तथा दोबडी ताज़ीम दे के रावकीया और खिस्तलकालिया कि कोट व गामों की मौकूफ़ी बहाली अखतेयार श्री दरबार के है रु० दो सो इकसठ हरसाले रेख का भरे व दीवानी फ़ौजदारी श्री दरबार की रख के कोट से हाकम को उठा य मौज़े नोख में कचेडी रखाई और बासलपुर राव का ठिकाना चरा व पिराग ही रहना दुशवार था सो कुसूर माफ़ कराय मरोपाव पैर में सोना व छडी वगैरे इनायत किया बाद उन्होने ओली तरफ़ ज़मीन में कई गाम बसाए हैं तथा दूसरे सरदारों वगैरे को गाम व ज़मीन बख़्शा सो गामों के नक़शे में लिखा है सिवा इसके बहुत से मुलाज़मान राज को शादी व ग़मी पर हदसे परे बख़्शिशें फ़रमाई वहाथी पालकी वगैरे कुर्ब दिया तथा रिआया के भी अच्छे र कि रियावर होने पर ख़ुशनूदी व से हरबानियां ज़ाहर फ़रमाते है जिस से हर कौम में लायक़ शख़्स है सियत से बढ़ के नांमूज के शुभ काम चुनाचे ब्राह्मणों पुष्करनों व ओसवालो व महेसरियों में पंचपरबीयों परघो डा व मंदर व मंडप व वेरा बग़ीचा तालाब व मेला मिश्री की लांवणां वगैरे २ कर रहे है ऐसेही फ़स्ली वालां में उज्जराग व मिलावयों से गुजधर मूलाव सरूप के मशहूर होने से म्हांमदी रुसाराग ७। ८ हुआ और मौसरो में खांड गलनी तो चमारों तक होगई मुफ़स्सल हाल कहां तक लिखा जावे खाना पहिनना व शादी वगैरे में ख़र्च बढने से अन्देशा रईयत के टूटने का था परंतु श्रीजी स्हाहब की नेक नीयती की बरकत से लोग बहुत आसूदा होगए और होते जाते हैं कि ज़माने साबिक़ याने- सं० १९०२ से पहिले लोगों पास जितनी बकरीं तथी अब सरकार दौलत मदार अंगरेज़ी के तुफ़ैल के बाइस अम्न होने से उतनी सांढां व गायां भैंसां हैं सं० २५ व ३४ में भारी कहत पडगया इस देस में मवेशी ज्यादे नहीथी सं० ४४ में बेशुमार मवेशी मरगई तो भी ज़माने साबिक़ से कई दरजे

बढ़ती है तथा खेती पर भी पूरी ४ तवज्जह है जिससे सैकड़ो बधे व कुवे हुए व होते जाते है ॥ कि केळणावाटी मे जहां घास भी नही होती थी गेहू होता है और ८० पुर्य कुवा खोदने से खनिकलो थी वहां ४० ७ पुर्से मोजेरा गोरी वगेर में मीठा पानी की हजारों बेरीया होगई है अलाहाजुलकय स देश में कई जगह बेरीयों का पारव कुवा गांव बना हुआ व गामो में गेहू होने लगा सो गामो के नकशे में मालूम हो सकेगा॥

श्रीजी साहबों की उमर दराज हो - दीवाली, सालग्रह, वसन्त, अखातीज, दसहरा वगेर के आम दर्बार का ठाठ आनंद और दीवाली होली के बाद कई दिन शिकार को पधारने व शुदी ५ हर महीने बडे बाग व कई मेला में सवारी मय लवाज्मे होने व गोठ खेल होला चौथ वगेर के पाह्म व बाग में खुशी का समाज होता था सो स० ३० के बाद तबीअत नासाज रहने से बराय नाम के रहे है तथा देखी सुनी बातों की याद हदान हद है कि तवारीखी हालात भाटी जात व देश में मा व कौम के स्यापणा सुधा तो ठीक पर० राजपुताना के रईस व थांपा के ठाकरों के नाम गाम मरत्वा वगेर: की वाकफियत अजहद है और खास व आम लोगों पर नेक नजर से हरएक कीक दर व इज्जत का लिहाज हद से परे रखते हैं - अलाहाजुल क्यास हर तरह हूरअंदेशी व होशियारी वगेर: की सिफतें कहां तक लिखी जावें मगर शरीर की लाचारी से राज को सुखन होने के अलावा दिल में नाउम्मेदी ने तरक्की सुधारे को ताक में रखकर सब कारखाने अबतर कर दिये हैं० हा दई व प्रधान थाने इकबाल की खूबी से चलरहे है॥

+ जमीमा तवारीख हाज़ा नम्बर (१)

चूंकि महता नथमलजी साहब दीवान राज मोसूफ की ल्याकत व सामधर्मे व दूरअन्देसी व वाकफियत वगेरह वगैरह दानाई से कारखाईयां नेकनीयती के बरताव का हाल जो मुफसल लिखा जावे तो ४ जिल्द में भी पूरा नहो सके वास्ते मुख्तसर नमूना जो इसमें लिखा गया है उसकी तशदीक के लिये बड़न सी दलीलो व सन्दों में से दो सनद का खुलासा लिखना वाजब हुआ सो यह है कि महताजी मोसूफ को सब तरह से लायक समझ कर ४० बर्ष तक बडे -

हजूर श्री रणजीतसिंह जी साहब व ठा॰ राज श्री बखसिंह जी साहब और खास कर महा रावलजी श्री बैरीसालजी साहबां ने क़दर अफ़जाई से जो जो महर्बानियें व निवाजसें फरमाई सो तो मशहूर आम हैंहीं - फेर वसियत नामा में भी राजकाज चलाने का पूरा भरोसा इन पर हीज कर के आपने श्री हस्त की सही से लिखा दीया - अलावा इसके हुस्काम वक़्त भी खुस व महर्बान रहे चुनाचें: जनाब कर्नेल ईडन साहब बहादुर जी ने सम्वत १९२१ के मुताबिक सन १८६५ ईसवी में खरीता व खत लिखा दीया उसकी इस पर महारावल जी साहब ममदूह ने अपनी रज़ामन्दी की सनद लिखवा कर खरीता व खत महता जी साहब के हवाले किया जिसकी नक़ल लिखता हूं॥

खरीते में मामूली अलकाब आदाब के बाद लिखा है कि महता नथमल जी वकील आपका जबसे मैं अजन्टी राजपूताना में आया मेरे पास हाज़र रहा और उसकी खैरख्वाही जो वास्तेः काम अपने राजके अमल में लाया मैं ख़ुस हुआ अब जो मैं जैसलमेर में आया और बहुत शिकायत अजीतसिंह की सुनी मुनासब मालूम हुआ कि महता नथमलजी वजाय महता अजीतसिंह कामदार ठाकुर केशरीसिंह जी का रहे और अजीतसिंह हमारे साथ कार वकालत पर हाज़र होवै और जब यह शिकायतों की गरमी ठंढी हो जावे तो जैसा मुनासिब हो कीया जावे इस वास्ते महता नथमलजी को ख़िदमत में आपके रुखसद दी और यह खरीता बतौर सनद रज़ामंदी अपनी के हवाले उनके कीया कि आपकी खिदमत में पेश करे और उम्मेद है कि आपभी उनको नेक चलनी से खुस और रज़ामन्द रहैंगे और उनपर महर्बानी रक्खेंगे फक्त ज्यादह मसरत बाद अलमरकूम २२ अक्तूबर सन १८६५ ईसवी व मुकाम लाठी दस्खत अंग्रेजी में॥

इसकी पुस्त पर बमूजब हुक्म श्री मुख

जो कि ये सनद वास्तेः सनद हमारी रज़ामन्दी के कि इस मूजब बन्दगी बजाने याने

हमारी मरजी मूजब हीज वरताव रखने से महर्वान होकर नथमलजी को रोबरू इनायत कराय है श्रोर श्रायन्दा को ही पूरा भरोसा कीया गया सम्वत १९५४ का मृगसिरवदी ३ गुरु   द० मु० इन्दराज

खत

स्वस्ति श्री सर्वोपमा ठाकुरां राज श्री केशरीसिंहजी जोग्य कर्नेल वलियम् फरीडरक इडन साहब बहादुर श्रजन्ट गवर्नर जनरल राजपूताना लिखावत सलाम बांच जो श्रठा का समाचार भला छे राज का सदा भला चाहिजे श्रपरञ्च महता नथमलजी जबसे मैं श्रजन्टी राजपूताना मे श्राया वकालत पर ज़ानिब राज जैसलमेर से मेरे पास हाजर रहा श्रोर श्रपना काम मेरे रोबरू राज की खेरख्वाही के साथ श्रच्छा श्रंजाम दीया कि मैं उनसे खुस रहा श्रोर उनकी वजाय श्रोर तोर से मालूम होता है कि उसकी चालचलन श्रच्छी श्रोर व सबब सुनने शिकायतों को कि जो निसवत महता श्रजीतसिंह कामदार के बहुत कसरत से थी ऐसा मालूम हुश्रा कि महता नथमलजी उसकी जगह कामदारी पर मुकर्रर हो श्रोर महता श्रजीतसिंह को वजाय महता मोसूफ के वकालत पर मोइयन कीया जावे श्रोर उम्मेद है कि महता मस्तूर श्रच्छा काम दयानत से श्रंजाम देगा श्रोर श्रापको खुस रक्खेगा श्रब जो हमने महता नथमलजी को रुखसद कीया है खत वतोर रज़ामन्दी श्रपनी के उसकी चालचलन से श्रापको लिखा गया श्रोर उम्मेद है कि राज भी उसके हाल पर महर्वानी रक्खेगे तारिख २२ श्रक्तूबर सन् १८९४ इसवी॥ दसखत श्रङ्गरेजी

पुस्तपर बमूजिब हुक्म श्री मुख

यह खत व खरीता वास्ते: सनद रज़ामन्दी के नथमलजी को सोपा गया सम्वत १९५४ का मृगसिरवदी ३ गुरु॥   द० मु० इन्दराज

इसके सिवाय दीवान नथमलजी की ल्याकत इसी बात से ज़ाहिर है कि उन्होंने अपने अहद दीवानी में रईस और रैयत दोनों को खुस रक्खा और इस थोड़ी सी आमदनी पर (कि उसमें भी ५ साल बराबर अकाल पड़ने से कमी आगई) राज के सारे कारबार को चलाया और दूसरी रियासतों के इखराजात को भी जिन से इस राज्य का संबन्ध अथवा रिश्तेदारियां हैं निभाया मइनत और जफ़ाकशी ज़ाहिर होइहै कि करीब डेढ़ बर्ष तक आखों की सख्त बीमारी पर भी राज्य का काम बराबर चलाते रहे कभी हर्ज न होने दिया इन्हीं के अहद दीवानी में जेसलमेर में सरकारी डाकखाना कायम हुआ और दीवान साहब मोसूफ़ एक बड़ा स्कूल भी सर्कारी तौर पर जेसलमेर में काय-म करना चाहते थे परन्तु शोक कि आंखों की बीमारी ने इनको राज्य के काम छोड़ने पर मजबूर कर दिया तो भी यह एक जिन्दादिल और तजरबेकार कीमती अफ़सर राज्य जेसलमेर के हैं इन की सलाह और मसवरे ही से राज्य और रैयत का बहुत फायदा हो सक्ता है सब से बड़ा सदमा महताजी साहब मोसूफ़ के दिल पर श्री दर्बार महारावल श्री बैरीशालजी साहब के स्वर्गवास होने से पहुंचा जिसने सच पूछो तो इन की कमर तोड़ डाली (हम उक्त दर्बार के बैकुंठ बास होने और सर्कारी बन्दोबस्त का हाल इसी ग्रन्थ के अन्त में एक खास ज़मीमे के अन्दर लिखेंगे) महताजी साहब ने श्री दर्बार स्वर्गवासी के रोबरू बहुत से नये कायदे भी बना कर पेश कीये थे वह चल पड़ते तो राज्य और रैयत दोनों को लाभ होता परन्तु बराबर अकाल पड़ने और परजा के बेदिल होने से वह नियम प्रचलित न हो सके जो कि आज दिन राज्य का इन्त-जाम हमारी सर्कार के हाथ में है और श्रीमान कर्नेल पौन्डबली पोलिटिकल एजेंट साहब बहादर दिल व जान से इस रियासत की भलाई चाहते हैं इसलिये हम को आशा है कि सब कुछ अच्छा ही होगा उक्त साहब की दानाई और महरबानी इस रियासत के लिये अच्छा फल लायेगी हम को महताजी श्री नथमलजी की ज़ात बाबरकात और अकलमंदी से भी उम्मेद है कि वह भी ऐसे समय में अपने प्राचीन मालिक की भलाई के लिये राज्य और सरकार को नेक सलाह देने में कोई दकीकाबाकी न रक्खेंगे परमेश्वर ऐसा ही करें॥

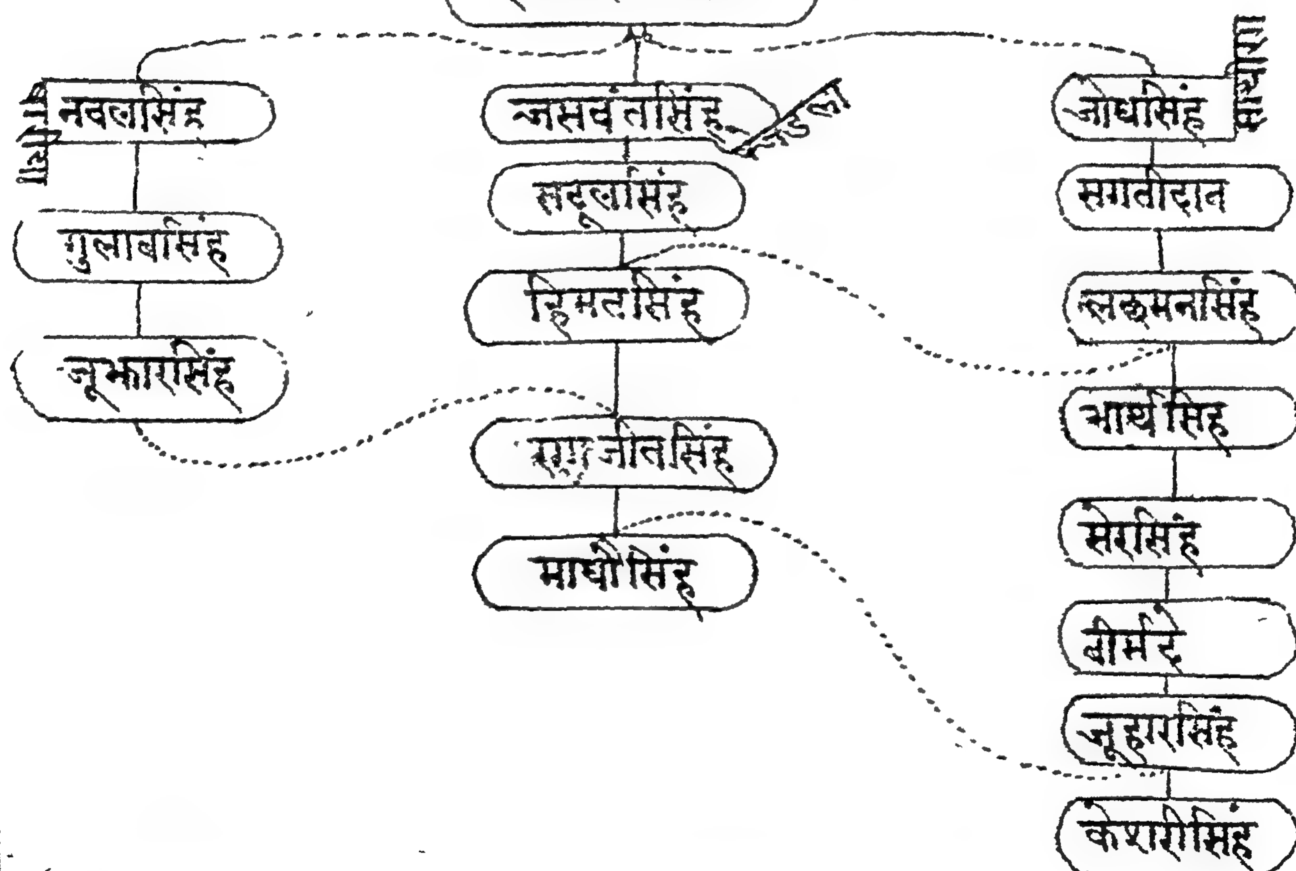
रैसरवाह जेसलमेर मुहम्मद मुरादअली

दफ़े ४

मारवाड में भाटी सरदार

महारावल श्री मूलराजजी जैतसिहोत के कु॰ देवराज का खाप हमीरोत अर्जनोत और महारावल केहर के कु॰ कलकरण के बेरे जैसे का खाप जैसाव महारावल अमरसिंहजी के छोरे कुंवरों का खाप रावलोत और दूसरे बहुत से भाटी इलाके राज मारवाड में रहते हैं चुनान्चे सं॰ १८९६ में जोधपुर महाराजश्री मानसिंहजी साहब के कुल सरदारों से जनाब रज़ीडेन्ट कारनेल सदरलैन साहब बहादुर ने सफ़ाई कारवाई नव भाटी सरदारों के गाम रेख के १२४॥। व बधारे के ३५॥ जुम्ले १६०। जिस की पैदा रु॰ ११२९०८) रेख व २०५००) बधारे जुम्ले रु॰ २७२३०८) की लिखी है और बहुत से गाम बिला रेख के जुदे हैं और कई ठाकुरजी इज्ज़त अव्वल नम्बर के उमराव हैं अगर मुफस्सिल हालात जो भाटीओं का दिल्ली वगैरे से मारवाड में आना और रियासत का प्रबन्ध बांधना व गद्दीनीन देना चौथे हिस्से के हकदार होना और गढ़ मुल्क का बन्दोबस्त रखना बादशाहों को जवाब देना व लडाइयों मे मरना मारना चुनान्चे रुघनाथसिंह दिल्ली में जसवन्तसिंहजी की लाशों को बचाने मे बादशाह के कई अमीरों को मारकर मरा वगैरे वगैरे लिखा जावे तो ऐसी हो १ किताब मे पूरा न हो सके—बडे ही नामीगिरामी दातार व सूरवीर व सरनाया साधार हुए गाम बानरवे ठाकरां का सोरठा पई डागडे पया लजसरथ कोड जूवो नही ॥ जगसिंहजी बराया न जादमडा वे जैतसी ॥१॥ दिसे है बागा हरदास दिस इजी सारी दुनी । लोइजतो लोतास फ्लुहि कमारी कानउत ॥२॥ तथा गाम पछी के ठाकर भैरूजी का **दोहा** कलजुग वहे करूर सूमनदी जल सोखीयो । पयरत्नागर पूर गरजे भाटी ज्ञानउत ॥१॥ और खेजडले ठाकर जोधसिंहजी तो महाराजश्री मानसिंहजी को जालोर भेजकर आप श्री भीमसिंहजी की फौज से लड मरे फेर सगतीदानजी पांची विहारीदास को पना ईदी जब बहादुरी व दूजे कई कामों मे खैरखाही व अपालमदी वगैरे की खूबियों को महाराजश्री मानसिंहजी साहिब ने आंसुख से जस व मरसीये बहुत फरमाये

सो दोहा रजपूतीकुवसनहुई पड-मांगे प्रतिकूल । पाछे आंगी ग्रहपलो सगतो नै सादूल ॥१॥ अलाहाज़ुलकयास -
तथा रावलोत सरदारों ने राज मेवाड जैपुर झालावाड नरसिंहगढ वगैरे में पटा पाये है
(महारावलजी श्रीमूलराजजी जैतसिंहोत् के २ देवराज ३ हमीर ४ लूणकर्न ५ छत्रसाल ६ उर्जन ७ सांवतसी ८ सीहा ९ रायपाल १० आसकर्न ११ गोपालदास १२ कुः दयालदास दिल्ली से मारवाड में आए १३ केसरीसिंह १४ सूरसिंह १५ हठीसिंह १६ किस्तसिंग)



राजमारवाडसेसीवनिकलीवबाकीरही की बिगत

संवत१९४१ में तिखूंटे पहोकरां से खेलांणां तक सीव वोस जनाव करनेल पावलट साहिबबहादुर ने निकलाई फेर राजगढ की तलाई परतकरार करने से अटकी बाद बहुत झमेल रहा जोधपुर की फौज आकर राजगढ का भारी बिड-दसिंह को ज़िन्दा मारा फेर सं०४४

मे जोधपुरसे महाराजश्री प्रतापसिंहजी सहा व यहांसे कु॰ श्री शिवदानसिंहजी सहाने सरू करके गाम पौले वडागरी ई॰ हाजा व घारबी ई॰ मारवाड के तिखूंटे पर छोडी ॥ सीव पटे पट्टोकरां से गाम कायरारे कोरनक किजहां सेवलसाहबने छोडीथी मोतमिंदान महेता अखैराजजी जैसलमेर व मोतीलालजी मारवाडने सं॰ ४२मे सरूकारके गामसी हडा व बेगरी व पट्टोकरां के तिहद्दे तकानिकाली ॥ अबगाम बैंगरीसे ऊदट गौर पौले से वधी बावली तक करीब कोस २० के रहीहै सो भी उमेद है किजीडरसाहब मोसूफ जलद पे सला करावे गे ॥ ४ ॥

दफे ५ कलपवृक्ष महारावलजी श्रीजसवंतसिंहजी के वंशका ॥

दफे ६ भाटी व मोहा सरदारों के नाम व गाम व ताजीम वठिकाने की पेदा नरलमोनल जोरजोडन्स साहबकोस० १९४२ में लिखदी है सो तथा सहर में रहे जब तनखाह श्री दरबार से मिलने वगैरे का हाल॥

१ । १ | महारावल जी श्री केहरजी २ केलणजी ३ चाचा ४ वरसल ५ सेखा ६ हरो ७ वरसिंग सेखां पवरसिंग हुई ८ दुर्जनशाल ९ डुंगसिंह १० उदेसिंह ११ सूरसिंह १२ वेहारीदास १३ जैतसिंह १४ सुंदरदास १५ अचलदास १६ वाकीदास १७ गुमानसिंग १८ नहारसिंग १९ जुझारसिंह २० शिवजीसिंह २१ खेतसिंह २२ कुं: अमरसिंह विकमपुर राव दोवडी ताजीम नगारो छडी डावी मिसल अवलनम्बर तनखाह रु० १५०) पैदा रु० ३०००)

२ । ५ | ४ वर्सल ५ सेखा ६ खींमाल सेखां परखीया हुई ७ जैतसिंह ८ मालदेव ९ मंडलीक १० नेलसी ११ प्रथीराज १२ दयालदास १३ कर्नसिंह १४ भानीदास १५ केशरीसिंह १६ लखधीर १७ अमसिंह १८ मानसिंह १९ साहबदान २० रणजीतसिंह २१ धनराज २२ कुं मोतीसिंह वरसलपुर राव जी वरा मिसल बाकी विकमपुर मुजब पैदा रु: २८००)

३ । ७ | वरसिंग ८ जैसिंह ९ कान १० आसकर्न ११ जगदेव १२ सुदर्शन १३ गुरोमदास १४ किजेसिंह १५ दलकर्न १६ अमरसिंह १७ रामसिंह १८ कर्नसिंह १९ रुघनाथसिंह पुगल राव कुर्व वरसलपुर मुजब

४ । १४ | सुंदरदास १५ लाडखांन १६ सरूपसिंह १७ सेरसिंह १८ रतनसिंह १९ साहबदान २० वूलीदान ठा० विकासर पैदा रु० १५०

५ । १५ | अचलदास १६ किरतसिंह १७ दानसिंह १८ भोमसिंह १९ जोरावरसिंह २० जेठमल २१ अमरसिंह ठा० गिरराजसर ताजीम वडी तनखाह रु० ३०) घरवैठा पैदा रु० ७००)

६ । १६ | वाकीदास १७ मूलसिंह १८ मदनसिंह १९ जैसिंह २० वीझराज २१ हठेसिंह ठा० वांगडसर पैदा रु० १५०)

७ । ८ | दुर्जनशाल ९ भानीदास १० मानसिंह ११ भगवानदास १२ राजसिंह १३ अजवसिंह

	१४ पेमजी १५ अनोपसिह १६ लखधीर १७ सूर्जमल १८ आलमसिंह १९ हीरजी २० मूलजी २१ कु० कानजी ठा सिर्ड वा बडी तनखाह रु २५) पैदा रु ७००)
	तथा १५ अनोपसिह के १६ नथराज १७ भोमजी १८ रावतसिह १९ भोजराज २० कु० कल्याण ठा नथराजकी सिर्ड
८|८	दुर्जनशाल ९ भानीदास १० गोपालदास ११ सावलदास १२ जैसिंह १३ जोगीदास १४ सिवदानसिह १५ सगरामसिंह १६ चैनसिह १७ दुर्जनसिह १८ उमेदसिह १९ प्रतापसिह २० नवलसिह २१ कु० अमरसिह ठा० जोगीदासकी सिर्ड ता तनखाह रु ३०) पैदा रु १५०)
९|११	सूरसिह १२ आगदास १३ वीरभान १४ अभैराम १५ सुखजी १६ सरदारसिंह १७ इंद्रसिह १८ रुपजी १९ हीरजी ठा० आंधी
१०|११	सूरसिह १२ मूलसिंह १३ जैसिह १४ रामसिह १५ अनोपसिंह १६ सरदारसिंह १७ लालसिह १८ जमजी १९ गायददास २० उदैसिह ठा० भोजांकी वाप
११|११	११ स० १२ दलपत १३ साहिबखा १४ बिजैसिह १५ नरसिह १६ पेमजी १७ सालमसिंह १८ इंद्रसिह १९ ठा० वावडी
१२|१०	उदैसिह ११ ईसरदास १२ हाथीसिह १३ जुगतसिह १४ नथराज १५ सरूपसिंह १६ समेलसिह १७ वनजी १८ मघजी १९ कानजी ठा० वडी सिर्ड

महारावलजी श्रीमालदेजी सेमालदेयोत व कुं: २ खेतसिंहजी से षेतसिंहोत

इनके ३ पन्चांनको पन्चानोत ४ रामसिहको रामसिहोत ५ उदैसिहको उदैसिहोत ऐसे हो खेवसिंहोतो से जो जो खापा हुई सो लिखी गई

१|५	उदैसिह ६ कल्याणदास ७ मूलचन्द ८ अनोपसिह ९ जोरावरसिंह १० आलमसिह ११ जेयराज १२ शिवजीसिं १३ बुली दान १४ कु० पदमसिंह ठा० चंंदनसाली वा जांमबडी तनखाह रु० ८०) हमार गाम कूडा वनीवली पैदा रु० ३५०)

२ । ८ अनोपसिंह ९ खेतसिंह १० वाघजी ११ भोजराज १२ बिजैसिंह १३ कु० अचलसिंह १४ भं० गलसिंह ऊपरमुजब ठा० गाम गेहूं पैदा रु० ३५०)

३ । ८ अनोपसिंह ९ सरूपसिंह १० जोधसिंह ११ प्रथीसिंह १२ तेजमाल १३ कु० प्रतापसिंह - ठा० गाम सीहडगर तनखाह रु० २०) पैदा रु०

६ कल्याणदास ७ अर्जनसिंह ८ मानसिंह ९ अमेदसिंह १० धनजी ११ जसवंतसिंह १२ लालजी १३ चमनजी १४ भ० किस्नसिंह ठा० माडली ताज़ीम इकेवडी तनखाह रु० ५५) पैदा रु० ३५०)

४ । ६ कल्याणदासजी ७ भीमसिंह ८ सारासिंह ९ म्हैराज १० भगजी ११ संभूदान १२ चूलीदान १३ कुं० समर्थसिंह ठा० देवडा ता० तनखाह रु० ३०) पैदा रु० ३५०)

ऊपरलिखेपांचो ठिकानेउदेसिंहोत हैं

१ । २ खेतसिंह ३ पचांगा ४ रामसिंह ५ तेजमालका तेजमालोत ६ सुलतानसिंह ७ दौलतसिंह - ८ सवाईसिंह ९ सरूपसिंह १० जानसिंह ११ मघीराज १२ बखतावरसिंह १३ कुं० खुसालसिंह १४ भ० नगजी ठा० राधा ताज़ीम वडी तनखाह रु० ५५) पैदा रु० ६७५)

२ । ७ दौलतसिंह ८ मानसिंह ९ सूर्जमल १० संभूदान ११ न्हारजी १२ राजीतसिंह १३ कु० ठा० मोठा तनखाह रु० ३०) पैदा रु० २५०)

३ । ६ सुलतानसिंह ७ पदमसिंह ८ जोरावरसिंह ९ रामसिंह १० गुलराज ११ कु० चूलीदान ठा० तेजमालोत तनखाह रु०

१ । २ खेतसिंह ३ ईसरदास ४ लूणकादासकालूणकादासोत ५ भागचंद ६ जाडखान ७ अभैसिंह ८ मेघजी ९ हालमसिंह १० भोजराज ११ जेठमल १२ म्होबतसिंह १३ पनजी ठा० गाम बारू ताज़ीम वडी तनखाह रु० ६०) पैदा रु० ३५०)

२ । ५ भागचंद ६ चंद्रसेन ७ राजसिं ८ दलपत ९ सुजानसिंह १० रतनसिंह ११ भगवानसिंह १२ हीरजी १३ कुं० बखतावरसिंह १४ भं० बारू ता० वडी तनखाह रु० ३०) पैदा रु० २५०)

३ । ५ भागचंद ६ मूलचंद ७ लालचंद ८ फतैसिंह ९ बांकीदास १० खेतसिंह ११ चमजी १२ काछब

सिंह १३ कुं० अखैदाने गामटेका

		सिंह १३ कुं० अखैदाने गामटेका
१	२	खेतसिंह ३ सगतसिंह का सगतसिंहोत ४ हरीसिंह ५ फतैसिंह ६ किसोरसिंह ७ जोरावरसिंह ८ बाकीदास ९ प्रथीराज १० भगवानसिंह ११ भोजराज १२ फतैसिंह - ठा० सतेआयो ताजीमवडी तनखाह रु ४०) पैदा रु० १७५)
२	४	हरीसिंह ५ न्हारसिंह ६ कल्यागसिंह ७ म्होकमसिंह ८ धीरतसिंह ९ जोगराज १० अभजी ११ वीरदान गाम घटियाली
३	३	सगतसिंह ४ केसरीसिंह ५ रतनसिंह ६ जुगतसिंह ७ लखधीर ८ सगराम ९ जालमसिंह १० राजसी ११ हीरजी १२ कु० बखतावरसिंह ठा० अजासर तनखाह रु १५) पैदा रु० १००)
४	५	रतनसिंह ६ रायसिंह ७ अनोपसिंह ८ हिन्दुसिंह ९ नथुसिंह १० करनसिंह ११ न्हमजी १२ अजीतसिंह १३ कु० वैरीसाल गा० वालाणो पैदा रु १००)
५	७	अनोपसिंह ८ सगरामसिंह ९ जेठमल १० न्हारसिंह ११ म्हेराज १२ बलवंतसिंह ठा० ग्यासकोने तनखाह रु ३०) पैदा रु २००)
१	३	पचांणजी ४ प्रथीराज का प्रथीराजोत ५ भोजराज ६ केसवदास ७ रतनसिंह ८ खीमजी ९ भावसिंह १० सवाईसिंह ११ बूलीदान १२ प्रतापसिंह १३ कु० म्होबतसिंह - ठा० नवैतले ताजीमहै तनखाह रु २५) पैदा रु० ३५०)
२	४	प्रथीराज ५ जोगीदास ६ लालचंद ७ पदमसिंह ८ बाघजी ९ सेरसिंह १० बाकीदास - ठा० गाम जोगीदासरो -
१	२	खेतसिंह ३ बाघजी ४ गोर्धनजी ५ गिरधरदास का गिरधरदासोत ६ हरनाथ ७ रूपसिंह ८ मूलसिंह ९ सवाईसिंह १० बभूतसिंह ११ साहिबदान १२ भोजराज ठा० गाम कोड
१	२	खेतसिंह ३ रपालदास ४ बेहारीदास का बेहारीदासोत ५ जसवंत ६ जैतमाल ७ मूलचंद ८ अनोपसिंह ९ जानसिंह १० रुघजी ११ बूलीदान १२ कु० आर्यसिंह गाम वडेगाम तनखाह रु० ३० पैदा रु० १५०)

२ ४ वेहारीदास ५ कुसलसिंह ६ हरीराम ७ रामचंद ८ परमसिंह ९ जूझारसिंह १० साहिब
दान ११ अतीदान गाम डांगरी ता० हे तनखाह रु २०) पैदा रु ३५०)

३ ६ हरीराम ७ सहसमल ८ हंदूसिंह ९ भगवांनसिंह १० समेलसिंह ११ पीरदान १२ हेमजी
१३ लछमनसिंह गां० डांगरी ता० हे तनखाह रु ३०

४ ५ कुसल सिंह ६ शिवदास ७ बिनेसिंह ८ जोगीदास ९ राजसी १० खेतसिंह ११ जोध-
सिंह १२ हीरजी १३ कुं० गां० राजगढ़ तनखाह रु ३०) पैदा रु १००)

५ ४ वेहारीदासजी ५ जसकर्न ६ जैतमाल ७ मूलचंद ८ अनोपसिंह ९ सुरतांनसिंह १०
लखजी ११ मोडजी १२ कुंअलवंतसिंह गाम लषासर तनखाह रु १५)

---

१ ३ पचांराजोध रामसिंह ५ दुर्जनसाल का रुजावत ६ गजसिंह ७ अजबसिंह ८ उदैभां
ण ९ सुवाई सिंह गामवसायो १० बभूतसिंह के खोले पदमसिंह कोबेटो ११ प्रथीराज १२ हेम
राज गाम चेलक ता० हे प्रधानगी तनखाह रु १५)

१ ४ रामसिंहजी ५ अखैराजजी का अखैराजोत ६ भावसिंह महाराजजी श्री अखैसिंह
जी गाम रावा की दीयो विखेकी चाकरी में ७ जोरावरसिंह ८ थानसिंह ९ आसकर्ण-
१० हडवंतसिंह ११ मोड- गाम रावरकी

२ ५ दुर्जनसाल ६ गजसिंह गामवसाया ७ दलकरन ८ वीरजी ९ सोभजी १० जान
सिंह ११ बूलीदान गांम गजसिंह का

सुवार उर्फ सोढा अमरकोट का खांप हुरतांन तो पारकी है और नारनोत थाने नारान का वेटा-
वैरसी गंगदास रांम हमेसांसे तावेदारीमें रहे श्रीमूलराजजी साहबों ने गंगदास-
दौलतसिंह गाम ढोल वाले को जागीर गाम खूहडो सं० १८४२ में दीया और राम मदनसिंह होतें
सुलतांनाउ वाले को गाम लूणाय रहवास तो सं० १६ में और वसी सं० २७ में लिखदिया ॥

न्याकरडे कूपला जोड सूजे वगैरेमें सोदारहतेहैं परंतु वसोगामनही तनखाह रु २१ है मव(?)
ओकारीयाहे ॥ १ गग दास २ हीगलीदास ३ भैरवदास ४ वोतो ५ दोलतसिंह ६ राधी
सिंह ७ साहवदान ८ राजीतसिंह ९ कुं० रायसिंह १० मं० पना गाम खूहडो ताजीम
वडी तनखाह रु ४०) पैदा रु २००)

१ गग दास २ हीगलीदास ३ जेठा ४ भीम ५ राजसी ६ गजसिंह ७ विशनसिंह ८ रगाजी
तसिंह ९ कुं० धनजी महाजलारकी सीवमे जमीन वखशाई परकाबनहोनेसेगाम नहुआ
ताजीम तनखाह रु ४०)

१ राम २ उदेकरन ३ अमरसिंह ४ सुदरदास ५ सुरतानसिंह ६ जोधसिंह ७ भोजराज ८
मदनसिंह ९ मोडसिंह १० म्हेराज ११ कुं० ताजीम तनखाह रु ४०)

जागीरदारो व भोमीयो के गामो की पैदा बावत रेख या तिसाला वगैरे कोई लागराजकी नही
है बलकि हमेशाकी नोकरी भी नही लीजाती जोकोई सरदार या भोमीया खासशहरव हकूम
तो मे नोकरी करतेहै सो तनखाह पावे है सववयह था कि गामो मे पैदाही नही थी क्योंकि गेहूं
पैदाकरने व किरसावढाने की तो मनाईजथी और नवाकुवा भी राजकी इजाजतसे बनाया तोभी ताल
कीलाका वधाया गया और सवासाल भाडलीठा० धनजी गेहूं कराया सो ज़बत हुआजब ठाकुर
सूरजने घोडी १ नजरकरके माफी कराई लेकिन आयंदे गेहूं नही करनेका लिखत करदिया
तथासारव सोयालु भी बर्षाकी कमी व कहत धाडा वगैरे केखौफसे खेती कमही करते थे जिस
मे भी रजपूतो सिपाहियो वगैरे से हासल मुकाता नही लेते थे हां यह लोग सरदारकी शादी मे नो
ता और मोसर मे खाड वारस व श्रीदरबार मे घोडा नजरकरे जिसकी कीमत दो रुपये हैसियत
मुजब देतेथे और कामपडे घरकाहोतो सुधा नोकरी करते है और साहूकार वगैरे रईयत से घूंपी
साडी हासल वगैरे की पैदा भी सबकी शिवाय खापदर भांगो के सबभाई बाटा कर लेते है यह रस्म अ
यरा वंद करने के लिये भी दरबार साहिबो यहातक धणीयाप फरमाई कि कई गाम जेयसर पारदी

भोगवरों की सरत पर इनायत कराये वांटा कोरे वो गाम खालसे कीया जावे परन्तु बिल फेल तो वांटा करलीया है पाटवी पिरां सिर्फ राज से तनख्वाह व ताजीम मिलने का है मुराति न तो गाम में पैदा यी और न ह मेश की जाग मुकर्रर की गई जो सरदार फोत होते है तो भी कुंवर से कमर बंधाई की लाग नहीं लेकर सरोपाव दीया जाता है जिसकी मोताज एक ऊंठ व पांच रुप्ये धर्ईयात व जामडे को देते हैं फेर मातमी को पधारे जब रावजी तो एक घोडा एक ऊंठ व मोहर थान एक नज़र व रुप्ये पांच नोछावर करे और दूजा सरदार नज़र नोछावर थान व रुप्ये ही जकराते हैं तथा उस ज़माने में खेड मुहीम वगैरे की नोकरी बहुल ली जाती थी याने हर एक गामके कई आदमी मय अस्त्र व पुर्न हाज़र रहते थे उनको दरजे मुजब बल पटिया व अमल राज से दीया जाता था सो सरकार दौलत मदार की तरफ से राजपूताने में अजंटियां होने बाद ऐसी नोकरी का काम ही नहीं रहा मगर वख्षे पेरीयों के खर्च से विकालते वगैरे का खर्च राज को तो ज्यादे ही लगता है इन्हों से तो सिर्फ घोडा या कीमत का रुप्या नीचे लिखे मौकों पर लेने का रिवाज बन रहा है ॥

एक श्री दरबार साहबों के राज्याभिषेक हो जब टीलाडे का दूजे श्री दरबार साहब या महाराज कुमार का विवाह हो जब त्याग का तीजे श्री बाई राज की सादी हो जब दायजे का चौथे श्री दरबार साहब गांमे पधारे जब नज़राने का ॥

ऊपर लिखी लाग भोमीयों से तो रुप्ये वसूल हो गए और सरदारों में सं० १९१५ पीछे घोडे रान ९ चाहि ये जिसमें किसी ने एक दो किसी ने तीन चार नज़र किये वाकी वाकी है तथा सं० १९७२ से पीछे कई गाम जागीर व रकडीन पटे बख्शे जिसका भी घोडा किसी ने नज़र नही कीया सिवाय इसके चोरी धाडे के मुकद्दमात का हज़ार हा रुप्या अजंटी जोधपुर में राज से दीये गए सो सूद से लाखों होते हैं तथा पडोसी रिआसतों से सरहद्दात निकली जिसके सरफे के रुप्ये जो उन्हों के गामों पर वाजिब हैं लेने वाकी हैं वाज़े गाम भोमीयों पर घोडे के ठांमा का फी गांम साढे पांच रुप्ये सालियाना वसूल होते हैं ॥

श्रीजी साहिबां की उम्मर दराज़ हो मान्य सरदारों व भोमीयों व सांसन वालों को आबादी आमदनी में तरक्की करने की साफ़ २ हुकमाती देकर ताकीद फ़रमाई जब से बहुत से गाम नया कूवा व बंधा त्यार हुआ

और कितेही गाम गेहूं व तिल कपास होनेलगाहै तथाखापवरसीगोके गामो मे जाद विसनोई वी रे वहुत मेकिरसे आबाद हुए जहा पैदा भी बहुतवढ गई औरवढती जातीहै मगर भाई वेटे केगाम है जहा तरक्की नही होसक्ती इस वीये दूरअन्देश सादार भी अवदिलसे चाहते हैं और हकीकत मे वहु तही मुनासव ववाजिव है किगाम का एक सरदार पाटवी मालक व जिम्मेवार रहे जैसे कि और रिया स्तो मे है ताकि आवादी आमदनी मे खातर खाह तरक्की व चोरी धाडे का वन्दोवस्त वगैरह हरएक- काम आसानी से हो सके लेकिन यह तजवीज श्रीदरवारसाहिव व जनाववरजीडन्ट साहववहादुर सलाह करके करेंगे जवहोगी वगैरह दोनो साहिवो की सलाह के कोई तजवीज पेश नही चलने की क्योकि सं० ४१ मे न्हेसूलमे सरदारो का हक इसमतलव सेरक्खा था कि दगा चोरी भी नहोगी और पाटवीको हिसाव श्री दरवारसे मिलेगा तो सवतरह सेउनको फायदा होगा लेकिन अलावा- काखगा के दूसरे सरदार इसवातको कुछ भी नसमझे जिससे राजका रुपया भी माराजाताहै औरठाकुरको भी सिवाय पशेमानी के हासिल नही होताहै ॥

अथ इतिहास

दफे ७ रावरांगागदे व कुंवरसादे चकेलराजीकाइतिहास

पूगलराव रांणागदे के कुं० सादे का घोडा मूर के शिकारमेमारावन्नीनेकहा पाया भाटीयाहै जिसपर कुवरसादे नेजैतुगसिंदे रादलोत राकसीयेसोमलूणावत् जझवीके त् पाहू लखमसी देदावत साथ ३५० मनुष्यो से आडेवलेके गगडनिर्बाणकी १४० घोडीलीवी गाडे वहार चडा सो ८ कोससेपीछागया सादो गामके तलाव पर आया मोहलराजा मांणक राव- की पुत्री कोड मदे बहुत सहेलीसाथ तीजरमणको आई जवसादेने घोडेको रानो मेउठाय हा थो सेवडकी सारव पकड होडा लीया कोडमदे मोहित हुई पीछा आकर माकी जवानसे वाप- कोकहा किइसको हीजपरनावो हरचंदसमझाई किराठोड अर्ढकमलचूडावतसेसगाईकी

हुई है दोनों घर बिगडैंगे परनहीं मानी लाचारकुं० मारेकोन्योरोल दे करकहा कि विवाह करलो-
माहावो अज्ञानकर आऊंगा चोरी नहीं परनों फेर पूगल जाकार रावजी से कही सो नहीं तुली मुदत-
तक मोहलों के कागज छिपाये आरवर को कोडमदे का पैगाम एक ब्राह्मनने सा दे को दियान्जब हठक-
रके च्यारुं जोधार नाम ऊपर लिखा है जिनकी खुराक भी असम भव थी साथ लिया और चारसो लोगसे
चढे शकुन अतिव विप्रीत भए परकुछ ख्याल नहीं किया वडे ही उतसाह और दुतरफा मोदसे विवाह
करके डेढ महीना वहां रहे रूपीया सब लाख त्याग दिया और रुप्या चालीस हजार का दायजा लेकर
पीछे आते जान कोडेरा कुवे तिदुणा देसर पर हुवां की खबर वमेठे काराम र जासूसां से सुनते ही-
भूंड भूडेल से अर्ड कमल ४ हजार फौज मसखेतसी आदि पांच भाई व सह तज सांखला व भोजराज
भगवती दास चोहान व जेठी मुंगोत वगैरे जोधारां के चढ आये ४ कोस छूटे दिन उगां सठे को सूता-
देख मारना चाहा परमहाराजके कहने से दो खवास भेज दी काडी दे जगाया मेटे ने कहा मेरा खड़ीया-
रस्ते में गिर गया है किसी के हाथ आया होगा लादो दूसरा अमल नहीं लूंगा अर्ड कमल ने तलाशकर
खडीया भेजा जब अमल लेकर बेधडक पीछा सो रहा पीछे उठकर घोडे का तंग ऐसा खैंचा कि चारुं
पांव ज़मीन से ऊंचे हुवे फौजवालों को हैरत हुई फेर मोर परसवार हो बोला कि आगे चलूं या पीछे-
अर्डकमल के कहने से महराज बोला कि घोडे का पग तो दिखावो जब घोडा उड गया सो भोजराज भग
वती दास को मय ५० आदमी के चदमपुर भेजकर कुंवर सादे पास गया कि फौज आगई है कुंवर बोला
कि रावजी ने वचन लिये थे सो आप तो पूगल जावो मोर घोडा मुझे देदो सो दाजीवो अलगजावे-
टा और फौज आपहुंची अबल जुद्ध सो मने किया ३०७ मनष्यों को स्वर्ग भेजकर मूंछे तावदे रहा
है वीका बोला मोर घोडा व उमाही के सवार को जोखा नहीं जब उतर का घोडी के चारूं पैर एक तल
वार से उडाय पैदल लडने लगा और घायल हुआ॥ कुंवर सादा कोठीके अंदर वहेली में कोडमदे से
स्वर्ग या सती पुरे में सुख करने की बातें कर रहा है जेठी मुंगोत आया कोठी गडे को चोरकर पीछा-
लौटा सादा बोला जीना न जावे बीको कही उमाही नहीं रही जब सादा मोर पर चढकर जेठी को मार
आया और लखमसी से कही एकवार लोमें आपके देखते जुद्ध करुं लखमसी कही जैसे मरज़ी-

चुनान्चे १५० भड़ सुरलोक भेज पीछा वहलीमें आ बैठा और बीके ने अद्भुत युद्ध किया ५१३ आदमीयोंको मारकर आप भी अपछरा साथ स्वर्ग पहुंचा फेर लखमसी सैनापति हो खूब लड़ा ४५० राठोड कई भाटी काम आये अर्डकमलके दो भाई वगैरे घायल हुवे लखमसी मारा गया बाद कुंवर सादेने कोडमदे से सीख ले मोर पर सवार हो अर्ड कमलके भाई खेतसी वगैर- ५०० को वपात दी महराज वगैरे घायल हुए जब एक मगत जो आगे पूगल गया था मोरकी चाल जानता था अर्डकमलको कहकर एक ढोली से मरकी का ढोल बजाया तो मोर नाचने लगा लाचार सादे ने घोडे को पूरा करके पैदल लडने को खड़ा हुआ तब अर्ड कमल भी पैदल मुकाबले को आया दोनो के पहले हथवाकी मलवारी हुई आखर अर्ड कमल ने तलवार मारी शिर अलग पड़ा बाद सादेकी हथवासे अर्डकमल घायल हुआ और दोनों तरफ के लोग बहुत से आपसमें लड मरे व घायल हुये लड़ाई खतम हुई राठोड २२०० मरे जिसको दाह किया और घायलों को डोलीये घात राठोड पीछे गये बाद सेदे ने भी २०७ भाटीयों को दाग दीया और सादेकी लास व घायलो को उठाय डेरे आया जब कोडमदेने एक हाथकी चूड मगत जनो के वास्ते और सब हाथ वार करसुसरे व सासू के पाव लागने के लिये सेदे को देकर कहा त्यारी करो देरी पडती है मुदो कि चिनामें बैठकर सादेका सिर गोद में ले सती हुई सेदे ने पूगल जाकर सब हाल राव जी से कहा हाहाकार मच गया फेर रावजी ने एक चूड तो जैसलमेर मगतो को भेजी और सब चूड व बहुतसे रुपये लगा कर कोडमदेसर तालाब जो बीकानेरसे ८ कोस पश्चिम है बनाया॥ तथा कसीया सामने आराम हुआ सो ही अर्डकमल पास जा रहा॥ वहा सारवनामहराज तो बचा और अर्डकमल फौत हुआ उसके तेयाके दिन सादेकी छ मासी थी ॥ तवारीखों में रख व सुना है कि रावरणगदेने जु सादे के वैरमे राठोडों से युद्ध करकर बहुत सा नित्त लीया और बाज जगह लड़ाई भी जीत का सिरडा की तलाई पर आये दरूल तो बिखर गया थोंडे आदमीयो से एवजी बैठे थे, सो राठोड चांडाजी फौजले आया लड़ाई ने सदरा बाद दोनो तरफ और रावजी मारे गये परन्तु यह बात कौनकथा से नहीं क्यो कि सादेका बैर रहा ही नहीं था सोदो ने

अपनी मांग के दावे में मारावग़ैरे को मारे तोभी सासने खेतसी वग़ैरे बहुतसे राठोड़ोंको मारा और अडकमल भी जीता न रहा ॥

दूसरे बीर मांरा में लिखा है कि राठोड वीरम के बैर में कुंवर गोगदे ने दलाखा वग़ैरे जोईयों को मार कर तलाई पर आउतरे और घोडे ढील दिये थे पीछे से दलाखां के बेटे ने आकर अबल्ल तो घोडे लीये जबसे कहावत है कि ढलीया हाथन आवसी गोगादे घोडा) बाद लडाई में गोगादे जी को पूरे घाव किया २ उसवक्त राणगदे जी भी शिकार खेलते उस तलाई पर आये थे गोगादे जी ने मलतलो तलवार जो दुर्योधन के हाथ की गोरखनाथ जी ने दी थी रावजी को देने के बहाने नज़दीक बुलाकर मारडाला और हंसकर कहा साढु जीताडी दो अब दोनों बहनां लांबीयां पहने रहेंगी - रावजी का बैर लेने को कुंवर तराक व प्रधान मेहेरो हमीरोत मुलतान के नवाब पास गया कि फौज ला कर राठोडों को मरावेंगे इसी अरसे में बिकमपुर से केलराजी ने मेहेरे का सुख पूछने आदमी भेजा उसने लिखा मैं तिराक साथ जाता हूं आप चोहान बिकुपाल को अपना थ पूगल लेलीजो जब आठीपांच से रावजी की मोकाराा को गया बिकुपाल को मिलाया हीथा रावजी की सोढी को घर में रखने का धोखा देकर गढ में मालिक हुआ पीछे से कुंवर रणमल तीन सो मनुष्यों से आया जब गढ में रखकर आप बिकुपाल को साथ ले कोरमरोट का कब्जे किया फिर बिकुपाल की सलाह से पाहुओं को बुलाया कि रावजी का बैर लेवेंगे पाहुओं ने बखुशी मालिक मांना मुदा कि खारबारा मरा हापासर मोटासर वग़ैरे १४० गांवों के भी ताबे हुए यह खबरें तिराक को लगीं जब मेहेरे कहा रावजी का बैर लेवेंगे आपको १ कोट में दिला दूंगा अंदेशा मत करो फेर केलराजी ने कुंवर चाचे को सिक्षा कि इ तलाई अरज़ी जैसलमेर भेजो और जमीयत ले आवो चुनाचे सक हज़ार लोग से चाचो मरोठ आया बाद चूंडेजी को डोला देने के बहाने जाकर गाम मेंडेरा किया चूंडोजी बींद बनकर आया सांद गादे खपीछा भागा केलराजी घोडा पीठ लगाय चूंडेजी के बगल बीच में बरछी निकालकर कहा कि पीठ में भी निकल सकती है मगर सामना करो तो धर्म रहे पर चूंडो जी तो भागा ही गया आखर नागोर के दरवाज़े जाता केलराजी घोडे की वाग रेची सोजपर आया जब बरछी मारी चूंडेजी की गर्दन

से मारावदन व घोडे कोवेधकार जमीन मे गडी चूंडेजी ने गिरलटका गा केलराजी सामने आवार कहा सगाजी लटकजुहार उसवक्त सकजाट थवरगी बोला कि गांड मे लकडा रखोगे पार हो गेतो सलामी सो ऐसे ही है याने राव पूगल महाराजवीकानेर केतावे है दुतरफा बहुत आदमी - काम आये केलराजी वैर लेकर फतहमद हो नागोर लूट पीछे आते थे कि मुलतान से फोज आई जब केलराजीने राठोडो के कहने से मुल्हकर के फोज शाही को शिकस्त दी और खजाना लूटा - व तोपा व घोडा लेकर फेर तिराम बमहेर को भी साथ ले पूगल आये यह दोनो मुलतान मे नवाव के कहने से मुसलमान हुसे थे यहा नही रहस के भटनेर जाकर अभोरीया भाटीया सामिल हुस तिराम दे देरे सुमरा के मुसाराी बमहेरी के हमीरोत कहीजे केलराजी के इकवालवी खूबी से देरावर मे मालक दईया अजा व प्रधान पाहु भाटा के दरम्यान नाइत्तफाकी हुई और दईया बिकमपुर का बिसले गया केलराजीने आदमी भेजा तो दईया बोला कि दूसरा धार जो जब भाटा ने मौका पाकर केलराजी को लिखा कि महासुद १४ दईया तो हेडाउ की जात जावेंगे आप आवे तो मैं गढ देदूंगा चुनान्चे पान्च सो ओठीओ से जाकर गढ मे दाखिल हुस दईया आया कि गढ से निकल जावो ॥ जवाब दिया कि आप ही दूसरा धार जो फेर कुवर रणमल को गढ सोप कर आप मरोट आस पीछे मात्र पडोसी भोमीये ताबेदार हुस और गढ नानरणाव विझणोट मे भी अमलदखल किया फेर केलराजी शिकार के बहाने सिंध मे उतर नदी के पार जा रहे वहा ख्वाब मे सक देव के कहने से दोनो नदी के बीच गढ विरोहर जो मुलतान से ३२ कोस पर कडे केहरका बनाया हुआ जिसमारया स० १४४१ मे बनाना शुरू किया पडोस में सक तरफ वीमसमा का राज था कोट करने से मना करने लगा जब केलराजी जरीदा जाम इसमायल खा पास गस उनकी बेटी से आपकी सगाई करी टीका घोडा लेकर पीछे आस तब दूसरे पडोसी लोगहा ने मना किया तो खयाल ही नही किया लोगहा ने मुलतान के शाह फतह अलीशाह का आदमी भेजाया कि गढ मत करो केलराजी जवाब दीया कि यहा रहूंगा तो बदगी करूंगा यह जमीन भोमीयो ने मुजको दी है चुनान्चे गढ मायेला व सुमरा वाहरा भी अपने कब्जे मे लेकर नदी विहाय सीव कायम करी याने दूसरी नदी का पैला पार दूसरो कारखकार-

मुल्क आबाद कीया ॥ बाद पडोसी कौम जइया व खोखर व लांगाह वगैरे शंका मानते रहे फेर इसमा-
यलखां को वैरी परन्या आपसमें बडा हेत बांधा इसी अरसे में कुराई अमीरखांन बलोचने नजदीक
में गढ बनाना चाहा केलरा जीने हरचंद मनाकीया परंतु कुराईयो ने गाल मारा कि ज़मीन तलवारों
मांहे है जब केलरा जी समा से मदद लेकर पांच हज़ार फौज से चढ गए कुराई भी तीन हज़ार फौज
से मुकाबले को आए बहुत भारी जुद्ध हुआ २३५ बलोचों साथ अमीरखां को बहिश्त भेजा १०० आ
दमी समा काम आये पर वाडो जीत बहुतसा दिल्त लीया और गढ मिसमार कर कुराईयों को ताबे-
किया फतह मंद हो पीछे फिरो हर आये ॥ जाम इसमाईलखां फौत हुआ दोनो बेटे राजकी
तकरार से लड मरे केलरा जी मात्मी को गए सासू के कहने से मुल्क के बंदो वस्त को एक हज़ार फौ
ज रख कर पोता सुजाहखां जो १० बरस का था साथ लाए मोकडा हुआ जब राज सौंपा परंतु बंदो
बस्त अपना बना रखा फेर यह भी मर गया तो समा का राज भीयाले देरे इसमायलखां मए मुल्क दब
जे में रहा मुलतान के शाह से दोस्ती रही और मुल्क सिंध में अच्छी हकूमत जमाई फेर गढ भटनेर
लेकर किसी कदर परगने हंशार में भी डंका बजाया और इरादा आगे को था लेकिन महारावल केहर
जी के वैकुंठवास होने और छोटा भाई लखन राज बैठने की खबर लगतां ही जैसलमेर खास
लखमरा के मोतीयों का तिलक करके कदमबोसी हासिल करी और जो जो गढ व मुल्क फतह कि-
या था नज़र किया लखमरा जी ने मेहरबानी व कदरदानी से मुनासिब जान कर एक गढ देरावर
तो स्वाल से रखा बाकी सब बख्श दीया और राव का खिताब व नगारा छडी वगैरे लवाज़मा अता
फरमाया कई महीना यहां रहे फेर पीछा जाकर आपनो गढ मुमरा बाहरा में रहे और कुंवर थिरे-व
खुमांरा जो पठानी से पैदा हुए थे गढ भटनेर दीया सो भाटी मुसलमान हैं कई पुस्तों तक तो ताबेदा-
री में रहे फेर ही अर्ज़ी नज़राना भेजता था बाद बीकानेर का दखल होगया ॥
तथा कुंवर राणमल को मरोट में गादी बैठाकर सब मुल्क सौंपा चाचा वगैरे को दूसरे कोटों में रखे
केलरा जीने फेर ही थोडा सा मुल्क दबाया और ६२ बरस की उम्मर पाकर स्वर्गधाम पधारे थोडे-
ही अरसे में राणमल को बीमारी सीतांग की हुई सो विक्रमपुर आकर फौत हुआ जब सबने सलाह-

करके चान्चे कोगादी का मालिक किया इस अरसे मे बादशाह महम्मद शाह कायजोर खान मुलतान का बादशाह हुआ जब आगाह्नां ने अर्ज करी कि भाटीयों ने बहुत सा मुल्क हमारा वतन कारी दबा लीया है सुनते ही हुकम दीया कि तुम चढ जावो और मुल्क छीन लो चुनाचे आगाह अमीरखां चढ आया सो चान्चेजी से हार कर पीछा गया जब सुल्तान कासुम खां आगाह अमीर खान २९ हजार फौज मुगल पठाणा बगेरा बगैरे लेकर आये चाचाजी ने भी गोरीया पाहु नैतुग वगैरे २० हजार फौज से दुनीयापुर मे मुकाबला कीया अफ्रुल शुद्ध में हजारा आदमी दुनरफा दरमीयान काम आये और कासुम भाग गया चान्चोजी परवाडो अन्त दुनीयापुर मे कुंवर बरसल को बैठाय आप पीछा आकर इत्तलाई अरजी जैसलमेर भेजी जब महारावल नरवलजी ने घोडा व तलवार कटार जेवर पारचे शिरोपाव भेजा ॥ फेर रहना सुमार रावजी के सोनलपरन्या नयाकुवार ७ १ कुभा सोहेला को हरीयोका ॥ २ बरसल । ३ । महेरावल । ४ भीमदे । नयासे । सोढा के ॥ ५ रना । ६ । रणधीर । भारोज चौहानो के ॥ ७ । राजसिंह । सेहनी से हुआ ॥ केलणजी के राठोडो से । सुलह हुई जिसमे पके को नपुने मारा दोहा

केलनचवडा मारीया सो आदु आरवारा । नसु पका मारीया सो सिकाव गारा ॥ १ ॥

अव अपके कादेर वांदू लेन हो सका क्यों कि सुलह मे मव आंगल रखेगये थे ॥

केलणजी के कुंवर रूपे का घोडा चाराई पर जाइआ पातथा सो मीने कवुलेक भईया सव हुई घिरवाल मेहपा नान च्यार पडवो को मारकर लेगया अब चान्चे जीने धिरपाल को दहन पर च्याव बहुत बिचले का मानो को दे दीया ॥ फेर नागारान वीरा दने मे प्रासदे गपाह अलफ हजार फोज पाकर दुनीयापुर का बिल लीया चाचाजी का परिहिसदी रावल गांधी सो का आगर च्यार कोस पर जगनी महुई दुतरफा आदमी बहुत कटे आखर ब्राह्मदेव काचाचा जीने नागर ने अपना दिल छुडाया और दुसमनो का घोडा पाकडने का मार्ची मांका का ऊग प्र गदा को पीछा पधारे । बाद चाचाजी के बीमारी बावसान हुई तब कुंवर भपालो का साथ । कोहल खां के नद मे मरने के गोपन से मुलतान से कानु को मरपी जालु गाद जादा पुरा रेवे गया २००

रजपूतरें ही का संकल्प करके साथ थे दुनीया सुरसे दो कोस पर जुद्ध में स्वर्ग वासी हुआ ॥ ४ गद मेथेला सुंमराण वाहूया किरोहर भदनेर हुवा ॥

श्री गणेशायनमः

दवैत अथ कीर्तलिछमीरो सम्बाद लिख्यते

दोहा श्रीलंबोदर हुय सुप्रसन्न दीज्जेउक्त दयाल । कीरतलिछमीरो कहां वरण संवाद विसाल ॥ १ ॥ सकादिवस हुय सकठी कीर्तलछकुवर । अंगवडाई आपरी आंपआप उचार ॥ २ ॥ कीरलना लिछमी कह्यो जबर वचन कस्जोर । मुझ सरी खी जगत में आछी वसन न और ॥ ३ ॥ ज्यरी कीरतलछ सां वधता बोल सबोल । बड पड महरो बखता तांहरी कामों तोल ॥ ४ ॥ लछ कह्यो इण लोक में हुई ज वडी हमार । वडी न कीरत हु वडी आदि अनादि उचार ॥ ५ ॥ लछ कह्यो कीरतमलछ जो सुंन्याव मग जाय । आछा जहांरा अंग सुंस परा रिसे सोय ॥ ६ ॥ महरां अंगां सुं मुदे सो भरह्यो संसार । जिके गिणाउं जु जुवा सुंण कीरत सुविचार ॥ ७ ॥ **छप्पः** सपत धात सोवर्न आद दूण लोक अपंपर । चुंनी करणी चुंणीर हीर मांणव जवाहर लाल रत्न लसणीया महामुगता हल माला । पीरोजा परचंड पना पुषराज प्रवाला ॥ मरकत फटक वेडूय मिंण सीमंतक कोस भरूहव । महरा अंग माया कहै जिका हुंत सोभै जगत ॥ ८ ॥ **दोहा** उजल महल भड हस्त अस दल वल अंमल दिसंत । जलहल नृप सोभैं जिका वयमो सकल वसंत ॥ ९ ॥ नै कहीली घाता हुए अंग लिछमी दूलराय । महरां अंगां बिण मुदे थिर सोभा न्हु थाय ॥ १० ॥ ज्यां सुं सोभा जगतरी जुग्जुग नाम न जाय । वै महरा अंग आपनें आ[?] कहुं समझाय ॥ ११ ॥ **छप्पा** अनवाउक्त अनूप जुगत कविता रसजांणण अंमल ग्रंथ उजलां पिंगल छंदां प्रमांणण कायबगीत कवित दूहा गाहा नीसांणी कहेवातां केई क वड जाति मुखां वखांणणी लोकीक वाह भसब्द लरस कहें एम कीरतकंवर माहरा अंग मृतलोक में अमन रवां रखे अम्मर ॥ १२ ॥ वो किण बिध है अम्मर — करण कारज स्मरथ

किम मायाहीरामनष सकलजीवतामृत्कस्म वसतैनगरविसेरव ग्रहसुनागगात्याम भावैकारवार आस जायनिरास जिकारा सजनहीगिरो ज्यानेसजन दुरजगान्हीं मानेदस्त ससारमांहजिणसुसदा मायाहीजमोटीवस्त॥१३॥ मोटासंतमूत मोटी त्याकराी कथावांनदुजकेईक केइक पिडत आकराी जंत्री मंत्रीजतीकविगाय बीकेईक रूकवधरजपूत औरहुनरी अनेकां दोलतवंतरे हार गुमरजिनरषैगेला ईत राी आयजडै पांनदिनउगा न्हैला रावणराक भेलीकरा पलकरातदीहा षसल ससार मायजिराासुंसदा मायाहीजमोटीवस्त ॥१४॥ **दोहा** मायातूमोटाहूरी निपटबुरी नवनिध कीरतकहैसुणाकानदै बराम जेरीविध १५ **छप्य** कीरतहीगाकने जिकामायासुंजासी साकरदूधसवाद स्वानठाकरीसमासी उजलनर आचार जन्मचडा-लीकूरवमे स्वांतबूद आतिसरस पडीविरवधरामुपमे अनसदा भलोपण रवजमे-भावे किराकारजपने जाराजेराममायाजिका कीरतहीगासुरवाकने ॥१६॥ मोटोहीज ईकमनषधरासुगलीव्रतधारी आछेकुलअस्तरी बिस्नक्युहीकविभचारी ॥ गंगाजलरो कलसमायमदराोरषको मुरवफूटरामजार एककुष्टरोकवको षवाक असुधभोजनभिलै दुचितहुवैमन देखने अगलोभगिललिछमी इसी कीरतहीगा सुरवाकने ॥१७॥ मोविराावोसुमिला नेहराषैकेईकनर तोयाकीरतनराा कही जैमोटाकजर न्हैलैन्यारोनाम प्रालदरसराान्हपेषै सोकदेहसहरषा लोकराकसल्लिषै जीवताकहैद्रगाद्रगजगत मुवामिलैपदवीमद्ध कालंद्रसर्पहुइनरकेईक वागलहु यलटकेवडा ॥१८॥ **दोहा** लिछमीवडाकुलाभहोय तोसुहेलहुवाहाअपजसभेला-जीवता मेलैनरकमुवाह॥१९॥ कीरतरासुराीयाकठराा धीठवचनमझधेष । मायातोपिरा गुमरमे बोलीबोलबिसेष ॥२०॥ मायाहीराामानवी देसीकासुंदतानागोघोयतिचोवसी कासुंकहकीरत ॥२१॥ मायासुचायामिलै आदरआघअपार । मायाहीरोमनषने कोरनहीकरतार ॥२२॥ ऊचाकुलरोपुरष अरुअलगापडीयोहोय । वपतूटै

मायाविना कुमलन पुछे कोय ॥२३॥ तुछ कुल माया वंतरें कांटो चुभसी कोय । नरमाण मिल नगरग सुख पुछसी सह कोय ॥२४॥ विध विध हुं मोटी वले मोटा आदर मंन मोटाज राकायरा पष मोटा परचंड ॥२५॥ परवां वडाई पांमजे पषां वधे छे पत मायाकहे पषमाहरा कांनां सुगा कीरत ॥२६॥ **छप्पः** पीहर रष रसमंद जिको सारो जग जांगी । जलन्न लोक जीवन पितामो सकल पिछांगो अमल कांत ऊजलो भांगा चंद जिसडा भाई इगा प्रथवी ऊपरा अवें इमृत सदाई सुख सात देगा हु आप सुज सखविध सारां सिरे सुभा सुं राम माया कहे कीरत तुं स्म वड कारे ॥२७॥ **दोहा** कीरत कोहे कहगोवि सुं पष मोटा सांप्रत । लिछमी नेलीधी भली परवां तगी परकत ॥२८॥ जलरी वेरी जिकगा सुं-अंग धारे गत अह ऊंच मना नर छोड अरु नीच मना सुं नेह ॥२९॥ वंधवनो बहु रूपियो-रूप निरे कर हाच तु परगा लगरी वहन तम जगकी धध्र वधजाय ॥३०॥ ऊजल गुगा ज्यारां-अनंत परगट कोहे सुगांगा मायासांभलेमाहरा परवागिर मेर प्रमांगा ॥३१॥ **छप्पः** तानें मोटो तात मातसु कुलक माई कीरत राजकुंवार जिकां हुल हुंजाई साचसील तप सत भ्रात मो पांचमो दांनभगा दयाबहन दूसरी सर्वपुन्यरी सिरोमगा सुगा भेद पषमाहरां सदां वेरव डाई विसतरें तुं लछजिकुंगा सो कुलसुं किसी रीत स्सवडकारें ॥३२॥ **दोहा** माहरां भायां सुं कीयो जादा हेत जगांह वे जगमें रहीया अमर सुगा लिछमी अवरगांह ॥३३॥ **छप्पः** साच हुत युधिष्टर नांम नवखंड रहाचो गेहर सील गंगेव कथन धन २ कहाचो भागीर-थ तपकरे ईला मंझ गंगा आगी राषे सत हरचंद धरासुं कीरज धारी वल त्रिलोक दीयो दान हरी तिगातलह थमंडे दीयो नृप तमोरधज खाग आधो तन खंडे पचास कोड-जो जन प्रथी धरें ऊदक फासीधरगा अमांमदांन दीध करां अति छ्कत अमर नांम्रा करगा ॥३४॥ **दोहा** कीरत तोरी नांकरें दे कीमो विगादांन विगाल छमी कीरत वधे जारो सकालजहान ॥३५॥ दयाबहन दुनीयांनमें रखो चिरंजीरांम मनें वधावे वासुदे कासुं गा यारो कांम ॥३६॥ जिकगा दयारो जोयतुं अबे केहुं इतहास । सो पाली राजा सवर

जगवधीयोजसवास ॥३७॥ राजसीधासबत्यागकर राजडिगम्बरीत नपकुजव नेबेठोहुतो सरणोनृपसवरे उडेतनकपतआयो उगोमुरवसु प्यारीयो म्हांजोबनमे मती अप्रसूत असतरी वारछाडीविलपती निरदोषनुशाकजनीकस्यो उराकीरूपरउत पती राषीयामनेरहसीअमर राजाषत्रवटउवली ॥३९॥ जरनृपरोभयजांरा क स्योसीचांराजोडकर त्रीयासुझप्रसवती धामसूतीहूंइडधार त्रयदिनहुवावितीत भषलाघोन्हभामया उरारापथवास्ते आजमोनवडीयोहृया पलचार अमहा पीधा प्रभु मुषभषसवरनिसमडहा सवजीवआपउवारहो तन्यारजीवलनछूडहा ॥४०॥

दोहा सरणागतीसुध्यारथी उभैरथाजरआरा निजतनकाटेसबरनृप सतोषे- सोचारा ॥४१॥ कीधोबिराकपोतना जीवदानदेजास इणविधकीरतऊजली प्रथमीकरीप्रकास ॥४२॥ सवरतणे उगादिनथीया सीकोडीन्हसग करणी सोकीरतवारें जराहीसैं अभग ॥४३॥ कीरतपुराणकयकही थीयानहीविस- वास पडपापूछरानांविहु प्रोतीब्रह्मापास॥४४॥ कीरतराछसेनोकह्यो अजजग कारताआप म्हांमेघटवधकुरामुरे निश्चैकरोनिसाप ॥४५॥ वातसुणेब्रह्माकह्यो झगडाहुणांजाझाह न्यावकरणनरलोकमध रचेयामेंराजाह ॥४६॥ इन्द्रपुरीसु ष्यालिअधिक तिराजेसाणातावत राजावारोरूपहै मूलराजम्हपत ॥४७॥ माया- कीरतमोहुकम जेसारोसतजोध न्यावकोसीनारिदें रहजोराजीहोय ॥४८॥ की रतहदोसाथचार मायाजैसलमेर ब्रह्माजीरेवचनसु हितकरआईहेर ॥४९॥ कीरत लछ दोनुकहो रावराजाइमराव सगलोजाणीजैइसो नरइदकीजेन्याव ५० जदपत कहेयोजदी थीयाकीरतसदाई वेहुवेजगतवराव विहुवावडीवडाई विहुवेभारीवस्त अष्टसारीसिधसोहे नागअसुरसुरनरा मागवेहुवेमनमोहे कीरतहुतीभगतनवधाकही व्यासादिकसतावचन संप्रदाउचारी चारसतकीरतप्यारी श्रीकृष्ण ५१ कह्योनृपत- लछ्मीत प्रगटमतावेदपुराण वह्मभरीनेवस्त जिकोसगलासिरजाण भयव

रहस भगवंत सतभाषतसराई भारवेंद्या भगतिमें नामलछमीरो नांई कीर्त दुतीभ
स नवधाकही वासोजगसंतांवचन संप्रदान्यांरऊन्यारी सुसत कीरतप्यारी श्रीकृष्न ५२
मोनुप्यारी महिपती कीरतकही किरासाख कीरत पतनि कहे किसन लिछमीपत कहे
लारव ॥५३॥ सारवां श्रीमद भागवत श्रीहरिवचनसुजांग ऊरासगलाजगऊपरा-
वेद व्यासरीवाग ॥५४॥ किसन पोढीया थांकनें ग्राहग्रहोगजराज लिछमी सुतीमें
लख्या कीरत हूंदे काज ॥५५॥ राजहुवायेरुषमरागी मोक्योंवीसरीयाह कीरतरै कहिये
किसन वाळां हुच वरीयाह ॥५६॥ इरा वीरतसो आपसिर ओमोटो आमांरा वारोवीनती
प्रीतसु मनमतधरो गुमान ॥५७॥ श्रीयाभागवनसारवसुंग मनरी छाड मिजाज-
कीर्तरै पगलरा कह्यो तोमोसुंसिरताज ॥५८॥ कीरत हुताहेतकार ऊधरीयाइरा-
पार इहलोकपरलोकवां सूधरीया संसार ॥५९॥ दोनुंलोकहुवोयरे लिछमीहेत
हुवांह अपजसभेलेजीवतां मैलेनरकमुवाह ॥६०॥ ब्रह्मकह्यो श्रीहरिवचन वेदपुरा
नविचार साचामांनवमोकरै कीरतरो उपकार ॥६१॥ वेकूंठान्यांरेहीये लिछमीं
सकलरखाय त्नकानिसोभा तिकारारी मनषनमनरवांमाय ॥६२॥ तीनलोकरानाथरें
वलभचरगी बिसेस सोकीरतसाग सिरें सदाकहतसुरसेस ॥६३॥ रीझावणाछपती
यां नरकसारूविधतांस कोरतलछसंबारकह सादुकविसगरांम ॥६४॥ कीरतनेसा
चीकरी मोराजीसुं बिसेष राजीहुई लिछमीरही सांचोन्यावसंपेरव ॥६५॥ रावल
राजामूलरज जादवगढजैसांग ओवारां उपदेससुं मैगुणकीयो प्रमांग ॥६६॥

इति श्रीलिछमीकीरतरो संवाद संपूर्ण



तत्म्मा नम्बर१ (रावलोत सरदार)

गजरान सब जो इस तवारीख मे छपा है उसमे महारावल जसवतसिंहजीतक के खान्दान का ज़िक्र है मगर शजरा मज़कूरके छप जानेके पीछे मुसन्निफ किताबने एक दूसरा शजरा हमारेपास भेजा है जिससे महारावल **सबलसिंहजी** याने जसवतसिंहजीसे दो पुश्त ऊपरतक का सिलसिले खान्दानी मअहलाखसूस **रावलोत** सरदारान पाटवी-काबिज देहातका हाल मालूम होसक्ता है हम बखौफ तवालत तमाम शजरे को दुबारा नहीं छापसक्ते लेकिन महारावल सबलसिंहजी व अमरसिंहजी व जसवतसिंहजी व अखैसिंहजीकी औलाद मे देहात इलाके जैसलमेर पर जो पाटवी सरदार रावलोत काबिज है उनके नाम मअ तफसील देहात जागीर सिलसिलेवार जैल मे लिखते हैं नाजरीन तवारिख इस सिल्सिले को भी शजरा नसब के साथ मिलाकर पढें ॥

१ महारावल श्रीसबलसिंहजी २ बाकीदास ३ चंद्रसेन ४ कल्यानमल ५ कीर्तिसिंह ६ खेतसिंह ७ जीवराज ८ कुं० मोतीसिंह गाम पिथल

१ श्रीसबलसिंहजी २ रतनसिंह ३ किसनसिंह ४ प्रतापसिंह ५ रामसिंह ६ अर्जुनसिंह ७ सरूपसिंह ८ बभूतसिंह ९ मेहराज केगोद जीवराजका कुं० माधोसिंह था सो-फोत हुआ जब १० लालसिंह है गाम कानोध -

१ श्रीअमरसिंहजी साहबके २ दीपजी ३ पदमसिंह ४ प्रथीराज ५ सवाईसिंह ६ बहादुरसिंह ७ चैनसिंह ८ सामसिंह ९ बखतावरसिंह १० मोडसिंह गाम चवाय

स्या श्रीजांके दूजे कु० का भी इसी गावमे है

१ श्रीअमरसिंहजी के २ जैसिंह ३ सगरामसिंह ४ सावतसिंह ५ जालमसिंह ६ विसनसिंह ७ सबलसिंह ८ धोकलसिंह गाम ओला

८ चाश्रीजीके कुं० म्होकमसिंहजीका भी इसीगांम में है

१ महारावलजीश्रीजसवंतसिंहजीके २ कुं० जगतसिंहजी ३ जोरावरसिंह ४ किस्नसिंह
५ रुघनाथसिंह ६ रामसिंह ७ अमरसिंह ८ चमनो ९ धनजी   गाम सतोय

१ ओजी   २ सरदारसिंह ३ भगवांनसिंह के भगवानसिंहोत ४ सालमसिंह ५ वाघजी
६ भीमजी ७ अजीतसिंह ८ मोडजी गा० पारीया

१ ओजी   २ सुरतानसिंह ३ जोरावरसिंजी ४ दुरजनसिंह ५ अवधूतसिंह ६ मुकनसिंह
७ करनसिंह ८ कुं० जुहारसिंह   गाम भरडीये

१ ओअखैसिंहजीसाहब २ पदमसिंह ३ बखतावरसिंह ४ तिलोकसिंह ५ रावतसिंह
६ कुं० मोतीसिंह   गाम टोटा

नोट - बडीहीखुशीकीबातहैकिहिस्सा अव्वलतवारीख अर्थात इतिहास यादौंबन्श वालियान जैसलमेर परमेश्वरकी कृपासे यहां समापत होगया पूरा २ हाल और कुल इतिहास और हरएक महारावल साहबके जीवनचरित्र का कुल अहवाल लिखाजाता तो यह हिस्सा तीनगुनाबढ़जाता परन्तु हमको मालूम हुआ है कि ग्रंथ करता ने लोमरोंने भाटीयोंके इतिहासका मूल निकालकर खास २ बातें सिलसिलेवार इस इतिहासमें लिखी हैं तो भी यह हिस्सा अपनी खूबीकी आपही साक्षी देताहै क्यों कि ग्रंथ करताने मूल निकालने परभी मतलब हाथसे नहीं जाने दिया अब रियासत जैसलमेर (या मुल्क माड) का जुगराफिया शुरू होता है वह भी देखने योग्य है॥

मुहम्मदमुराद अली होशियार सम्पादक राजपूतानागज़ट अजमेर

نوٹ - الحمد للہ کہ حصہ تواریخ خاندان قوم یادون والیان جیسلمیر خدا کے فضل سے بخیر و عافیت تمام ہوا - جو مسودہ مصنف کتاب ہذا نے پہلے پہل تیار کیا تھا اگر تمام وکمال شایع کیا جاتا - تو تین گنی ضخامت اِس کتاب کی بڑھ جاتی - لہذا احقر نے نہایت عرقریزی سے تین مرتبہ اِسکو مختصر کیا - اور باوجود اختصار کسی مطلب کو فوت نہیں ہونے دیا جس سے اونکی لیاقت اور معلومات کا پورا پورہ ثبوت ملتا ہے اب دوسرا حصہ اِس تواریخ کا شروع کیا جاتا ہے جسمیں ریاست جیسلمیر (یا ملک مانڈہ) کا جغرافیہ ہے - یہہ بھی قابل دید ہے - بندہ محمد مراد علی ہوشیار ایڈیٹر راجپوتانہ گزٹ اجمیر -

---

हिस्सेः दोयम

जुगराफ़ियामुल्कमारु

(रियासत जैसलमेर)

दफ़े ९ शास्त्र पुराणादिकमे प्रथ्वी ५० कोर योजन लिखी है सोया तो १४ भुवन जेब्रह्मड सर्व सूर्य के नीचेको होगी ओर जो मृत्युलोकमे ७ द्वीप ७ ही समुद्र वे ढेरे मे २५ व लोकालोक पर्यंत ५० होगा तो किसी कलपमे थी सो श्रीमद वल्लभाचार्य जी ने भी आज्ञा करी है उसुही अनुमान होता है कि अब ५ खंडोमे अमरीका जो नवी दुनिया थोडे ही बर्षों से जाहर हुवा है तो दूसरे भी दोय खंड याने द्वीप होंगे ॥ तथा हरखंड मे जमीनका मदीखे है सो जमीनका सुकडना व जल मगन होना भी सम्भव है कि जो मुल्क व गाम ग्रन्थोमे दूखे जित्ते अब न हो और बहुत जगह शहर वगैरे जमीन पर जल फिर गया ऐसी खबरें सुनीहें ॥ खैर क्यो ही हो यहा तो पाच खंडो मे जमीन व राजधानी व धर्म व म्यादमी जो सन १८७७ ईस्वीमे मौजूद थे सो लिखे गये ॥

नंबर	नामखंड	मीलमुरब्बा व धर्म ईसाई	यवन	हींदु	कुल	नामराजधानी व तादाद मील मुरब्बा जमीन
१	योरपमे १६ राज	३७१००००	९००००	५	३८०००००	१ इंगलस्तान २ फ्रांस ३ रूस ४ हालेंड ५ बिलज्म ६ जर्मन ७ पाष्ट्रीया ८ ईटेली ९ सोर्सलेनड १० इसपीन ११ पोरचुगाल १२ डेनमार्क १३ सुरूडन १४ नोरमी १५ यूनान १६ तुरकी रूम सुलतान पास जमीन दो लाख मधे ३ सूब्हा ल्ने ७७ रूस मे मिलने से १० हजार कम हुई बाकी सब ईसाई
२	एशीयामे	३३५००००	२२८००००	७३५००००	१२९८००००	(बौध) १ हिन्दोस्तान १६ लाखमे २ अंगरेजी ६ दूजे रईस १ स्वाधीन राजा २ चीन ५५ लाख । ३ जापान दोलाख ७ हजार ४ दूसरा राज रू आरद तथा नास हजार मे नका अस्सा सो चीन मचाल

						तातार वगैरह (यवन) १ तुरकी रूम - २ ईरान - ३ बलोचस्तान - ४ अफ़ग़ानस्तान १४५००००० ५००००० १५७००० २००००० - ५ षेवा कोकन बुखारा खानवगैरे - ५००००० (ईसाई) १ रूस ५६ लाख - २ दूसरे टापू ८ लाख ५० हज़ार
६	आफ़रीका	१००००००	११००००००	×	१२००००००	१ अवासीनीया २ गैनी - ३ सीनगामीया - ४ केप ५ कालुनी ६ नटाल - अलजेरीया ईसाई बाकी सब यवन -
७	औसीया	१२००००००	१८००००००	१००००००००	४००००००००	
८	अमीका	१५००००००	×	×	१५००००००	
कुल जोड़.						ईसाई २८२०००००० · यवन १५७०००००० · बौध ८३०००००० · कुल ५२४००००००

तथा कुल मनुष्य० सन ७७ मे १ अड़ब* ३२ कोट जो ७ वर्ष में ११ कोट बधनेसे ये फेर बधे हैं सो ५।६ वर्ष पहिले १ अड़ब ६२ क्रोड़ अखबारों में लिखेथे अब मर्दुमशुमारी होनेसेही मालूम होगा ॥

और इस जन्मुद्वीप भर्त खंड के पश्चम मुल्क माड़ रियासत जैशलमेरमें यदुवंशी राजपूत कौम भाटी का राज है जिसका हाल जुग़राफ़िया में ख़ुलासा लिखाजाता है ॥

*اصل مین ایسا ہی تہا-

पूरब پورب

मुतअल्लिके सफा १२७ नकशा इलाके जातरियासत जैसलमेर याने २२ ही परगनो का - अदाज़न बनायागया है - तथा नाम परगने का १ जैसलमेर से २२ लाठी तक - नम्बर व १ हर्फ के मदद से रक्खा है क्यो कि ज्यादे हरफ लिखने की गुजाईश - नही और पडोसी इलाको के नाम नकशे के बाहर जहा जहा जो है लि - खा गया



पश्चिम

इफे १० देबाचा याने सम्भोता

इसवक्त यह मुल्क कुल २२ परगनो मे बटा हुआ है तफसील नकशेमे अवल नाम परगनेका जो जैसलमेर शहर से दूरकोस वदिस फेर गामका नम्बर जो उस परगनेमे वस्ताहै सीगे की अलामतअगानी की ० बिंदी सूने गामकी X चोकडी जो गाम नही होसका या होकर वीरान होगया की है फेर गामका नाम तथा खालसे या जागीर या भोमीया या पटेया सासरा डासरा है तथा सबत लिखा सो नवा सवत १९०२ से पिछला है और नही सो नूना फेर गाम को दूरी व दिस परगने याने कोट से और दानीकी दूरी व दिस उस गामसे कि जिसकी सीव मे दानी है फेर फसल १ या दो जिसमे भी नवी हुई सो आक नीचे लिखे है ॥ फेर तादाद नीवारा कूवा पका कचा बेरीयो पकी कच्ची व नलाया पकी जिसमे पानी छ महीने से ऊपर रहे और कचीमे कम और नये कुवो का आक भी नीचे लिखा है फेर मर्दुमशुमारी ऊपर घरो की तादाद नीचे मनुष्योकी स० १९२७ मुजब है सो गामो वालोने कमती लिखाया पीछे आये सो ज्यादे है ॥ सिवाय इसके कैफियत मे हाल थोडा सा लिखा गया है तथा गामो मे मदर विष्णु व शिव व जैन व देवी का है खाने मे तादाद लिखी है ॥

और जब से वाहड मेर टटा और कत्तक धाडा न रहने व अमन होने से हकूमतो मे जमीयत बहुत ही कम है ज्यादे काम के लिये यहा से सवार व किसी वक्त गामो के खेडु भी बुलाये जाते है ॥ तथा खास शहर के अंदर व बाहर वडे मंदिर विष्णु शिव जैन देवीमत के जो है देखने लायक मकानात मे लिखे है और छोटे २ है सो कहा तक लिखे जावे क्योकि गढ व शहर के मोहल्ला व गली मे १ से १० तक मंदर व थान है और ऐसे ही शहर से बाहर चोतर्फ भैरव जोगनी पितर प्रेत पीर वगैरे के बहुत है ॥

इफे ११ गढ व शहर में पका कुंवा जो गहरा फूट दो ढाई सौ हैं पानी षारा था सं० १९१९ मे कई मीठा हुआ व तफसील जैल

शहर में १ जेसलु मीठा २ रागीसर ३ हरजालु निकम्मा है ४ तुला पानी मीठा पर भारी है

गढ़ किलेमें १ रामदेसर २ लखमणासर उर्फ खुशीवाला
शहर में १ बावडी तीन चार थी अब दो हैं पानी मीठा मांगाव, चौक में २ रामसर चो तीगा मंदरों में ३ जुवानसर पु० २५ मीठा सीपायां में दो तीरा ४ चैनपुरे में ठा० राजश्रीके सरीसिंहजीने सं १९२५ में बणाया दोलावा

शहर से बाहर १ महाजनसर चोलावा पच्छिम दरवाजे पास २ सनीकरसर चो लावा दरवाजे से उपरा निकम्मा ३ खाई रीबेरी दूर सान प्रोलसे पां १००।४ सुजानपुरीका बेरा पु १० मीठा पर पानी कम यहां बेरीयांची सो सुकगई

इतना कुवा अब नहीं रहा गढमें १ गुसाई सर २ कोट को वाला गड किले में-
१ बारीया जहां जेल खाना सं० ४३ में हुआ १ कारखाने में १ गुलाब तला म्हैतेजी बुराया १ बंधारीयां में म्हैतेजी की पगवा नहीं हुई ॥

नं० १ नकशा खास शहर जैसलमेर व कुल परगना व देहात व वीरान में उपको हानियों जो बोरे हो पुनम बसे है वगैरे हालात का-

नंबर गाम [illegible]	नाम गाम व खालसे या जागीर या भोमीया पंटे या सांसन दांसन तथा संवत नदे का	[illegible] कोस	[illegible]	तादाद नीवान पकी: कुवां	बेरा बावडी	तलाई	तादाद मर्दुमशुमारी सं० १९२७ मुजब १ घर १ मनुष्य	तादाद मंदिर व कुनुवा [illegible] जिसमतलका है	कैफियत
१	खास शहर जैसलमेर			२२३ / २१	२०	२५।२० / ५।९	३४०४ / १२०९५		
२	अमर सागर खालसे	१ [illegible]	नाग						गांवमे पुस्करनी ब्रा० व कला व माली रहते हैं कैदू कायेल का भी हुं दगनाउ हो

३	बाडी ७ वास से०	२ द०	से						वास लोना चीका बडुदीन धर्मी - वका सादा मदा माडु नुद्रवारो म्हर मेंप्यारे हे ये न्हारालीपाडाहे फेर कोवाव मा लीया को यद्दा बसाये वह दिन को शहर मेंग कार रात को यहा रहते ॥
४	किसनधार से०	१ ई०	२		-				माली बाडी राव पोकनीया रहे है -
५	कल्याण घाट स १९०८	५ ई०	१ १	२१	१९	१९			फूटकर लोग वस्ते है
६	मंडीया परै	३ पूर्व	१	०	०	१२			सिपाई रवधारी
७	दरवारीरागाम से०	३ पूर्व	१			१९			हजूरी गोले रहते है
८	जोगा ३६ स०	४ प०	२	-	-	२१			राणी जी श्रीसीसोदणी जी सहारे - ताल्लके है
९	रामसर स० १३ से०	३ द०	१			११			हजूरी गुरो सदा रामजी दासाणी नु सीव मूदडी की मैं षेत दीना
१०	धउवा स	३ द०	१		११	११९			श्री बुधसिहजी रे धाभाई उर्फे धलवा - राम न्व दबसाया
११	जीग्पाई से०	२ नै०	१	११	०	२१४			हजूरी नैणसो भाराजु श्री ग्पंपे सिहजी रवास दिया
१२	मूलराजसागर रवा०	२ प०	वाग						गाव मे श्रो० जगाराणी समाली रहते हैं कु दूक जमीन जगाराणी या नु बगसाउ
४	रामकुराका विकाना	४ दा०	२	कुडव वाहला					महता वसाधु रहे हे पग चाव बूरा छोडी है

(क) परगने जैसलमेर

यह परगना सं० १९४१ मिगसरवदी १ से नया किया अभी कोई जगह कचहरी की नहीं है जैसलमेर से दो हाकम मुं० विशनसिंह व मेहता रणछोड दास मात्र गावों में दौरा करके कार वाई करते हैं ॥ सरकारी घोडे व फुटकार सवार हैं सो भी इन के तअल्लुक रहे तो बहुत से काम आसानी से होंगे ॥

१	रूपसी भोमीया	५ वा० प	२	०	३	२	९५ ३५१	१ वि० १ है०	भोमीया रूपसी है आद्रे की जमीन में यह गाम बसा अरर दूये की जमीन षालसे पलीवालां को दी ॥
२	तेजू भो०	८ से०	२	०	७	१	११ ३८	०	भो० तेजू ॥
३	भादासर ख़ा०	८ बा०	१	०	१०	२	६५ १९१	०	ज़मीदार सूथार घरटीयों वडे है भादासर तलाव है ॥
४	मोकाल भो०	९ से०	१	४ १	८	४	५८ २४५	०	भोमीयां टावरी की जमीन में मोकल वसे फेर देवडे की ज़मीन श्री अरवे सिंहजी री वार ७ मधे ३ है १९४४ में कुंवा कीया जब सांल्हु से सीवानकली
५	लांरोला तीन वास ख़ा०	७ से०	२	०	५	५	४८ २१८	१ वि० १ म०	ज० पली वाल कोला पीथा कूंभा तथा वोमें ने लला ई व वीरमारी गाम जुदा कीया लारोला पडीन राश्री तेज सिंहजी को सं०२४ से पडे है
६	सेलत भो०	१० वा० २	१	०	५	३	२३ १००	०	भो० पुंवार उर्फ़ सेलत
७	वरमसर से०	४ ड० व	२	०	१४	३	८८ २९१	१ जै० १ है०	भो० सीहड़
८	दईया पहोड ख़ा०	६ से०	२			१	४१ १६८	०	पानी के दूख से दहिया वरजपूत पहोड जिससे दहिया पहोड सं० १९२९ गाम षालसे किया कि यहां रहे सो वरसात मूं पीअरे ॥
९	वेलदार से०						५० २९२	०	ख़ानाबदोश है तालाव चेलासर घास खेती करे है

०	ढढू म	६ उ	१						भो॰ ढढू जमीनकाराहसमूलहुईढढूपहोडे मा रहाआगहाराकीमुदवसेवाकीहैपरदसहोका पाडालावणोकी नोकरीकरेहोहै ॥
०	सूणारी ग	७ उ॰ई	१					०	मेघवालसूणाव नातसोसूणारी गामहै मे घवालगाम पहोडे जा रहा
९	हूवा खा॰	७ उ	२	१	२	३	१४ ७०		ज॰ पलीवाल म्हेता गुणेशदास उदैभ्रथा लोकोछेडगयापीछेखालसेहुपास॰१९०४
१०	चडीया से॰	७ भो॰	२		०		१२ ४८		से॰ स॰१९०५
०	राणा से॰	७ उ				११		०	पलीवालया स॰७४मेवानथीया भार्यकोरखा हैसोजगीचा सेआवाद लिखीजसी ॥
०	टेईया उर्फ जोसी परे	६ उ						०	खडीन टेईया पाजोसी साचोराथासो स॰ १९१६ मे सुद्रवेजारहा
११	कागोध जागीर	१० उ॰ई	२	०	१२	१	५८ ११६		भो॰ रेवडा या राजश्रीरतनसिहजी के म्हेतेसे वसीयानेजागीर हुआना कचासारावलसे है
१२	कागोध वीरमाणी स॰१९१३ भो॰	११ ग	२	०	३	१	३२ १५२	०	रेवडा कु॰ राजश्री वेरीसालजीकी पावधा न्यारो वास किया
१३	जेसूराणा रोयाह खा॰	९ ई	१	२ १	०	६	२७ १११		जमी॰ पलीवालया कुवा १ मथे ९ बूंधियोड ह साम नवे नसेठाकारो के परे घा पलीम अवसुमाणो ने वसाया ॥
१	भोजासर स ३० भो॰	३ अ	१			३		०	जेसूराणोके पनेवाघोन अउलाववयोडी सीव- राडधा चेन ओकोपससीव कुवा चान ग कोबरदसा -
१४	चाहडू से॰	७ उ॰ई	२	१	०	१	२१ ९०	०	भो॰ हमीर

१५	हमीर चहुवालो स	६ ई	१	१	२१	२	११६ ४८३	१ वि० १ म०	वहुवालो पार है और भोटया हमीर
१	गजीया से०	७ ई०उ०	१	०	२		हमीरे	०	भारी गजी या कटनेसे वीरा न रह्या जमे थाराउ घ याथान जी को दीया दानी सं० ३२ में हुई ॥
१६	रिड्ड प०	६ ई०पू०	१	१	०	१	१२ ४१	०	पलीवालां का गाम था सेठ सवाई राम जी को प टे संवत में हुआ मुसलमान रहे है ॥
१७	थईयाल से०	५ पू०	१	१		२	२० ८६	०	चौहान है थईयाने लोसारवां नेकी नोकरी से थईयाल कहा ॥
१८	मोकलात सांसन	५ से०	२		०	१	११ २६	०	ब्रास्सन पुस्करणें आचारजी को श्री सवल सिंह जी दीया ॥
१९	वासरापी लोहारी की प०	६ इ०पू०	२	४	७	८	२७ ११६		दोनो गाम पलीवालों का लाटी ठा: राजश्री ईसरसिंह जी को पटे ॥
२०	उ० फरसे की से०	से०	२	१	१	१	१		उ०
१	भैंसडेच खा०	६ ई	१	०	१	११	०	०	भो० भैंसडेच सं० २० से आदने सेरवाल से हुआ सं० ४१ से घटीवाल रहे है ॥
२१	भागूरो गाम भो०	७ पू०	१	०	५	१	२७ ११३	०	चांधन के जहोडों की ज़मीन में मुसलमान नायकों की वस्ती ॥
२२	भोजका सांस्न	१० से०	१ १	१	०	३	४० १४८	१ दे०	से० डांन की सवजका सीडी का हथ्थ वकी लाग पुन्या थी सांस्न तो श्री दरबार से उदग दीया जहां लव नहीं होवे और आसामी जवरन नहीं पकडी जावें और ठास्न गाम जो जागीरदार का दिया या रोल पोल चारों वस्ते हैं वहां लव का जाना व आसामी को लाना हो सकता है ॥

२३	जावध प०	१० पू० अ	१				१८ ७८	०वि १दे	पञोवालोकागान भटडीयेकरादलोने कोपटे -
०	जावध	से०						०	भो साहुकारमहेश्री सहरमे आरहान्सो हुतीरो सीरमे
२४	वडोगाम सेप जा०	८ पू०	१	२	०	३।६	१३२ ५८५	१दे	सेपीया भाटीयाफेर वेहारीदासोतांरो वरवश -
२५	आसायच नी०	७ से०	१	१	०	२।२	३२ १२२	०	आसायचसीसोदिया महारावलश्रीभीम सीधोयलसोधायसरवपावूजीकोथानवनाया
२६	जैरात् से०	५ से०	१ १	०	०।१२	१।१२	३१ १११	०	भाटी जैतसिहोत
२७	डाभलो से०	४ पूअ	१ १	२	४	३।२	९६ ३८९	२वि	भाटीषानर तथा झालाउर्फ रवोट
२८	आवाल से०	६ से	१	०	०	२।३	४२ १६३	०	चौ दीवान
२९	जोधा से०	६ से०	२	१	०	१।१	२९ १२९	१म	से०
०	सागोरगो रवा०	८ पू०	१	१	०	।१	०	०	भो अडगासूदा आकलमे वस्या सं० मेरवाल्सेहुआ फेरखेतचार्ल काहे
३०	धनवो से०	५ अ	२	२	५	६।१	३४ १२६	२वि० १म०	पत्तीवाल पागे रा० भगवानसिहोतो के पटेथा
३१	दीता रवा०	७ से०	१	१	३४	५।३	३७ १७१	१म	भो कीतोसेकर्रपलदाहुआ रा० भगवान सिहोत रावतगैनजी ११सं०नेछोरे ऊमत्तीकोस०५१मेरवाल्सेहुआ -

०	मेरवा	से०					०	०	कीलोंका भाई दू० मारवाड-थलमें जारहे -
३२	नूः सां०	५ सः	२		१३	३।१	३५ ११९	१ वि ० म	गामपलीवालोंकासं० ३३ में भाटी वैरीसाल तपुवालोंकोबरवसाथ्या छोडगया सो कविराजजीको दिया सं० ४४ में आगेवारू ठाकरोंके पटेथ्या -
३३	पीथोडाई खा०	६ से०	१ १	१	१।३	२।१	३१ ११७	१ वि	पलीवाल
३४	ऊगव भो०	८ स०	१	१	१	१	४२ १७२	१ म	गोगली
०	से० से०	से		१	१	१	०	०	मुदतसे वीरान वपोलमें गोगलीयोंके कब्जे है गामीया भडगया सुथार सीरवी -
३५	सोभ से०	१२ से०	१	४	०	२	२८ १३२	०	गोगली
३६	आसलोई से०	१० से०	१		१।३	१।२	२१ ८२	०	से०
३७	टंमा उर्फे कोरुवा भो०	११ से०	१ १	०	५।७	१	१० ४३	०	से० कोरुवावेरीयोंका पार है सं० ४४ में दूजा पार हुआ पु० १२ पानी मीठा व बहुत भी पैरीज्मीं खालः है॥
३८	जानरो सां०	१२ दःने	१	०	१९	२	२७ १०८	१ मालण	मालणका भोपा तुवर उर्फे जागा मौसम में मिश्री वे आंवे कीरखवाली करें॥
३९	सोडो भो०	९ स	१ १	०	६	१।२	२७ १०८	०	गोगली
४०	कोटडो से०	८ दःने	२	२		१।२	५५ ३६९	१ वि १ म	सांवनसी

०	मदा से०	५ से०	१	०	०	१२	०	०	गोगलीकोढडीमेरहेहै
४१	पिथल जा०	८ ले	१ १	१	०	।११	२६ ११०	०	रावलोतसवलसिंहोत
४२	सेराम भो०	५ से०	१	०	१	२	२७ १०८	०	मूलपसा
४३	सतानाथरारा से०	७ ह	१ १	०	१	११	११ ५६	०	सतास०६ मे सेठहिम्मतरामजोगिरवीरख्या थास०१७मे छुडाया-
४४	गोररो ढोवास खा०	से	१ १	०	१	२।६	२० ७२	५ वे	परोवालनहीरहा १मे रजपूत वगैरे वस्ते है
०	पीपरला से०	से०	१	१	०	१	०	०	पलावालथास०८३मे सुरडे सदारामकोरहे वास लिखदियाथापरछोड गया-
४५	भोपा सा०	से०	१	१	०	१	३९ १७१	१ सेम ऊंमय	श्रीसेमडरायका भोपा गोगली
०	नेहडिया स०१९१९ खा०	से	१ १	१	०	२।१	०	० वि	पलीवालथाकई घरपीयडाई मेजा- रहा-
०	लाड भो०	८ से०	--	--	--	१६		०	गोगलीभोपामेरहेहै
०	वाधरा से०	से०				११		०	सेजन
४६	भीया से०	४ ह	१		-	।१२		०	भी

५०	डोहरी पोलजोगी सं०१९ उदग	से०	० २		० २	० २		०	व्यास पोलजीको डोहरी पुन्यार्थ दीवी पा- दुरा थान ॥
४८	जांयरा से०	से०	१	० १	१	१		०	व्याको कोसांसरा सिपाई रहे है
४९	हांसु से०	से०	१ १	०	१० १०	१		०	भो० हांसुलूद्रा सं०१६ में व्यास धनुजी- को हांसरक दिया
०	कारीयाप भो	से:		०		।१		०	भो: राठ्सराठोड़ था सो कटया
०	वाले हार	से०		०		।१		०	भो: वालेहार हांसुमें रहे है
५१	कुलधर खा०	५ ने:प	२		३	३।२	३७ ११७	१ वि:	पलीवाल कुधरा वसारा व तलाव कधरा मर (?) खुदाया पहिले दूसरी जगा गाम था सो वीरान हुआ
०	महाजल भांहेरा सं०१८१८ भो०	६ से०	२	०	०	१	०	०	भो० महाजल कट्या महाजलार टीलाडा भर दिया ठारा बाकी है मूथार सीरवी भूतके डर से गांव कुलधरा में आरहे है सो पीछे जावसेंगे
०	मुगापिया खा०	४ प:	२	०	०	१	०	०	पलीवाल था
५२	काहला सां०	५ प: ने	१ १	०	१४	२	४३ १५४	०	सुथार वारें में गुर आचारजीको दिया था उन्होंने गजेको संकल्प दिया ॥
०	ठावरी	४ से०	१	०	०	१		०	ठावरी गामकहाले खगेरे में जा रहा
०	खडेनर भो०	६ से०	१	०	०	१		०	खडेनर गांमसलखावगेरे में है टीलाडा- वगेरे भरे हैं ॥
५३	कुन्नेल खा०	७ प	१	०	३	३।२	५२ ५०७	०	भो० राठोड़ सूनाहुआ घटेवाल रहे हैं मुमल की मेडी का निशान है जहां अमरकोट से म्हे- दरा नित्य आता था ॥

१७	जुड़वा प०	५ सै०	२				७७ २२५	१ जैन १ देवी	भारोजैतसिहोतोकी जमीनपुरोहितबुधलालजीकी दक्षुहिकसीवजोसी साचोराकेहै थकी सेठगुमानचंदकेपटेहै ॥
०	वाले ग्वा०	४ सै०	२	०	०	१	०	०	वाले कर गया
०	विस्नोई स्वरी गेरा सै०	७ २ १ वा पै	२	०	०	१	०	०	विस्नोई गाम कानासर जागे है स० १९०३ मे
४	सिठको गाम	७ ३				०	०	०	पचोलीकरेसेठकाम्होरा पासन्दी लिखावट वर सेरेकेपाडेकेचोरकाटनेवगैरेकईनौकरीयर्योसोकरगया

(ख) परगने देवी कोट

१	कोरदेवीकोट	१२ पू म	१ १	५।	४०/४०	५।०	१२२ ४८३	२ कि० १ जै० १ दे० १ मद्दी	ज० पलीवाल। गावसेपश्चिम आधकोस कूणसीपर आसरणीयानेआसापुरादेवी कामरहेज

हांआसराणीकोटथा पीछेगावकेबीच गडीवनाई सोही निशानरहाहै फेर गावसेउत्तर कुवापर कोट ४ बूर्जव १ दरवाजा वसालापत्थरका व सफीला मिट्टीकीबनाया स० १९१४ मे कई ठिकाना पत्थरोसेहुए तलाव फूलीसरपर १ साल १ मढी व पूर्व पच्छम घाट व चौतरा तथा उत्तर कीतर्फ पक्का पत्थरो का घाट व चौकी ऊपर वगला दीवान सालमचन्दजीका स० २९ मे नथमलजीनेबनाया ॥
गांवसेपश्चिम बेरीयाका पारहै मालीयो सेबाडीया कराई थी ॥
हाकम प्रो० उदेभाण प्र० मे थाने व सायर की चोकीया कभी कठ २ रहैहै ॥

१	भारीजैतसिहोतरी सं० २३	१॥ रु० नै	१					०	हेमराज हठेसिहोत विजुपुरमे काम आया था जिससे कई खेत भोम स० १९१३ मे दीया

२	सुंनासर प०	३	१	१	२.१।	५ २८	०	भो॰ जसोडोंतोचासाकोउनपुरोहितोकोदिया ... नेसं०२८मेंमोललिया
३	लखमणा जा०		१	०,०	।१।	२१ ८६	०	भो॰ जसोड॰ तूटानेराजथी अनाड॰ सिंहजी सहाको जागीर सं॰ में दीया
४	छोडीया भो	५अ	१	१।	०	।३ ३० १०९	०	भो॰ जसोड सं॰१९३९ में तीजीपांतीम्हेरा ... कोदी ॥
५	काराड़ा स	५ पू	१	१।	०	१। २४ ११२	०	भो॰ जसोड वास ३ करमा बांजा वीका
६	लाला से०		१	१।	०	२।१ २३ १२५	०	से॰ ठांगा टीलाड़ो काराडे॰ समूलहै
७	।जोलसं॰ १९०२ से॰	६ से:	१	१।	०	।१ २२ ८१	०	जसोड॰ थलसे आयरासलों अचलों की॰ ... बसे -
८	डांगरी जा॰	८अ	१	१। ।१	०	।१३ २२७ १०१२	१ १ म:	।भारांकीवस्ती ७ धांमटवसे पीछे वडेगामसे भारी बेहारी हासी सहरोर मजी म्हेरेरा जाकर मरे वेरा नहारथां स्हसमल यहां रहे घोड़ा नजर कमवसी लिखायामारवाड लूटने में जोधपुरकी फौज आई पेन्नालाषनेवर सेषर्चदेकरगढीवणां॰
९	म्हेरेरी खा॰	१० पू॰अ	१	१२ ११	०	१।	१५२ ५५६	१ वि	चारणां म्हेरेरी तुलाई पैःगां॰ भो॰ पीधा जसोड॰ करनेसे खाल्सें है जमीनकी पूरा पोलमें भैसडे तेहैं ... करायासों होनेवारेरक
१०	ओलो जा॰	१२ अ॰ पू	१ १	३। १।	०	।१२	१२४ ५२०	१	रावलोत अमरसिंहोत ककई हैं तया होसके है पुर्स ७।८ बहुत ।ज़राअसमा लीकी है पर किरसा हो तो हज़ारो की पैदा होय -

११	वाराणड्ये भो॰	१४ से॰	१	॥ ॥	०	२१५	८१ ३५०	०	भो॰जसोड आगला गाम सूनाहुआ नवबसा – वसा ह वूरीयोडास्कलमासे पु १२ मीठा किरसा जराअतकीगुनाँमुहे स॰४४ मे १ कुवामालीया नेकीया ॥
१२	राजगढ जा॰	१२ पू॰	१	१॥ ॥	०	१८	६५ २९९	०	भो॰जसोड करूयाजमीन भाटीवेहारीदासोत रा जसिंहको वहारेर गाम वसा पानी पारा – सालू रूपा व हूसूरा दानीये रहते हैं ॥
१३	भैसडो भो॰	१० से	१	२।	०	३।८	१४४ ६६८	१ मं॰	बीसलपुरसेजसोड पाछेआये भो॰ भैसडेन्ची कोमा रकर का विजारुम घनकेलासूचतमा करनेसे मटीके सामी मरते आपसे गेहूगुलवाड नहोकावैरेही सूकगस
१४	वैतीराणो स॰१९०९ से॰	१३ ई॰पू	१	॥	०	११२	२६ १२२	०	जसोड काजेके है समे जैसा सीरवी हो गामवसा – यो कुवावेतीराणापुर्स १६ पानीमीठा ॥
	आवा 	 से॰	१				०	०	जसोड आवो भैसडे मे रहेहे ॥
०	जोगायत भो॰	 से॰	१			०	० 	०	जसोड जोगायत भैसडेमेरहेहै जमीनसेभाटीसा एमसिंहोतो वोसीरवी कीयास॰४०मेपररकमभरीनहीहै
१५	नवासरउर्फेमे डजीरोत्तलो स॰३९ जा॰	६ मूं॰ई	१	 ॥				०	रासलाकीजमीनवेहारीदासोतलखजीकेवेरमोड्मो न सेश्रीदरबारसेवसीलिसाधतचानयारकारगामबसाया –
१६	मरासर भो॰	८ ई॰	१	॥	०	११२	५३ १५५	१ म॰	कमारो वो गामथा पो कराँकेदुरवसे जसोडकोमरद केसियेसेगायेसोक जियेमेमरा जसोडोका गामहुआ ॥
१७	नेडान से॰	१० ई॰उ	१	२।	०	४।२	४७ २३१	१ म॰	भो॰ जसोड
१८	हुवाडसे से॰	८ उ॰ई	१	१।१	०	११२	४३ १७६	१म	से॰ जसोड-उचा
१९	मूलांणो से॰	५ उ	१	२।	०	११२	६२ २१२	०	से॰

२०	रासल से०	४ पू०ई	१	३	०	११	५८ २९१	०	से० सला १२ म गोहू आबोरेहा गामके थे जिसमें ४ जारीहैं रास्ला भोपा सांवता सुखाने का
२१	अचल से०	५ पू	१	११	०	१३	११ ५५	०	से०
२२	भोपा सां०	३ से:	१				१० ४०	०	जसोड़ सेलेने भांरोत्त पडिहार हाजेको जमीन देकर गाम बसाया सांवत समूल - ॥
२३	सांवत भो०	से०	१	१	०	११	४१ १३१	०	भो० जसोड़
×	मांडगा से०	४ पू०अ	१	०	०	१		०	मांडगोंसं० १९०० में न्यारा गाम सा भ्रया था फेर सांवता मे आ रहे नलो कूरी योडो है ॥
२४	डाडो खा०	४ द०	१	१		१	४२ १६९	० वि०	जं० पलीवाल एकतरफ सीव भाटी जैतसिंहोवो की है ॥
२५	जिसू पू०	३॥ द:	१	१	०	२१३		०	पलीवालोंको गाम तेजमालोतोंके पटेथा वीरान हुआथा सं० २० में सेठ प्रतापचंदजी हिम्मतरामजी को पटे दिया जब बस्या ॥
२६	वारवरारी सां०	५ द०नै	१	१	१२	११	५५ २४२	१ वि० १ कारना	सिरवे की भायप
२७	सोमलआई से०	७ से०	१				७२ ३१९	१ वि० १ म०	से०
२८	काठोड़ो खा०	से०	१	१	१५	११	३९ १६९	१ वि० १ म०	भो० गाम गोयलाकी जमीन में पलीवालो बसाया और गोयल वीरान हुआ ॥
२९	सीनोड़नई से०	७ नै:द	२	२	१	३१३	३१ १३६	० वि०	जं० पलीवाल श्री रांशावतजी साहिबाके पटे था -

१	जाटाकीतीन टानी३ स०३९ से०	नै	१					०	सीलोड़ाई की सीवमे टानियो हुई
३०	सिरवो सा०	३॥ से०	१	१	२०	१	३२ १२०	०	सासरा है ईसमे सात गाम न्यारा वस्या रलतु पाट वारट
०	चीभा से	से					०	०	सिरवे की भायप
०	देसरलाई से	- से					०	०	से०
३१	रावतामोटा स०१५१३ खा०	३ नै	१	१	०	३	३१ १७८	० वि	ज० पलीवालथा गौर पटे भाटीजैतसिहोतो केथा वीरानहोनेसे खालसे राईका को वसाया ॥
०	वोला से०	१ प०		१	०	१२	०	०	पलीवालाका गाव जैतसिहोतो के पटे थावीरान होनेसे खालसे हुआ ॥
३२	छोड जा०	२ से	१	१	१७	३।७	४६ २१०	१म०	भो० देवझाया भाटी गिरधरदासोतो कोवसी हुआ ॥

(ग) परगनाकोट फ़तहगढ

गाव वीझोराई मे कोट वनता सिराया के कटक से फतह पानेसे फतहगढ कहा ४ बुर्ज व सफीले कच्ची ईटाका व दरवाजा ऊपर महल है कोटके अंदर कुवा १ पठसाल पलीवालाका है ॥

हा० कोठारीजूझारमल प्र मे थाणो वसायर की चौकी मौजे भोजा मडाई कोठा चेलवामे है ॥

१	बीझोराइ खा०	१९ ५	१ १	७	-५	-१९	१९६ ७५२	२वि २म०	कौमर्कदरउर्फ वीझाथासो तो कुवाबूरकर मारवाड में जारहे स०१४८२ में जसूराणीवो ब्रा० देसरामसी मोराभा पलाकोसीरवी दारहवासनीया अवसे ज० पलीवालके भाटी वेहारीदासोतो के पटे था स०१९२२ मे खालसे कीया ॥

२	कोडीयासर ऐ	३॥ पू	१ १	२	२	२।१४	५८ २२१	१वि: १म॰	भाटीनारान दासोतों के पटेथ्या वो गाम बातलवञ्ज-लोडे गास सं॰ १३१३ में जं॰ पलीवाल हैं पहिले कुंभार थे कोडीया खाफरीया नामी चोर के तलाव पर गाव को डीयासर और सांचके मगरे में कोडीये का गुफा बरवा फरा सर तलाव है ॥
३	सादा सा॰	२॥ से	१ १	२	३	३।२	४८ २११	१वि	जं पलीवाल वारल कासीदासको सं॰ में श्री मूलराजजी दीया ॥
४	साधु सां॰	१। अ	१ १	१	२।१	१।४	४४ २००	१वि	से॰ वीभोराई से न्यारा गांव सं॰ सं॰ १६४८ में-सांध मगरे पास ब्रा॰ सांधु बसाया ॥
५	भीयासर से॰	२ द	१	१	०	१।८	५१ २३१	१वि: १म॰	से॰ ज़मीदार पलीवाल
६	रीवडी से॰	३ नै	१ १	२।३	१।६	४।२५	८७ ३६९	१वि॰ १म॰	से॰ कांरोधरावलोतों के पटेथ्या सं॰ १३ में खालसे हुआ पलीवाल गाम भूहका मोकलदे दावोद बसाया पीछे धासरापोका छिरक सीरवी हुआ ॥
७	मंडाई से॰	५ द	१ १	२।३	८।४	६।३१	१३६ ५४	२वि॰ २म	से॰ भाटी पचोंनोतां के पटेथ्या सं॰ १९१८ में खालसे किया साजीतेरी ज़मीन संभालपार भामाजाटथा सं॰ १३२ गा॰ कां गेडाके बगीये को साजीते सादूल बसाया जबसे पलीवाल है ॥
८	रावडी से॰	६॥ से॰	१ १	२	२	१।३	०	०वि॰	से॰ चेलकदावतों के पटेथ्या तलोरां वडो तलाई रावडी पर गाम है ॥
९	वोभेआई सां॰	९ से॰	१	१	५	१।४	९२ ३६२	०	न्यारा मीसरा
१०	नींवा भो॰	७ द॰ने	१	०	७	१५	३६ १५३	०	भो॰ जसोड उर्फ साजीता - साजीला वेरीयों के पार रहने से कहीले और सातों गावों के नाम बसाने वालों के नाम से हैं
११	हरभा से॰	५॥ ने	१	१।	७	१।१	३६ १४७	०	से॰

	तोगा से॰	~ नै॰८	१	१	०	११२	२६ ११६	०	से॰
	नाहा से॰	४॥ नै	१	०	।२	।२	३ ६	०	से॰
	कोठानोपट खा॰	९ से	१	२१२	०	१४	३७ १५८	०वि	ज॰पलीवाल गोरोरीयाया पंरभाटीरामसिंहोतोकेया स॰ मेभोजराज वाघजयोतकोवसीदियाथा सातगामो कीजमीनखानेसे स॰१६ मेखालसेकर स्वजमेंगाम गे हूवरवशा ग्पोरनथमलजोनेसीव निकालीवाद गोवहकेकोठावकपर वहा कीजमीन केजपा-लोत वरेवक्ष नकुददखाते है ॥
	कोठागोयद से						०	०	ज॰ पलीवालया ॥
	कोठानवा से॰						०	०	से॰
	चोलेरो गाम से॰						०	०	से॰
	आवा से						०	०	भो॰ साजीताकरगया कईखेतपोसमे हरभार-वाया वाकीको ठासमूल है ॥
	मालरामड से						०	०	भो॰ सुवारणका जब खालसेहुआ परजमीनपो-लमे रेवडो रवाई है ॥
१५	पाचा भो॰	५ स॰नै	१	०	३	१२	३ २१	०	भो॰ साजीताप्यका जवखालसेकर हातलकेभाटीयो कोबसी दियाथावरू नही रह्या फेरसाजीतो के सीर-वीहीगोउजेकरमाली कोस॰१९३५ मे दिया
१६	कपूरीया से	६ नै॰५	१ १	१	२७	२१३	९५ ३७६	२मह	भो॰ साजीना

१७	चेलवा जा०	९ प०नै	१	१	१६	११३	९५ ३७६	१ म०	भारी दुजावत
१८	नगराज से:	११ से:	१	१	।४	।३	३६ १४७	०	भो० भराकमलकव्य्रा सं० ७४ मेंखोसोंकोरहवासऔर सं० ८५में जं साहेबखानस्मिठुखां कोजागीरदीया
१९	जोधा भो०	१२ प	१	।२	।३	।८	१९ ८४		भो० भराकमल
२०	साला तथा भाद्रा से०	१२ से:	१	[illegible]			४८ २०९	०	से० सालांका भराकमल देसेरेके भैंसे परलोकरताहै जिससेगंराटीलाडनमाफ़ और भाद्रां काठांरारी लाडन दूजा गांवांमुजन भरते हैं ॥
२१	ग्साला से:	११ प	१	।२	।३	।७	२८ १३२	०	से०
२२	वासड़ो सां०	१२ प०नै	१	१	०	०	४	०	भो० भराकमलकव्या सूना गाम श्री गजसिंह जी साहिबा बारट जोगराजको दीया ॥
२३	बंभारा भो०	१४	१	१२	०	०	९२ ४०२	०	भराकमलां १२ ही गामका तला है बस्ती मुसल्मानम-होरस्तादा वगैरे हैं तथा भराकमलों के गामों का नामवसानेवाले केनामसे है कुवा १२ न्हें कईजारी है पु० ४० मी०
२४	सूलीया सां०	१५ प	१	११	६०२	११	३६ १४७	०	भो भराकमलकव्यां श्री सूलेराजजोसाहिबांने देथे कर मारादे को सं० ८ में तथापार फलीसडेमें वेरीयां- १२ ही गावाकी हैं ॥
२५	गेराज भो०	 से०	१	१	।२	।३	३३ १२६	०	भो भराकमल ॥
२६	ग्रापरा से०	से:	१	।१ १	।३	।७	१३ ६७	०	से० खेतचिडीयात में कुवापुर्स १८ मी० सं० ४४ में हुआ
२७	झाड़वाल से०	१२ से:	१	।२	१७२	११०	३८ १७६	०	से०

०	चोथ से							०	से॰
०	जेसीग रवा॰						०	०	भो पाहु॰ स॰ २८ से रवेता को मुकाराटीलडे के व्याजमे लेरा किया वठारा का ३०। भरताई है ॥
०	पाहु भो॰						०	०	से॰
०	माडा भो						०	०	भो॰ पाहु है पर टीलाडे न्हे तेरवारां वौरे केरूप्ये यहुतवाकी है सोरूपर नजवहुसी
०	मंगोयासतो भो॰						०	०	से॰
२८	आसा ग॰						४ २०	०	भो॰ ।भराकमल
२९	पांपा से॰				-		७ ३४	०	भो भराकमचा सोनरहा जवसीहडो जमीनली
३०	वीझोतोपार से	१५ प॰गै	१	०	०		६२ २५९	०	ऊपर के ४ ही गामो वाले रहे है ॥
३१	मेघा से	१२ केप	१ १	१	१२	१।३	४३ १७१	०	भो पाहु वेरीयो का पार स॰ ४४ में नया हुग्या पाहुवो के गामो का नाम वसाने वाले के नाम से है ॥
३२	रामा सा	११ से	१	१	७	१३	९२ ५०१	१म॰	वारट सिरवे की भायप
०	सीहा भो॰	१० से॰	१	२॥	७	१५		०	भो सीहा गाम रामा में रहे है
।	रब्यासो से॰				१			०	से वस्ती मुसलमान रावलीया निजैरा वगैरे
३३	कोडा सा	७॥	१	१	१४	२	४८ २०५	०	वारट सिरनै की भायप

५८	सांगड़ से०	२	१	१	३	२।४	१११ ५५४	१ वि: १ कारू	चारणा वीठु
३५	भेसाराी भो०	२	१	११२	०	३।१	४८ २२६	०	भो जसोड़ गाम छोडीयोंसे न्यारावासकियाकु वारांमस्र कुर्स ८० पानी मीठा

(घ) परगनेलखा

१	कोटलखा खा०	२८ हूऊ	१	११२	०	१।४	१५५९ ६३३	१ वि: १ दे: १ म:	जमींदारकौम खोखरराठोड़हैं थानेकोरहनेको सं० १८५४मेकोटबनायाथासोगिराहुआहै अंदरदेवीलखां वीरायकामंदरहै सदर मुकामहाकमोहतमोतीलाल ॥
०	गोलीया से०	२ ड	१	०	०	०		०	जं खोखर लखां में रहे है ॥
२	भाडली जा०	३ द	१	२।२	०	८।५	२७६ १२२१	१ वि· १ म·	भो खोखर पड़ोसियोंकेदुःखसेठा० अर्जनसिंहको ज़मीनदेकर गाममेंन्यारीवस्तिकरी उन्होंने भिभरागी यारपार भाटी कानरोंकोभाईवप्रधानजांनसं २१में व सायासो फरंट हुआहै ॥
१	भिभरागीयार	११ नै	१	११		१	·	०	
१	अर्जणीयासी	३ आ	१					०	ठा० अर्जनसिंहजीकी खुदाईतलाईका नाम अर्जनअली ऊपरढानी भाडलीके प्रधानोंकीहै ॥
४	तलोपोसमो	४ दृ·	१	११				०	पहिलेवस्तीसी

३	भाडलीखोषर हिमा खा	३ र	१					०	ऊपरभाडलीसामलछिवीगई जमी दारखोष्र
०	कोरपाल रे०		१					-	ज खोयरभाडलीमे रहे है
४	कूडो जा०	३ प॰नै	१	११	०	११	४८ २६८	०	यह दोनोगाम भो॰ पोथा सेरवाससे हूसवा रस॰ १९२५ व २७ मे गामजोगराजजीवापऊदैसिंहोनको वसादी साकिपारवीभोगवसीतथापरेकागाम खोया खा-लसेकरवाकीयाथा ॥
५	नीवली से०	४	१	११	०	११	३७ १७२	०	
६	जझनपाली जा०	७ प॰नै	१	११	०	३।	१३९ ६२२	१ म १ वि० १ उपाक्षा	जझोकोतलाईजझनपालीपर॰ग॰कन्यारादासजी कासाउसे गायवसीमाडी
७	गूडडा ठासण	८ रे	१	११	पार कात लीयि को	११	९६ ४२६	०	जझनपालीठा॰ नेचारण गूडडोकोवसायो
८	गेहू जा०	१० प०	१ १	२।	पासे ५००				गेहू पैदाहोनेसेकुवागेहूपरगाव हुआ पच्छिमपोन कोसपर सोयसामे वेरीया है ॥
९	डाचरी स॰२७ से०	१० से०	१ १	० ११	से	११		०	भो॰ पाहुयाकोठोकीरवन्न ठा॰ नाथजीरो गोवरधदास स॰१६मे तलाई डाचरी परवस्ती माडी ॥
१०	सोदात स॰११ खा०	८ वा	१	०	१	११	२९ १२८		तलाई सोदातपरयागलीया कुरडोकोदेवडो सेन्यारा करकेम्हेता मालमचन्दजीनेवसाया
११	जोगीदासकोगाम जा०	६ से०	१	११	०	११	३८ १३८	०	खापप्रथीराजोतभाटीजोगीदासनेगामवसाया
१२	गजासिंहरोगाम से०	७ से०	१	११	पार सूरो जी	११	४७ २०८	०	भाटीडुलावत गजसिंह वसायो

१३	तजमालोत से०	६ वा	१	१। ।१	०	२।३	१३६ ६०६	० मं०	गांमछांयंगासे भाटीपचारोत तलैनतांसाऊपरआरहेथे फेरउदेसिंहोतजंझनआली और तेजमालोतयहां वसे-
१४	वीरमांसी	५ ठ० वा	१	१	०	०	३३ १३६	०	तेजमाल्लो तोंकाप्रधानराहूड-वभराकमलरहतेहैं
१५	मोंटा से०	से:	१	२।	०	३।२	१५७ ६८३	१ वि: १ म:	जं पलीवालथे फेररवांपतेजमालोतठा०दौलतसिंह जीकोवसी श्री मूलराजजीसाहबारीया॥ मारवाडमेंलूं टकरनेसेचौडावतबहादुरसिंहखोडाफौजलायागाडीनिसे
१६	रगाघा से:	२ उ	१	२।	झर्णा	३।५	१३४ ६२७	१ वि: १ म-	भो० षोषररगाचीकट्यो वादसं०१८९१ मेंतेजमालो त ठा० सुवाई सिंहजीकोवसी दियो -
१७	वोहरो खा०	२ ५	१	२।	०	०	३३ १३४	०	जं खोरवर नलावूरी थोड़ा दूजाभीहै
१८	देवड़ा जा०	८ ड० था	१	२।	०	१।३	२२३ ९१०	१ वि- १ म- १ वि-	भो० देवड़ोकोगामथ्यो ठा० कल्याणदासजीकोवसी दियोफेरभीमजीरहा पर ज़मीन तीनोंहंसेव्हेची
		(ड) परगनेमहाजलार							
१	महाजलार खा०	३० दू० नै	१	१ २।१	।१८	।१३	१३२ ५४०	१ म	जमीदारमहाजलभाटीहैसं०१८६२मेंहीगलाजगढ़गडीव नायकोरखाभेकेमातहतथानारखाथा सं० १९१९ सेहाक मरहतेहैं ॥आबादीवदानेवकाईकुवेऔरही गांव वसीवमें करानेवसहजनाथकामठउमदाक्नानेवगैरेकी हिदायतव तजवीज़कोगई है ॥
x	तलोपीथाल सं० १६								सं०१८८६ सेसोढा सुजानसिंहसेरसिंहोतकूवो वार वस्तीकीदूनालीलीथी परंतहुई तलो हीटयो
	भानैसेतलाई सं० २६	४ आ	१	०					महाजलवबाङ्याडे झुंगरेकीदानीहै ॥

१	गडेली तलाई	४ ह	१	०					महाजलदेसलरोकी दानीजूनी है ॥
१	कैरला तला स १७	६॥ से	१	२					नहोडी महासिंह सम्मेजैवसाय सोढो की मारफत हूवातीलेकुवावबस्तीकरी फेरस॰२७ ममसेजेअमरसींहजा दुवा हुवाती सेकिया ॥
१	ग्वालीसरोको बस्ती स॰१६	७ मे	१	०		११			ग्वालीसर नशारकवीरनगैरे बस्ती करो
१	हरीकेयार	४ से॰	१	०	पाछे	१२	–		महाजन व भीलगूगलीये बाडे पररहै है
१	कूपलाजोड रवा॰	८ प	१	०					ज चौहान है स॰२०मे सोढा सादूलवसहूकारण गादासकुवोबस्ती किगया सो नहीहुआ
२	पेळीनो स २५ से	७ प॰वा	१	० २।	५५७ कची	२१४	९७ ७५		ज चौहानकोजमीनमे सोढे रवेनसी कुवो गाम किया फेरसोढेजैसिंहरा स॰४२मे हुवातीसेदूजो कुवोकियो
४	कारडी से॰	८ वा	१	१।।	०	१२	२९ १३५		जसता वस्ती सोढो की सजनूजीरोको घरुरवेनांको हासलमाफ ॥
५	दहो भो	७ वा	१	१। २।	०	१२	४७ २१८		भो॰ रायधरहे पोरचौहान आधीया कर गया जूना कुवामधे स॰१६मे राजू वसमा श्रीदरबारकी पाववरसा नवाध१कुवो ववसती कीयास॰४०मे धारीसी के रा॰जसाने एककुवा किया ॥
६	हटार नो॰	१० से	१	११ ११	०	११२	२७ ११६		भो॰ हटा स॰४१मे एककुवा वमराराम गुराणीयो सहू किया ॥
७	फुलीयो से	५ ऊ॰दे	१	११। ११	१५	१६	२४ ११५		भोमीया सावतसी कोरडीवाला स॰४२मे दूजोकु कियो ॥
८	तेजरारो से	५ १	१ १	१	३ पाछे	२१२	७० २९३		भो॰ तेजरा

१	मूलशरी सेः								
५	आंटीयो सेः	१०	१	१	०		८ ३३		सेः नेजरारै समूल है
१	तलाईलोईरी		१					०	गंजू कालैरै वस्ती है॥
१	विकांसी		१					०	मंगलीया व चांनीयारहै है
१०	सीहड़ार सं३० जा०	१०	१	१	।१	१।१	३६ १७०	०	मो० सीहड़ कर गचा सूनागाम्र भाटी प्रथीराजसरू पसिंहोत कोवसी दीया जवबसा
११	सतोय सेः	३ पू०ई	१ १	।।२ ।।१	।१५	६।११	१८० ८५४	१ कि १ म·	भो० सत्ताथा राजश्रीकिसनसिंहजीजोरावरसिंहोत कोजागीरदिया = ।। जोधपुरजेसलमेरकी सरहद पाव लटसाहबसाहबबहादुरने सं० ४६ में मोजे श्रोला कांगरी धारवी के तिहहेसे वधीवा वलीचौहद्दतक निकाली- जरां अलावा जमीन बहुत सीहर गांवकी जाने के इस तरह दानियां मारवाड नीचे रहीं १ वकांसी २ भोपीरो पार ३ गदागदरो ४ आसलीयावय ५ सायरोरो भो- इसतरह महाजलार की बहुतसी सीवतोगई कैरला कुवा में भी मारवाड की सीररखी और गाव भाडली की सीव व- कुवा दांनीयां मारवाड की रखनी चाही सो मंजूर न रखने सेलैतलाल में है ।। कूवा नोहोडी आलावतणायां पार वगैरे बहुतसी ज़मीन इस वर्षों में मारवाडवालों रबाली वी
।	किसनसिंहरो तलो	५ पू						०	
४	भोपीरोपार							०	सभा आलीसर जुंगोजा वगैरे सोढ़ा बंधड़े कारहै है

१	गाहरतलाव	३ पृ॰श्र				१		॰	सम्भावगैरे
१	गदागदरो							॰	कुभाररैहैहै
१	भीलारो पार वरगाडो	३ श्र						॰	भीलरहैहै
४	नाथेरी तलाई							॰	
१	ग्पासलीयावय							॰	स॰२॰सेगाहे २ध्यरणारहताहै
४	दायरोदोभो	३ र	१					॰	कल्लाचांवरा वरसालूखेतोमे हुवेहै
१	खारीयोतलो	२ ग्प	१	१				॰	दोहर चलेचावगैररहेहै इठेवीदेयेपाररहै
१	बिस्नोईरोपार	३॥ पू	१					॰	मंगलीया दोहरसत्तावगैरेहै
१	बूयल	३ ग्री	१					॰	सै
१	लपल	सेः	१					॰	सै

(च) परगने खाभा

पूवार वारै से ज़मीदार पल है जो मालसर पर रहते थे यह ज़मीन गोयल की थी उसकी बेटी ब्रा० नेहड़- पर दीजकर ज़मीन लेली खाभा नाम खड़ेगे नसे गांव हुआ नेहड़ की औलाद के हरजाल पलीवाल है- महाराव लकरवा ने पलां को मारकर मालसर नामही मिटा दिया जब ज़मीन में पैदा नहीं होने लगी जब पलां के दोलड़कों को जो नां नारो अमरकोटसे लाकर वसाये गांव बहुत आवाद होने से भागनगार कहाया

१	खाभो खा०	१० प० नै	२	१	१२	१५१९	३६ १२०	० वि: ० म:	डुंगरी पर सं० १८६२ में कोट बनाया था अब निशान है हाकिम के रहने का सदर मुकाम था सं० ४२ से सम के समूल किया यहां मोहर्रर रहता है महेता चैन सुख
०	निभीया से०	१ अ		०	३	३	०	०	जं पलीवाल था मूंगरी निभ के निभीया कहा
२	सलखा भो०	४ वा	१	१ १	५	२१	५२ २१६	०	भो० जंझ सलखा हिन्दु है भाराती के वेरे सलखे वसाया
३	लुजासर से०	४ उ	१ १	०	१	११	११ ४५	०	भो० भराकमल
४	दामोदर खा०	३ उ	२	१	७	१०१७	३८ १४४	१ वि:	जं पलीवाल दामोदर ने पुलीये से ज़मीन लेकर गाम वसा य फेर खाभे वालों वेरी परनाय वेरीयों का पारदाय जेरीया -
५	देढा से०	२ पू०	२	१	०	२१३	२४ ७९	१ वि:	से: तलाई ज़सीये की कडीन नामी है नीभीये के भाई देरे गामवसाया ॥
०	जाजीया से:	३ से:	०	०	१०४	११५	०	०	से: ऐसा लायक था कि पलीवालसानी नहीं था कवी ने सम कहा सो पिसर हुआ कि (भुजकोठरी छेड़ जोयो नसाभे जाजीयो) चुनांचे परदेस मेंही घर गया जाजीया खाड़ा लसे आकर वसाया
६	धुलीया से:	२॥ द	२	३	०	२१	२८ ८८	० वि:	जं पलीवाल धुल्ये के पोता बसाया सिपुलसे ज़मीन लीवी

७	मुहारसापली से	२॥ ५	२	३	०	२१	२८ ८८	० मि	ज सिपुखवीस्तमालियोकीवाडीमे प्याजयगेरे होतासलगजमे पुर्तजमीनसमचोरसकारु९)
८	जाडेली प०	२ नै	१ १	०	१०	१२	३१ १२५	०	ज जोटूयाउर्फ जामहा ओठीपिरोजीनोकी यारोगेको फी मनुष्य हरसाल रु१)रे
९	कुभार कोठा खा	४ द	२	०	४१४	२१५	४० १४१	०	ज सिपुल बस्ती कुभारो की
१०	सिपुल से	५ ह म	२	०	७	४१२	४७ १७४	०	ज तुवरउर्फ सिपुल सिवकानामसापली
११	धोबा ला -	८ से	१ १	४	१०	४१२	१२२ २११	१ वि	भो मूलपसा खापधोवा-
१२	खूहडीजीदा से.	से	१ १	३	१०	३१३	१५८ ७५७	१ पि	खूह सिधीमे वेरेको कहे सो पारने वेरीया पखावदपु हवीमूलपसाजी रेकाजीहा घोवे का घोला है ॥ भो०मूलपसाजीदा गामकोलके संदेहोजलोसह खाम गगरासकोस०१५४०मेवसीदीपापरधोबारवानसे नु घास०१९३०मेराजीलसिह कोजमीनलिखादंशो ५५ कोसकी गिर्दमे कवजेहै
१	खारीया स०३२			१				०	यहा सोढा मोड जीका रहे है
४	मोरीये रापार							०	यहा सोढा भारमलथा सो जेठवी आरहे
१	जेठावी स०३२							०	आलीसर मगलीयावगैरे रहे पहिले यह पारसूना था उन्हा कोस१ कुवमालशसरबुरियोडा हे पवनो पारकरी हे
०	कावरा खा०							०	ज पनीवाल कावरे वसायाथा

१०	धारागारा राा ख्या०	१२ प	१	१ ३	०	०	९१ ३९८		जं० मैराफ कुवा १२ बूरोड़ों मध्ये ४ फकीरों किये १ मीरागा सं० १८९४ में २ हस्न सं० १९१७ में ३ माहू-सं० १९ में ४ झूंगो रिायो सं० १९२३ में वस्तीपोंपापरा उजड़ी
११	सईयदरो तलो सं० १७ से:	१५ वा० प	१	० ११	०	०	५ १३		से: सईयद् मुहम्मद इब्राली नोपाट कूवो व गाम किया –
१२	सुहार मेराफ की से:	१५॥ वा	१	०	०	०	४८ १९४		से: मांगलीया मरपीया नोपाट कुवो व गाम कियो फेर दो कुवा जूनत्यार किया जमाने साविक् मेंइ सताडे में कुवा वेरा था
१३	भूहांगो से:	१२ प	१	० २१	०	०	१०३ ३८०		से० कुवा १२ बूरोडो मध्ये कुवा त्यारकर वस्ती करी १ वंभरा नसीर सं० में २ वंभरा मीरखा सं० में फकीरो खा लकांगिा सं० में सुरु कियो सो अधूरो हे – व हमीरो
१४	मालीगडो सं० १७ खा०	१२ वा–ड	१	०		१२	४१ १८८		ज दोहारा हडुव्या सो वीषर गया फकीरवे आपसे कूवो दयो थो सो सं० में सेठ हिम्मतराम जी को वरवस्य–यो परन हुओ फेर राजड मिठे वगैरेवाजीदो फर्क रर ज्ञल की दुवा से नोपाट कुवा व गाम किया वाद सं० ४४ में राजड डारांगीयों वस्ती करी कुवो सं० ४४ में कियो
१५	खारडीया से:	४ वा	१ १	०	१५४	५१७	१०२ ४१३		ज मेराफ खारड़ीयोंका पारहे वस्ती फकीर चंगारी खालकांगी हमीर वगैरेकी हे पारकाके में गेहू हुवे हे
१६	तलाई गजेरी से०	६ वा–ड	१	०	०	११३	४३ १७७		ज भईया वस्ती मंगलीया मरखी या बाखरी
१७	धामीया से	२ ऊंई	१ १	२ ३	१ प्पार कपी	२१४	४८ २३०		ज से० कुवा दो जूनाव कूवा ३ नवा पानी पुर्ष २६ तक मीठो परो जे को हे ने नीचे खारो निकले १ अला यने सं० २० में २ कोसवा सं० ३६ तथा ४० में
१८	किनोई भो०	३ फू०	१ १	०	१७	११५	९३ ४२९		भो० जंझ म्हेपा हिन्दु हे ॥

(ज) परगनेवलदेवगढ उर्फ स्हागढ

१	कोटवलदेवग ढउर्फस्हागढ ख्वा०	४ प नै	० १			०	७३ ३४२	१म

नमानेसाविकमेजमीदारोमगरीयोकीसिंघतका
थी गामराजडालकेराजट वेटाज्वराका गौम
समाको मं साहड नेवेरीपरनायरकोटमरजी
नरिये ॥ दोहा साडोवाडोवीह द्रोफना है माजमे ॥ सोतासाहड चीह सुरकसमीविचमे ॥१॥ जवसेराजड जमीदार - हजारहाघर इलाके हाजावसिधमे है ॥ फेरसिंधकेमीयेकलोडे के कामदार स्हावारने स्हागढ नामी गढ वनायकस्वाआवादकीया पीछे टालपुराकेमीर रुस्तमने त रकीरी - स० १८९८ मेजैसलमेर काकबजा हुआ जव वलदेवगढनाम वहाकिमरहनेकासदरमुकाम कीया इसपरगनेमे रेतकेटीवे वहुत भारीहै - एकजगहसेउडकर दूसरीजागह होजातेहै - कोरोतमेहय नेसे रूपोमे हाविमरहता है - खेतीनहीथी स० २७से निस्फ हासिलवानेरु ३।) एक हलकालेनाकर खेतीकराईहै ।कोटसे एकुवा सफेदरेतीकाथलोको प्राहकहतेहै - जिसपर ५ फीटसे १२ तकखोदने से पानीमीठा औरनीचपाधरी जमीनमे खारा निकलता है - ऐसी२ अजायववाईवाते है ॥ १ रिषी नेदेयचकेश्वर महादेवका मंदिर जो अब इलाके सिधमे इसकाकड से १२कोस है स्थापकरदईनकोमा या जिसकी कथा स्कंदपुराणमे है

हाकिम प्रोहित हीरालाल -

२	मुगलीयारोत लो	ऊ० ६	१				२० २	१	थुवर	६ गै०					०
३	माहो	४ प०	१				५८ २०२	६	चानराउ	५ प० नै					५० २५
४	घडसीयोकोट वालो	९ व	१				१७ ६९	१	म्हांमद वालो	९ प					
५	घडसीयोलग वालो	से	१				५८ २३५	७	मि०७।७	१० नै	१				२५ १
१	रफडो	२॥ नै						१	से	से	१				
१	झडो	३ से०						८	खीराप	१२ प० नै					४२ १७३

।	रतड़ाउ	१३ से:						२०	कारटो	२२ नै					
९	वडीयाछोड.	१० से:	१				४३ १७३	२१	लुहार	१८					३७ १६५
।	रतवो	१३ नै०प						।	असुडो	२१ नै०द					
१०	सीलोई	१२ से:						२२	सारी चानरो	१५ से:					५८ १७४
११	घोराउ	१२ से:						।	विरांतरी षुई	१८ से:					
।	रारगाढो	से:						।	खालकनेरीषुई	१७ से:					
।	खारीयो	१५ से:					२८ ११५	२३	वडीयो	१९ से:					
१२	हडीगाउ	से:					१४ ५५	।	से:	से:					
।	सेरवार	१८ से:					६ २५	२४	वागरागाउ	२२ ह०नै	१				
१३	झमड़ाउ	१९ प:नै					४९ २०	२५	भीडो नवो	५ ह	१				६२ २००
१४	जनीयो	१? नै					१७ ७६	।	से: जूनो	६ से:	.				
।	गुलावषसरीषुई	२० नै					९ ४४	।	वांडडी	८ से:					
१५	जसीयो	१२ से:						२६	म्हैरांणो	९ से:	१				
१६	चाकराउ	७ प०नै	१				११ ६१	।	पारेवाली	१० से:					
।	वीरमो	८ से:	१				२५ १०२	।	घरवूढी	१४ ह०नै					
।	संगेड	१० से:	१				१० २५	।	नेस्राउ	१२ ह					८ २६
।	छेडो	११ से:	१					।	कुंताडो	से:					
।	मुरारवालो	से:						।	असूडो	१३					१५ १५५
१७	रघवो	१५ नै०प	१				१३ ५६	।	महाडो	१३ ह					१७ २५
१८	मेहांराणो	१६ से:	१					।	वावूई	१५ ह					८ ३५
१९	थरोराई	२१ से:	१				४८ २३३	।	से:	से:					।
।	मगनजीषुई	२० नै						२७	विटोई	१७ से:					४४ १८७

१	ईंडेवाली	२५ सें						३८	साववार	१५ सें	१				
१	कंगूर	२५ सें						३९	हरडो	२३ सें	१				४२/१८३
२८	माघस्रे	१६ सें						१	गाजाउ	१४ सें०					
१	चनो	१८ सें						१	पातनवासी	१७ सें					
२९	वसगो	१९ ह	१				१६/५३	४०	हूरनाउ	१६ सें	१				
१	माघलवासी	१८ सें						१	होषीयो	१७ सें					
१	वाडली	१७						४१	भीजोई	१८ रे	१				
१	गगनोई	२०						१	कवरवालो						
१	मवोलो	१७						१	चचाउ	२० श्री					
१	इलाउ	२०						४२	झालरीयो	२२ म रे					३८/१२७
३०	रूपड कियो	६ दृ० म	१				४८/२४५	४३	रारागढो	२० सें					४४/१६८
३१	साहडो	२० सें	१					१	लीआउ	१९ सें					
३२	कुलो	१८ सें	१				१५/५६	१	चनाउ	२० सें०					
३३	बाडुवाली	१४ स	१					१	खवडेरो	सें:					
३४	दासुवाली	१६ सें	१				२/११	१	वीसानो	२७ सें					
१	कलाव	१० दृ० म						१	वाह्रवाली	३२ सें					५८/१६९
१	सूमयउ	१९ सें						१	जुवनवासी	२२ सें					
१	कूडनवासोकोकर	२२ स	१					४४	खेलगो	२१ सें					४७/१९२
३५	घिरजो	५ पृ० अ	१				१३/६४								
३६	नवोतलो	१९ सें	१				५१/१६१		ऊपर लिखे गाव वटानियों मे लोकुवा पक्का हे -						
१	मेरााउ	१२ सें	१						गाव पक्का बाकीतो नामके हे क्यो कि १ जगह सेपांउ						
३७	गवलाउ	१२ सें	१				४२/१३६		आसेमे दूसरी जगह पुर्दयो दकर रहते हे और वाजा						

के तो जुपे भी नहीं ॥ किसी रूख के नीचे रली हंकी मेलकर गोठ सहाते हें ॥

(ऊ) परगने देवगढ उर्फ़ घोटड़ु

१	कोट देवगढ उर्फ़ घोटड़ु. ख़ा॰	४० प	१	५	०	१६	१०६	
२	तलोसो झलो मं॰४३	८ प	१	० १	०	११	०	

ज़मीन महोरावटी में घोटड़ु नामी कुवे पर रुकर्णी मोररारा व दिलाव करनां रागी वगैरे रहते हैं म्होर सलेम बदखुवाने खेर पुर केटा लपुरा मीर रुस्तम से क़िला घोटड़ु. पक्की ईटों का बुर्ज १६ व दरवाजे होय व तजरां वगेरे बहुत मज़बूल बणावाय और मनशा थी कि वक़्त मुश्किल के यहां आ रहेंगे- परन्तु सं॰१८९९ में फेर जैसलमेर का क़बज़ा हुआ- जबसे देवगढ नाम रक्खा कारदार याने हाकम रहता है तथा कुवा कोट में व ३ सफीलां पास उडा पुर्स ५० पानी बहुत व मीठा मवेशी ज़्यादे के बायस खेती नहीं थी अब ताल्लु २ हे ॥ परगना बसाने को सोजरा से पश्चिम ८ कोस पर कुवा बनाया पू॰ ३० मीठा पानी होने से बसने की पक्की उमेद हुई जब लिखा लिया कि रिआया ई॰ गैर की आवे घोटड़ु वीरान नहो ॥ दांरा का ज़मीदार मूषीया

हाकिम निसा जेठ मल-

(ऋ) परगने खारा

०	कोट खारो ख़ा	४० प॰व	१	३	०	१२२		

कुवों का पानी खारा से खारा कहा कोट बुर्ज ४ व दरवाजा तजरां मिट्टी का था सो गेर गया सिपाई हीगोलों के तले जारहे हाकिम या मोहर्रर तले को लूपर रहते हें - ज़मीदार कौम म्होर सीव म्होरावटी में दूसरी कौम को रहने नहीं दे और मौसम गरमा में लोग सिंध जाते थे, अब कूवा ज्यादे होने से न्हीं जाते हें- कोट के पास झलो पारका मुकाम हे - और कूवा का पानी भी अब तो पेछु हुआ हे परन्तु म्होरां का माल पी वेतो विराईजे जिससे वहां बस्ती नही होसकती ॥ कई बरसों से यह प॰ कोट खुयाले के समूल किया गया दोनों कोटों में एक हाकिम हे

१	लागावालोयम मिरुडाउ स०४३	२ उ	१	० १					पाडे न्यागवान्नेनेकूवांढवा माठपानीरो मिरुडाउ कहा ॥
२	सादावालो स०४२	६ उ०वा	१	० १					कूवापाडे सादा नुंजा किया ॥
३	कालीभर स०३२	४ ई	१	० १			४८ १९२		पाडे मूगरारिग वगुमनांनेकूवावगामकिया
४	हीयेलावाला स०२३	२ पू	१	० १			४६ २२०		पाडे हीगोला कूवाववस्तो विया
५	हसूवालो	४ से	१	०			३८ १७०		जूनाकूवा तयारकर मुबासाहुलरा व पाडेसाहुबूरा हैं है ॥
६	हकाडो	५ से	१	० १			५८ २०५		पाडा कुटा साउरावलागरा वस्ते है ॥
७	कोलू	८ पू०ई	१	१	११	।३४	८५ ३७६		भाईपांनरा व सादूलरा वग्मरारोरहैहै त लाई सतारी ॥
८	भाटीया	११ श	१	० १					वाधेपरवस्ती लिखीजी पाहोचूहडाव नीरा सोढा राी जूनातला तयारकर वस्तीकरी ॥
९	सकमरोपार	१६ पू	१	०	११	।२	६० २८३		मुबा समरारी
१०	झरना स०३५	१७ न	१	०	१८	।२	९५ ६१		से पार नवा हुआ, वस्ती कुरा मधुवारी
११	वाधा	१७ पू०न	१	०	।१४	।८	७० २८६		जागीरा कुटा जीरा चूहडावगैरेरहते है वाधापार है एकदीन वगवारीस०१९०५ मेंवधायायासोद्रास ३५मे वेरीयोंनिकली पे कुयाने वहुत हे ॥

१२	नूकीयां	१६ अ	१	०	५।८५	३।१०	८५ ३९०		नूंकीखुदाई तलायां में झरना है ॥
१३	मीरवाल सं० १६	१८ अ	१	० १।			२७ १३२		रुकडगराणी पडे ढ्रीयांमर रहे हैं मीरने कूव कराया
१४	असू	१२ स० अ	१	१। १।			९४ ४०९		जागीरांवनाथांरागीया कूवा १ वेतीरा सं० १९०० कीया फेर कुवा सं० में हुआ
५	मंडेकडेवाला	८ प		० १।					औदरवारसे कूवा एक सं० १९१९ में पका कराया परमहो वद मासी सेवस्ती नकरी हज़ार रुपये नाहक गये ॥

इतहास क़ौम म्होर - बादशाह सुलेमानके तुष्म भठीयारीके पेटसे ई० सिंधमेंरोलड़ हुए सो जिनकी औलादका होजते हैं १ तोम्होर २ मालूम नहीं - क़ौम म्हर तीनो इलाकों सिंध-जैसलमेर-बीकानेर-मारवाड़-मलानी वगैरे में लषकवाडी मशहूर हैं और पुशतोंवाद सांयरा रामाती हुआ चुनाचे पाबुजी ने वेरीको १०० सांढां देनेके लिये सांयरा का वर्ग ले आया पीछे से सांयः पहुंचा जब लडनई में ठोवसे तरवार चलीदेखकर पाबूने सुलह करी याने सीरांकासवज़ म्हागुन्चा को दीया क़ोसाउके गांवमें है और महोरांको मांगते हैं - म्होरांका पादवी सरदार स्वीजा हाजीखां मोजे न गढ़ इलाके सिंध में है और वीभा नाम म्हर इलाके हाज़ा में आरहा उसकी औलादके कई पाडे-याने ज़ारों घर हैं अववर्वेआ भीरखां नरा में मुगरखां व न्चूहडामें इलाहीबख्श और मुखारनां में स्मर्थ- जंगारां मे रेस्म जासोत है ॥

(२) परगने खुईयाला

१	कोरखुईयालो खा०	२० प	२			५।११	१३० ६१२		कीट रीड़ा पत्थरों का बुर्ज ४ व दरवाजाव तजरांऊपरमें यां हैं ज़मीदार कोहरी मुसल्मान हैं ॥ सिंधीलोग पैदल ने में कमाल करते हैं चुनान्चे गोहराम कोहरी अधमन वो लेकर ३ पहर में ४५ कोसतो सहज सुभाव चलता था - ओनरी सफ़ील पासका जलापीरांका मुकाम जाजलीका नया कोर के पास साकूका इका घरथा सो अब हषसा कूग पर हूआ - हाकम म्हेलाचैन सुख दास हैं ॥

१	राजा	१ झ							यहपांचपाडाकोहरीओजमीदारहै॥जामोतहिन्दु कोहरीथासोकरगयाअबपाडेएजामेसालूनामहै॥
१	रामल	से०							
१	दावद	१॥ द							
१	हेमा	११ मै			पार	१६			
१	सूर	२ पू							
२	सीयम्बर खा०	४ द०म्र	१	०	पार	११३	६३ २११		सीहाबरननाव पटीवालाकाकोहरीकीजमीमेहैबस्ती मगलीयागागन ॥ स०१३मेकुवाकरनेकीदुवालीलीथी सं०४४मेकामशुरूकियापरतयारनहुआ । पडीनप धरीयावधापगेहूंकरनेकालिखतस०४२मेकरायापर जमाने सच्छे आनेसे होगा ॥
१	खनुवारीवस्ती से	से	१	०	पार	०	१		
३	कुछडी से	४ ५	१ १	०	२७	२३१	६० २७५		स जद्म मुसलमान पाडा १तोगा पनराज पोपर - ॥ थानआलेजूझारकाहै॥ ताडेमेकु वा वहुत पुरुष १२पानीमीठा पर थोडा है
४	हावूर भो०	४ ई	१ २	०	७	६१२	११९ ९७९		भो० उनड खडीन हावूरसे गामकानाम हुआ सो खडीन खालसे है ॥

(ठ) परगने रामगढ़

१	कोटरामगढ़ ख़ा॰	२० प॰व	२		-		१९१ ८५५		ज़॰ खालत है - कोट बिखरा हुआ है सिर्फ़ दरवाज़ा व उन्ह्वें की सफ़ील व मंदिर रहा है ॥ इस परगने
में उआलु साष के वहुत खड़ीन हैं - बड़ी व सरन वग़ैरे क़ा बंधा अद वंध गया है उमेद क़दी है कि कोशिश बनी-रही और ज़माना अच्छा आनेपर पीव सेवढकर आमदनी होगी ॥ - हाकिम म्हेता ररा छोड-सिंह हैं									
२	खेरड़ याने भोजराज	४ वा	१ १				४८ २११		
।	तलोर साउ सं॰२५	१२ वा							तरणोट वीच में २० कोस उजाड था सो ४ कोस खेरड़ में कस्ती अगाडी ८ कोस कुवार गाउ यहां से ५ कोस कूवा घंटीयाल होने भी न रहा पर कुवा दोनों मरम्मत तलब हैं ॥
३	राघव								खालत राघवों की वस्ती है ॥
॥	राघवों रो तलो	११	१						
		उ॰ई							
४	सेऊ	४ ई॰	१				३६ १६५		ख़ा॰ सेऊ रहते हैं ॥
५	सायत	३ ई	१				३८ १८१		से॰ सांयत हैं -
।	सांयतां रो तलो	११ उ॰ई	१						
।	चभूतेरो तलो	से॰							
६	हेमा	४ द	१ १	०	१५	३	४८ १९०		तलाब व परासर पर ख़ा॰ हेमा वनेत सीवसे हैं

७	नेतसी	३	१	०	६०	३१४	३७		से
		२	१				१४३		
८	जोगा	४	१	०	१५२	३१४	४७		खा० जोगारहतेहैं
		५	१				१८७		
९	हाडो	६	२		११		४०		तलावयानेखडीनका नाम हाडाहै ओरमुसल-मीनमकाखालतरहतेहैं जमीनमेतोमच्छावदूशरा खालतला मिलहै मोलका विराड जुरा
	खा०	९					१३१		
१०	सेराहू से	७ ३	१ १			१	२१ ७६		ज सेराहूभाटीहैवाचालीयेउधनकीनोकरीस० २९सेमाफकरीवरसातपो।गुवाडीरू ३ वध्या
११	काकाव	७	१	०	११२				ज हूलचकीमचावडापारनकुरनेसेभाट्राजरामे रहेफेरभीचाचगदेवीकामायाहोलाचहापावा-जवगा० ग्याकलारियाथा फेरभी गव्हसीजीनेद्रस जगेवसाया लेघासे होलच्हस
	स०१४ से	९.५	१						
१२	सांनु	६	१	१	०	५	७४		भो० भराकमलहै परीवाराकी जमीनमेगांम-नुजासर से घावसे -
	भो०	५					३०३		
१३	तलो भोत्यरा			११					खा० भोजरा कुवा ५ बूरोडा मध्ये स०३४मेराम देवजीकेपिंडेरू५नाथवजारोसे कुवा त्याखरा-याथा किगामवसादिमेला होगा पर म्होरीसेपा-लताकीनाराजीसेपीछागया कुवावरांव पडाहै ॥
	खा०								

(ङ) परगने तरांगेट

१	कोटतरांगेट	४०	१	१	०	२१६	३०७		स०९८ मेमाटीरावतरांगजीकासाकाहु पावाद सहूरवगढवीरान होकर लोक्रापुचारोनेसोलकी जागीरदारकीयाफेर भाटीयोंका दखल हुआतोभी जमीदार वोहीरहा बाद कई पालटा हुआ
	खा	बा०५					१२२१		
१	कूवेगामदलनरो								
२	धरीयाल								

सोमंकी मौज़े रामगढ़में आबसे० यहां ऊंनडोंकों बसायकरवा आबाद किया हाकिमकेरहने-
कनसदर मुकामहै कोट बनायाथा सोगिरगया सिर्फ दरवाज़ाव १ महल ईटोंकाहै ॥

कुवा चोलाया पु०२१ पानी बहुत व षाराहै कुवापरखान पडनेसे मू० रोपुर्स ऊंचीचैरा जरूरहै
॥ सीवमें गांव-बसानेको कद्र जगह कुवाकरवाया परषारा पड्याकि वायस उपाय षालीगया
॥ हाकिम म्हेता गोरधनदासथा अब घासीचंदहै ॥

(ह्व) परगने किसनगढ़

१	कोटकिसनगढ़	९५	१	३	०	२१२२	२११	१वि: १॥ रावदपोंने दूदेवादखांने पक्की ईटोंका २५
	रवा	पा०ड					८००	१ दे: कुर्ज ३ दरवाजा व रंगमहल वतजरां वगैरेगढ़

इ० हूज़ामें रवासके लिये बनवायकरवा आबादकियाया फेर जैसलमेरका कब्ज़ा हुआ जबसे
किस्नगढ़ नामरखा हाकिम रहताहै ॥

२ ॥ ज़मीदारकोई नहीं कौमकोटवाल अव्वलमें आबसे ॥ ३. कुवा कावलसर चोलावा-
अज़हद है पु०२१ पानी बहुत व मीठा १ दूसराभी जारीहै ॥ सं०३४में १ जारांसे बयारक
रावा परसीवमें ज्यादे खेती व कुवावगा० नहोसके रेतके टवे बहुतहैं ॥ दसीना कोटमें निकाबवे
कोपु०७ खोदनेसे हाड निकला जब पीका षुरा मगरनी चेवेसक है ;
कामदार म्होवलीमंह व किलेदार ह: हरपालहै ॥

(ग्ग) परगने बाराहा

१	बाराहा	९२	१	०			९	भो० रहाड़है० जूनाकुवाव गढ़ाव गोधशाला तयारक
		हाड		२			३०	रवस्तीकरी सं०२७में २ हाकिव्यामजोगीदासहैं नव

परगना किया -धारणावूलासा निहूलया सं०४१से जुदाकीया ॥ कामदार प्रोहित बुधलाल-

।।जमीन राहडकीमे षेती का हासिल वगैरे लाग नही लेते है सो चेकर स्हा जोगमे रषे और तला वपनरा सर परसरवलरे का ठाठ व दूसरा कुवा भी करावे वगैरे ।। सबका रूपक आराम वलाय कीपना दी रेवज्यु तनखाह करेनेकी हिदायत करी है ।।

२	साधरा						१९	
	से०						७४	
३	रायमल						३९	
	से						११२	
४	नथा						३६	से० पाचमाम धुजप दे नामसे है
	से०						११४	
५	तेजपाल						४२	
	से०						१०७	
६	सडा						२२	
	से०						११४	
७	भीयावा राहडारी से०						२२	कुमरोकी वस्ती गाम षीया के दूजे ग्रास राहडकी-
							९४	जमीनमे है ।।
X	तनेरोपधराले सं० १९०८ से०	१						तलै ऊपर सीयाले उनाले ऊपर षिरवास्ये हिजलोका है
		५						है ।।
~	भुरा स० से०							भो राहड भुरा मुसलमान है आठवे हिस्सेके ४३०७
								टीलाडेके ठहराकर यहा वसाये ।।
९	लारवीरागोडर्ष	५	१	०	०	०	८७	देवतकी जमी जो हूडी वूपली मेहा राजश्री केसरीसिं
	वूपजी	५		३।			३४९	हजी कुवा जैसलमेरके पत्थरो का पक्का वगामऊराया
	१८२९ मा							फेर दूसरा कूा म्होरा चूडावनूजा किया

४	डोहोरीढालोरी सं० ९५			१				मंगलीयाककाडन्दे गामवेसालेसे आकरकुवाकीया अवगामहोगापरवानासुन्यीअमीरुद्दीनके नामकालिरवाया

(त) परगनेदेवा

१	कोट देवो रवा०	१० उत्तर	२	५।४	०	१।१	८७ २२८	देवारवडीनकानामहे जमीदारकोई नही खडीनवासदासरहतेहे खडीनमें पक्केकुवे पाडाखीपलीवालों

के व्हीतमेंकई जारी हैं पु० १८ पानीबहुत थाकम परा मीठाहै बाडीकेमाली प्याजवगैरेसाल करतेहै सं० ४३ में ५ कूवे औरहीतयारकीये ॥

गुसाई रामगिरजीनेमढ औरभी अभेसिंहजीनेगढीवनायथानारकरवा ॥ सं० २८ में रामगिरजीकेपोते गुलाबगिरजीने पक्कामठ बनाया कू० भीमरायसिंहजीकी छतरी हरमहीने बदी चौथ को पुजा होवे है ॥ थानवी दामोदरदासकी हाकमीमें नयाकोट सं० १९१९ पक्के पत्थरों का ४ बुर्ज बदरवाजा व चौतरफ़ हरसालां ऊपर महेलात तयारहुआ सं० ४२ में थानवी लालचंद खडीनमुदेलेकाबंधावंधवाया ॥

२	धामट ५०	१ ५	१	०	०	३।४		०	वि० जं० पनीवाल धामटथा तिरगोट केहोनों जांमोंके पटे है ॥
३	बोड्डा भो०	३ ७	१	१।१	०	१।	६३ २७२	०	भो० भड कमल
४	सांवो स०	५ ७० ई	१	०	पाहे थका था	।१	२३ १११	०	भो० सांखलाहे हरभंजीकाभोपाहे श्रीदरबारकीसवारीसेहरभांजीकोगामालेआगाडीवहेफेरअपसकुन- भी जाने लागदीलाग माफ़ है ॥
५	सिधराव रवा०	७ से०	१	२।	०	२	१४ ६३	०	कुवासिधराव पलीवाल जमीयेका पुस ४० रवारा देकुवाबूसिधोडाहेवस्ती पहोडोमुसल्मानोंकीहै ॥

६	नेहडाई	६०	२	२।	द पार	८०।	७४३	१ वि	जमीदार पलीवालजातीय न्हेड मामदसापाप्य
	से०	३०वा					१५९	० म	अबपली वालनहीरहा
७	मघा	६	२	१।	०	२१५	६८	१ वि	पलीवाल मघा
	से०	वा०५					२९८	१ म	
८	अर्जुन	८	१	०	पार	११	१७	०	ज० तुवर उर्फ देवत
	से०	से०					७६		
९	सुरतान	१०	१	०	डाव र पार	११	४८	०	ए० पडीनजूकलवतला पांचो गावोकशीर मे है गाहे२ गेहू होताहै ॥
	से०	वा					२९७		
०	धनु	०	०	०	०	०	०	०	देवत - पाडोस्यनुं गामचो मे रहताहै ॥
	से०								
१०	डिघा	८	१	०	पार	११	२१	०	ज० देवत
	से०	७०व					९२		
११	खीचलसर	५	२	२।	०	२१५	३६	१ वि	ख० पलीवाल
	से०	प वा					१३१		
१२	पारेवरलील	९	१	१।	०	२।	१८	०	भी० जैचंद
	भो	५०					६२		
१३	से० फतु	९	१	१।	०	११	८४	०	से०
	से०	प०					३७५		
१४	खीया	८	२	१।	०	११३	२०	० वि	ज पलीवाल - परेठा० जोगराजजीपापउदै सिघोलके हैं ॥
	प०	स०वा					९३	१ म	
१५	कालोडीवाल दाप० ईसर बगीचा स्वा०	५ ने	२	१।	०	११५	३८ १९१	१ वि १ म	ज पलीवाल चौरासीपेडोमेअबलपे ॥

०	आसदे	२	२	०	०	२।२	०	० जं	जः पलीवाल
		मो०						० वि	
०	मूलदे	४	२	।।	०	।।२	०	०	से:
		मो० २							
०	चीमल	४	२	०	०	।।३	०	०	से:
		दी० ५							
०	जावरा०	१	२	।।	०	२।२	०	०	से:
		७०							
०	रत्नो	५	२	।।	पाग कोषे	२।२	०	०	जः पलीवाल: षडीन डूगोराणाती ठाकरोंके परेहै ॥
	खा०	बा							
०	जगीया	५	२	०	०	।१	०	०	जः पलीवाल: परे बाहूगपनजी केहै ॥
	प०	प०बा							
०	माधव	१	२	पूरो ऊंचे	०	२।१	०	०	जः पलीवाल
	खा०	दू							
०	जिसू	४	२	०	०	१	०	०	से०
	से०	प०बा							
१६	गोगादे	२।।	१	०	०	१।	३०	०	भो० गोगादे वया किआसीरवी है ॥
	भो०	प०ब					१७४		
१०	सांईआले	२	१	।।	०	१।	७०	० वि	पुरोहितांको सासन
	खां	प०ने	१				२६		
१०	सुथारउफीयां वड०	१	१	।।	०	।।	२७	०	चांवड सुथारांकी जातहै
	खा०	प०					१२४		

१९	चोधरी	३	२	५।	०	२।।	१३	०	ज पलीवालथे अबकारकरलोगरहतेहैं
	से०	९०					५८		
२०	लाखाखड़ेर	१	१	०	०	११	३१	०	रवानाकदोशथे अबनलेदेवीसरपासरहतेहैं
	से०	३०६					१३०		
२१	मड़ाउ	४	१	२।	०	०	८५	०	कूवादोयपलीवासपीवलवजागोयेकावनायापुस ३२ पानीषाराहै मवेशीपीतेहै।नसेन्होरगुसाई कीवस्तीहुई ॥
	से०	३०६					३१२		
४	सफीयतरो	१४	०	०					नायागांम्होरमीरूकीजोरतसफीयतधरमाउस
	तलो	७		।।					वावनायाथा परपानीखाराकेवायलवस्तीनहुई -
०	नगा								ज पलीवाल
४	सेडकी								ज सेड०। गासमधो में रहताहै
४	पनोधा	१४	१	१					पलीवालापनुधकाबूवाप्नोधासेसीवपनोधोपर्ती
		३०६							सीठापरहैकम-जोगरीथोकाथानकमाकोठाहै
४	हलधोर दाया तिलोर खा०								ये तीनोगामोकीजमीनवरेतरा ठा०मौजूदहै ज पलीवाल

(घ) परगने मोहनगढ

१	कोटमुंहनगढ़	१८	१	१२	०	२	३०४	१ वि०	स०१९५० मे नदी आनेबाद कस्वाअवादकीया
	खा०	७	१	१०			१३२२	१ म०	कच्चीईटोवमिट्टीकाधकुर्जवटरवास्ताबसालां

वनायाथासोबोरवराहुवाहै - सदरमुकामहाकिमम्हेता हसराज - कोटसेउत्तरपालीयानेकई कोसोकाउजाड़ थासोवाहलानूस्त्री वगैरे कुवावगाय होनेसे निगहा फेरस०५४ के काहतमे पाली मेकरीब १२०कच्चा कुवाबनानेसेमुल्ककीमवेशी वचाई गवउमेरपक्की होगई कि पानीमे बहुतसे

गांव बसै गे सायरका हिसाब आः मोवनराय पासरक्खाव १ चोकी गांव व्हाला में रषाई यरोंओ ठी दूसरे गावे फिरते हैं तथा उनालु साष पैदा होने की वड़ी गुंजाइश है सो हो ही गी

x	तल्लारोडूगा	८	१	।१			०	०	बरसालू चांवरा लाडनें वगैरे का है कूवा पुर्स १६
		७							तक मीठा पानी कम से वस्ती न हो सकी
।	मंगलसारातला	१५	१	०			०	०	पानी खारा है
	सं० ४४	७		।१					
x	जामडांरावला	०	१	०			०	०	कूवा अधूरा है तयार हुए वस्ती होगी
		७		।१					
।	हमीररैटोभे	२	१	०	०	१	०	०	पहोड़ोंकी वस्ती है
		[illegible]							
२	खारड़ाया	३	१।	०	।८	५	१५	०	मगलीया सांवरा जोलाठी ठा० का वलावा
	खा०	पू०	१।				६३		रा रहे रहते हैं ॥
३	आंचता दोय	५	१	।१	।८		७४	१ म	भो जैचंद दूसरे वासको देवगकहते हैं
	वास भो०	३५ पू					२९५		
४	वालाना	५	१	३।	०	४	११६		भो० राहडंज्या जवणनराजको खाडनल में जमीन दी थी वह गाम खालसे कीया भो भाटी सगतसिंह खेतसिंहोत को वसी हुआ ॥
	जा०	५					४४९		
५	कैरु	८	१	१।	०	१३	४७		भो चौहानराजासी गाम वसायो
	भो	पू० ६					१७२		
६	ताडांगा	२० गो० ६ पू०	१	१।१	१	३	८५ ३६७		भो० कोलरा
७	वहाला	१६	१	०	०	०	३७	०	मंगलीया काकाह दे सिंधसे आरहे कूवा पक्का
	सं० १० खा०	४०		१।४		।१	१४८		सरकारी दयासो नं० ४४ में दूजा कराया व तीन

कुंवे कच्चे मंगलीयां कीये पानी खारा परमेषेसी की अच्छा है उत्तर १॥ कोस म्होरची गारो मुंफरीद कुवा सं० ४४ में कीया पुर्स २४ मीठा पानी रेखव में आया है ॥

८	मेरागारातलो स०२५ जा०	५ ५	१	१। १।	०		०	०	भो मेरागकव्यास०१९मेश्रीऊनसिंहजीसहाको वरवस्याफेरस० मेनवाकुवाकरमार्ज्यावसापा-
०	खारा मे०	७ ५	१		०	१।	०	०	रठोड नाथवतगैनजीकास० गामसर्हीदियान रावत गामवासारोमे है

(ट) परगने नाचरो

१	फोदनाचणो जा	३२ ३०६	१	४ २	० -	२११	३६७ १५३२	१वि १रे०	ज० कोईनही है फुटकरलोगकोरवालसगो १६मे नाचरणावनाचरो डहोरीवकुवाकानामहै

कु०रूजरीजेतसिंहजीकोजागीरदियाथासोछोडा-वारस०१८८८मेराजश्रीकेसरीसिंहकोवरवसा-जबकसबाआबादकियाफेरस०१९१२मेकोटवम्हलातवमकानात्टाकादोमीठे पानीके वकुवाचौतीरा वगैरेबनाये तथासीवमेकुवानलाया गावहुए सोनीचेलिखेहैस०४४मेकोटसे पश्चिमकोस१२५११कुवापक्का वैगतलसरमे राजसे वकईकुवेकच्चलोगोनेबनाएचाजबाज जगहदानीयाहुई ग्रौरया सेहुवमालिखगयेहै जैसीकोशिश रही तो बहुतसेगामवहआरो- धरआबादववीपारकी पीठ होवे गीकोवसेपश्चिम ९।कोसनाचरोडोहरीमे ७कूवेबुरे हुवेहै कामदार व्यास भोजराज व चाकरकचेठमल = कूवेपरमालीनेवाडीकरीथी० राव श्रीपदमसिंहजी की कुमी आरा सपील पासहै ॥

१	राकडा स०११	१ नै	१	० १।	०	०	२५ ११८	०	महोरायपन्नोको इलाकेगैरसेतुलाकेवसाए
१	मालासर स०१८	१४ ७८	१	०	८	१९ १४	१२ ५३	०	जूनाकूवातयारकरजूनेजीरहनेहै ॥
१	फरसूवासा	१२ वा	१	० १।	०		०	०	

।	ऊनडावाला सं०३२	ए०	१	० / २	•	०	०	०	तणोटेकेऊनडमहोवोनेकुवावबस्तीकरी
×	नाचणी	९। / प०	११	१	०	०		•	कोटवालपाचाणीयानेजूनाकूवात्यारकीया कभी २ रहते हैं॥
।	कबीरवाला सं०४१	ऐ	१	० / १२	•	०	०	•	कोटवालबीजलराकूवाबढानीकरी॥
।	सावूरीवय सं०२२	१७ / प०बा	२	० / ११	०	११ / १२		०	सावूरीवयडहोरीमेम्होरपीरोजमोजेनवैकोटवालेनेकूवावगामकिया॥
।	जगमालरा सं०४३	१३ / प	२	० / ११	०	११		०	कालरजगमालनेनाडअह्कैकीयाथाफेरकुवाबढानीकरी॥
।	हरेयार	८ / प०बा	१	१ / २	०	११	६ / २६	०	एककूवाजूनाथादोयदूजा तुपरगामपानीकमहै॥
×	सोढावाला	१३ / ३	१		०			०	टावरीआलेकेसोढांलिखायासोअधूराहै बस्तीनहीं
।	बिसनोई सं०४०	२ / प	१	१२	०	०	पाहेलसे	०	नवाघरआयबस्याएककुवाकियाजमानाअच्छाहुआगामअच्छाहोगा०रोहडावालाकेहदमेंकच्चाकुवाबनायाखेतीकरतेहै॥
२	घंटीआली जा०	८ / द०नै	१	३	०	१	१४	० / ६५	भाटी दोलसिंहखापसगतासिंहोतगांवसतेआएसेआकरबस्तीकरीपानीखारा है परम्वेशीकोअच्छा
३	सनेआया ऐ०	३ / द	१	१ / १२	०	२।१	१०७ / ५१८	०	भो०भणाकमया भाटीखांपसगतसिंहोतोको वसीदिया
४	दिधु ऐ०	६ / द०अ	१	३। / ०।	०	३	६५ / २६८	०	यहगामकेलणजीकेहकमसेपाडूनेरोदआयाथाकईवर्षखालसेरहाफेरपाडूवोंको फेरराजाश्रीअभेदसिंहजीकोसं०२३मेंजागीरदिया॥

५	गजासर	११	१	०	०	।१	६६	०	गामरोटेकीभायपभो०भगाकमन्नकटणेसेस्न
	स०१९०८ रे०			९।			२८१		गामभटीराजसीजालमसिंहोतकोवसादियाग्रव सा
६	रोटा	११	१	१	०	१	५९	०	भो भणकमलहै ग ।श्रीवरदनसिंह पदमसिंहो
	रे०						२५४		तकोवसाहुआ॥
७	आसकनी	५	१	१	०	।१२	९९	०	किलणाजीकेहुकमसेपाहुणासकरनने वसायाथाजो धपुरकीफोजरहीजवबीरानथाफरराहुवसेफेरखा लसेफेरपाहुसेफेरस०२७मेभाटीनहारजीजेठमलाग कानसादिया
	रे०	५					४५७		
८	मदडीया	२	१	१	०	।३	४०	०	सूनागामभाटाकोदीयाथाउन्होनेकीमतलकर
	रे०	५					१६३		छोडोफेरसूनागामरा०स्त्रतांसिहोतकोवसादिया
९	उवाय	३	१	२	०	।३	६७	०	रा० अमरसिंहोतोकेवसाहै॥
	रे०	३०		१			२६८		
१०	खारीयो	८	१	१	०	।१	१२	०	खारेपानीसेखारीया रा०भगवानसिंहोनकेथाभो
	रे०	वा					५७		छोडाथामोडसिंहअजोतसिंहोतकोस०४३मेसीव काजदिया

(ध) परगने नोख

१	नोख खा०				पार है	।७	२२१ ९८९	१म	कदीमभो०भणकमलथा जसोड डेलेकेबडे बेटेबापरीपटीमेपानीपीनेकीसोगनकरडेला

सरसेआयआधीयहुआ कोट विक्रमपुरखालसेकिया ओरभोमियोहलेटालीयाजवसेखार हे है ताडेमेकूवे ८४मध्येकईजारीहेपानीनजदीक ववहुतओरमीठाहेमालीवाडियोमेतमाकूप्याजमिरचाद गेरेकरतेहे १कूवाव थोडीसीजमीनराषसीयेरीवारटमेघजोनुदीयोडीहै॥ तथादेव कुनजीजोजोगी राजथामडीनामीहे स०२५सेहाकमकेरहनेकासदरमुकामकीयाअवमुनासवहैलिहाजागाम वजू ओरयहांमोहर्ररहैहाकमपुन्दलपतसिंहपूनमचदओरमातहतथाणा वसायरकोचे कीयागामविक्रमपुर वजूनोषडाहै॥ रणजीत पुर

१	ढालेरी	२	१	०	३॥	११	८	०	जैतुंगरावजीकेढालेतथासोढालावाहासं०१८६६
	सं०१९०६	ने	१				३८		मेंढालोंकीवस्तीहुईसं०७७मेंसूनाहुआमोदसाया-
४	जारांरीढांसी	३॥	१	०	०	१२		०	डूंगवीकानेरसेचा४०आवसे ५ कहतपडनेसे
	सं०३८	वा							पीछेगये जमाने आयां आसी
२	वीठरागाम	२	१	०	०	२।३	२१	०	ज अगाकमल
	सां०	ह०ने					२१		वीठवसायाथा मोकाता भेर है
३	मांडली	३	१	०	३॥	२।३	३५	०	माडली तवाई कलरोंकी पर्वेवसनोई वसे
	सं०१४ खा०	ने०ग	१				८९		
४	मदासर	७	१	०	०	२	१४	०	केसरजीकेहुकमसेपाहुमदेवसायाथासोसूनाथ
	सं०३३ से:	५०		२।			६१		सोविसनोई लक्ष्मणाकूवावगासवीया ॥
५	चनु	सं	१	१।	०	१४	५८	०	ओ गामजैतुंगोंकासूनोथा कईपलटाहुआवसीवमें
	से:	से					११३		मभी लिखदियाथापरखाल्सेहीरहा फकीरवगैरे
									सिपाइगे है है ॥
६	सिकरां	९	१	३।	०	१५	२८	०	पडेन्हारोंकीजमीनमें लिकरासिकरणी भडन्योभ
	सं०१६ से०	५०नै					११७		डन्योकूवाथालिकरणोपरकलसरवेतकोरप भडनेस
									हाचीरारोलमेंवसावसना इलाकेगैरकाजार बिस
									नोई वस्ते यहतोनूरेकेवुर्जमेवस्तेहीहैं ॥
७	भडलो	से०	१	१।	०	१४		०	
	सं०१८ से:								
८	नूरेरावुर्ज	७	१	०	०	२।१२	१८९	०	पडे हारकीजमीनखालसेमेंकलसनूरे सं०१८६४
	से०	नै	१				५२४		मेगामवसाया ॥
९	वधावडा	९	१	०	०	२।१	८६	१ वि	ज पलीवालाई महाराचल मीमवीकानेरप
	सा०	ह०नै	१				३२५		मे जवचारणा सोवधाईमेदिया सोवधावडा
१०	गाडरा	६	१	०	०	५१८	१३९	१ वि:	नामर्द झेरवीयोथा विक्रमपुरराव डूंगरसिंहने
	से०	ञ	१	१			५०२		गाडराचारणको दिया जब गाडरा कहा ॥

११	वेलेरोगाम	५	१	०	०	१		०	रावउदेसिहनेचारणवेलेकोजमीनदीउस
	स०३६ ऐ०	आ०							नेगामवसायकेवडीसिर्डेरहेयाहमारपीछावसा
१२	मनचीतीया	४	१	०	०	४१४	२७	०	जेतुगमनचीतोयेकावसायागामस्वनाहुआ
	सं०३५ सा०	ऐ०	१				११८		यासोवसाया
१३	लूमाणेउर्फे	४	१	०	०	१	२१	०	रावरूगरसिहजीनेलूभेचारणकोजमीन दी
	लूंभेरोगाम सा०	अ०८	२				६९		उसनेगामवसाया
१४	सांऊरोगाम	१	१	०	१८	२११	१३१	१वि	रावसुदरदासजीमहाराचारणसाऊकोसूनेगाम
	ऐ०	८					५४५	१कि	कातलीयादीयासोवसाया०करनोजीकाथानकी या
१५	वावडीदलपत	६	१	०	२१३	२१७	५९	१वि	पलीवालोकागामरपगवावडोसेवावडीहीराव
	री जा०	आ	१						सूरसिहजीकाकु०दलपतरह्या जवसेदलपत
									कीवावडी
१६	सेवडा	२	१	१०	०	३१७	१७५	०	येगामपलीवालसेवेनेवसायासोवीरानहुआ वा
	खा०	आ	१				७३४	१म	दजातवसफेरराजपूतफिरजेतुगसीरवीनेनावतहुए
१७	दादूरागाम	१	१	०	०	१२	२५	०	गैलोतदादुवसायायासं०१९००मेसूनाहुवासो
	सं०३३ ऐ०	प०न					१२१		वसाया
१८	वडीसिर्डे	६	१	७	५	१०१९	१७६	१वि	भीलसेडेके७वेटोकापुराणसातोहीसिर्डोकहीजोयो गामजसोड भाटेलियथाफेररावरूगरसिहकेक डेसरदासलियाअवसेनरसिहहैं॥
	जा०	पू०न					६०८	१म	
१९	नवागाम	६	१	०	०	१	६४	१वि	जसोड भाटेचारण सावडे को खेतदियाउननवा
	सा०	ऐ०					२२४		गामश्रीमूलराजजीकेहुकमसेवसायाफेरश्रीग
									जसिहजीसीवसोफेरेमेजमीनवरवशाई॥
०	नरोगाम	७	१	०	०	१२	०	०	वडीसिर्डेकेठा०ईसरदासमिकसगमरेको जमीन
	ऐ०	८							दीसोखेतीकेलालचवडीसिर्डेमेरहताहै॥

२०	गुडो	८	१	०	०	२११	१७	०	भीलोंसेमूलवालीयाथाफेरावदुरजनसालजीके
	जा०	ऐ०					७२		कु०मानीदासलियासोवरसंगनवलसिंहप्रताप
									सिंहोतकेतावेहै॥
२१	जोगीदासरीसिंडु	८॥	१	१	०	२१२	१२५	१म	भीलोंकीसिंडेसूनीथीसं०१८३०मेंवरसंगजोगी
	ऐ०	ऐ०		२			४७१		दासजैसिंहोतवसाई॥
२२	नथराजरीसिंडे		१	०	०		७०	१म	सिंडेजालमसिंहकीसोवमेंनथराजवस्तीकरीपर
	ऐ०	ऐ०		१			२७७		कनोजगामउनकेसमूलहीहैराजसेपरवानानहीं॥
२३	जालमसिंहरी	८	१	८।१९	।८	२०।२४	१४५	१म	
	सिंडे ऐ०	पू०अ					६४८		
२४	मोडियो	१३	१	०	७	९१२	३७	१म	
	ऐ०	पू०					१७०		
२५	नोखडोदेवास	१२॥ २ १	१	१	३०	५।११	२४१	१वि	मो०केलणाहृचारणोंनेवैरमेंज़मीनदीनोंखकेता
	भो०	अ०पू					५२५		लावपरकेलणःकेपोतेनेगाःकियाचारणकलेजारहे
२६	गिरराजसर	१२	१	२।१	।२२	३।१५	४०५	१वि	तराकरावकेकुं०जैतुंगकेवेटेगिरराजवसायाफेरख
	जा०	६०पू					१८२५	१म	वसुंदरदासकाकुं०अचलदासजीआरहेजवसे दा० वुसगहे

इनवरषोंमेंसीवमेंवहुतहानियांहुईओरसाहूकारघर६०गडीयालेजारहेजिस्सेकस्वेकीरौनककमहोगई

।	राघोदेरे	४	१	०	०	९।	०	०	गाःजेठमलजीकाचाकरचैनरात० । ।५१
	ऐ०	६०ने							रहा॥
।	सगतसिंहरारी	२॥	१	०			०	०	सं०४५मेंमीठेपानीकाकूवाहुआहैउमेदहैकि
	सं०५ ऐ०	३१०		९।					गामपक्काहोजावेगा॥
।	देवडारी	३	१	०			०	०	गावपक्काहोजावेगा॥
	ऐ०	वा०उ							रजपूतदेवडांकादोयाढानीहैं॥

१	सोलकीयारी	४	१	०	०			०	रजपूतसोलका-
	ऐ०	१०ने							
१	ढाला	३॥	१					०	जेतुगहै
	ऐ०	ए							
१	विसनोयारी	२	१					०	ई० मा वाड केविसनोईआवसे।
	स०२३ ऐ०	ऐ०							
१	ईदारी	३	१	०	०		०	०	ईदारजपूत
१	सेभूरोवुजे-	४	१	०	०	।१		०	जेतुगसेभूनेवुजेवनायवस्तीकरी॥
		३८८							
२७	ग्राधी	१३	१	।१।	०	३१५	१२२	१म	सोमके गुरुम ग्राधकावसायाकेलएजीनेसो
	जा	ई०		।२।			५७०		मको दियाथा ज्हवरहोनेसे सोमके वशमेन

हा रावसूरसिहके कु० भाग दासलीयाजवसेवरसग है॥

१	कुशलसिहरी	३	१	०	०	१	०	०	जोगायतके नाडे परवस्ती करी सोगामजो
	स०३६ ऐ०	७		।१।					गायतरोकहेहै॥
२८	मीठडीयो-	८	१				२७		समेजाखुसलमानरहेथेमीठेपानीसेमिठडी
	स ३२ रवा०	३ ५		।३।			१३२		यासोनाथाविसनोयावजुवालोकूवावगाम
									किया
२९	नगराजसर	५					२६	०	जेतुगनगराजवसायथा वेटीललीकेपती
	सं०३१ ऐ०	क ग					११४		कोपीवणेपीयाललीसतीहुईथानमौजूदहै

पूजाकरेजिसकोपीवणानहीमारसके गामसूनाहुआथासोविसनोईशिवजीनसाया कूवाउ

४०पानीरवारानिकलनेसेनहीहुआ

३०	वज़ु सं०२१ ऐ०						५७ २१५	१म	पाहु बांगड़ सांगड़ की बेन वज़ु चौहांन को परनाय यहां गांम वज़ुव बेटे कूपे कूंपासरवर तैरत्तासर वसाया था सो सुनाहुआ सं० १८६७ मेंराव शिवजीसिंहको दीया जब गड़ी बनाई थी सो सं०४ में पाड़ के गाम खालसे कीया सं० १५ में आधो गांम ठा० जेठमल्लजी को दियो फेर दोगाम विस नोयां जाटां वसाया है
३१	वज़ुदूजी सं०२१ जा०सं०१५								
३२	बागड़सर ऐ०						६३ ४५३		पाहु सांगड़ बांगड़ वसाया या सो सूना हुआ बाद सं०१८६७ में राव नारसिंहके भाई मूलसिंह ब साया सो वूराथा फेर वसासीन वहुतसी खालसे कीहै
३३	पुवारां वालो सं०३४ खा०						४३ १७६		मांणकासरकी सीवमें ई० वीकानेरके पुवारकां ने म्होवते नत्लोव गांम कीया मोकातो भरे हैं॥
३४	पूरनवालो सं०३३ ऐ०						८ ४०		मांणकासरकी सीवमें विसनोई पूरणहुडु मांन दृष्टांत से कूवा व वस्ती कीया सो हुडु मांनगढ़ भी कहे हैं॥
३५	मांणकासर सं०२१ ऐ०						३० १५२		केलणजी के अहद में मांणाक पत्नीवाल वसाया सो सूना था श्री दरबारसे कूवा कराया जब विस नोई वगैरः आवसा॥
३६	मोढायत सं०३० ऐ०						१६ ८७		नांडे मोढायतमें विसनोई नीबे वेरियां परवस्ती करी सं०४० में पक्का कूवा किया॥
३७	देदैरोतल्लो सं०३५ ऐ०								गांम वज़ू मिठड़ीये की सीवमें जाट देदै वैरासर नाम कूवा व गांम किया॥

३८	फूलासर							१०		तांडै फूलासरमे विसनोई मूले खीचड रा कच्चा
	स०२७ ऐ०							५२		कूवा व तलाई वस्ती किया स०४४ मे दो कूवा
										पक्का होनेसे पक्का गाम हुआ॥
३९	गोडु							१०५		राव हरनाथने सोलंखीयाने मकोल गोडु सेव
	स०२२ ऐ०							५०९		साया था सो सना श्री दरबारसे कूवा कराया विस
										नोई आबसा॥
४०	गैनेरोतला									गोडु के जाट गैनेस०२७मे कूवा व वस्ती करी
	स०३२ ऐ०									
४१	रणजीतपुरा	१८	१	०	०	१६	१५६			जमानेसांवकमेनागडा कूवो पक्का सायथा फकीर
	स०१९०६ ऐ०	७					७१७			के आपसे वीरान हुआ फकीरने कहा था (नाग

डा वलकडी गडी दो पागडा) इस बोल पर श्री ग०साहिबाने श्री रणजीतसिंहजी साहिबा के नागसे स०१९०६मे कूवा बनाय गाम वसाया फेर दूजा कूवा वढानियो हुई से०४१मे

१	रामसर		१	०						विसनोई गजे रामसर कूवा कराय वस्ती करीत
	ऐ०			२						थाविसनोई लछमन वाघाणी कूवा किया है
×	रैणु						११			कूवा रैणु स०८९मे मरोटीयाको वसा दिया पा
	ऐ०									नी खारेके सबब वस्ती न हुई खेत बोवे हैं
४२	नायावल्ला	२५	२	०	०	१२				इलाके बीकानेरके नाईया कूवा व गाम कीया
	स०३९ ऐ०			१३						फेर और ही लोक आवसा॥
४३	सान्तु	२७	२	०	०	१७	२५			तांडै सान्तुमे भी मुसल्मानो गाम वसायो
	स०११ ऐ०	वा		१०			८८			मेगलीयेमें घेवगेर रहवास कीये॥
४४	फतूवालो	२२	१	०	०	१२	१८			लागाव फतूका जूना गाम सुना था सो कलादी
	स०२१ ऐ०	से		१			७२			मगन वसाया॥

४५	मेघेनाला	ऐः	२	०					मंगलोंसें मघेहानुवालेने कूवा कीयापानी मगरा
	सं०३३ ऐं०			१२					
४६	होलेवाला	२५	१	०		१२	८		रेतकोम्धन्नका नाममोलाहै लाहुम्हांमद
	सं०१८ ऐ०	वा		१२			३४		कूवा व गाम कीया॥
४७	खाराणु	२२	१		०	१२	१५		खारीपानीसें नाम हुआ कोटवालेमीरन कूवा
	सं०३३ गे०	पन्ना		१२			५७		कीयो फेरविसनोयां कूवा कीया॥
४८	मालासरउर्फे चंदसरवाला	२०	१						कलरचंदेसर कूवा व वस्ती कीया॥
	सं०८० ऐ०	वा							
४९	नोरंगवाला	४९	१	०		१२	१५		कोटवाला नोरंग कूवा व गाम किया॥
	सं०३५ ऐ०	वाउ		१३			५७		
।	पुरोहितांवाला	११	१	२।		२	विक्रम	०	राव दुर्जनशालजी पुरोहितोंको जमीन दीउन्हों
	सं०२९ ठां०	३					पुरमें		कूवा व गाम किया पर अब था कई घरवाकरोंका
									जारहा रेवत पुरोहितोंका॥
५०	विकासर	१२	१	२।			नोपमें	०	गामसूना सोलंकी विके का कूवा व थोडीसीव
	सं०३० जा०	३							राव साहब दीनकी दीसो गाम कहा॥
५१	कोटविक्रम						२६१		सुना है कि राजा विक्रमाजीतने १ दालदका पूत
	पुर जा०						९६३		लाखरीदा सोईंटें विक्रमपुर नामी कोट सं० २ में ब

नापरखासो मौजूद है और कहते हैं कि पुतलासिर हला वैजदही कोटपालर्टे० चुनानै अव्वल पुवार थे पीछे ऊमरसुंमरा फेर हाकी नौर बादसूना रहा तो नगु रावके कुं० जेतुंग ने लीया फेर सोम भाटी से केलणजी लीया था पाछे गयाकेलण रहा सं० १५१९ में पूगल के राव दुर्जनशालजी आये जब से बरसंग है पर पालटां हुवाहो १ दुर्जनशाल २ कुंगरसी ३ उदैसिंह ४ स्रूरसंग ५ हरिदास ६ जैतसी ७ सुंदरदास ८ लाडखां ९ हरनाथसिंहजी श्री दरबारका खेरखाह सं० १९०४ में

फोत हुवा जब सुदरदास का छोटा बेटा अचलदास का बेटा कुंभा राव हुआ सं० १८०६ में श्री अखैसिंह
जी साहब वफात दे कोट खालसे कीया सं १८१८ में सरूपसिंह लाडखानोतू को दीया था इसको
उतारकर कुंभा का भाई बांकीदास बैठा सो फोत हुवा जब पोतायाने गुमानसिंह का बेटा नाहर
सिंह गादी बैठा ६ महीने बाद इनको मारकर सेरसिंह सरूपसिंहोत राव हुवा सं० १८३५
में श्री मूलराजजी साहब इणने स्वर्ग भेज नाहरसिंह के बेटे जूझारसिंह को राव कीया सो
सं० ७७ मे मराजब कु० अनाड सिंह राव होता ही इसका दूली पेश आने से कोट खालसे हु
आ अनाड सिंह तो गडियाले मे मजे चेचक से फोत हुए छोटा भाई शिवजीसिंह सं० ८८ मे
कोट पर धावा डाला पर कुछ न हुआ श्री दरबार ने वडा पणे से सं० ८७ मे गा० वजू रहवास
[illegible] १९०० की साल कोट मे आवसे जेसलमेर से फौज गई कोट कायम कर इनको
[illegible] ४ में वजू से निकाले सो ई०
[illegible] ६ मे बारू ठा० जेटमलजी ने पिता भोजराज के वैर मे शिवजीसि
[illegible] सं० २५ मे शिवजी सिंह के बेटे खेतसिंह को कोट मरा तोप व संथा सामान और
८ गाम थलकोर के देकर राव कीया बाकी परगना खालसे रखकर मौजे नोख मे कचहरी

१२

जुगराफिया मुल्क माड़ मे कोट विक्रमपुर का हाल

सुना है कि राजा वीर विक्रमाजीत ने एक पूतला दालद्र का खरीदा सो यहा वीरान जंगल मे
[illegible] २ मे विक्रमपुर नामी कोट बनाकर दरवाजे के आगे रखवा सो हनोज मौजूद है =
[illegible]
[illegible] कथे पीछे ऊमर संमरा फेर इडीठोर के बाद सूनारहा जब भाटी तणु राव के पुत्र जैतुग ने कब
[illegible] = सं० १५१८
[illegible]

जो श्री दरबार के बड़े खैरखाह थे सं० १९०४ में फोत हुआ जब सुन्दरदास जी के छोटे बेटे अचलदास का बेटा कुंभा गाम गिरराजसर से आकर राव हुवा उसको सं० १९०६ में श्री रणजीतसिंहजी साहबां ने स्वर्ग भेज कर कोट खालसे किया था सो सं० १९१९ में लाडखान के बेटे सरूपसिंह को दिया इसको मारकर कुंभा का भाई बांकीदास राव हुआ इसके मरने बाद इसका बेटा गुमानसिंह का चें नाहरसिंह गादी बैठा ६ महीने बाद इसको मार कर सरूपसिंह का बेटा शेरसिंह राव हुआ फेर सं० १९३८ में श्री मूलराजजी साहबां इसको वफात देकर नाहरसिंह के बेटे जुंझारसिंह को राव किया सं० १९७७ में फोत हुआ जब बडा बेटा अनाडसिंह राव होता ही बेअदबी पेश आया जब इनको निकलकर कोट खालसे किया और हाकम रहने लगा अनाड़सिंह तो गाम गडियाले मे मजे चेचक से फोत होगया और छोटे भाई शिवजी सिंह ने सं० १९८८ में कोट पर धावा डाला मगर कुछ न हुआ फेर सं० ८७ में शिवजीसिंह को गाम बजु में बैठाया बाद सं० १९०० में धावा मारकर कोट में काबज हुआ था जेसलमेर से फौज जाकर इनको निकाला और फेर ही इनकी बदनीयती का गुमान हुआ जब सं० १९०४ में बजु से भी निकाल दिया सो इलाके बीकानेर में जा रहा था गाम बारू के ठा० जेठमलजी ने इनको मारकर पिता भोजराजजी का बैर लिया इनके बेटे खेतसिंह को सं० १९२५ में बुलाकर कोट मय ८ गाम थलकोर के देकर राव किया सो अब है और हाकिम को वहां से उठाकर कोट नोख में कचहरी रखाई और खेतसिंह से लिखत करवा लिया है कि कोट व गामों की मोकूफी वहाली और पट्टे के गामों में दीवानी फौजदारी का अखतियार श्री दरबार का रहेगा और रु० २६१) हरसाल रेखका भरदे ॥

५२	कोलासर	८	१	२१	०	१६	१२	०	रावनणजी के कु० जैतुंग के बेटे कोलह बसाया ॥
	ज्ञा०	६०		११			६०		
५३	पाबूसर	६	१	२१	०	५	१६	०	राठोड पाबूजी के नाम से कूवा व गांव किया था सो सूना हुआ राव संदरदासने सासन दीया जब
	सं०७ से०	३					७२		

ए गाम भाटों को दिया फेर रु० दे के पीछा लिया पर सूना था सो राठोड जीवणा बसाया ॥

५४	टावरीशाल	१२	१	१।२	०	८	७८	१म	टावरी जात है चेलैं ने वनु सती के वरदान से
	ऐ०	३०वा						३४८	कूवा चेला सरवनाया राव हरनाथ की धारमे
फेर कूपे कूपा सरवनाया गैलातो कूवा किया सो पानी खारे से वस्ती न हुई ॥									
X	खारा								मूना सूना था त्यार कीया
	स०४०.			१।					
५५	गोगलीशाल	७	१	१।	०	१७	६६	१म	गोगलियो वसाया था गोपा केलण कोट से
	जा०	३०		१।			२७२		निरुन्न पहो क.ऐ इलाके माम ढढुउग्रास
गए जब गोगली गाम वीठणोक जा रहा शोर यहा सोग राव की वस्ती हुई सो है ॥									
५६	चारणवाला	१२	१	१।	०	१८	११४	१म	गोपा केलण चारणों को दीया था सो गलग ना
	ऐ०	३		१।			४७१		व राय दुर्जन शाल ने भणकमला व सोलखे
									यो को वसाया सो है दोनो हो कूवा कराया
५७	पना	६	१	१।	०	२१४	५८	०	सोलखी विके को गोगलियो मारयो बिके के बे
	ऐ०	३०वा					२२२		ट लूंडे व पने पूगल से दुर्जन शाल को लाकर के
लणा गोपा व गोगलीया कोट पासे निकलाय पने के नाम से गाम वसाया									
५८	भारमलसर	ऐ	१	१।	०	१८	४८	०	भणकमल भारमल कूवा व गाम करके सोग
	ऐ०						२९६		रावो को आधा दिया दोनो ही है॥
५९	वोडाणो	४।।	१	१	०	२१४	७६	१म	शक्ति देवल के श्राप से वोडाणा गाम माड वाढो
	ऐ०	ग्र					३४७		ड यहा आय रावजी का प्रधान हो गाम वसाया
६०	खैरुवाला	२८	१	०	०		०	०	श्री जी साहिवा से दौरे मे शेख खैरू राजे करा
	स ५९ ए	नाउ							य रावजी के तालुके मे कूवा किया पुर्से ९७ मीठा
									पानी होने से गाम वसा॥

१	भैसोटूंक	५	१	०	०	१९		०	नायवांकच्चाकूवावबस्तीकिया॥
	सं० २३	चा०		१४					
४	ढेढणीवाला							०	ढेढणीकेडोहरमेंपडेःहारेकूवाकेयोपानी
	सं० ३८								खारेसेवस्तीनहुई॥
१	साह्वों	७	१	०	०	०		०	भीयाकच्चाकूवावबस्तीकिया॥
	सं० २०	उ		१४					
१	सुरीदसर	१३	१	०	०	०		०	कोइरियांसं०२०मेंकूवाकरनेचाह्याथापरन्त
	सं० ३८	ई०पू		१९					हुआफेरविसनोईआवसा॥
१	जैनेआलोक	३	१		४	०		०	विसनोईआयवसे कूवेकापानीखाराहै
	व्वरसं० ३६	पू		१९					ज्यादःवस्तीकीउम्मेदनहीं॥
१	कोटवाषरवा	४७	२	०	[illegible]	[illegible]	३६४	२वि	भो० खडे२ याश्रीकेलगाजीसाथपल्ली
	सेसे	३					१५४७	१शी	वाल आवसेसोहैसं०१८०७मेंदिकमपुरपुर
								१म	खालसेहुवाजबसेइहांजुदाहाकमरहतेहैं

पुरानीगडीगांवमेंहै अबतालाबमेंघडासरपरकोटबनेगा भैरोंजीकाथानकदीमीहै सामीदलुनाथजीकामठसं०१९३०मेंउमदाबनाऔरकसवाभीतरक्कीपरहै किअब नवीगुवाडियोकारहने वजोलेकेलीयेज़मीन वमुसकल्लमिलतीहै हाकममोकाती सालमचन्दराखेचाहमीरमल वनाथवमेताखामसिंह परोहितनोलाराम औरमालहन घ्याणवसाथरकोचोकीगांवसीहडा वखीरवेमेंहै मनोखववापकीतहसील काममीउन्हों के तअल्लुकहै सं०४१सेगावोंमें हवालदाररकवागयाकिखेतीमेंतरक्कीवरखवालकेसि वायमहसूलवगैरःकोभीनिगरानीरखें॥

१	गोमटीथाम	१॥						०	गोमटीयेम्हाररहतेहैं॥
	होगरोस	द							

१	स्वालतांरी	३			॥			०	
		पू							
२	भोजारीवाप	॥	२		॥	३।३	१६	१म	केलणजासाथपल्लीवालभोजनेछोटेमाईकी
	भो०	२					६४		वहूके तान परयह्नागानेंपसाया
३	खीरवा	४	१	१	१४२	४।४	२६	०	भो केलण
	हे०	२	१				१०६		
४	सेखासर	५	१	०	१३०	७।१	७१७	१दे	हे०
	हे०	दूनै	१				८६८		
५	जैमल	६	१	२	०	।१८	४६	०	हे०
	हे०	नै	१				२२७		
६	अखाधना	६	१		१२२	५।४	८३	०	भो केलण
		प	१				३४८		
७	जगमालरी		१			१		०	पडे हारकीजमीनमे विसनोया
	खा०		१						गामवसाय.जगमालकीतलाई पर
८	मोडकीया	११	१			।११	११	०	हे०
	हे०	प	१				६५		
९	राणेरी	८	१		१२२	४।८	१०६	०	कानासरकेविसनोयाराणेकीतलाईपरगाम
	हे०	य	१				१४२		वसाया
१०	स्वाखुरी		१			।१२	२२	०	पडेहारखाखूकीतलाईपरबस्तीपडेहारांकी
	हे०		१				१०७		है॥
११	बारू	२६	१	६	१२५	२।४	२९६	०	१२कुवावाकेकारणबारूकहाअसलवासदेवुध
		।	१				२३५७		भाटीयाफेरपडेहारआरहेवादेवेकरेसेभाटी-

भागचन्द हुवारकादासोत आकर कबजा कीया जबसे कई दफा वीरान भी हुई मगर फेर ही भाटी रहे और अब सीव में तलाया पर ढांनीया जो नीचे लिखी है हुई॥

१	खेतुसर	३	१			११		०	भाटी हीरजी
	ऐ०	ई.पू							
१	धोली	३	१			१		०	गाम जेठमलजी
	सं० ऐ०	पू.अ							
१	दुरजनरी	३	१			११		०	
	सं	पू							
१	देदासरी	३	१			११		०	
	सं	पू.ई							
१	अनजीरी	३॥	१			१		०	भाटी अनजी
	सं	नै.द							
१२	कालासर	८	१	१	५०	३१६	२५२	०	सं० १८८३ में खरीगेके विसनोयाने अव्वल यह
	खा०	प.वा					१२०६		गाम कालासर तलाव पर वसाया और राणावत

जीसांके पढे या बहुत से घर मारवाड से आये॥

१	मवा		१	०		१५		०	बहुतसे गाम पल्लीवालो ज्यों वसाये परन्तु
	सं ऐ०			६					जमींदार नही क्योंके हनोज किसीने जमीन
									मांगली कन्ही लिखाई है
१३	जावरो	६	१			१४	४३	०	भो केलण
	भो०	प.वा	१				१८१		
१४	हरभा	३	१			१२	९७	०	ऐ०
	से०	ऐ					४९		

।	दुरगांणी ऐ०	२१ नै०	१			१२		०	ऐ०
।	जोधाणी ऐ०	ऐ	१			२१४		०	ऐ०
।	खालडा ऐ०	१२ प	१			२१३		०	ऐ०
।	भायडा ऐ०	१२ प	१					०	ऐ०
४	विरोलाई भो०		१	०	०	०	०	०	भो पाड्सेरखासरमेंहै ठाणआधाभेरैहै
४	अखलमालो ऐ०		१	०	०	०	०	०	भो कोटडीयासेखासरमे है
१	सीहड भो०	३५ पूडे	१ १	१	।७०	२१४	८६ ४४५		रावजीकेघोडेकाआंतराकढाजिससेअन्तर कढासोअनरगढवभो०सीहडसेसीहड

सं०७७सेहकुमतवापकादोसिपाईयानेरहनेस०२७मेजुदापरगनाकीयायाफेरसं०३२से वापकेमातहत मुहररव्यासअभयकरणवकईसवारहै॥

१	पंडितारीढा णीयादोयहै								कूवाखोदतेदेवीकोमूर्त्ति निकलीजबथानथा पकरनामदेवीसरदीया किसीसेप्याउ वेन्तेतो पानीमेंकीडेपडे॥
२	टेकरो ज्ञा०	३	२	२।१	३७	६।१	११७ ५३४		भाटी द्वारकादासोत

३	छायण	५	१	२	०	२।४	१५२		पड़िहारकीज़मीनमेंदूसरागांववसायश्रीखे
	ऐ०	प०					६३४		तसीजाकेवैटेसवरहेथे सोदूसरेगांवमेंजा
									रहेद्वारकादासोतयहांहै॥
१	लाठी	१८	१	७	०	।५	१६७		भो०जसोड़-लोहटासे ठा० राजश्रीईसरी
	जा०	पू०					७०१		सिंहजीगांवखरीदाफेरश्रीदरबारमेंहाथी

नज़रकर वसीलिखाय कसबाआबादकीया व कोटवनायाथा परपल्लीवाल साहूकारवगैरः वहुत से लोगवकोट विखरगया सं०१८२३ में ठा० राजश्री छत्रसिंहजीने कच्चे पत्थरानकाकोट वुर्ज७ व दरवाजा व मकानात महलातवनाया हकूमतकेकाम पर श्रीदरवारकाहाकिम रहताथासं०१८०३ से यह काम भीठा० मोसूफकेताल्लुकेहुआथा सं० ३८ से परगनालोहटलगकीया वोलीवारोही लेते फी मनुष्य ।) नदीमेंकूवा पु.२६ पानीवहुतवमीठाहै गांवसे पश्चिमडेढकोस पर छत्तासरअधान हमीरराजसीने सं० ४१में वनाया॥

१	लोहट	२	१	०	०	।१	१७		जसोडलोहटरहैहै
		द					५६		
१	धोलीयो	१	१	०	०	।५	५१		विसनोयाएककूवासं०२७में दूसरासं०४२
	सं०२७	पू		२			२४२		मेंकियागामवसापानीवहुतमीठापुर्से॥
२	रतनरीवसी	२॥	१	१	०	२।१	१५		भाटीमालदेहोतहै सं०७८में नदीआईजब
	भो०	अ					४७		१गुसांईकूवाबनाडेणा सोगुसांईसरहैकई
									वर्षउदेसिंहोतसरूपसिंहकाहीरहाथा॥
३	छत्तासरउर्फ	४	१	०	०	२।४	४		हमीरराजसीने गामडेलासरवभैरवोसेजमी
	करालीयो	द					१५०		न लेकरवसीलिखायाकूवातालावकोटड़ी
	सं०२७ ऐ०								पक्कावनायगामकिया

४	धायसर	७	१	२	०	१४	४६		गोजसोड महाराचलभीमकीधाय कूवाकरा
	ऐ०	द नै					१८१		गजसोड खेतसोगामवसायाकूवेकापानो
खाराहुवापीछे फतेपुरीयाजो सं० ६० न दूजामीठा कूवा कराया आईजी का थान व कूवा पक्को- ठापक्का है॥									
५	भैरवा	८	१		१७	११८	३८		भोजसोड आईजीकाथानफकीरउवायेका
	ऐ०	नै					१२०		कोठापक्का नदीमेंवेरीगोपानीमीठा
६	सागर	८	१		१४	१	५१		भोराठोड सगरगामचाधनकीजमीनमेवसा
	ऐ०	प	१				२५३		यासं०३१मेंआईजीकाथानपक्काकराया
७	चाधन	७	१	१	४	११२	५७		भोजसोड चाधननामवावडीकूवाकावरोंया
	ऐ०	प वा	२	।१			१६३		सथोंडेलैजीकेबेटेऊगेगामवसायागावसेउ-
त्तर १कोस १कूवा नोल्ह बूरियोडा है तथानदीमेवेरीयागाम पास कूवा थान पक्का है॥									
८	जेला	८	१	०	।४	।२	१४		स्याठा गुदावास है
	ऐ०	वा	१				५१		
९	सावल	१०	१	०	२१५	२१२	३०		भोजसोड सावलगाम मालीगडेसेआकरचा
	ऐ०	प		१			१३१		धनकीजमीनमेवसा आईजीकाथान व सं०
									१७मे कूवापक्काकिया॥
१०	माल्लीगडा	७	१	२१९	०	११९	२३		भोजसोड गजैगामडेलासरसेआकरचाधन
	ऐ०	वा ३					७५		कीजमीनमेगामवसाये॥
११	सूजीयो	४	१	१	।३	२१५	४८		भोरापधरोकोदेगवरसेडुलाप गामवसाया
		वा प					१,००		पहलेयहजमीनगगागुरोकेथो॥
१२	रावरकी	४	१	१		११३	१५		रावरीयाकासुनागामत.यवरकीपरवालेपु
	जा०	७ वा					६३		वारयेसो प्रवैरजोताकोदीयाथा सोचोभगये

कईबर्षबादसं० ६५में ग्रासकर्न कोवसादीया कूनाखार वर्ग्गाईजीका थानकोंकड़ परहै॥

२३	सेहा	७	१	३।	२५	२१४	८९	२८७	१८ कूयेरोया गाम भुलने सुनाकीया थासो
	जा०	७							भो० राठोड़रि[illegible] वसाया फर खालसेहो

कर सं० २२ में राजश्रीतेजसिंहकोजागीरहुवा १कुवरगोपलाकालुहारखीठा० प्रतापसिंहजी कोदीयोडाडे १पगवावबूरोडी

२४	चांदसर	६	१	२।	०	१२	४३	१६२	गाम योटावीजमीनहूटीहैधाका आपाकूवा
	जा	३.७							वसीव ठा० चांदसिंहजीकोदीयाजल सं०
									१८६९में[illegible]॥
२५	लुहारखी	८	१	२।	।३०	२३	४८	२१२	भो० भगाकमलकागामलुहरीत पर हैभा
	जा०	३.५							टी सगतसिंहोतरहे थेसोगामबरड़ाणाहै ऐ
									गावरावप्रतापसिंहजीकोवसीदीया
२६	नवातला	४	१	२।	०	।६	१४३	४५४	१वि० १म० पल्लीवालमघा कूवा कराके गाम
	जा०	३.६		३।					उग्रासज्जारहो ठा० केशवदासजीको वसादो

आजबकसबावसाया सं० २६में आईजीका थानवसं० ४२में दोकू० नवा हुवा॥

२७	भाईया	२	१	२।	०	३५	१४३	४८१	जसोडमलकेभाइयोंनेलोहटवभाईवसा
	सां०	३							या भाईहेठकानीमें कु० वनानेसे रकबासं

८० में श्रीस्वांगीयाजीका थान बनायसांसन सीवसुधाकिया फेरसं० ८८ वा १९०५में दोथा न कूवावनाया

२८	अर्जनयार	३	१	२।	०	१२	१५	५६	माईकीमें कल्लरोंको वसाया लागमाफसफ
	प०	वा							रकी सवारीमें १ऊंटनिस्करिये हाजर
									रहे १कूवाकेशवदासनेवनायासो खाराहै

१९ मोडाकोर मो०	३ पा	२	१	१२	२१४	२०		१९९	भोजसोड डेलेके वेटेसखरानेवस्था सेनु खीगडीयकीमे भाईजीकीहुक्म थापीथा
२० डेलासर मो०	४ ने	२	१		३१७	५५		१५६	१मडीमानपुरीजोकी। भोजसोड डेलेजीका वरोसेथाकरकूवावगाम कीयाफेरआईजी काथान, ४
० मथाकोहरस	३॥		दूरो						रावभवानीसिहोतांकोदियाथा स्पेलरहा
१ महेराजकोहर	३		डा						जमीनपोलमें पडोसीयाद्बी॥

नकशाकुलपरगनातकेगाम हालीआबादवीरानजोजुना यानवावगामोंमेंनवाकूवापकाकचापरसाल हुईसो तथबरव शिसकियेसो

नंबरपरगना	नामपरगना	तादाद कुल गाम							नवाहुवासो			पडोसइलाकापरगना				गामपासीवुरखेलरवडीनजोजागीरभूमपटेसासनजिस्कोस १९२ सेवलसेपेहाल पतोदाखलनीजजरूरनहीक्योंकेगानकीकेफियतमेहेहैं
			आबादी		हाली		वीरान		कूवा			पूर्व	दखिन	पश्चिम	उत्तर	
		कुलगाम	अ	अ	जु	न	जु	न	पका	कचा	[illegible]					
१	खासशाहर	१२	६	३			•		७	३	१	जेसलमेर	जे	जे	जे	चूर्डेजोगरजगामसरखेवालेको या चडासे स ७
१	जेसलमेर	७६	५२	२	१	२	१७	१	५	७	७	लाठी देवीकोट	फतेगढ	खाभा सुथाकसमगढ	देवा मुनगढ	राघपुआथानीस्क्रको गानगजीपाभो ९ कुवा स ३२
२	देवीकोट	३६	२७	५		२	१	-	१	४	७	मारवाड	फतेगढ	जेसलमेर	लाठी	भाटीराजसीगावबालानेवालेकोगाम अजासरजा स १०

३	फतेगढ़	४७	३४	१	१	·	११	·	·	१	१०	मारवाड	मारवाडलाख	म्हाजलार जैसलमेर	देवीकोट	राजश्रीउम्मेदसिंहजीको गाम दुधू जा·
४	लाखा प०	२२	१९	२	२	·	२	·	१	·	३	ऐ·मलनो	जोधपुर	म्हाजलार	फतेगढ़	सोढाऊमजीगामभुकावा लेकोगामकीतादियायासोहै
५	म्हाजलार पु·	२४	९	२	६	४	·	·	१०	२	२	लाखा फतेगढ़	ऐ·	अंग्रेजी सेरपुर	सम खाभा	मगायेसं·४२खालसिंह्आहूजी गणेशदासजीको
६	खाभा प०	२४	१६	·	·	२	६	·	१	·	७	जेसलमेर	म्हाजलार	सम	अंग्रेजी सुयाला	मुंदडीकाजमीनमेंसीवदी तलाईदस्तीसं·२३में कीया
७	सम प०	२२	१२	५	५	·	·	·	१३	३	८	खाभाम्हाजलार	ऐ· सिंधु	सहागढ़	खुयाला	राजश्रीछत्रसिंहजीयहांके गाममेणगीरोसीवजासं·१५
८	सहागढ़ प०	६७	४८ २८	·	२५	·	·	·	·	३	·	सम	सिंधु	सिंधु	देवगढ़ खारा	वरीसिंह्जेठमलजीको गाम बजुआधी जा सं· २५
९	देवगढ़ प०	१	१	·	·	·	·	·	·	·	·	खारा	सहागढ़	ऐ·	खारा	खोयाभाटीखोवकर्नको गाम चैनुदीयाथासोछोडगया सोरावतोलमाननीकोदीया
१०	खारा प०	१५	५	६	·	·	१	·	२०	·	·	सुयाल रामगढ़	देवगढ सहागढ़	ऐ·	रामगढ़	भाटीवैरीशालगामनापुवा लेकोगामभु·जा·
११	खुड्याला प०	१०	४	·	६	·	·	·	·	·	२	जेसलमेर	सम	खारा	ऐ०	मेंदीयाथासोनहीरहेजवक विराजजीको सं०४३मेंदी·
१२	रामगढ़ प·	१६	१०	२	·	४	·	·	·	·	६	ऐ· देवा	सुयाल	तनोट	किसनगढ़ तासाहा	कनेतिकर्नसिंह्गामचांदस मेंवालेकोगामकोठाजा० मेंदीयाथासोनहीरहे॥

																गाम
१३	टणोट	३	१	१	-	१				१		रामगढ़	रामगढ़	सिधु	वावलु र	दात्लकलोडेकेभाटोवारो
	प०														किशनग ढ	नदासोतभोनजीकोगाम
																पा चा-जा दीपाछिनरहे
१४	किशनगढ	१	१						१			वराहा	चाणेर	सिधु	वावल	व्यासधनुजीकोगामहीसु
	प												रामगढ		पुर	सरसेमेदीयापडोसीगाम को
१५	वराहे	६	६	३					६			सुनग	देवार	गम	ऐ	शिवलिखाडेसोनारखापन
	प०											ढदेवा	नगढ	गढ		पीढालिकाहसुमनेवरखे
१६	देवा	३१	२०	२			१०		५	२	२	भैसल मेर	जसल	ऐ०	वराहा	गामराजश्रीनेजसिहसहा
	प०											सुनग ढ	मेर	वराहा	सुनग ढ	को गामएदाजा स० २३खा
																लसेलाएला प सं
१७	मुंनगढ	२२	६	२	२	१	०		१३	८	३	लाठी	देवा	देवा	नाचन	वरासिहरेवतसिहजीकोस
	प०													वरावा		२५विकमपुरकोटमधेदेगा
																मकेदेकरराविकिया
१८	नाचना	१८	६	१	०	८			८	१२	१	वाप	सुनग ढ	सुनग ढ	सिध	राजश्रीअनारसिहजीको
	प०											नोप	लाठा	सिधु	नोप	गामलखानजा सर्गमजो गराजजीउदेसिहोतगामकु डाजा स गामनीबली ऐ सं
१९	नोख	९२	३०	३२	४	२६	१		२९		९	बीकाने र	वाप	नाचना	बीका	सोढामदनसिह रावप
	प											मारवा ड़	नाचना	सिधु	नेर	रामगामलुणारजा स २९
																भारीपथीराजजोधासिहन
	वाय															गामसीहडाजा सं ३०
२०	प०															भारीनहारजोजेठमलोत
																कोगामसिधु प

२१	सीहड प·	४	३	·	·	१	·	·	·	१	१	मारवाड	मारवाडलादी	लाठी	वापनाचना	सेठप्रतापचंदहिम्मतराम कोगामसिंधुप· सं २
२२	लाठी	२४	६६	४	·	३	१	·	११	१	३	जोधपुर	देवीकोट	जेसलमेर मुणगढ़	सुनगढ़ सीहड	भाटीजैतसिंहोत दूधल सीवदेवीकोटरीमें सं

सोढारनजातसिंहखुहड़ी

सींव मूलपसारी जा· सं· ३० व्यास पालजी नुं सीव डोंहरी राडधरा चैनजीराना गाम जेसुराणोका नं· भो जासरवकु· १ भो· सं· ३२ हमीरराजश्रीगेनजीयोत· गाम करालिया जा· सं· २७ गयागुरनुं सीव पुन्यार्थ गामजेठमलजीरांनुं सीव सं· ४१ रावलोत मोडजी· गाम खारीया जा· सं· ५२ सोढा खेनसी वगैर: वकुतों को घरखेनका हासल माफ॥

गोसवारा कुल परगने जात देहात वढानो जो सं· १२०५ वैशाख सुदी ३ है

नं· परगने का १ वगैरह / नगरीं ग्राम नाम	तादादकुल			खालसे है					जागीर				भोमीया					पट्टे			सासनदांसन			
	ग्राम	घर	मनुष्य	वसत ग्राम	वसत उजड़	बीरानग्राम	घर	मनुष्य	ग्राम	उजड़	घर	मनुष्य	वसते ग्राम	वसते उजड़	बीरान	घ	म·	ग्राम	घ	म	ग्राम	बीरान	घ	म·
खास १ शहर	१२	३४०४	[illegible]	६	·	·	३४०४	[illegible]	·	·	·	·	·	·	·	·	·	६	·	·	·	·	·	·
१ जेसलमेर	७६	[illegible]	[illegible]	३३	२	१२	[illegible]	[illegible]	३	·	२२६	६६३	२३	२	८	८७७	[illegible]	६	२४४	[illegible]	९	·	[illegible]	[illegible]
२ देवीकोट	३६	[illegible]	[illegible]	६	२	२	४७८	[illegible]	६	·	[illegible]	[illegible]	१७	·	२	[illegible]	[illegible]	२	६	२९	४	३	१६२	[illegible]
३ फतेगढ़	४७	[illegible]	[illegible]	२	१	३	६८२	[illegible]	२	·	१३१	५२३	१८	१	४	६५४	[illegible]	·	·	·	७	·	४३२	[illegible]
४ लखा	२२	[illegible]	[illegible]	८	·	२	२२१	[illegible]	१४	२	[illegible]	[illegible]	·	·	·	·	·	·	·	·	१	·	६६	[illegible]
५ महाजलार	२४	[illegible]	[illegible]	३	५	·	१२८	७५०	२	७	२१६	[illegible]	५	१	·	१६९	[illegible]	·	·	·	·	·	·	·

६ खाभा	२४	५७०	१६३५	८		५	२३४	८११	२	२	२८०	११४८	५	•	१	१६३	[illegible]	१	३१	१५५	•			
७ सम्	२३	६७८	४१५३	१६	५	•	८६९	[illegible]	१		२४	११०	१		•	६३	११९	-						•
८ सहागढ	८८	११५४	[illegible]	७५	२४		११५४	[illegible]																•
९ देवगढ	९	१०६	४२६	१			१०६	४२६																
१० घोखारो	२५	६१६	१७२४	१४		१	६१६	१७२४									•		•	•		•		
११ खुडयाले	१०	३६२	[illegible]	२	६	•	२५३	[illegible]		•	-		१		-	१०९	[illegible]							
१२ रामगढ	१६	५१६	[illegible]	११	४	•	५०२	[illegible]					१		:	७४	२३							•
१३ नरोट	३	३०७	१११९	२	१		३०७	[illegible]																
१४ किसनगढ	१	२११	९००	१			२११	८००				•		•										
१५ ढाराहो	९	२७६	[illegible]	१			८७	[illegible]			-		८			१८८	७९					•		
१६ देवो	३१	७४२	[illegible]	२३		१०	४८८	[illegible]				•	५			४२६	[illegible]	२	२०	६३	१	•	७	२६
१७ मुहनगढ	११	६७८	[illegible]	२	२	•	२५६	[illegible]	३		१११	४२५	३			२०६	[illegible]							
१८ नावरा	१९	८७२	[illegible]						१०	८	८७२	[illegible]												•
१९ नोरव	९२	४४३२	[illegible]	३१	२		[illegible]	[illegible]	२३	२८	[illegible]	[illegible]	१	•	•	१४४	[illegible]			•	७	१	[illegible]	[illegible]
२० वाप	२६	१४८८	[illegible]	६	३		७४४	[illegible]	१	६	२८८	[illegible]	७		४	४०४	[illegible]							
२१ सीहड	४	३५५	[illegible]					•	२		२६६	[illegible]	१	१	-	६६	[illegible]				•			
२२ लाठी	२४	११३५	[illegible]						६	२	[illegible]	[illegible]	२२	१	१	[illegible]	[illegible]	१	२५	[illegible]	१		[illegible]	[illegible]
कुलजोड	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

देशमें

रहने के मकान खास शहर व पल्लीवालों व वाज जागीरदारान भोमीयां के गाम में तो पत्थर के और उत्तर की तर्फ बरसलपुर वगैरः में साहूकारां वगैरः के इंटों व चुने के घरों के भी हैं बाकी सिंधी सिपाहीयां वगैरः गुरबा लोग व रज़ायल कोम के रूपे होय खुसपोस व छप्पर बंधा घास का है सो सं० ४१ से हिदायत की गई है कि छत्त न लीये व खपरेल का बनाया जावे स्यान इसमें कूवें की गहराई फुट ८० से ऊपर ५०० तक की है और ८० से कम को बेरे कहते हैं पानी मीठा फीका खारा याने सब तरों का है व गाम वालोना में सेंडा टेकरी गिरज घर विकमपुर वगैरः कूवों का पानी विरावा जो प्यासे के वासो ज़हर है तथा परगनः नोख नाचना मुहनगढ़ में जहां २ पानी खारा या विरावा है या कूवा नहीं है मीठा पानी की कुमायां टांका बारस के पानी से भर रखते हैं अब दूसरे परगनों में भी कुंडा बनाने की ताकीद व नसीहत की गई है तथा ज़मीन इस देश की रेतली पत्थरीली व खडीनो की चिकनी है और जो जिन्स पैदा होती है बहुत ही उमदा –

तथा न मालूम कोन श्रापे से पल्लीवालों के गाम बिलकुल घटगये व घटते जाते हैं ज्योंही खास शहर के लोग भी निकलते जाते हैं बाकी सब मुल्क में आबादी बधी व बधती जाती है चुनांचे परगनः वाय व नोख नीं खांतर खाः आबादी हुई व होवेही है अब नवा गाम वसने को गामों की सीवा निकल नीबाद जगह मिलेगी और परगनः नाचना व मुहनगढ़ बाराहसम महाजलार में कूवा गाम हो सकेंगे और सहागढ़ घोटड खारा रामगढ़ खुइयाला लाठी लखा में जो लोग रहते हैं उन्ही के भाई गिनायत के सिवाय दूसरे लोग नहीं रहने पाते और खाभा देवा फतेगढ़ जेसलमेर के परगनों में तो बिलफैल बधने की सूरत नहीं दीखती है श्री बडेगा साहब ने फरमाया था कि जब जमाना अच्छा आवे मुल्क बसाने का उपाय करना मगर सं० ४१ से बहुत से उपाय करके चुप होना पडा ज्योंही व्योपार की तर्क्की मौजे वाय बरसलपुर मारुली में तो ठीक हो गई नोख नाचना मुहनगढ़ रामगढ सम महाजलार सहागढ़ गामों में भी होने की गुंजायस जानकर हरचन्द तदबीरे की गई पर कहनसाली याने का मयावी नहीं होने दी सो जमाना अच्छा आने पर ऊपर लिखे मुजबीये गामों में तरक्की होने

को कोशिश करनी होगी तथा गेहूं पैदा होने की मात्र जगह का नक़शा कराके सब तरह से राय लिखो बल्कि उपाय भी कीये पर ज़माना अच्छा व करसे लोग होने से काम न्यावी हुये अर्थात् बिलफेल तो अच्छे होने की उम्मेद व सूरत कोई नहीं वधी॥

अहवाल खांण

दफ़े १३ अकसर पत्थर की खाने बहुत है वह पत्थर ये काम नकाशी की निहायत उमदा व पायदार होता है कि हिन्दुस्तान भर में कम होगा जाली झरोखे वगेर का तारीफ कहा तक लिखी जावे देखने से ही मालूम हो खान फरीदराव अकला कंरुडी का भला रूपा सर वगेर को पाटु पान कहते है रंग जर्द और घडने मे नर्म मगर मजबूत बहुत इमारतो के काम में आता है इन बरषों में पत्थर का काम वधही गया है सिवाय किवाडों के दीवार व छत भी पत्थर के पटी व टुकड़ों का होता है यह तरकीब सं॰ ३॰ से निकाली ६॰ बर्ष पहिले सुरंग का हुनर नहीं था जब बडा पत्थर निकालने में खर्च ज्यादह लगने से ठहरादी थी कि पत्थर का छत गृहस्ती के घर में अशुभ है सो अब खर्च कम लगने वह काम उमदा व मजबूत तुर्त बनने से लकड़े का अशुभ रहा ये संग अहमदाबाद व सिंध वगेर मुल्कों मे जाता है महाराना श्री सजन सिंह वाली उदयपुर ने सजनगढ मे कमरा बनाने को व जोधपुर व नौवाडा मे जैन के मंदिर में लगाने को मगाया अब उम्मेद है कि दूसरे मुल्को मे भी ज्यादह जावेगा क्योंकि रेल नजीक आगई है और महसूल भी सिर्फ ३) रु॰ गाडे मे ४०।५॰ मन दोजी डी बैलो से ले जाते है लगता है खान कुडकडा के संग का खरल प्याले गिलाश रकाबी फूल दान आबखोरे वगेर: बर्तन काच व चीनी से ज़िलोदार होते है और यह खूबी बढकर है कि थोडा सा बोझ डालने पर भी पानी मे तिरता है पर संग कडे के बाइस नकाशी काम नही हो सक्ता तथा चोकी कुरसी देवली व फर्स निहायत खूबसूरत होने से दिशावरो मे ही जाता है खान बिछूपान जो बिदोया रंग स्याह व पीला अबरदार इसका भी संग कडा वह बर्तन कुडकडे जैसे होते है मगर लंबा चोडा १ फ़ुट से ज्यादह यह रंग इसका नही होता

खान हाबूर शहर से यह २६ कोस गाम हाबूर के पास है · पत्थर लाल माइलचस्या · अवर पील फ़ारसी हरूफ़ों की सिकल है इसका भी बर्तन व चौकी व कबर के तावीज़ बनते हैं संग नर्म के कारण ज़िला कम आता है परन्तु फ़र्स खुसनुमा दीखता है · यहां की सौगात भी साहबलोगों वग़ैरः को इस पत्थरों की चीज़े भेजी जाती है बल्कि निहायत पसन्द होने से फ़ैमायस भी इसी की आती है · मगर बनाने वाला कारीगर एक ही है · मौजे भादासर से पत्थर की घन्टी सिंध को जाती है महसूल फ़ी चक्की एक आना है · तथा गाम सोमले आई बनीवा में स्याह पत्थर की घंटी पडोसी गामों में बिकती है · सिवाय इसके शहर व पल्लीवालों के गामों व आइता तेजराण लाठी बाय वर्मसर वग़ैरः में खांनेः हैं मगर अलावा गाम मुनांपा व जाजिया के मात्र जगह के पत्थर काला या रोडा या कच्चा दीवार के काम में आते हैं · तथा परगनः कोटखारा पार एकल पास खांन मसीत की वह परगनः खुइयाला में वह खरी का पत्थर कुवा बांधने व दीवार के काम में ठीक है · तथा मौजे जायन के पत्थर की चक्की उम्दा बन सकेगी -

खांनमेट - यानी मुलतानी · परगनः देवा मौजे मंधाव नहडाई में निकलती है · लवानों वग़ैरः मुल्क सिंधु व पंजाब को ले जाते हैं · महसूल रहादारी फ़ी गोन एक आना है स्याः परगनः खास में वह परगनः फ़तेगढ़ गाम मंफ़ाई में वह सं० ४१ से परगनः जेसलमेर गाम भोज के वह परगना खाभा गाम खुहडी में भी निकले है · बाल धोने व ऊंठ घोड़े के चंदा पर लगाने में आवी है

खांनमिट्टी - सुफेद जो सेडी · परगनः जेसलमेर गाम फ़ाभला व परगनः देवी कोट खास में निकलती है · मकानों की आरास में काम आती है · इसके इतर से सिर की गर्मी कम होती है · व जरगिर मुडी बनाते हैं · सिवाय इसके दूसरी मिट्टी ३।४ रंग की खास शहर व कई गामों में निकलती है सो छोटे पत्थर की जोडाई में बजाय चूनाके काम आती है व कुम्हार वर्तन बनाते हैं · खसूसन मौजे मंफ़ाई की पीली मिट्टी

उमदा मकान को आराइस लीपने है-वह इसको जलाने से सुर्ख पानी होकर मकान आ
गा की दीवार रंगते है तथा गाहे २ सिंध हैदराबाद भी जाती है और लाल रेती जो मु
रू चिकनी को गोबर में मिलाकर मकान लीपते है-इसी रेती के कंकर मुरडीया जो
छत पर ८।१० इंच खूब जमाने से पानी नही झरता तथा मरडीया व कत्तल जला
ने से पिलास्तर जो खारा चूना बनता है-गुगल सणी मिलाकर ऐको आगनाया
वरीया करते है वह मीठा चूना निकलने से पहिले पत्थरो की जुडाई भी इसमे करते थे

खान गेरू

परगने देवीकोट खास वह गाम सीतोडाई पास भगी नडा में भी थोडा सा होता है
अतीत लोग भगवा कपडा रंगते है सो रंग नही मिटने से दूर २ मुल्को मे ले जाते हैं व इस
से जेवर तिलाई को आपनी देते है तथा पानी मे घोल कर बाग के दरख्तो व मकानो
की दीवारो पर डालने से दीमक नही होती॥

खान मीठा चूना - को दादडा व खगर व खडी भी कहते है शहर से उत्तर १७
कोस मौजे देवा वह अगाडी मुहनगढ नाचना विकमपुर वरसलपुर तक बहुत जगह
निकलता है सो जलाकर पीसते है सो इमारतो के काम में तो ऐसा है कि कैसा ही भारी
पत्थर हो थोडे ही चूना से मजबूत हो जाता है दीवार गिरती को लगाने से थम्भै होगी
अव फर्स भी बनाते है पहले गुमान था कि पानी से कच्चा पडेगा परन्तु ख्याल किया कि
टाका व कुंडा में राख पोत कर चूने का लेपा देने से ४०।५० वर्ष तक पानी साफ भरा
रहता है तो फर्स ही क्यों बिगडेगा ये चूना गाम देवा मे अव्वल मठ मे लगाया फेर
शहर मे शुरू हुवा महसूल फी गुन १ आना खान पर लेते है और शहर मे निर्ख १)
रुपये का ८) आठ मन ३ तीन सेर रहता है- स्या खघर कूवा बांधने व देहात मे दीवा
रखनाने को बजाय पत्थर व ईटा के लगाते हैं कि कोट विकमपुर नाचना व कई गामों
में बुर्ज वगैरः मौजूद है॥

खानमुतफर्रक

शहरसे उत्तर ६ कोस मौजे हमीरा के कू॰ में कोयले निकलते हैं गन्धिक जैसी वुह वो॰ र॰ से अबास मफ़ा मगर साहबान ने पसन्द नहीं फ़रमाया कि पत्थर के नहीं लकड़ी के हैं॰ और दक्षिण को ७ कोस डुगेरन्चिया के डूगर वह पश्चिम को ७ कोस नेजुवों के डूगर में लोहा बतावो है॰ श्री ठाकुर साहब ने न्यारीया से निकलाई भी थी परन्तु नाद ल्मी से नफ़ा का ऐवज टोटा रहा॰ और गाम पारेवर सं॰ ४२।४३ में ओलड़ाम साहब कई दिन रह कर पत्थर ले गये कि अच्छा मिला मालूम नहीं अच्छापन क्या था॰ तथा देवत सुरताना वह गाम सांवला का कू॰ में भी धातु है कहा गुमान कवी है॰ परन्तु वगैर इल्मके मालूम नहीं हो सक्ता॰ गाम ज्ञायन के कूवा व गाम सता के डूगर में थोड़ासा कोयला व गाम लुहारखी के कू॰ मे महमाई निकला था॰ और कोट सहा गढ़ के परली तर्फ़ थलीयां में पानी जमने से सं॰ ३२ मे खारा की पुड़पुडी हुई थी जिससे अनुमान होता है कि मुदित तक पानी भरा रहे तो अजब नहीं कि खारा भी हो जावे क्योंकि खारा की तिथां जोई खेरपुर मे है वहां से नजीक ही हैं॰ तथा मौजे वाय में आगे साजी पैदा होती थी वह गाम दामोदर के ष॰ क ज्ञासोनरा में खार होता है सं॰ १३ में साजी बनवाई भी थी सो हासल कम हुवा वह कानोध वगैरः के रन में भी खार बहुत होता है परन्तु बनाने वाला नहीं॥

और खान से पत्थर वगैरः के निकालने पर हकूक राज का इस मनसा से माफ़ है कि शहर इलाके में जो कोई मकान व ठिकाना बनाते है तो उसके रहने की पायदा का फ़ायदा समझा और जोई गैर को ले जाते हैं उनसे भी खान का हकूक नहीं लीया कि किसी सूरत से ज्यादह ले जावे बिलफेल महसूल रहादारी लेते हैं सो ऊपर लिखा उतनाही महन्ताना कालगता है॰ और जबकि यह काम खातरख्वा: चले गा खानों का हकूक ठेका सावियाना या माल निकालने के अन्दाज़ पर मुनासब वक्त॰

तजबीज की जावेगी जब पत्थर वगैर निकलने को तादाद व आमदनी मालूम हो सकेगी॥

नदी व वहाला

दफे १४ भूगोल हस्तामलक मे शास्त्रानुसार लिखे है कि इस इलाके में नदी नाला क स खाने को भी नहीं है सो बहुत लम्बी या १२ मास चलती तो कोई नहीं मगर छोटी २ नदी नय व वहाले ज्याद वारस होने से जहा तक चलती है जिसमे काकनय व लाठी की नदी तो नामी व खोगडी सूकड़ी टीक २ वाकी वाकीया वगैर वहाले है

१ काकनय गाम भोपा से सोडा कोठडी गोरारा सतापास वहती हुई १४ कोस गाम कुलधरा से दो साख होकर एक तो पश्चिम को डाई से ५ तक खाभा बुज मे खतम होती है जहां जरात ३ साख हो सकी है मगर बडी कबाइत है कि कम वारस से तो खाभा भरता नही और ज्यादे से ज्याद भरे है उस साल जरात हो सके नही क्योंकि पानी निकले का कोई रस्ता नही ९ कोस के घेरे मे दरियाव सा दीखता है और खाभा मुहार भी भर जाता है तो बीच मे कुगरी निभजो बेटसी शोभाती है फेर पानी सूकने से जरात करते हैं आगे पल्लीवाल वसते थे जब बुज मे १५ व मुहार मे ६ हजार मन बीज वहता था दूसरी साख गाम कुलधरा से गाम काहाले लुद्रवा होकर रन मे गिरती है वहा पानी खारा होकर जरात तो क्या घास भी नही होता यह साख बध करने को बधा बंधाते थे सो टूटता था अब नदी का पत्थर काटना शुरू किया है सो पूरा कटने बाद पानी निकम्मा नही जावेगा सम्वत १३ मे श्री ठाकरा साहब ने शहर से दक्षिण ३ कोस पर भारी बध बधवा कर तीसरी साख इस मनूसासे निकलाई थी कि घरसीसर गुलाबसागर किशनघाट रामघाट कराह कल्याण घाट भर कर कानोध के रन में होता हुआ मुहनगढ पानी पहुचेगा तो २० कोस में नदी के दोनो तर्फ वेरे निकलने से जरात होहीगी और बुज से भी ज्याद पानी न भरने से हरसाल पैदावार होगी क्योंकि रन में जो साख जाती है बंध हो जावेगी ऐसे कई फायदे जानकर ६० या ६५ हजार रु० लगाये थे वह घरसीसर बहुत खुदाया गुलाबसागर नया बनाया किशन

घारका बंधायाव रामघाट कल्यानघाट को हज़ारों रुपये लगाये थे सो सम्वत १९ में ज्याद: बारस से काकनय आदि सब बंधे टूट गये अब कोई साहब यूरूपियन इंजनियर देखकर बाजबजाने तो रुपये लगाये जावै - प्राय साहबोंने तो काकनय देखकर कहा था कि हो सकेगा - स्यारनका पानी मुहनगढ़ जाने के लिये सम्वत ३५ में पैमायस वाले टारन साहबने मौकादेखकर कहा था कि हो सकेगा मगर रुपये ज्यादह बताये थे - ब्रह्मा के पुत्र काक ऋषि यहां तपस्या करी थी जिससे काकनय - दहरे सेही चौवड ऋषि के रहने से चुंधी कहीजी जहां पानी के कई कुंड वह सजीवन वहाला है - सो मूल राज सागर के मगरे से ३ कोस चलकर मौजे लुद्रवा के पास काकनय में मिलता है ॥

२ लाठीकीनदी - गाम डुंगटी वह माडवाई - मारवाड से शुरू होकर लाठीके पास १ सारवहोती है सो गाम सजयासे दक्षिण व आईता से उत्तर वहती हुई ३४ कोस परगाम मुहनगढ़ के पूर्व रन में पानी दूर २ फैलने से जरात हो सक्ती है लेकिन यह नदी अव्वल सम्वत १८४९ फेर ५२ में आई थीजब जाटवगैर: लोगभी आने से कसबा मुहनगढ़ वसा बादसम्बत ८२ में आई थीवह सं० १९३८ मेंभी जीभी आई थी नदी नहीं आने का सबब यह है कि इ- पोकरन में कई बंधे व रेतके टीवे होगये हैं ॥

३ गोगडी - परगन: देवीकोट गाम छोडियां से शुरू होकर गाम्म सांवत मूलाना वडेगाम की सीम में होकर गाम सगरा से आगाडी चौधन के खडीन रद्धाय में जहां अवगें हूं होते हैं भरके गाम मालीगड़ा से उत्तर लाठीकी नदी में २० कोस परमिलती है

४ मूकडी - गाम खुहडे के मगरों का पानी परगन: देवीकोट के गाम महासर नेडा नदुवाडा धायसर जावंध के पास होकर भैरवां से आगाडी १ कोस परगोगडी में मिलते हैं और पिछाड़ी के गामों में १४ कोस तक कुछ नहीं होता है व उम्मेद भी नहीं क्योंकि सारव निकालने बांध बंधाने वगैर: गामों के भोमियां से तो बने नहीं और राज जबरन करते नहीं ॥

५ बाकिया - बहाला परगन: जेसलमेर गाम आकंल से पूर्व ३ कोस मगरे का पानी

गाम जेएतव दोनों वास्नपों के बीच जहां अब बंध बंधने से गेहूं होते हैं भरके गाम रिंदुजेसु रानाआईता तक १५ कोस पर नाटो की नदी मे गिरता है॥

६ मुतफर्क - वहाला १ तो मौजे मलारड़ै मारवाड से पानी गाम खीरवा वायवाम नवीतिया मे जो धारे अब बंधी है भरकर गाम सेवड़ा नोखसे आगाड़ी गाम एडाना की थलीयां मे १५ कोस पर बिखर जाता है २ दीपुसे आकली तक गाम सादा से बारू की थलीया मे पानी फैलता है नाम जिस २ गाम के पास बहे हैं उसको नय ३अ लखागा रथनाके डूगरसे मोछाकासाउसोढानहोकर गेहूं ककू तक पानी वीहरा मेंभरा रहता है ४अ रामगढ गाम जो गास खडीन सरन का खडीन बिजडासर भरने बाद खेरड से १० कोस पर लाहासल जाता था सो सरन का बंधा अब बंधाया सो यकीन है कि सरन वपरासर बिजडासर खेरड में गेहूं होने वगैरः निकलने से बड़े ही फायदे होगे॥

७ नदी - गाम महारेरी से शुरू होकर गाम ओला पास बहती हुई इ मारवाड मे मौजे काश्मीर तक पानी जाता है॥

देखने लायक मकान जो गढ व शहर व इलाके जात में हैं

९५ दफेः - खास शहर व देहात पल्लीवालो मे पुतो पत्थर मजबूत व नकासी का काम बारीक वजः दार मकान अच्छे ही है मगर किला व राजभवन सभानवास वा मोती महल मे आरास निहायत उमदा व गजविलास सर्वोत्तम विलास नीचे नया महल वगैर व कोठा अनपूरणा व मन्दिर श्री लक्ष्मीनाथजी टीकमजी रनछोडजी महादेवजी सूर्य्यजी के अलाव-जैनके ७ ही मन्दिर तो देखने से ही ताल्लुक रखते हैं तारीफ कहां तक लिखी जावे १ हजार खम्भ व हर पत्थर में बहुत ही बारीक काम चुनाचे-जाव जितना मन्दिर तिल जितनी पुतली इसो मे हैं बनाने का हाल जुदा लिखा है-

जैनके मंदिरोंका हाल

चुनांचेः कैफ़ियत यह है कि गढ़ जेसलमेर में ८ मंदिर वड़े ही नामी हैं जहां दीदः आदमी देखकर कहते हैं कि इनके सानी कहीं नहीं देखे वहुत वारीक नकासी काम पत्थरोंमें और वहुत ही उमदा खम्भ जो करीब ५००० होंगे ज्युं ही पुराना शास्त्र भी वहुत जो नवा ही के जमानेमें दूसरे मुल्कों से आये हुये वडे ही जतन से रक्खे हैं और तादाद नहीं लिखी मगर लखों ही रुपये लगे हैं - नित्य पूजा व पुजारी भोजकों की तनख्वाह वगैरह खर्च वास्तेः संग पर लगमान है और निमन्तक मनोर्थ व यात्री वगैरः की भेट व केसर आरती का घृत वगैरा का द्रव्य भंडार याने मजबूत तलभवरे में डालते हैं सो न मालूम कितना होगा

नकशा

नम्बर	नाममूल नायक प्रतिमाका	संवत	नाम वनाने वालेका	नाम श्री पूज्यया जिसने प्रतिष्ठा कराई	कैफ़ियत
१	श्रीपार्स्वनाथजी	१३८८ १४५९	जे संग व चोले साह सेठीयान रसिंह व भोजे साहरराजने	जनराज सूरकी आज्ञासे सागर चन्द आचारीये	लुद्रवा से पुरानी मूर्त्ति जो १८ सौ वर्ष की है लाये, गढ़ में साका हुवा जब जमीन में रखी थी फेर जीर्णोधार में बड़ा मन्दिर बनाया पाट पर पधराई
२	श्रीसंभवनाथजी	१४८७	कुंकड चोथड पोसहा	जनभद्रसूर	
३	श्रीसीतलनाथजी	१५०८	डागा लुणसा मुणसा		
४	श्रीचन्द्रप्रभुजी	१५१५	भनसाली भाडसाह महेसदास	जनचन्द्रसूर आचार्ये	खुरसी वनते द्रव्य पूरा हो चुका तो अहमदाबाद गया वहां दीपणी नहुई फेर जंगल में

					दफीनापायाजबसंगमे थालीमिश्री देकरबाकीद्रव्य लाकरलगाया॥
५	श्रीअष्टापदजी वसकुनाथजी	१५३६	पांचेसाहा		दोनोमन्दिरसामलबनेहै
६	श्रीसंतनाथ जी	ऐ०	सगवीखेतेवी देसाहसखवाले वा	जनचन्द्रसूर	
७	श्रीरिखभदेव जी	१५३७	चोपडासचोभ वसंगवीगए धर		
८	श्रीमहावीर जी	१५८१	वरडीयासमे साहावबेटामू लराज		

वीचकीगली सम्वत् १५८१ मे लुबाई ब्राह्मणों की इज्जत मिटाने को ऊपर श्री लक्ष्मीनाथजी पधराये तथा सेठ गुमानचन्दवालों ने मन्दिर के लीये जमीन व पत्थर तैयार कराया पर नही बन सका फेर अमरसागर मे दोय दाग व दोय मन्दिर रिखभदेवजी का सवाईरामजीने सं० मे छोटा और हिम्मतराम नेबडा सम्वत् १९२८ मे बनाया श्रीपूज जनमुक्ति सूरने प्रतिष्ठा अन्जन सलाका कराई या नलहटी याने शहर में १ मन्दिर श्रीपार्श्वनाथजी का तपेगच्छवालोंने संवत् १८७५ मे कराया और पंडित कूंगरसीजो नामी जती इसजमाने में गुजरा है जोधपुर वमेसर वगैर बहुत जगह कुंड पानी का व थानक उपासरे वगैर ठीकाना बनाया छुनाचे अमरसागर मे वगीचा व मन्दिर रिखभदेवजी का संग की तर्फ से सम्वत् १९०४ में बनाया यह प्रतिमा कोटविक्रमपुर से आई है जो १००० बर्ष के पहिले की है-

गाम लुद्रवा में श्री चिन्तामनजी का मन्दिर मनशाली थड़ुसहाने सम्वत १६७६ में बनाया व गाम वर्मसर में बाग चार लाखोलादके द्रव्य से १ मन्दिर सम्बत १९५४ में हुआ और गाम देवीकोट में १ देरासर व गाम वरसलपुर में १ मन्दिर जैन का है॥ ❋

और अटा ईशरलालजी की हवेली व चोवटा में भशगला व देवी घंटीआलका थान। तथा शहर में श्री वल्लभकुल व श्री सीताराम जी का मन्दिर व कूवा रामसर मये कोठ बंगला व श्रीजी के सहन में वादलविलास जो अब नई वजः का बनाया है व ठाकुर राज श्री केशरीसिंहजी का डेरा में छत्त बिलन्द पत्थर के लदाव का और सेठ गुमानचंद के ५ बेटे की हवेली व नोहरे ऐसेही दीवान सालमसिंहजी व नथमलजी की हवेली भी बहुत उमदः है तथा जैन का मन्दिर उपासरा भी अच्छे हैं शहर से बाहिर त: व ऊपर मन्दिर महल वगैरः मकानात व बगीचे बहुत हैं १ घरसीसर इसमें कालगसर से मिलाने लम्बा चौड़ा बहुत हुवा २ गुलाबसागर ३ महतासर ४ गजरूपसागर जिसकी नहर पहाड़ के अंदर हो अंदर खोद लाये हैं ५ देदानसर जो सम्वत २८ से दी॰ नथमलजीने सबतरह अच्छा बनाया है ६ ईशरलाल का तालाब ७ गंगासागर ८ जोसीका तथा प॰ डूगरी पर ब्राह्मणों के समसान की छत्री भी दूर से बहार दीखे है बाग़ १ अमरसागर तक के बंध व ऊपर महलात मन्दिर बंगले व सेठ सवाईरामजी हिम्मतरामजी बाग में जैन के मन्दिर व महलात निहायत खूब व पं॰ डूगरसी का मन्दिर बगीचा २ मूलराज राजसागर में महल बंगले व त॰ मेंकू झालरा ३ बडाबाग़ का बंध की कैफ़ियत तो लूणकरनजी के हाल में लिखी और डूंगरी पर समसान में छत्री बंगले अच्छे हैं गाम लुद्रवा में मंदिर श्री चिन्तामनजी व देवी का और ब्रह्मकुण्ड एम कुंड तुथी में ठिकाना व पानी का कुंड है परगनः खाभा में खडीन बुज मुहार व मुहार में बुज महादेव व डूगरी पर देवी का मन्दिर परगनः रामगढ़ में त॰ नराइसर विजडासर देरासर व पेरासर व परगनः देवा में लखीसर परगनः देवीकोट में त॰ विजडासर॰

❋ सेठ हिम्मतरामजी जैन का मंदिर जो नया अमरसिंह के पुत्रने बनाया है देखने लायक है मोलवी सुराद भेलो

तथा कोट किशनगढ व कूवा बहावलसर व कोट घोटड़ू व घड़सियाकी गढी जो २ बुर्ज २० फुट ऊंचा है • कोट देवा व नाचना व कूवा चोतीणा व कोट विकमपुर में जीस्वा व दरवाजा और कोट बरसलपुर व लाठी के भी अच्छे है • गाम लाद्रीया मे श्री स्वामियों का थान अलावा इसके पल्लीवालों के गामों में मकान मंदिर कूवा तलाव वगेरह देखने से हेरत होती है कि क्योंकर छोड गये सो हाल अलग लिखा है• तथा काकनय चलती है जब गाम कुलधरा पास अच्छी केफियत दीखती है •

बारस व खेती का हाल

दफे १६ वर्षा हुई शीरा जमीन मे तेह व नीवान में पानी आने की है सम्वत ३८ से शहर मे जनाव रजीडन्ट साहब बहादुर ने पेमाना रखाया सो बारस होने बाद माप कर हर हफ्ते नकशा रजीडंटी में भेजते हैं परन्तु पैमाना से थोडी ही दूर बर्षा कमी वेश का हाल मालूम नहीं होता इसलिये हकूमत से रपोट आने का नमूना यूं रक्खा है नम्बरी नाम गाम मिती वर्षा जमीन में रेज व नीचीन में पानी कितना घास चरा केशा हाल खेती • हाल तनदुरुस्ती वगेरह • गाम मे मनुष्य जनमे मरे या आये गये की तादाद मये सबब • तथा शहर में बारस हुई का इंच व सेन्ट सम्वत ३९ जो सन् १८८२ में ६।९८ सम्वत ४० में ८।६५ सम्बत ४१ मे ६।२९ सम्वत ४२ में ८।२९ सम्वत ४३ में २।७० सम्वत ४४ में ४।५४ कुल छः बर्ष में इं• ३७ सन्ट १५ औसत फी साल इंच ६ सेन्ट ९९ हुई मगर इन बर्षों मे के हतही रहा वरना अच्छा जमाना में में इंच ९।१० व ज्याद• १२।१५ तक भी होती है समझोने बेशाख से पीछे जब हो अच्छी बारस हो तो खेत बोया जाता है फेर आश्वन तक ४।५ दफे बरसने से जमाना अच्छा और कम होतो कम •

साख सियाल् बाजरी मूंग मोठ गुवार आगे से कई दर्जे ज्यादे होते हैं तो भी बाजरी मालानी व सिंध से और मूंग नाले वगेरे से आते ही है स्याह ज्वार व चावल कम होते हैं

ज्योंइसका खर्च भीकम होगयाहै · तथा काकडी मतीरे काचरी तोडसी वगैरह ज्यादेव उमदा होतेहैं · तिल सिर्फ ऊंठों के चारे व देश में खर्चे वास्ते बाजरी के साथ थोडासा बोवते थे सो सम्वत् ३८ में विलायत जाने लगा तो खेती भी बढ़गई चुनांचेः सम्वत् ४१ में बहुत ही पैदा हुवा था सो ३ साल में ५) रुपये लख से ऊपर निकाला हुवा · फरक हद तसालीयों से नहीं हुवा · मगर जमाना अच्छा होने से इसकी तरक्की खात खाह होगी · ऐसेही रुई की पैदा हो सके हैं और हिदायत व कोशिश भी हदभर है · लेकिन दो कबाहतेः भारी हैं · १ तो यह है कि १ साल की बोई रुई तीसरी साल फलती है सो ४।५ सालतक रहे जितने बर्षा बराबर नहीं होती · दूसरे मवेशी के बिगाड़ने से लोग बोने में डरते हैं ·

साख ऊनहाल् – जो महीने भादों व कुवार में ख· व बंधे भरजावे तो परगनः १३ याने जेसलमेर देवीकोट फतहगढ़ लखा खाभा महाजलार सम खुरयाला रासगढ़ देवा सुहनगढ़ वाय सीहड़ लाठी में होती हैं सो कनागतों से दीवाली तक याने कातिक शुदी १ से महावदी तक गेंहूं व बराय नाम सरसों धना बगैरह और बाज़ २ खडीन में फागुण वदी १ से चैत्र वदी तक जुवार व मूंग भी बोया जाता है · गेंहूं चना की नपे जो महा वट हो तो १ मन का ५० या ६० बल्कि ८० मन तक होती है · मगर बारस की कमी से हरशाल नहीं होता · मुल्क सिंध व पोकरन बालोत्रा वगैरः से आते हैं · व परगनह वाय से मारवाड़ व बीकानेर को जाता भी है इस काम में हदसे कमाल कोशिश है ज्योंसल हर तरह की होती है · व उम्मेद कावि है कि अगर बारस ख तरख्वाह हरसाल होती रहे तो ई· गेर से आना बंध होकर हज़ारहा मन जावेहीगा क्योंकि अबजागीर भोम सीरन में भी होते हैं · जुवार की नपे बे सुमार होने के सिवाय कुज सीतयर द्रगोरा वगैरः में ये खूबी बढ़कर है कि १ दफ़ा बोवने से १ ही साल में ४ या ५ दफ़ः फलती है बसर्ते कि बारस होती रहे · इसमें १ दफ़ा का हक़ फ़ाव दूसरी दफ़ैः को

द्राही कहते हैं हासल कम तीसरे बोदरी का हासल माफ चौथे बुहीगायों को चग
ते है उत्तम कोमके हालीभी नही लेते - पांचवे कालवीजुवार किसी काम का नहींजन
वरभी खावे तो मरजावे॥

हकूक राज साख उनहाल का हिस्सा ५ या ६ निखचो व जहा हिस्सा ज्यादः
हे तो भी ऊपर की लगान से इतनाही रहता है और साख सीयाल में पल्लीवाल
व जाट विस्नोया से लाटा का तो ऊपर लिखये से १ हिस्सा ज्यादः और जहा
खारोया या चांचडीया का कुता होता हे तो भी हिस्सा ऊपर बमूजब हे और रज
पूत या सिंधियो से जहा हलोटा हे फी हल ३/ रुपये से ४) रु॰ तक नगद दे -
और पट्टे के गाम थे सो खालसे होकर जो बहाल हे गामो के नकमे बे हे और
सम्वत ६ में गैंहूंवों का ४ हिस्सा होकर कणवार पल्ला वगेरे लाग छूट हुई -
सिर्फ ७ कणवार बहाल हे १ देवीकोट हजूरी जेठामलरे व गाव ऊंडा सिपाइ
लशकर के मुंड कटाई में थी सो जोगे बीरंवे के हे व गाम पीथोडाई चावक सवा
र जोरावरखां. के भूमकी एवज में हे व गाम मेधा व देवतकी की पाटप्रोवाल
जीरा के व गाम नहडाई खधारी जमादार जादखां वतेजानीया के व गाम
खावलसर हजूरी जीपनजी रामजीदासजी व सुजाणीयां के व गाम रामगढ
हजूरी राधाकिशन के हें और लाग पल्ला जो भोग मन १ पीछे ऽ३ मे ऽ१थी
जीके गंगाजलीये का हे सो अब मात्र गामों के भोग में सो कोठार से करा दिया है
व ऽ॥। जिस हजूरी की चिट्ठी करदें व ऽ। जामडे पल का था और ऽ१ गंगाजली
ये बमूजब दीवान के रसोई का हे इस बरस के सिवाय दीवानी की लागे बाब्त जो
फी मन कच्चा पर आध आना व हलोटा मे फी हल ४ आना व कूता के फी बनी ऽ५
छत का सम्वत ४१ से ५ आना ४ पाई नगदी कीया सो तथा विधा की नात्र लाग -

सायर के महसूल व नोकरों की तनख्वाह व जमीन के बिकाय व इजारा ठेका वगै
रः २ पर हे सो श्री दर्बार में जमा कराई कि नगदी तनख्वाह की जावे · और भोग
का नाज श्री कोठार पहुंचावें जब नाम खिड़ाई का मन १०) का ७) रुपया हे ·
अलावा इसके · भीलां डुंमां वगेरह से खेती का हासल राज में अलीन हे सो खेती
नहीं कर सकते भूखा मरते हे और किसीने किसी के सीर में खेती करी तो उस
सीरवी के नाम से हासल कोठार में आया तोभी ठीक न हुवा सो यूं चाहिये कि ये
लोग खेती कीया करे · जिसका हासल राज में लेना तो अलीन ही रहे परन्तु चौथा
ई कम हासल लेकर राज के भीलां डुंमां वगेरह में मरजी हो जिसको दिलाया
जावें ताकि सबका भला हो ऐसेही साध का हासल कोठार में लेना छोड़ कर
श्रीरामकुण्डे दीया जावे और महन्त जी ठिकाने में मेले के दिन जो साध आया
हे साधू मात्र को रसोई दीया करे व रमते साधू को चोमासे में ठहरावे · तथा आय
स का मठ गुरु द्वारा का भी गुजरान वास्तः मुनासब तजवीज करनी जरूर हे

हाल कहत साली का

बूढे आदमियों से अगले दुकालों की बातें सुनी थी सो लिखने में तो क्या याद आने
से ही कलेजा थरकता हे · जब यह तसल्ली दी जाती थी कि झूठ हे क्योंकि सम्ब
त १९०२ के बाद सम्वत ५।२७।२५।३४ वगेरः में जो भारी कहेत पड़ा था तो भी
वह दुख न हुवा जो सुना था बल्कि सम्बत २५।३४ में मारवाड़ बीकानेर की खा
या डुली थी परन्तु यहां तो अच्छे ही रहे · सम्बत ४२।४३।४४ तक ३ कहत बराबर
हुये तो भी परवाह न करी सम्बत ४४ के बेशाख से बहुत सी मवेशी मरने से बाजे पर
गनह का लोग टूटा भी साहस दिल की हिम्मत नहीं टूटी थी · अब के बारस न होने
से तो कई बातें अगले दुकालों जैसी हो गई कि ३ साल में बाजे लोग तो ऐसे कर्ज में

त्व गये है कि अबतो शिर मुंडाने से ही नही मिले है - और तूस भुस्द कलोस लुग सी वगेरह हुवा था सो कहतसाली मे गुजारा करते थे सोही नहीं हुवा - सादा सना वड़ी वगेरह घास व केर खेतडी के छोडे खाने तक नोबत पहुंची लाचार बहुत से लोग सिंध वगेरह इलाकह गेर मे चले गये और मवेशी जो बची है सो ही बारस जल्दी होने से रहेगी क्योंकि ऐसा घास पानी किसी परगने मे नहीं है कि सब देश का माल बचसके बस खुदा ही हाफज है हां १ परगनह नोखमे ४४ बर्ष से कहत नही हुवा बल्कि नाज व तिल व पसम महंगा बिकने से लोग आसूदे होगये और अबके भी वहां के बासन्दों को साल भर के खर्च लायक घास व नाज होगया है तथा परगनह बाय व नाचना मे भी कहत का सदमा कमही हुवा - बाजे लोगों ने पालों में कच्चे कूवे बनाकर माल बचाया और मौजे बिकमपुर मे कूवा का पानी खारा भी विरावा था व नोखडा में कूवे होने की उम्मेद ही नहीं थी - इसमाल फजल इलाही से मीठा पानी बिकमपुर मे तो ३० फीट खोदने से ११ फीट व नोखडे में ३० फीट मे ५ फीट उछड चढी ऐसे ही गिरराज सरवरसिंह सेंगतासिंहरा की ढानी मे कूवा हुवा और गाम वजु वगेरह मे हो रहा है ।इतिशुभं

दरख्त व घास वचारा बोड

नाम अपार है परन्तु जोजो नाम प्रसिद्ध व काम में आते है सो लिखा खेजडी षड्ऊ गुणी लकड़ी किरसी जेसी पर मन करे जब सुलते से कदर कीमत नही पाई बैशाख में फल सोगरी कचीया सुका कर साग होवै ऊपर सूके सो खोखा करीर लकडी पायदार छत में काम आवे - बैशाख में फूलतो लटा फल कच्चा सो केर पका सो पाको - बेर दो जात की १ कोकन जो कातिक में फले फेर काटे सो थान पाला ऊंटका चारा दूसरी बड़ महा फाल्गुण मे फले - कुमट के कुमटिया साग होवै व गुंद -

अच्छा होवे व लकड़ी जलने में तेज · पर सुले तुरत रोहीड़ा बाज २ गाम में है फुल फूटमा निकम्मा लकड़ी बहुत उमदा · आली नही कटे · कांकोड़ा · पान घाव पर मुफीद है लकड़ी घर में रहे तो कलह होवे · बबूल बाज २ गाम में लकड़ी इमारत में छाल खाल रगने में रांग सराब में काम आवे फल बाबलीया ऊंट का चारा व गूंद होवे है. बावली परगनः सम सहागढ में बहुत व परगनह मुहनगढ़ ब्रावा तनोट किशनगढ़ रामगढ़ में भी गूंद होवे है · नीम पीपल बड़ सरेस संदेसड़ा बाजे गाम में है · गूंदी ४ जात दो तो बागां में राय व बड़ २ सहरी १ वनगूंदी के लसोड़ा सो गाम ओला वगैरह में है · पीलवाण उ· जाल इफरात से हैं लकड़ी पायदार परन्तु है कम · फल पीलू सूका कोकड़ मुफीद होवे है · सिरगूं गूंद होवे · विलायती बाबल लकड़ी निकम्मी · अरना ऊकेरी नया होवे · सोलवाण गांगणी फल गांगीया · गूगलाण गूगल होवे दांतन बासे हरता · जीरूणी फूलां में खुसबुह बीज तेजबान · गांराठी · मुराली छान पर डालने से ओहरुन होवे · लांकस · खीरखीप · फोग · लाणो · लांणी · थुवर व आक उपगारी बहुत है · ऊंठ नही खावे · ढाक उरोटा बकरी नही खावे · खीप · अकालो वण · लवा साकुड लगेई · लवी · आकड़ी पनीर फोटा लगे · पोवन · बूरोड़ा सुरंभ अच्छी · धामण भुरट पीपां होवे फलीस हूंछा · लंप · कुरी · लुगसी हू · ग्रामणो · गंठीया · रोइस खसज्यों टाटा होवे व जड़ तेल में डालते है · भुर्ट हूं · वर हूं · कडे · खिबाडे हूं द्राव · मखणी · भोडसी · वोभरीया हूं · डाभ थडा में भरे · कल कलमां होवे वाणवणी मोथ जड़ मे खुसबूह · घीटी हूं · रातडीया खड · बूकन कांय · बद्रफ · कुतियारक्त मूडद · पूछीयो · मोरीया · फिलअच्छी बूह · रोहबुह अच्छी · पीने से अफीम जहर उत्तरे · सोनेला · सोनल · घुडला · कलांज · दूधेली अम्ब जहर उत्तरे · छपरी दो जात मधीया · नोली · तिलकंट बीज कालीजीरी · कड़ लुथ · लाठीया · रांवस · सपन · चमकश

ऊ यानेलडाई होय · मोलवी मुरादअली

गायके पेट छुटने पर पाते है माशा ३ - काली मिर्च दांतन अच्छा सलेरी चग छप्
र बंधी होवे बोसुनी - हाड का खेत ३ कदाये चिड़ीये खेत बगरा णाम मे बगरी जंग
ल मे होवे - चंदेला बहुगुण रत्न जोत ३ सनावडो रातींधा जावे साठो - लोल रुहू
पचमिटे - हिलडा काटी भकडो धकडो ओइन देरु रुहू - मागरी बीजउटींग
न दाधा खीरड़े लगे हर्ने चपत्तो छिडत्तो छुई स्याह व सपेद वादी पर बांधे फेल
दोजात गेहडो ममामोली दोनो ककडो सणतर, लातर उन्वेली ईकड
खसस ए ३ जात धांमासा खार द्रेवल - कोनरु वलत मे होवे गरयनु नुफीर
भागीसधे । नाहसे तपउतरे क्व दत्त दात पका है आंधीमाडा कपुतण जलभग
रा कालाभगरा कुटक - बलफूली आफू उतरे चुंरवा वहे फोड जलेपर लगावे
खीरोलिया ३ गदा गडीया कलाभुट - खुमी नागछत्र वनमेथी वनतुलसी
घोडालजोसनाय कवाड़ीया गोरखमुन्डी पाडल - सुवा पीलवाण गोलीयांडा
फलगोलामीठो तूसरा जो इन्द्रायण के तुंबा के बीज मीठा करके नाज मे मिलाय
खाते है व घोडा भैस को देते है व हडिया निकालकर पायपे लगाते है गाडरीया
आरवफुटणी सा ओकरु - करेला रीगणी अमरबेल कटोल बिछुकी दवा गिलोय
कोडीया फलीलगे पीस गुला जलबेलडी घोडा खाते है और ऊदरकनी वगैरह
बहुतसी जडी है ॥

इलाके जात में बडे दरखत बधाने व रखवाल के लिये सम्वत ३ से आज तक
बहुत से हुक्म जारी हुये मगर वारस के कम होने व लोगो की बेवकूफी बदनियती
ने लगने नही दिये गाम नाचना व लखा मे नही कटने से खेजडी बेसुमार हो गई बाकी
शहर के चौगिर्द चोकोसी मे रखवाल से बहुत से पेड खेजडी बबूल वगैरह के लगे थे सो भी
अब न रहे सो इस काम की जिम्हवरी का रोजगार भी लोगों को कर देना कि हरा रुख न

कटे व सूकी लकड़ी काम राज में आवे और बलीता जैसी वो लें जिसके ठेका के रुपये सेजगार में कटे और बीयाली निगरानी करता रहे · तथा बाजे गाम में श्री खांगियां जी या किसी देवता का ओयन है जहां बोरडी वगैरह के रुख बन रहे हैं क्योंकि लोगों को यकीन है कि ओयन काटने से नुक़शान होगा सो ऐसे होता भी है · ये देश जोगनी पीठ कहीजे हैं चुनांचे: देवी व ६४ योगनी ५२ बीर व भोमिया झुझार व सिध सान्नियों की समाधें व वली फकीरों की कबरें व रामदे पाबू हरभा गोगा वगैरह २ के थान हर गाम में ५ दस होवेंहीगे · अलावा इसके सम्बत ४१ से देहाती लोगों को समझाया कि त· की पियाई हरसाल लेकर सहाजोग में रक्खो सो जबही कहत साली हो त· खुदावो तो नीवान बढे और गरीबों की गुजरान भी होवे · तथा घर मकान की छत नलीयों की व अच्छे जमाने में घास की कीदु जरूर बनावो · और खेत का धोरा बांधोही व दरखत लगावो व गाम में घर बंधे ज्यों वरतन रक्खो · ऐसी कई बातें कहीहैं व हाकिमों जिले को लिखी हैं मगर ज़माना अच्छा आने पर हमेशह पूरी कोशिश रहने से तामील होगी ॥

नक़शा बीड यानेजोड को वोह कहते हैं जो सरकारी रखबाल हो

नम्बर	नाम ज़िला नाम हकूमत	नाम गाम	फासला किस तरफ़ कोस व	नाम जोड	लम्बाई कोस	नाम घास	कैफ़ियत
१	जे·	जैसलमेर	१ से ५ उत्तर	कराह	१२	सेवन	सम्वत ४ से खास तबेला खर्चे को ये जोड़ की यासो बडे फायदे व आराम हुये · राज में घास खरीदन होने से लोगों को आधे मोल

							मिलेहै खेजडीवगैर रुखवधनेसेसबजीकेसि पऊठो फीलोकेचाएकासुखहुवा अवमनशा
२	ऐ	ऐ	चोतर्फी	बीड़		ऐ	हैकिराजमे घासकटेसोउठानेबादहोलीसेवर्षो होने नकशहरकामालचरनैकोसावनवमूजब
३	ऐ	सूरसागर	२ पश्चिम	वड़ला		ऐ	लागबीड़कालेकरजेठवाईमेंपानीपीनेकाना लबनायाजावैतोबहुततरहसे सबकाभलाहो चोतर्फवीसेबारसहोनेसे१॥महीनेबादकातिकसु दी१५तकओरतेंभारीपालावे फीभारीलाग१) रुपयामेंगजधरचौधरीवगैर कोछूटभीहैवलाग का७रु०वेल१ रु ।।)कुल१०)रु हैसोऊपर लिखेबमूजिबहोनेसेआगेज्यों१०००)रुसेऊपर होगा सोराजमे घासकटाकरहरसालका लार कीदुबनायाजावेजोकहनसालोमेकामआवे सूलराजसागरकावहालामेवागाकेखर्चकोघास कटनेबादलोगोकोबिलालाग छुट्टीहोतीहै
४	ऐ	बीचोडाई	७ दक्षिण	बीसर		खिवडी	
५	ऐ	सांगाणा	८ पूर्वे	सांगाणा	४	सेवन	घासकटेसोउठानेकी लोगो को छुट्टीबिलालाग होवेहै॥
६	खाभा	खाभा	१२ पश्चिमनेऋत्य	कोन्ट्रिया	६	सेवन	कराहुयेनही होतीयहासेघासतवेलेआयेफेर छुट्टीलागनही॥
७	सम	सम	१५ ऐ	तसम	३॥	खवाड़ लुगसी	कोटकेखर्चेवकभीतबेलेखवाईआनेबादबिला लागछुट्टी

८	खुपाल	खुड्याला	२०पश्चिम	ख्याली खला	२	खिवाड़ै	ऐ
९	देवा	देवा	६उत्तर	देवा	५	खिवाड़ै कड	
१०	ऐ	पलुंध ५गाम	४उत्तर	ऊपरला	४	गठिया	येबीड़ सिर्फ घोडीयोंके चरने को है जिस साल घास
						संधला	यहां नही होतो दूसरी जगह जहां अच्छा घास
							हो घोड़ियां भेजते हैं तथा इसके नजदीक में घास
							कटा कर काला रभी बनाई जाती है
११	ऐ		७प॰वा	खरीमा	८	खिवाड़ै	ये ८ही बीड़ कदीमी पके हैं लोगोंके माल च
							नेको छुट्टी है। जब लाग जो दालके हते हैं॰
१२	ऐ		ऐ	वटीया	२		जिसकी सरहद मुनासिब वक्त यानेमें स १
							से ३ का १ रुपया व गाय बैल ७से ३०का १रु
१३	खाभा		८प॰नै॰	कुंज	६		लाग १का १रु॰ नगद व १दिनकी बिलोना
							का घृत १जोड़ी ऊन १वेड़ीजटकी लेते हैं॰
१४	ऐ	खाभा	११ ऐ	हरजिसर	३		सो १० जनावरकी गायके हिसाबसे नकद
							ही लेना चाहिये घृत ऊन जट नहीं लेना।
१५	ऐ	दामोदर	ऐ	सेनल	१॥		आमदनी वटीया की तोढा॰ राजश्री केशरी
							सिंहजी के नरे बाकी खास तबेले या खजा
१६	ऐ	ऐ	१० ऐ	कुचेरा	२		ने जमा होती है॰ रखवाला उबीया लोग आगे
							ठेकेदार थे अब घोड़ा सुधा को तनखाह मिल
१७	ऐ	सिंपुल	६नै॰	मुहारे	२॥		ती है॰। खिवाड़ै का वाजिब है कि इससे घोड़
							दीना व बच्छेरा दूध छोडते है व खास भी जार
१८	दे॰	देवीकोट	१२पू॰	आंसी॰	५		वान व गाये खीरों व्यापे घृत ज्याद: होता है

१९	जे	बासनपी	६ पूर्व				सेवन	यहांतो लाठी ठाकुरसाहेब की घोड़ीवसेसे हीगामलाठीलामें राजश्री मानसिंहजी के घोडोयारहती हैं +

जिकर चोपाया

दफे १७ अकसर लोगों को गुजरान भी मवेशी को पैदा पर है और इन बरसो में ११। इस अमनें रखते भी बहुत है परगनः सहागढ़ मे महविकम हो तथा ठाकुरराज श्री केशरीसिंहजी की तवुज्जह व कोशिश से नसल भी उमद हो गई जुनाचे भाइद का मोल ३) रुपये से ४) रु० तक था बल्कि कहावत थी कि जीता देनो यामरा अब देलोग्नु काम में लेने से मोल चोगना हो गया तथा बैलभी लदने व हल गाडी लायक होते थे सो अब सरकारी थाटा वगैरह का रथा लायक होने से बाजे जोडो रुपया २ ढाइसौ की होती है और गाया भैंसों की थाटा राज में दधने से घ्रत बैल हजारों रुपये के होते हैं और ऊंट निश्चायत उनदा खसूसन परगनह सहागढ़ - घोरडू - सम मे थलीया जो कद्दावर कम लेकिन तेज रौव बमूजिब बहुत होते हैं कीमत ६०) रुपये से १५०) रुपये तक व फिराऊंहा ४ या ५ सौ में बिकता है सिंध के अमीर दस ग्यारह सौ में भी देते थे सिफ़त चलने की श्री बड़े हजूर श्री गजसिंहजी के वक्त में कोकवान नामी ऊंठ जेसलमेर से जोधपुर १४० मील चार पहर मे जाता उसपर बैठने वाला भी एकही सख्श मिश्री नाम जानका था - और मलीरिया नामी ऊंट पर मुहम्मद फेरणीया रल्ला की चाल से बलो दादरी तक जो २२ कोस है जाता व रोटी खाकर पांच छ- घंटे मे पीछे आता था - इस चाल के फिरे हुवे ऊंट को अमीर व रईस भी पसन्द फरमाते हैं क्योंकि कितनो ही मञ्जल हो चाल नहीं छोडता तथा अबभी पान्च छ- घंटा मे ४४ कोस जाने की तारीफ निसबत ऊंटकी खान फैजुल्लाखा की मारवाड रपोर्ट मे लिखी है व ऊंट भी इन्नाक हाजा

* गुरूथ मलदारीऐ अंग्रेजोंमे बीकानेर की फौज जिसे बहुतसे सरदार भी थे पोकरन ठाकुरसाहब के वहकाने से जेसलमेर को लूटने को गई थी परन्तु जेसलमेर की फौजने इस लाठी गाममे आकर बीकानेर की फौन को ऐसी लतारवताई कि भागते ही चनी

१० आदमी काम आये ॥ मो मुराद अली॥

गाम राजगढ़ के ठाकुर अनूपसिंह के सांढ का था बसवाई ठाकुर मजकूर शर्त जीतकर सो जन से पीछा जोधपुर आया - जब वह ऊंट खान मोसूफ़ ने बड़ी खुसी से खरीद लिया - अलावा इसके सकोरीव विसनोयों के सांढा का ऊंट कद्दावर व खूब सूरत व तेज़ होते हैं ॥

घोड़े - ख - देवा के खूब सूरत व असालत में अजहद हैं व चलने में तेज़ व मजबूत बहुत होते हैं - चुनांचेः श्री जी साहब सम्वत ३० में डूंगर पुर परनीजन पधारे जब इन्हीं घोड़े ऊंटों की सवारी चार दिन में आबूजी पहोंचे थे तथा खेत देवा की एक घोड़ी परोहित इन्दराज जी से जोधपुर में खींची बखतावरसिंह जी मांग कर महाराज सर श्री प्रतापसिंह जी साके घोड़ा साथ ४०) रुपये की सर्त कर दोड़ाई थी डेढ घंटा में ४० मील पाली पहुंचने की तारीफ़ रपोर्ट जोधपुर व सफ़े १३ दर्ज है[*] अलावा इसके जुलक्यास ख - खुईपाला हरराजसर खरींगा ऊपरला वग़ैरः भी घोड़ा का खेत बहुत ही अच्छा है ॥

हाथी - कराह को कवियों ने अव्वल ही कजलीवन कहा था सो सही हुवा कि अब दन्ती[११] पैदा होते हैं - चुनांचेः एक हथनी के दो बच्चे उमरः तीन साल में पैदा हुवे - जब दूसरी हथनी मंगवाकर इस बन में छुड़ाई जिसमें एक के तो बच्चा मादा पैदा हुवा - व दूसरी के भी होगा - श्री ईश्वर नाय जीते रक्खें ॥

चौपाये पर श्री ठाकुर साहबों की तो तवज्जह थी ही - कि अच्छा चारा में माल को खाना व दत मसाला दिलाना व हर साल तीन चार दफ़ा शिकार वग़ैरह के बहाने पधार कर नज़र मुबारक से देखना वग़ैरह २ तदबीरें कराते थे कि राज में घोड़े ऊंट खरीदने बंध होकर फ़राक़ हुवे - सो मावहिन्दुस्तान में जाने से मशहूर हो जावें सम्वत १४ में चैत्र के मेला में भेजा ये भी थे और अब भी श्री जी साहबों की उमरदराज हो खातर ख़्वाह तवज्जह फरमाते हैं - मगर बेचना मना है - वख़शिश सोगात के दिये हुवे

[*] रेडमनुष्य रटेशीन रपोर्ट राजपूताना - मोतबीमुराद्वाली

[११] हाथी

दूसरे मुल्कों मे जाते हैं म्या औरों लागों के ऊंट व बैल व घेटे बकरे व्योपारी लोग खरीद् करिके ले जाते हे जिसका सुमार साथर के नकशा मे है॥

माल जो सालियाना की लाग है व खड़ोटा

दफे: १८ जमीदार कोटखारा के मडोर १५४) रुपया व रामगढ़ के खालत २०७) रुपया में २३१) रुपया व साणिया के झूट व खुड्याला के कोहरी ४७) रुपया व देवतकी के देवत ३७) रुपया व कुन्हड़ी के जंक २७) रुपया व सम के भइये ५८) रुपया हे सो छ साल के बाद जब ही अच्छा जमाना हो खाडवारस नुनाबिधा वगेरह रकमा मिलाकर रुके मयादी २या ४ महीने के लिखाते हे फेर जामीन लोग मात्र घरो की गायें बैल व १ सांढ १ भैस की दो गाये व १० बकरी भेडी की १ गाय सुमार करके रुपया फाटते हे ऊट व घोडा रु पर नहीं क्यो कि खेद सुरीम में नोकरी दे है रुपये कच्चे ये दीये ६॥ के म्याद तक बाद पक्के ७॥ के जो चलन हे लीये जाते हे आगे साहूकार लोग रुक्के लेते थे सो कच्च पकाई व जीमए ३७) रुपया पीछे ७) रुपया व खर्चा सूद वगेरह सुनाफा वोहरवाते थे सम्वत १९०६ मे रा० राज श्री रूनसिंहजी व महता सालमचन्दजी दीवान राज जो इससे वाकिफ थे रुक्का ले कर सब सुनाफा आप नही रक्खा राज मे जमा कराया जब से राज में जमा होता हे इन वर्षो मे मवेशी ज्याद बधने से रुपये भी बधती होते हे ताहम भी ७ साल मे फी गाय आठ।) आने से कम २ आध आना तक वराड पडता है और इलाके बहावलपुर में हर साल इससे ज्याद तणी के लेते हे लाग सुनाफा वगेरह कुल चीरे माल के सम्वत् ६ मे १५१७३) रुपया व सम्वत १३ मे ९३३७) रुपये सम्बत १९ मे २२६५३) रुपये व सं० २६ में २९३५७) रुपये व सम्बत ३२ मे २८५८५) रुपये व सम्वत् ३८ मे ४३५४४) रुपये के हुये आयन्दह ज्याद होहीगे

माल भरु लोग इलाके गेर मे बैठे भी माल भर देते हे सो कहतसाली वगेरह मे वह माल ले आवे तो खडोटा नही लेकर मद्द खानर रहती है मगर कई बरसों से वदनीयती

के बाइस रुपये कम भरने से बकाया ज्यादह याने सम्बत् ६ के बाद ३८०००) रुपया करीब तो राज के का १० या १२ हज़ार साहूकारों के होंगे · तथा जमीदार जामोत्तो से व्योहरां के आगे सर्ते थी कि आसामी निकेड के रुपये जो हिसाब नहीं हुआ है तो नये माल में भर दे यूंही सम्वत् ३२ या ३८ में हुवा · और कोई सरदार बागी माल मरु का माल ले जावे तो फी गाय ५) रुपया व ऊंट सांढ एक के ४०) रुपया माल में राज से वसूल दिये जावें · माल धाड ने जमीदारों को बुलावें जब मोहरां के जामोत मूगरखां को अस्त्र ५१ पाघ १ थान १ भेजते हैं · व माल मरु लोग जब तक शहर में रहे बल अम्ल सब को बसके लिखें जब श्री जी साहिब के सलाम कराय जामोतों को सिरोपाव देकर कुल खर्च हर कोम के चौर से भर लेते हैं · कोम मगलोये जो जमीन राजड़ों को देने से जमीदार नहीं जिससे माल की एवज पटोला: का जब ही धाड हो नजराने के १२ ऊंट की कीमत १२००) रुपये पक्के और दूजी लागें ऊपर बमूजिब हैं · तथा मुहार के तुवरउ · सिपुल व हाड़ के खालतमठे व मुदडो के गांव थ भी माल भर हैं परन्तु सिपुल से तो सालियाने के ४४) रुपया व मठो से १५ या बीस साल में छोड से रुपये का चौरा कराते हैं · और मुदडो की जमीन थोडो सीव सम्बत् १४ में हजूरी गणेसदासजी को बख शी बदले में मेडी की जमीन दीवी तो भी माल का हिसाब बाकी ही है · यह रिवाज़ बंध करके मूपी बरसात या नमैवगैरह जो हो मुनासिब हो तजबीज़ करनी वाजिब है · कि सब को आराम रहे व सफाई भी हर साल हो जावे · यह काम पुरलों से नथमलजी पास है[*] · तथा माल मरु व छोटे भोमिया से राज में हरसाल की लाग दो जनावर लेते थे सो वाघालोये के तो नकदी रुपये बरसोन के समूल किया व चैनालीया जीवाल खासत वे ला त्राल्लुके पडदार ले आते है · खडोटा जो खडचरा इलाकह गैर कोमवेसी पर लगता है कि इलाकह सिंध में चोमासे कोडको होने से मवेशी इलाकह हाज़ा में लाते हैं सो कातिक वदी[**] तक रहे तो गाय ६ का १) रुपया व होली तक रहे तो आधा फ़ेर ही लेते हैं ·

* पने दीवान श्री मेथामलजी जिन्होंने बहुत बरसों तक पहिले आबू की वकालत की और फिर देश दीवान हुये पुरलों से वजारत का ओदा इन्हीं के खानदान में है और इस तवारीख के बनाने वाले येही महाशय हैं॥ मो: सुरादअली

इसमें महोरादी मे मूंगरखा गाय १०० व मुवाको ५० व खालतेरे मे मूला को ८० की लाग बूट कैसिवाय फी टोला ७) रुपया हक जमींदारी का में कुछ हक कामदार का भी है और कोट देवा वगेरह मे जमीदार को हक नही देकर कामदार ही लेते है व परगन तणोट के टोभ पर माल रहता है उसका खडोटी जाम आम्मदखा लेता है सो जाम से लिखा लीया है कि हिसाव में भर लीये जावेगे • कुल पैदा ज्यादह ३००) रुपये व कम ५०) रुपये कहत मे कुछ नही औसत फी साल १००) रुपये होगा • इस काम पर विसामंगन मल या कोई जावे सो ताल्लुके के कामदार साथ माल की गिनती करके रुपये ले आते हैं • किसी साल माल्तानी मारवाड वगैरह से मवेसी आवे है तो रजपूता को माफ जाट पल्लीवाल वगेरह लोगों से लाग वक्त मुनासव ली जाती है सम्वत २५ मे रजपूतों ने जाटों वगेरह का माल छिपाया जिससे सम्वत ३४ में तलासी सें माल जाटां वगेरह का सावत करके खडोय जिसपर वेईमानो ने वदनाम किया कि हम से खडचरा लिया खैर सम्वत ४१। ४४ में माल भरु लोग इलाकह मारवाड मलानी से जाटां वगेरह का माल वहुत सा लाया व इकरार ही किया तो भी खडोटा नहीं लीया॥ इतिशुभम्॥

दरियाव हकड़ा व ओतमडा रायजी

दफै: १९ किसी जमाना में हिमाला के पानी से दरियाव हकडा जेसलमेर सेउत्तर १९ कोस से गढ मरोट तक चौडा चलता था सो लेख तो नही मिला दन्तकथा है कि दरियाव के वाडस ईलाकह माड में जो वजा पानी की इफरात से गुलवाड होती थी कि निसानी वहुत से गाम मे पत्थर की भारी घानीयां निकम्मी पडी है तथा दरियाव की जगह वीरान जगल उ पाली में वाज वाज जगह रेत उडजाने सें सीपा सोगोटीया वगेरह मिलने से अनुमान दरियाव के चलने का होता है

लआ दरियाव के सूखने का असल हाल तो ज्ञानी जाने मगर सुना है कि शायद ग्यारह बारह सौ वर्ष हुआ एक चारन मामडीया जमाना केत में दरिआव पार जहां असुर रहते थे जा रहा ७ बेटी आवड आदि जो सकती थीं उसरों की बदनीयत समझ चील होकर बाप को साथ लेउडी सो दरियाव सोसन करके जेसलमेर से ७ कोस दखिण डूंगर पर आते ही छोटी बहन आगाडी हुई सो खोह में एक राकस को पकड़ कर फेंका सो नीचे गिर मरा जहां गोडा की घुरसे पत्थर पर मौजूद है • दूसरी बहिनों ने पूछा कितेहे पास बदिया कि मड़ा है • जिससे तेमडाराय व मुल्क माड से माड धनी आनी व डूंगर पर थान से डूंगरेचियां नाम कहीजी सो नाग के ७ फन पर ७ कन्या रूप से दरशन देती थी . फेर पुजारी गोगली मोवे हुवे सो डरने से छछुन्दी का दरशन होवे है • बीकानेर महाराज श्री रायसिंह जी यहां परनीजन पधारे जब दोनों राजे दरशन को गये महारावल ने छछुन्दी पर संका करी तब नाग के फन पर दरशन हुवा था • और कई बातें चमत्कारी की विख्यात हैं जिसमें बाजे २ मोका पर लिखी भी है •

तथा यूं भी कहते हैं कि अडोड का बंधा बंधने से दरिआव इस तरफ चलना बंद हुवा • जब बहुत सी जमीन निकली सो सिंध में तो रे शाल वहे लोड वगैरह होने लगी इस देश में पानी से खडे थे जिससे खाडाल बही • इसकी एक साखी है कि वल वहसी हकडो • तुटसी बंध अडोड सिंध में उसी सखडी वहे मच्छी आर लोड। १ ईश्वर जाने कब होगा • तथा सिंध की तवारीख में यूं भी लिखा है कि दरियाव मोरा महारान शहर अलूर के किले के नीचे बहता था दलूराय के जुल्म से एक सौदागर की फरियाद पर खुदा ने हटा दिया सो रोहडी भक्कर के बीच में बहने लगा • इस बात को भी अरसा ऊपर लिखा बमूजिब हुवा है॥

देश की पेदावार व दस्तकारी चीज़

दफे: २० खाना व चौपाये व खेती व जंगल मे गूगल गूंद फलोस भुर्ट वगैर: का हाल तो मोका मोका पर लिखा ही है तथा बाग मे आंब नारंगी अमरुद अनार सीताफल रायण खारका बेर नीबू जाबुन जभीरी करना दाख सहतूत केला सूफ करोंदे गूलर सेजरा खाखरा महदी रायडोडी बादाम वगैरह फूल बादूव होटी रशाल सेलडी सांठा सकरकन्द खरबूजे मकीया वगैरह वगैरह जो पानी की कमी से पेड व फल होते तो कम है मगर जो लोग दिशावरो मे रह आये है सो कहते है कि यहां की चीजे बहुत ही उमदह है खास कर मिश्री आंब जो एक फकीर बरकत वाले ने श्री अमरसिंह जी के वक्त मे लगाया था सो ऐसा तो कहीं नही है • तथा उसी फकीर ने एक पेड केतकी का लगया सो फूलता तो गाहे गाहे है परन्तु निहायत खुसबूहदार होने से किसी ठिकाने रईस या नवाब को सोगात भेजाते है• उसी फकीर ने जाते अमरबाव पर नाराज होने से पानी कम कर दिया•॥

ओर मालीया के वाडीया में साग पात के सिवाय खारकां व प्याज उमदह खास कर मौजे लुद्रवा के आसन्न का प्याज गुणकार भी होता है सो साहब लोगां व रईसों को भेजते हैं•

सम्वत् ४४ मे जनाव रजीडंस पोलट साहब बहादुर व महाराजा श्री प्रतापसिंहजी साहब ने खजूर के सहस्र पेड लेजाकर व फेर ही मगवा कर इलाकह जोधपुर में कई जगह लगवाये हैं • मगर इसके फल तो नर मिलाने से अच्छे होगे • तथा जानवरों के चमडे तो सिंध को जाते ही थे अब हड्डी भी जाने लगी • घ्रत भी बहुत उमदा परगनह सम जैसा तो कहीं नही होता होगा॥

दस्तकारी

सिलावटों की कारीगरी की सिफत तो पत्थर के काम में लिखी है बाकी हरएक कारीगर अपना अपना काम करते हैं मगर तारीफ ज्यों नहीं हा पस्म की कम्बल एक अर्ज की

जो हज़ारा गाम बरमसर में एक शख्स बुनता था सोही मर गया - दूसरों को नसल्ली व लालच देकर समझाया परन्तु काम नहीं कर सका - धोती जोडे व दुपटी कम्बल वगैरह बुनते हैं सो दिशावरों में बहुत जाते हैं - लुहार चकमक का कड़ा व कली या ने मोचना अच्छा बनाते हैं - खत्री की रंगत आल मजीठ की सिंध अमरकोट को जाती है - व गाम सागड़ में जाजम भी रंगते हैं - कोली मुसल्मीन व चमार देशी सूत के[1] रेजे धोती जोड़े पाग बनाते हैं - ईलाकह प- में कमी लोग ऊंट बकरी की जट व भेड़ की ऊन से बोरी बोरे व सतरंजी खडींये बुनते हैं - व और लोग ऊंट की सजाई तंग मोहरा मोहरी गोरबंध वगैरह उमदा तैयार करते हैं - व मौजे नोख में एक जना सूत की दरी वगैरह भी बुनता है - गाम कनोई लुद्रवा मोहनगढ़ विकमपुर के सूथा[*] र ऊंठों घोड़ों के पिलान अच्छे बनाते हैं सो सिंध वगैरह में जाते हैं - गाम शेखासर व खूहडी में कुम्हार मिट्टी के बर्तन पोकरन से भी पक्का बनाते हैं कि उसमें तांबे पीतल के बर्तन जैसा घत रहता है - गाम भू - भोपा देवी कोट के भील मोसम सरमा में जमीन से शोरा निकाल कर हलकासा बारूद बनाते थे सो अब सिंध में गये हैं - गाम भेसड़ा में चमार मोची चमरखड़े की कोथली जो थड़े का काम देवे बनाता है व खास शहर में मोची व गाम मंडाई में मेघवाल - चमडे के हुक्के व थही व घोड़े ऊंटों का साज़ पर कसीदा रेशमी व कलाबत्तू वगैरह का अभी २ अच्छा बनाने लगे हैं - और कारीगर मजूरों की तनख्वाह फजर सुधां देनगी ।) रुपया थी सम्बत् से सिलावटें वगैरह कि रोजीना रहे देनगी फजर सुधां ।।=) आने ६ पाई गजर की अर्थात ।।) आने शहर में और राज में निस्फ और दूर भेजना हो तो भत्ता मुनासब वक्त बधा देते हैं और इलाकह जात में सरह मुकर्रर नहीं - खारा चूना का काम आगे बहुत ही पक्का था कि बाजे अंगनाया बदीपा वगैरह जो पुख्तों का है नये से अच्छा है - ५० वर्ष से यह काम कच्चा होने लगा - इसवास्ते पिलास तर जो बिलायती चूना मंगा कर इस्तहान

[1] थानेवाल

[*] यानेबढई

भी कर लिया अब इंगनीयां टाका वगैरह बनाये जावेंगे लागत भी कम है क्योंकि ३ हिस्सा नदी का वालू मिलाकर गारा ज्यु काम मे लेते है॥

बोली इल्म हुन्नर

दफे: २१ बोली-शहर मे जातो जात मे शब्द सिंधी पंजावी थे क्योंकि वहां से आये व दुकाने कमाई भी वहा ही की थी सम्वत १९६० से पीछे लोग हर ४ तर्फ मुल्को मे जाने लगे तो बोली भी हर आदमी की जुदा जुदा याने जो जिस देशमे रह आया वहां के शब्द मिलने से मिश्रत हो गई है इलाकह जात में जो परगनह जिससे पडोस है बोली भी उससे मिलती है चुनान्चेः परगनह लखा व महाजलार में मलानी घाट व माड के ३ ही शब्द मिले हुये है परगनह सम दसहागढ घोटडू का सिंध मीरपुर खैरपुर सेव प्र० खारा व तनोट सिंध महोर वडहरसे परगन-किशनगढ खुयली बहाला नाचना सिंध वहावलपुर से गाम चरसलपुर विकमपुर याने परगनह नोख का सिंध वहावलपुर व इलाकह बीकानेर से परगनह चाय व सीहड इलाकह मारवाड़ से परगनह लाठी परगनह पोकरन से नजीक है तो बोली भी उनसे मिलती है - और परगनह जेसलमेर देवीकोट फतहगढ खाभा रामगढ बाराहा देवा मोहनगढ़ में देशी बोली जात जात की जुदी जुदी है॥

इल्म

विल्कुल ही कम है हां खास शहर में कोम ब्राह्मण पुष्करना में कई व्यास संस्कृत व कोम महाजन व और ही ब्राह्मण वगैरह जो पेशा साहूकारी करते है हिसाब किताव काम चलाउ पडे हुये हैं और देहाती साहूकार अपने काम लायक लिख पढ लेते हैं व कोम चारनों व सेवकों में बाजे बाजे कविता डंगली दोहे गीत वगैरः सीखते बनाते हैं - तथा बाजे दूसरे लोग भी कक्का बारह खडी पढ़ कर ऐसी ही

चिट्ठी बांच सके हैं · और जागीरदार भोमीया तो पढ़ने को ऐब व औरतें पढ़ने को अशुभ समझती हैं · फ़ारसी अंगरेजी का तो नाम ही नहीं था · अब अहलकार राज के पढ़ने लगे हैं · व दिल से चाहते भी हैं परन्तु रिवाज व पढ़ाने वाले कम हैं श्री जी साहबों की उमर दराज हो बिलफ़ैल तो मदरसा जिसमें सम्बत् ५१ से लड़के साहूकारी हिसाब सीखते हैं और अंगरेजी फ़ारसी पढ़ाने वाला भी रक्खा है बाजे लड़के पढ़ते ही हैं · इस काम को तरक्की दी जावेगी कि सब तरह का इल्म लोगों को हासल हो* और ऐसे ही अस्पताल में वैद्य हक़ीम रहें सो लोगों को दवाई मुफ़्त मिले तथा मन्दिर तालाब सांमीया वग़ैरह धर्मादे के काम व शहर सफाई वग़ैरह सुधारने के लिये शहर के मुखिया वग़ैरह लायक आदमी कमेटी किया करें · इस बाबत पैदा व खर्च वग़ैरह की तजबीज विचार रक्खी है · मगर बड़ी ही कमायत है कि ऐसे कामों को शहर के लोग दिल से तो क्या समझाने से ही ख्याल नहीं करते हैं जिससे उम्मेद नहीं ताहम भी श्री दरबार में ३००) रुपया साल का खर्च वैद्यों हकीमों की तनख्वाह व लोगों को मुफ़्त दवा देने का मंजूर किया है · न थादो चेले कच्छ भुज भेज कर टीका लगाना वग़ैरह का काम डाकडरी का सिखाया सो जारी है · बाकी इस देश में अम्ल व गुल्ल बड़ी भारी दवाई थी व है · जेपुर के मुसव्वरों से काम तसवीर व आरायस का व भुज की भी खाजी से काम फोटोग्राफ़ का हजूरी सालजी को सिखाया मगर ऐसे काम को कोई समझते ही नहीं · सेवक लखमें की मुमारे भेज कर काम छापा खाना का सिखाया सम्बत् ४२ में भाद्रवा १३ से मतबे माड नाम रख कर शुरू कराया परन्तु कोई को चाह भी नहीं** व पानी का नल्ल मंगा कर बाग में लगाया सो न मालूम कल में बल है या क्या परन्तु काम नहीं चला ऐसे ही घड़ी व राग पेटी वग़ैरह कलों का काम बंद हुवा तो ३०) रुपया तनख्वाह का कारीगर बुलाया कि यहां के कारीगर को काम तैयार करिके सिखावे

* सन १८८९ ई० अखीर में जेसलमेर गये कोई सरकारी मदरसा नहीं देखा॥ ** खास जेसलमेर के करीब न देसर काजा कीमती पत्थर निकलता है उसमें एक दाम यानी किसको ऐसा पत्थर पाया जाय जिस्सरका पीवरवी यायाफ काकिराड़ामन पत्थर मौजूद है अगर यह निकाला जावे तो रियासत को लाखों रुपये का फायदा है॥

सो भी अम्ली आलसी व ठोठ है ज्यू ही कपडा सीवने की कल मंगाई सो निकम्मी पडी है जिससे दूसरी कलें आटा व तिल वगैरह की मंगानी मिलतवी मुल्तवी रक्खी पमायस के काम के वास्तः एक सख्श को बुलाया कि गावों की हद बंधी व देश का नकशा बनावे ताकि सरहदों का जो भारी बखेडा हर गाम का जरूरही मिटाना है सो आसानी से फैसल होकर कई काम राज व लोगों के फायदा के अटक रहे है सो निमट जावे : व इस काम मे कई लडके भी हुसियार होंगे मगर बिषयारी अम्ली था सो डेढ बर्ष मे १००७ रुपये दे हक खा गया ज्यू पंजाबी लुहार भी खा जावेगा - देशावर के कागज कमीदा साथ आते जाते थे सम्वत ३९ में जनाब रजीडन्ट कर्नेल पोवलट साहब बहादुर की सलाह से परोहित गिरधारी लाल फलोदी वाला से डाक बिठाई थी फेर सम्वत ४४ चैत्र बदी से सरकारी डाक जारी होने से काम ही बढ गया व लोगों को बडे ही आराम फायदे हुये साहब मौसूफ ने कहा कि डाक के साथ राज का सवार रखना होगा जवाब दिया कि इस देश मे चोरी धाडे का नाम ही नही है और जो डाक में कुछ हो जावे तो हमारी जिम्मेवरी है - अलावा इसके कई बातें दूसरा मौका पर लिखी गई हैं दुबारा जरूर नही ॥ *

शहर खास व देश में इज्जतदारों व बडी कौम का हाल

दफे : ३३ जो कि भाटी व मोहे तो उमराव व सरदार हैं हो ज्यूं ही वीरता व दातारी मे नाम किये चुनान्चे : जैकरन आली ठाकुरों का - सो - मुख्या मावीतं वालकिया वारोतरे जाका जतन करे मोटा को धा मूलचन्द १०१ नर नाडीया नी कन ऊनान्ने आलो जे परा मन्नामन महराण कहरने छिन्यो कल्याणउत

* गहन्यानखुन्नजोमध्यान्राजनेडा के आपमवासेना नाम्ब्रारिकिपालस्से स्यपएक बडा सबे उगनेके चलगपाल्मनू अपनी नामस्नेट्ख्याकि किला इन्तकाम जगन्नतिपालान मे नाल्बोरूपपका गानोनिये हुवे बन्नाजानारे थी को इस्तगापहुमहृता साहब के इन्तजाम की खुबी है । मो मुग़स्सलो

।२। तथा बारू ठाकरां का दो सालु मान्ल अलंगा सेनी बारू धणी बहोड़े वरते नहीं माणो इक मेवो शाहनशाह रसोड़े।१। सो-अमी नजर भर आख महियत दारे मेघरो-नाडी साकर नांख-सरवत की धो साल में।२। ज्यूं ही डांगरी-ठाकुरां का-सो-अगुयासे भेट कवि लोहा कंचन किया मसरा आखर भेट कोकुरा भादो करे।१। अलाहाजुल व्यास सब के हैं ऐसे ही सोढा का-दो कीरत चीरियां काह ला दत विरियां दोढा-परनी जे सारी पृथ्वी माई जो सोढा।१। याने व्याह में गांव होगे कि सोढे सारीखो न कोय-ननोट के ऊनड़ों का जांम व सिरायां का जमा दार भी सरदारों बमूजब हैं व चारन रत्नु पाट बाटे तो ये ही अव कविराज भी हुये-अलावा इसके मुसलमानों में ज्यादह-आदमी तो म्होर व वहादुरी में राजड़ ओर इतवार भरोसा में वंभेर व कंधारी सिपाही हैं-तथा मुसाहबों में-महेश्रीयां में दावरी मुंता जो १००० वर्ष से दीवान यही हैं-व ब्राह्मण पुष्करना में-पिरोहित व्यास आचार्ज थानवी-व ओसवालों में-भोजा मुंता व सिंहवी सहा-मुद्दा कि कुबे कायदे बकिरीयादर आह्ली ठान अजहद हैं-तथा रैयत शहर में ब्राह्मन पुष्करना व ओसवाल महेश्री तो अववल हैं ही-मगर व्योपार में भाटिये भी रंगभर खेले हैं-ब्राह्मणों में परोहित व्यास आचार्ज विसा केवलीया-पणीया थानवी बड़े नामी हुये व जीयावर तफसील जैल किये-१ लखभोज १ व्यास लालु गाम लुद्रवा-व सहसभोज ८ में १ व्यास घेरु २ घड सी ३ रनछोड ४ बलदेव सम्वत १८२७ मे ५ लाल सम्वत १८४० में ६ जेठ मल सम्वत० में ७ परोहितां सेवाराम सम्वत १८५२ मे ८ केवलीया मूल चन्द मयाचन्द सम्वत १८३६ में-व पंच परवीयां में १ व्यास वल्लभदास २ उदैराम ३ किशनदास ४ केबलीया इरादराम ५ परोहितां बिहारीलाल सं* में ६ नन्दराम-सम्वत १८७२ में ७ गिरधारीलाल सम्वत १८३२ में-

°असल्में सम्वत नहीं था *असल में सम्वत नहीं था

८ जोसी श्रीराम गाम डाभले सम्वत× मे ९ ओझा हरवंश सम्वत/ गाम कहाले १० भागचन्द ११ किराड़ू गंगाराम १२ पणीया खट्टूमल सम्वत १९९२ मे १३ विसा चन्द्रसेन सम्वत १७८७ में १४ मुन्नलाल सं० १९०९ में १५ आचाजे नन्दलाल सं० १८५८ मे तथा जोसी साचोर में हेमराजजो राज व देश वोहरा हुवा नरहरको सहसभोज व बहुत न्यात करके फी मनुष्य १७ रु० दक्षणा दिये बाद ९ लाख रु० महतेजी खोसा लिये अफसोस है कि तालाव के सिवाय पानी देवा भी नही रहा

पुष्करने घर १२०० मथे ७१० शहर व अमरसागर मूलराज सागर व गाम बहाले डाभल नख ८४ मे २३ है । १ मुन्चन परोहित रङ्यानी राजा २ टंकसाली ३ व्यास ३ दिसा ४ आचाजे ५ केवलिया ६ जोसी वदल ७ पणीया ८ हर्स ९ किरोडू १० रामदे थानवी ११ वोडा १२ कल्ला १३ छुयानी गंढडीया देरासरी १४ ओझा १५ चूरा १६ बासु १७ बटु १८ व्यासडा १९ नेपारा २० कपटा वोहरा २१ उपाधियाँ २२ तिवाडी २३ कीया अता इसमें परोहित लखुवीरो व व्यास तीथिमें बाकी सबे लोहडो तथा चौधरी परोहित धुडे ५ के जने ५ व्यास १ अचाज १ विसा १ केवलीया १ हैं न्यातको सिंधीमें मस्तान कहे है न्यात समधो लिखत सब की सलाह से व्यास भोपत लिखे सो परोहित सिरयत पास रहे व राज में काम पडे तो साह ३ परोहित व्यास व लोडो की आट कर दें बरोठी ओसर वगैरः न्यात होय जब सागी दिन शहर में नहेतरो व ४ गाम में चिट्ठी भेजे और लहोडी वाले १ दिन पहले थिरमेसे ७ जगह आगन्या लेवे परोहित में १ वरसा कोराय ले २ जेठमल्ल जी की कोटडी ३ वलाणी के ओटे ४ जगाणी देवचन्द के ५ गोपा की बहालो ६ डाडानीया के कूहटे ओर ७ व्यासा की छपरी तथा गामो वाले आगन्या चिट्ठी के सिवाय १ ऊट लावे सो परोहित सिरयत व व्यास भोपत चड जावे तथा दखणी लफसी पर ल डया १) रैया लाड के सीरे पर ड १॥ बुदी जलेवी पर १) आने से ३) रुपये तक हो गई

× असल में सम्वत नही या

९ असल मे सम्वत नही या

दक्षिण निसरावा देवे जिसके ज्ञाति भाई वदेजगर गनायत व सझे हेतु नहीं लेवेगोर संगपन कितेक नखांसे मोद द खुसी से करते हैं मगर बड़ी ही कमायत व घ्रामे को जात हैं कि सगाई करके मिलनी वरान मान दाली तदपि फेरे न पड़े जिनने कोई फरीक सगाई रक्खें या छोड दे - ऐसे ही बेटा गोद लेदें कि चाहे जद फेर दे - यह बुरी रस्म बन्द करने को कई वार लिखत भी कीया परन्तु कुछ भी न हुवा स्या कितेक नखांसे संगपन सदा से होता है - नखों के नाम नीचे सीघासोद वालों की व चोकडी सटे का है॥ इतिशुभम॥

ओसवालों

में साहपने की शकल पूरी थी नामुरको काम वकृत किये जिनके मन्दिरों की तारीफ देखने लायक मकानों में लिखी है - राजो साहा महेवे नगर से तानेपर सम्बत् १४ ८४ से आया जिसके जंदानी है - वीदेसाहा को चोधर्ये दर्वार में बेठक साहा का लक़ब पाया और काछवा धरमान्न सेठाई में नाम रकबा किमोड बंध व शिर मुड़ाये का काम इसका नहीं रक्खा - व थिरू साह ने लुद्रवा में मन्दिर वीदेसाह गढ़ का पठा बंधाया एक सख्या पठा से कुन्नी धसता वहां सो सोना की हुई थी थिरूसाह जब अहमदाबाद में गुरांजी व खाण वान्चते धर्म लाभ कहा तो सावका पूछा किसको कहा गुरां बोले जेसलमेर का धर्मो सेठ विमान बैठे वंदना किया - तथा सेठ गुमानचन्दजी के पांच बेटों ने राजपूताना में सानी नहीं रक्खा चुनान्चेः उदेपुर जेसलमेर कोटा इन्दोर झालावाड रतलाम अजमेर वगेरः में हवेली मन्दिर बाग नोहरे वगेरह मकानात को ५० लाख रुपया व गाम्भेरण मल का व्याह बीकानेर करने में ८ लाख रुपया व सिंह तीर्थ सेत्रंजा में १३ लाख रुपया लगे और सम्बत् १८ ८२ में पीछे आये जब श्री जी साहब सामा पधारने का कुर्ब व सिंहवी सेठ का खिताब दिया - व खुस हुवे कि ऐसी रैयत है दानमल को

को पैर मसोना व सवाई राम कोजी व मोती लाल को पगमे पीली सा० वगैरह निवाजस करी - और उदैपुर जेसलमेर कोटा वगैरह के राजावो को जनाना सुधां कई दार हवेली पधराये व जैपुर जोधपुर महाराज से भी सेठ का लकब पाया- हरसाल ६ लाख रुपये का मामूली खर्च था फेर आपस की फूट से वह ठाठ न रहा- आपआप का धंधा करते हैं संवत १९ २८ मे हिम्मतरामजी ने अमरसागर के मन्दिर व बाग की प्रतिष्ठा करी जब पैर मे लंगर वेडी इनायत किया तथा त्यानके घर आगे जियादह ये अब ३०० सिंह मे २७ नखां की मोकला ४८ में ४९ हैं पाडादो य १ ऊंचला में शखबालेचा में १ जंदाणी मयाचन्द साह २ थिरपाल साह ३ गोठी हेमराज शिवदान व वरडिया में ४ मोजा ५ तेजसी । काबक विजेचन्द ६ तातेड सुखमल व कूकड चोपडा में - दासोत तो ७ नरपाल ८ रायपाल खताणी ९ कपूरचन्द १० जालमचन्द ११ सुणीया वधेमान १२ लालाणी जीवराज चम्म जीवणदास फेर कु० सिंहवी १३ अचलदास । सरूपचन्द । सूरतराम १४ चोरडीया नेमराज १५ परमेचा नहवरिया जोगी दास व तिआणी १६ हेमसी १७ साहबसिंह १८ श्री श्रीमाल जसरूप मनी मनरूप १९ मालु धर्मसी फेर सम्वत् २० अमरसगरीया गुमान चन्द २१ बडेर लकब काजी देवचन्द २२ वेगड छाजेड आणदचन्द स्यापाडो नोचला में २३ पारख वर्धमान २४ बाफणा गुमान चन्दजो व भनसाली २५ मूलचन्द २६ विजेचन्द २७ गुलेछा तिलोकचन्द २८ कस्तूरा भनसाली कस्तूरचन्द मं० थिरूसाह २९ धाडीवाल नरसल पुरीया जोधराज ३० वोहरा खूबचन्द ३१ स० नवरीया भवानी दास व बागचार ३२ लाडखान ३३ मनरूप ३४ वकोगरी शिरदारमल ३५ वोहरा फूलफगर बहादुरमल ३६ गोधी ३७ राखेचा पेमचन्द ३८ न्हाटा लुणीया मनरूप ३९ बुर्ड ४० सामसुखा राजसी ४१ फोफलीया देवचन्द हैं इसमें मुखीये चोधरी तीन नं १। २३। २४ तथा नव कहीजे सो १२ हैं

नम्बर १।२३।२४।२।४।७।१३।१६।२१।२५।२७।२८ इसमें मुंनामो ४।५।१३।१४ बाकी सब साहनामे हैं - बेटी का विवाह दिशावर से ही आकर जेसलमेर में हीजकरें - और बेटे का चाहे जहां करो। की आवर सादी में बेटे का बाप बरोठी फ. १ सेरू ५ तक माढे के तर्फ में वहेने और सामी वत्सल का जीमन करे सो सेवगा सुधा जीमावें व बर घोडा करे तो सामी बछल के दूजे दिन पारन्नेत में भी दोनों को जीमावे तथा गमी के कार्य में लावण खाड ८१ कच्चा ऊपर ।) आने गछ में ॥) आने न्यात में और मिश्री व ५) रुपया करे तो शहर व बरमसर रूपसी देवी कोट डांगरी याने ५ गाम न्यात में देवें - व मर्द को ओसर करे तो सेवग भी जीमे हैं - तथा जीवरस खमावें सो खाड मिश्री की एवज नारेर बाकी रीत लादन ज्यूं - तथा मोकल व टीप में नाम अव्वल जंदाणी का होवे है - न्यात समधी लिखत संग कहे ज्यूं काजी लिखे जब जंदानी नं० १ सही करके कागज हो रख लेवे: राज में ओसवालों से लिखावट करावे तो भी सही नम्बर १ वाला ही जे करे है - व राज के धुवे के ३२५) रुपये बर्ष एक का व दंड नूंता नजराना वगेरह काम पडे जब होवे जरा सेठ गुमानचन्द पर बाड लिखे जणांमें आध बुट - तथा राज के १००) रुपये में बाड महेसिरीयां पर ७५) रुपये इना पर २५) रुपया पडता है - और सगाई खोल साह हुवा बाद कोई फरीक बदले सो २००) रुपये ओलजभरे॥

महेसरी

भी सानी व सब तरह लायक बल्कि क्रियावरों में जियादा है - मगर गुमानचन्द के बेटा जैसा नाम करने वाला नहीं हुवा - हां एक जब्बलपुर में शेवाराम खुसालचन्द वाले द्रव्य पात्र तो हैं और वहां रुपये लगाये भी परन्तु यहां कुछ न किया है न उम्मेद है क्योंकि यहां आने से ही नफरत रखता है - श्रीजी साहबा बडा पनेसे धणीयाप फरमाय यहां बैठे को सेठ का खिताब व हर तरह से तसल्ली कराई -

जब सम्वत् ३२में नामकी दुकान करी खैर

न्यात केआगे घर२७०० थे वहुत सेदिशावसाये वहां७७०० हैं सो भीरान व न्यात की रोज बराबर मानते हैं और यहां कुल ७०० घर शहर व परगनात मे वडे लोंडे दोनों धडा व २७॥ पाडा के हैं खापा ७२ व मोकला ८१ थीअव ६६ हे मुखी या सेठ १२में ६मडां नामे का १ पाटवी सूरदासोत दोय गोय दानी थेहारूदास व असैराजके १घुरका १जीवराजोत ये ५तो टावरी व धीरन है और ६ही साह नामे के -दो विशानी कानजी व मदसूदन के दो केल किशनदास व मेघराजके- १जेठा१ वीमांणी इसमें कानजी किशन दास मुख्य हैं लिखतमहे जरवगैरः मि १२ साद हुवे हैं -व दोयहीज हों तो १मडा नामे की पाटवी वसहा नामे की वा सानी मदसूदन का करे व कागज़ ही इसके पास रहे हैं सो अव मुनासिब है कि महा जनाउ व हां श्री लखमी नाथ जीके भंडारमें रहे तो सवको वाकफ़ी इनकी वक्त परमिले - तथा मोकलां के नखों का नाम जो मौजूद हैं आगाडी अंक और जो नहीं है जिसके सीधा लगाया है - व धडे की निरणी वडे की दोआने छोटे को १आना रखी है =१भूतडा वाच- =२भूतडा- = ३भठड वीकानेरिया = ४ नांवधर धीरन हीसांनी =५भसूदां= ६ डांगरा=७ वायवी कपूरिया = ८डागा नहार= ९ चांडकजसेरा =कावा हरडुवेगंजहें =१०मुंधडा नागोरी =भ ना गलरा- =११ राठी कोठारी जोवेरा- -१२मालपाणी चोला -१३कचोलीया मु काती -१४डा-गेलकोया =१५डा-पशारे -१६क-नवीरा= १७रा-गुंगावाल -१८ रांवापेच्या -१९ रा-वगडा =२०रा-दूलाल= २१रा-गोहरीया =।लधडजा वर्धाया स्वदलस =।वा-मशानिया धरटावरी कुलधरिया -२२सापडिया कंधारी =।चां सावलजुवारी=।नधीरन=२३सां-जतीदासरा -२४ मन्त्र =२५सां- नोढीरा= २६सां-भ लरीरा=२७भ पलांणी =।मा-देढीया -२८ फोफलीयाजांव

धीया मोटलरा = । सेठो मुंकार केले हेमराजरा=२९ करवाखोली = ३० सां० उजल्ल = ३१ रा० सांगडीया = । डां० नहवरीया = ३२ से० साढडा - ३३ धूत गंगूरा = । हरकठ हडकुटीया = । ह० न्त्राप - ३४ भ० मह्हेरा = ३५ भ० मुहणा = ३६ मल्ल कोठारी - ३७ मलरा ढेढीया = । थूत = ३८ रा० काजलरा ईसराणी = । लोड्या ढक = ३९ सांग भईया = ४० भ० ढेढीया सांगडीया = ४१ आगघणा = ४२ भ० जेठा नरसंगरा = ४३ रा० कलल = ४४ भ० दुढी - । खासट गोरेरीया - ४५ डा० कुलधरीया जो सहा गढ़ीयां हैं - ४६ का० देवानन्द = ४७ चा० वजाज चांदाणी = ४८ मंत्री - ४९ सोनी कलबीया - ५० भा० लीलाणी = ५१ चां० जोगड़ - । रा० लीलांणी = । झांवर - । भ० दिलवारी = ५२ रा० लाटीवाला = ५३ भ० हाथीरा - ५४ खा० दुर्जन = । मां० परवतरा०

न्यात सम्बन्धी चौथावर था ये जब तो सब नख व खाड गले व न्यात जीम्मे व लांव या नालेर बहेचे जब १२ सेठां को बुलावे हैं - और सूवसोज मांणात नख तांणा बगेरह में जीम्मे तो सब न्यात जीमें तो सब न्यात पण बुलावे भाई पडोसी गना यत भाय में बहे चणा व बटा भी ओसर से आधे हैं - तथा सगाई खोला बदले सो ओलजमरे - स्या० ब्रह्मभोज फलबंध वगेरह करे सो १२ सेठों से पूछकर आ० पुष्करनो के चौधरीयों से आगनिया लेवे - दक्षिणा महानामा में चांदी सं० २२ से हुई जब ब्राह्मण से लिखा था कि दिली दक्षिणा रोटा दाल जीमन में उजर नहीं करे - तथा चौथा वरो पर ऊपर की लाग व बहेचना हद से परे हो गया है व और ही रीते जो जो दशा है सुधारा होना जरूर है - तथा पोकरन के महेसरी यों ने कई मनुष्यों की कूटी बात पर गोसाई के वसे कहकर लिखत किया कि जेस लमेर बेटी नहीं देनी ज्यूंही कोली को है आ० ओसवाल महेसरी कहते हैं कि हम पोकरनिया के पीछे हैं और धाटीयों ने सदा से संगपन करना किया इसमें तीन जग ह इज्जतदार बड़े शरमन्दे हैं - यहां से सम्वत १९०१ में कामदार व १२ ही सेठ -

[illegible] धे पलुगापाळी

पोकरन जाकर हरचन्द कहा कि पुल्लों का न्यातने मत तोडो परन्तु नहीं माना पोकरनेया इलाके हहाजा में रहने वालों ने सम्वत १४ से लिखदीया था किलिखत पढा वगेरह था जेसलमेर में रहकर दुमारा से बेचेंगे - सगपन होना चाहिये सेठो ने कहा ठीक है - पर यूंही रहा - वहां के लायक शख्स यंछि ताते हैं कि डोले ही बीकानेर जोधपुर लगये पिण ढाई सो लडकी बंधली हैं कैसे निकलेगी किसे तरह लिखत फटे तो ठीक हो तथा यहां वाले योजूं कहते हैं कि पोकानेया से छुट्टी हुई तो जेसलमेरीया जो दिशावर से सिर्फ सगपन के लिये आते है सो होनहो आवेगे देखिये अब क्या हो॥

भाटीया

भाटी राव श्रीतणु जी के छुठे कुवर जाम के बंश का महाजन आगे यहां २७०० थे अब १२५ हैं मगर सिंध कच्छ बुम्बई में हजारों घर बडे हो द्रव्य पात्र व साहूकारो मे नामी थामी हैं और शास्त्र बिलोकन करने से धर्म्म के पाबन्ध व सुधारे ने स्त्रिये का अभिमान हद भर रखते है चुनाचे - उत्तम बरन हिन्दू व कोम भाटीया व जिस देश मे व गाम का बासिन्दा है उनके भलाई व आराम फायदे के लिये देशुमार रुपये लगाकर इसकूलो तालाब कूवा मान्दिर वगेरह २ कई पडबंध कीये व कर रहे हैं इनके हर तरह की खूबिया लायकपने की सुनने से इस बात की खुसी जियादे होती है कि भाटी बंशी ऐसे हैं तथा संसार उत्पन्न होने से आज पर्य्यन्त का हाल दरीयाफत करने व अपनापने की निशबत ख्याल रखने में कमाल कीया है परन्तु मध्य का याने बंश भाटी से यह कोम पैदा हुई है असल वत्न मे सुधारे व नांमुज वगेरह का कुछ भी ख्याल न किया मालूम नहीं सबब क्या है हां गोकलदास तेजपाल के धर्म्म फन मे से लखमी दास खीमजी की सलाह से एक कूवा मेजेजायन मे बनाते हैं अब यकीन है कि जेसे कच्छ वगेरह देशमें वासन्दापने

का लिहाज से व तीर्थों पर जो जो काम किये हैं यहां भी करेंहीगे क्योंके हरसाल वाजब व फर्ज है तथा मालूम होता है कि इनके भाट कई बरसों से नहीं हैं पारसाल जुनी पोथी लेकर दो जने असल वक्त समरु के यहां आये थे परन्तु यहां वालों ने कहा था कि बम्बई जाते फेर न मालूम कहां गये ॥

परगनात में पल्लीवाल

जो गढ़ नाल्हण में कोम ब्राह्मण ननवाने मसहूर थे गढ़ टूटने से पाली इला कई मारवाड में जारहे थे यहां ही महाघोर हुवा कि १ दिन में ९ मन जनेऊ उतरी जब बिखर गये भारी ग्रोह गाम औला में आकर पल्लीवाल कहलाये फेर इलाकह हाजा में हर ४ तर्फ याने शहर से पूर्व ४० दक्षिण २५ पश्चिम २५ उत्तर ३० कोसके बीच में जमीन खरीदी व हजार हां रुपये राजमें देकर मंगलीक कराई व हासल ही देना करके ८४ गामों में २०००० घर सबजात के बसाये तथा धुंवा सरा आदि न हु‌ आसी लागें यह खुद व गामों में रही यांके सिवाय मोदी वोहरे वगैरह जो इनसे रोजी कमाते सो इजारा भरते थे तथा मकानात उमदा बनाने के इलावा खड़ीन बजे मुहार नावरणी हरराजेसर सोनरण कुक्या खरीगा बटीया लांगेला काठोडी सीतसर लठीयर ईसाल द्रगोरा देवा ऊपरला मुदेला सूजप टेड्या धनवा चोवीरा खीसर बलासा साजीत मनचीतया वगैरह वगैरह नामी मौल जो खड़ीन उनाल् शाख पैदा होने के सदहा कबजे किये और धन्न रोटी वगैरह मनवार व ऊट घोड़े शस्त्र वगैरह सरदारगी का ठाट व दातारी वीरताभी बड़े जागीरदारों ज्यूं रखते व शादी गमी में वेसुमार रुपये लगाते थे जमीन का हासल व जिन्स का महसूल व लाग रक मों के सिवाय दंड नजराने सुकराने वगैरह हर तरह से जो गाम काठोडी में *मन्दिर बनाने पर वाहमी तकरार से ८४ हजार भेला हाजुल क्यास किरोडों रुपये सिर्फ ज मीन ही की पैदावारी से राज में दिये सोनाकी चिडीयें कही जो ज्यूं ही सम्वत् १९६०

*परमेश्वर का खेल है कि आज दिन उन्ही पल्लीवाल धन्य वान ब्राह्मणों के गाम सूने पड़े हैं और इनके मकानों पर उल्लू बोल रहे हैं कहा जाता है कि दीवान सालिम सिंह ही ने उनको उजाड़ा ॥ ऊ० मो० खुशहाली

से १९०० तक उडकर दिशावरे गई कई गाम बीरान हो गये श्रौर बाज २ गाम मे रहे है सो एक गाम वाय मे तो सम्बत १४ के बाद ६० अस्सी घर बचे बाकी तो मात्र गामों मे इतने ही नही है बस इसके सिवाय क्या लिखा जावे कि इस देश से श्रन्नजल उठ गया फेर तो महारावलजी श्री रनजीतसिंहजी साहब राज ब्राजे थे जब से इन्हों के पीछे श्राने के बहुत ही उपाय किये सो अहले गये कि बाज २ गाम में कोई २ श्राया भी पर रह सका नही श्री दैरीशाल जी साहबा की उमरदराज हो सम्बत ४० बाद भला श्रादमी खास चतुर्भुज दास वगेरह को भेजाया श्रौर बहुत सी लागे माफ व कदर इज्जत बढाने वगेरह खातरी लिखाई जबाब मे श्ररजी कागद भी श्राया कि जमाना श्रच्छा श्राने से हाजर होगे मगर चार शाल से कहेत ही है सम्बत ३ के बाद इन्हों के श्राने की उम्मेद पर जो २ लोग जाट बिसनोई सिधी वगेरह २ श्राये तो दूसरे गामों पुरानें या नया मे बसाये गये श्रौर इन्हों को इश्तिहार दिये कि श्रब भी नही श्रावेगे तो दूसरे लोग बसाये जावेगे क्योंकि श्री जी हजूर की मनसा मुल्क श्राबाद करने का है - सुनाने - कई बार दौरा करा के मात्र देश व गाम नजर मुबारक से देखे व हरएक को खातरखाह तसल्ली श्री मुख से फरमाई यकीन है कि यह लोग भी श्रावेंगे श्रौर जमाना - श्रच्छा श्राने पर दूसरे तो श्रावेहीगे॥

हजूरी

जो नंन्ने रनवाश याने खानेजाद हैं श्री जी साहिबां की खाश खिदमतगारी के सिवाय मात्र कारखाने राज्य के शहर व परगनात में मुख्तमारी दरोगाई किलेदारी व हवालदार छरीदार चपरासी कनवारिया बीश्रारी व सबार सिपाही खिदमतगार व घोरो का पड़व वगेरह की नौकरी देते हैं २५० घर छरीदार गोड़ वगेरह कई जात के हैं महारावल साहिब के धमा व भाभा भी यही लोग हुये हैं - श्री श्रखैसिंह जी साहिब के पासवान नेन शोभा का नेन शोभारा कई श्रोहदो पर थे श्रब भी श्रजीतमल तोशाखाना

* बेफायदा

व फील खाना का दरोगा है ऐसे ही श्री मूलराजजी साहब के पासवान खुस्याली का जीवन जी रामजीदासजी डाकरो कहलाये व ऐसे कृपापात्र थे कि जहां स राजी राम जी जहां राजी मूलराज इनका बेटा सेतसी तो कवर कहीजता और सतराम जगमाल वगैरह कोटों में किलेदार थे व पौते अब भी हैं व गणेशदास कोठार तबेला का दरोगा व कोंसिल में भी सलाहकार था ज्यूं ही अब पोता बलदेवदास सुतर खाने व सांढां के वर्गों का दरोगा है तथा मालजी तो नेकनीयत सन्तोषी याने येहू गुणी जो श्री जी साहिबों के पोशाक पधराने वगैरह खाश खिदमत बजालाकर के बारस का नकशा रजीडन्टी भेजने व मुसव्वर व फोटोग्राफ का काम करने व व देशी डाक्टरी का काम पाटा बांधने में आदने बीमार को भी नित्य देखने व तोप खाना सम्भालने व जूरूराज का काम भी कोठार तबेला की दरोगाई का देने वगैरः बहुत से काम करने पर भी फुरसत में दीख रहा है तथा श्री गजसिंह जी साहिबों ने नाई मालदान को हजूरी कीया सो रसोड़ा व शराबखाना व घाटों का दरोगा था ज्यूं ही अब पोता जेठमल है व छड़ीदार रामसहा का बेटा गिरधारी तोशाखाना व बागों का दरोगा व पोता प्रभू दरबारी है। तथा कौम मजदूर भी हमाल काहार फ़र्रास चोबदार उस्ता चूनीगर भिश्ती गाडीवान व ताइफा कलावत डूमों भाडों वगैरह का दरोगा व तबेला में कई काम चमारों की दरोगाई वगैरह का देते हैं इनकी औरतें भी राजमें कठयानी व शहर में दाई पने वगैरह की चाकरी देती हैं॥

कौम मुसल्मीन

परगनह नम्बर ७ सम में ९७ नाचणा तक में जो लोग सन्धी कहाते हैं ३०। ४० बर्ष पहिले ऐसी दुर्दिशा थी यथा - खीपोरा खोलरा ओन मुटी खाईजे मुक्ता जुयादि - मोहि खाण हू जो खाईजे कूआं पुरसों ६० नीर बले जिणरो खारो इले ऊठ हाकजे दूध पीजे अण्यारो जीवता मनुष्य भूतों जैसा पशू पसमचा पंगरा। तिणदेश जन्मतेजल

नवे रखे दो एथास्मणा ९ सो रूपे तो अब भी सुसयोसही है मगर हरतरह समझाने खेतो
लगाने व खातर परवरिश करने से आसूदे होकर कपडे शस्त्र सजाई वगैरह अच्छे रखने
के सिवाय शादी गमी मे हजारों रुपये लगाते हैं ज्यूं ही आदमी भी बहुत बध गये
राज में हजारों रुपये देन के अलावा खालसे की भारी फोज भी इस देश में कामकेलिये
येही लोग हैं - तथा भारी कवाह न है कि मदेशी को अच्छे चारे में रखने वास्ते खाना वगैरः
तो येही कभी न देने की नीयत वद से इलाकह गैर में जा रहते हैं सम्वत ४९ से ठीक
तदबीर कीगई है कि कई तो पीछे आये व दूसरे भी जमाना आने से आवेंहींगे तथा
इन लोगों में बडे आदमी का लिहाज व अहसान रखने की ऐसी मुव्वेत थी कि खून
तक केसाही रुगडा हो भाई गनायत या भले मनुष्य मेड कोरेके मुदई से माफ कराते
थे और कोई सख्श मुफ्त उधार मांगने को गोठ में आया या किसी संधी पर आफत है
तो हर घर से हैसियत मूजब छाली बेल व ऊंठ तक देकर हाजत रफा कर देते थे सो
अब कमीना बो कमीनाके वायस अब नहीं है यह हवा हो गई है व कौल सिंधी दो
काचो कुंम कडाकियो सायर मरुगया तिरा तो बाहा पोहजी न कर सडबेया १इलाकः
हाजा में यह लोग इतनी कोम है माहोर मंगलीया राजड रंद बलोच भईया वंभरा
पठान लंघा जंग कोहरी रूमा गजू कलर कदाऊनर खालत देवत कोटवाल चानीया
जावध जोइया भुटा पहोड संमा समेजा हीगोलजा फकीरजूणेजा नोहडी मच्छा
लाड धुकड सेख सय्यद टावरी सेखजादा धुनिया तुवर भटी आलीसर पन्नूमेन
सोदा सोरा थोबेचा खुई कमी दरस लधड सर नायक मकोल वगैरह वगैरह जो
सिंधी कहाते हैं॥

अजायब बातें मतस्सह हैं

बाजे साढों का वर्ग व ढंगों बकरी भेडों को दिवाली से होली तक तस्याली करके
साढे चार महीने जंगल ही में रहते हैं पानी नहीं पिलाते और घास नीला व तूस होतो

गोवा भी पानी नहीं पीते हैं सो तो खैर - परन्तु उनके ग्वाल भी सिर्फ दूध व खट्टा ही पीते हैं धान पानी मुतलक़ नेस्त २ सायद अंतजून होगा - गैब या कंग का आलम कहाते हैं सो परगनह सम मह्वाजलार सहागढ़ घोटडू तो ईलाकह हाजा व परगनह जिवाई - खैरपुर व परगनह मिठडाउ इलाकह सर्कारआली में हैं मनुष्यों से अदृष्ट वस्ती गैल्ल व मवेसी व वहवार मनुष्य ज्यूं है - बाजे बाजे मनुष्य जो इन्हों के गडायत है सो इन्हों को देखे और दिखाय भी सकते हैं - तथा दुनिया में भली बुरी वरतने की कहे ज्यूं होवे ही है - और दूसरे मनुष्य या मवेशी पर बाया या दाव ह्वांवियो का लगे तो तुर्त या मुद्दत में बीमार होकर मरजावे सो उनसे मिलता है - परन्तु उनका गडायत आकर फीणा नारवे उतारना करा के बचाय भी लेता है - कहते है कि इन के मालक परगनह सम गाम कनोई ख - मिट्टी अला में रहे है ३ गाम छोडिया की सींव में तो दिवाली के हीडे व आला में पाबूजी के थान पर दीवे और गाम नेडान कराल्लिया वसी में होली गेवाउ दिखलाई देवे है - सो कहते हैं कि मलीनाथ की होली जगती है - चुनान्चे: ठरडा के पोकरने कायल हैं कि जिस साल होली ज्यादह होती है जमाना अच्छा व गामों में व आराम रहेंगे - ५ फकीर सांघ पोता की जबान से अवाज हुउ हुउ अहा हा सुनने से दिवाना कुत्ता व स्याल नहीं होवे व काटे का असर न रहे - जिससे इन को ९७ रुपया व पाग थान सीरना तो राज्य से व फी घर १ पैसा लोग देते हैं - ऐसे ही चेचक टांकने में विरडी फकीर इलाकह हाजा में हैं ६ देवतों के परचे व भूत भोमीये की बातें तो बेसुमार हैं - ज्यूं ही जोगी राज सिध व फकीर वर्कत वाले थे चुनांचे - फतहपुरी जी ने तो जैपुर के राजे को जी थाराम ने चूक किया उस वक्त अफसोस से कहा कि ऐसा हुवा - व फ़कीर रसूल ने कु - माली गड़ा - जो आगे किसी फकीर ने सुकाया था सम्बत ९७ में मुकाम पर ज़ाग के कु - मीठा करा दिया अल्लाहाजुलक्यास हरयाल पुरी लालपुरी खेमानाथ महरलाल वगैरः

थे ऐसे अब नही है ६ घास मधीया से चमडे को रंगे सो मधीया जिसका चडस व गाय के आला चमडा की बरत सो गोहडी कु० मे डालने का मनाई परद्दी द० प० के गामो में है - परन्तु गाम जगन आली का कू० देवी के नाम से मालणसर पु० ६० मील है उसमें ऐसी मध्माई हो तो पानी शूक कर कीडे सो गंगाजल डालकर तोबा करने से अच्छे हो ७ सिधी लोग पैदल चलने में कमाल करते है सादा के पीछे न मालूम दिन भरमें कितना पैंडा करते है कोहरी गोद राम आधमन बोझ लेकर ३ पहर में ४५ कोस सहज स्वभाव से चलता था ऐसे बहुत से है

कलमी फौज

दफे: २३ जो कि पलटनो में रिसाले याने कबायद फौज आगे कभी नहीं थी भाटी सोढे वगैरह हिन्दू व मुसल्मोन देशी व काम पडे पडोसी इलाको के भी हाजर होते थे - श्री लून करनजी कंधार से पठान लाये जब से श्री अखैसिहजी के अहद तक सवार व पैदल यही कंधारी बडे इतबारी रहे फेर खोसा जमादार साहबखां के सवार भी रक्खे और श्री गजसिहजी साहब उदैपुर से पीछे पधारते गुसांई भैरूंपुरी का निशान याने पलटन साथ लाकर बेडा मुकर्रर किया॥

पलटन

याने पैदल का बेडा १ महेन्त भैरूपुरी का बेडा जो गुरू महाराज का निशान सम्वत् १८०७ से है महन्त १ भैरूपुरी २ सावतपुरी ३ सताबपुरी जो कोट विक्रमपुर से सम्बत १९०० में बरसंगा से खूब लड कर १४ मूर्ति के साथ कैलाश गये ३० मूर्ति घायल होने के बाद निशान यहां आया - ४ गंगापुरी ५ खुमानपुरी ६ धोतेपुरी अब है तथा गुसाई पदम पुरी हिंगलाज से आकर बिलग बेडा किया था सो चेला घरबारी होने से न रहा - २ रसंवदार खुदेखा पठान का बेडा किया था सो वे अदबी पेश आने से सम्वत् ८४ मे

पठान अलीखां जीवनखां को जो उदैपुर से साथ आये थे सूंपा गया - फेर सम्वत् ८६ में कंधारीखां कोटा वाला को सूंपा - इसके मरे बाद सम्वत् ८८ में पठान मीरजी को सूबेदार कीया था सोही सम्वत २ में मरा जब बेड़ा टूटा जवान वाघसिंह के बेडे में जा रहे - ३ बेडा सूबेदार मोहकमसिंह अजबसिंहोत पुरबिया का सम्वत् ८१ चैत्र में हुवा - मोहकमसिंह सम्वत् ९६ में मरा जब बड़े भाई केशरीसिंह का बेटा बाघसिंह सूबेदार हुवा सो सम्वत् ३६ में फोत हुवा जब से बेटा कन्हीसिंह सूबेदार है - ४ अरदली का बेड़ा सिपाई कंधारी जमादार केशरीसिंह पुरबिया व जसगिर गुसांई सम्वत ९६ में हुवा - केशरीसिंह सम्वत् २ व जसगिर सम्वत् २९ में मरे जब कंधारी जानेखां को जमादार किया सो सम्वत् ४० में मरा बाद - जं - बगुलाखां है - मौजे गोमट इलाकह पोकरन के गोमटीये महोर नाराज होकर सम्वत् ११ में आये जब ५० नामा शहर व हकूमतों में नोकर रक्खे - जं - करसी व कादुखां थे सो सम्वत् २३ तक रहे फेर मतेही पीछे गये - परगनह वाय में जो पहले से गाम व नोकरी में थे ज्यूं ही हैं - कप्तान पूरनसिंह पुरबिया वहाबलपुर से सम्वत् १२ में आकर बेड़ा भरती कीया सो सम्बत् १६ में चोरियों की तोहमत से टूटी - रसालदार सुलतानखां पठान सम्वत् २० में नोकर हुवा सम्वत् २२ में बेडा भरती किया सम्वत् ३२ में बेअदबी पेश आने से टूटा - दादूपंथी भंडारी भगवती दास का बेड़ा जोधपुर से आकर सम्वत् ३० में नोकर हुवा सो सम्वत् ३५ में पीछा गया - देशी रजपूत अरदली में व अहलकारों पास वगेरह नोकरी में हैं परन्तु एक जमादार नहीं के कारण बेड़ा का नाम नहीं हैं - तोपखाने व जेलखाने पर पहरे व शिकार कार में सर व बलोच हैं इनके हवालदार जुदे २ बेड़ों से विलग हैं॥

रिसाला

सवार - १ सिपाही कंधारीयां पास तो घोड़े बारगीर थे सो सम्वत ४१ से नहीं है पाइधा

के पंडे बहुत काम देते है २ खोसा-जं साहबखा के घोडे शहर खास मे व हकूमतोमे थे ज्यूंही है परन्तु कम हैं २ मिट्ठूखा ३ पीरखां ४ साहबखा अब है - ३ जं फतह सिंह शिकव का रसाला सम्वत ५ से है फतहसिंह के मरे बाद जं- बेटा विस्नसिंह व भाई मफ्तानसिंह है दोनों के सवार अब हजूरी सिपाही वगैरह यहां ही के रहते है - ४ जं मिश्रीखां दरियाखान का खोसा मौजे तखतावाद इलाकह मलानी का रसाला सम्वत १४ से सम्वत १९ तक रहा - फुटकर सवार व पैदल देशी परदेशी शहर व हकूमतों बगैरह में कई रहते है परन्तु १ अफसर नही के वाइस बेडा का नाम नहीं है - शरह तनखाह पैदल सिपाही की चार या पांच रुपये व हवालदार के ५) रु से ६) रुपये व जमादार सूबेदार के १२) रुपये से १८) रुपये व सवार के ७) रुपये से ८) रु० १०) रुपये - व जमादार के १८) रुपये से ३०) रुपये तक महीने के है और नोकरी कायदे से नहीं ली जाती सिर्फ श्रीजी की बड़ाई से परवरस है वक्ती महता रत्नलालजी॥

अहवाल असियाइ नसा व शकुन

दफे : २८ नसा अफीम तो बडी बडाई है लखें रुपये का कोठा व मालवा से आता है खास शहर के ब्राह्मण महाजनों में बडे आदमी बाकी सिलावटो के सिवाय मात्र कोम व सर्दार आदि देहात के मात्र लोग खाशकर पल्लीवाल तो इष्ट के बराबर मानते है व कहते भी है वडो देवता के शरियो कंवर है तथा १ दूसरा मिले है तो बजाइ चाइपान के यही मनुहार है और बेटा पैदा होने व सगाई बिवाह व तिवहार मजलस यानी खुसी में तो गालवां व गमी उदासी में कोरे की मनुहार होती है व रंज आमना बल्कि बाल बूर भी कटाने मे अमल पाते हैं क्रि किसी गाम जाकर मनवार करो तो गाम वाले सब तरह दिल से हाजरी करेगा व बीमारों मे भी अव्वल दवा यह है कोई आदमी सुस्त

हो या घर गया या शकुन हलका हुआ या छींक उबासी खाई तो अफ़ीम देवेहींगे व शादी ग़मी के बाद या मुसाफ़िर वगैरह कहीं जाकर आवे उससे अव्वल यही पूछेंगे अमल मिलना लगा या बच्चे को भी ३।४ साल तक देते हैं बल्कि बाज़ बूटी का ही अफ़यूनी है अर्थात् हर काम में यही मुख्य है अगर सोचे तो इसके गुण से औगुन कई दरजे बढ़ कर हैं कि अमली हमेशे दोनों वक़्त बीमार व कम वेश देने लेने से कई तरह का दुख होता है शरीर में लवन खुराक व मग़ज हिम्मत घटै है वगैरह वगैरह कहां तक लिखे जावे परन्तु इसके औगुण ही दिलोंजान से यहां तक कबूल करते हैं के रोज़ी कमाने वगैरह फ़रज़ी कामों से भी यह अव्वल है हां निकम्माई में मनुहार से दिल लगी व मेल व्याल ठीक होवे है - तलाश करिके इस निर्धन देश मे इतना खर्च लाहासल वह से क़बूल करने का बाइस क्या है तो वाहीयात फ़ायदे बताये कि यह सती मर्द वक़्त लड़ाई के मदद देता है वगैरह २ परन्तु मालूम होता है कि ला इल्म व निर उद्दम आदमी थे और हैं जब कभी इल्म पढ़ कर नेक व बद का तमीज़ करेंगे व उद्दम में लगेंगे जब रिवाज घटैहीगा जैसे मारवाड़ में घटा है - ऐसे ही तमाकू का बिसन सबके है कि खाना पीना सूंघना व मनुहार का रिवाज़ हद है फ़ी घर दरौसत ५) रुपये का खर्च साल भर में होगा अलावा पैदा देश के करीब एक लाख रुपये की इलाक़ा सिंध व मारवाड़ व मालवा वगैरह से आती है तथा शराब का रिवाज़ कम है क्योंकि देहात में तो पीते नहीं और नहीं किसी गांम में बनाने वाला है अगर सरदारों के शादी में पीते हैं तो बीकानेर फलोधी पोकरन बाड़मेड़ से मंगाते हैं ख़ास शहर में भी १ दुकान कलाल की है व पीने वाला भी सिर्फ़ सुनार पातरियां व कई सिलावटे मजूर हैं राज के मुलाजिमों से राज से मिलता है वह पीते हैं कलाल सेठ का नहीं है फ़ी दुकान ५) रोज प्राति दिन अथवा यार बारे नेवार को १ सीसा लेते हैं व राज में परी दें तो निस्फ़ कीमत से तथा चर्स का तो नाम नहीं है भांग व गांजा लाडी देवानोख ओल्ला लिखवा में होता है पीने का रिवाज़

भाग शहर में तो व्यास भोजक बाजे ओसवार तो हमेशा बाकी लोग मजलस मौका पर तथा गाजा अतीत लोग पीते है देहात मे मुतलक नेस्त॥+

शकुनों का रिवाज अज़हद है

जोतिष व महूर्त्त से बढ कर जानवरों का एतकाद है कि आषा तीज को जंगल में जाकर देख नेसे जमाने आदि साल भर मे नेक व बद का ख्याल कर लेते है और फेर किसी के कोई काम की मनशा हुई तो दोनबार को शकुन देखेंगे जो दिल में ठाना वेही हुया तो काम सिद्धि अगर सफर जाना है तो वक्त रवानगी के दिन का तो अव्वल बायें तीतर खरचील अरु दायें पालब हरण होने बाद दायें तीतीर बायें पालब ऐसे ही मंजिल के आखीर में या दिन छिपते दाये तीतर बाये पालब हरण तथा बीच मे दायें नाहर को उबेड़ा कहते हैं देखा तो अतीव शुभ जेसे राज्य का बचन परन्तु इसको पूज करके कई पहर ठहरना होगा और रात्री को बायें स्याल दायें कोचरी बहुत शुभ और बरखिलाफ २ मानते है सो ठहर कर अच्छा सगुन हुवा तो चलेंगे तथा जर्ख या नाग या नौलिया देखा रात्र को नाहर या कोई बोला तो नही ज चलेंगे अतीव नेष्ट है हकीकत में शकुनों जैसा फल होवेहीगा तथा जानवरों के देखने व बोलने में बहुत ही बारीकियां भी निका लते है कि कोनसी दिशा मे बोला वहां कोन बार है दरख्त कैसे पर था वगैरह २ मगर सही ऊपर लिखा सोही है सिवाइ इसके घरसे निकलते ही शकुनो का ख्याल रखेगा कि कुत्ते ने कान हलाया या बिल्ली आडी फिरी या किसी ने छींक खाई या आडी जवान किथ कारी दीया तो ठहरेहीगा और गीत राग वगैरह शुभ आवाज यानें तोप का चलना नक्कारा व घडियाल बजना अच्छा आद मी सामा आना वगेर- को शुभ समझते हैं तथा वसन्तराज की छाया को प्रवीन सागर मे शकुन भेद लिखे हैं जिसका खुलासा है कि चक्र के घेरा ८ के ऊपर के घेरे मे पूर्व आदि दिशा व पतियों

+बिल्कुल नहीं

के नाम और नीचल्ले ७ घेरों में पती अपने घर है या किसी के पाहुंणा है सो अव्वल पूर्व दिशा का पति खेडु दीतवार को। ऐसे ही अनुक्रम वार से अग्नि रजपूत दक्षिण राजा नैऋत वैश पश्चिम ब्राह्मण वायव वादशाह उत्तर भील अपने घर है अरु बाकी ६ दिन विलोम गती से अलावे ईशान कौंन के याने सोमवार को खेडु भील के घर उत्तर में पाहुंणा इसी तरह सातों ही फिरते रहे और ईशान कौंन को थीसर इस अचल है॥

फलाफलम्

दिशा वा के पती की जाती स्वभाव से व पाहुंणा जिसके घर है उससे व्यवहार बम्ज़व समझना अर्थात राजा के घर वैश है तो रीत की बात है अरु ब्राह्मण के भील विरुद्ध है अलाहाजुलक्यास तथा चक्र के घेरों में आंक दिशावां का १ पूर्व से ८ ईशान तक और वार १ दीत से ७ शनि व पती १ खेडू से ८ इस तक जानना सिवाइ इसके ८ ही दिशा के बीच ८ विदिशाओ याने पूर्व अग्नि के बीच अग्नि और ईशान पूर्व के बीच में लोहू की नदी तक ८ ही नाम चक्र मे मये शुभाशुभ हरएक खान में लिखा है अगर ऐसी जरूरी है कि बुरे शकुन होने पर ही ठहर नहीं सक्ता तो पढ़ना चाहिये॥

श्लोक

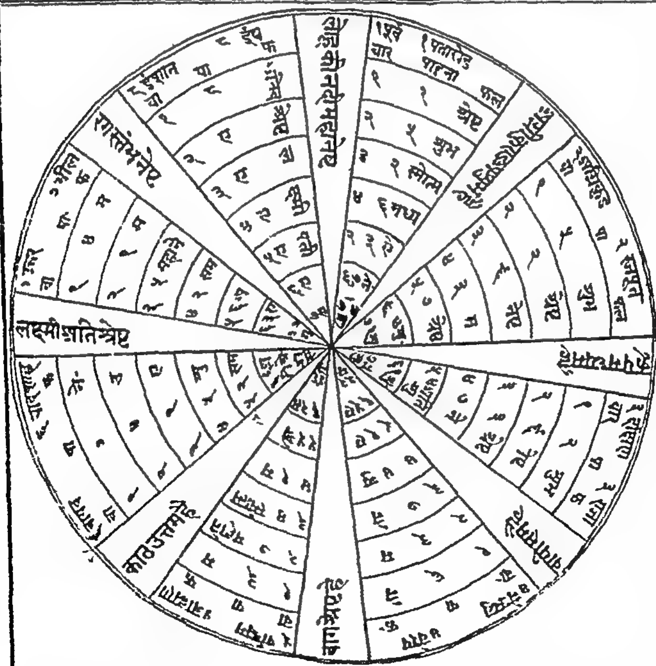
वाराणस्या दक्षिणे कोणे । करकुटो नाम ब्राह्मणः

तस्य स्मरण मात्रेण ःअपशकुनो शकुनःभवेत ॥१॥

श्री ॥ जो कि रमल शकुनावली अनेक हैं परन्तु वैष्णव के अन्याश्रय नांही होने को गोस्वामीजी महाराज श्रीगिरधरजी ने प्रश्नावली लिखी है कि सेठ पुरुषोत्तम दास के ८ प्रश्न का उत्तर श्रीमद आचार्य्यजी महाप्रभुजी ने दीये ज्यूं ही फलाफल हैं सो अनजान मनुष्य से १५ तिथियन में ३ के नाम लिखाय संख्या में ८ का भाग ते बचे तो अंक प्रमाण मन में चिन्तव्ये कार्य्य की सिद्धी असिद्धी जानना।

प्रश्न १ दंडवत कीनो। **उत्तर** आशीर्वाद दीनो सो कार्य्य अतिव शुभ॥

प्रश्न २ काशीयात्रा करेगे या नही **उत्तर** नाही सो कार्य्ये सिद्ध नाही॥ **प्रश्न ३** वैस्नव काशीमे आवे सो कहा करे **उत्तर** तीर्थेअस्नान विधि पूर्वक करें सो कार्यश्रम साध्यजानो॥ **प्रश्न ४** वैस्नव दुर्गा देवी के दर्शन करे कि नहीं॥ **उत्तर** हसा अधिक है सो नाही करे-सो कार्य न होवे॥ **प्रश्न ५** विन्दमाधव के दर्शन करे कि नाही॥ **उत्तर** पचगंगास्नान करिके करे सो विलम्ब सिद्धो है **प्रश्न ६** वैस्नव पचकोसी करे कि नाही॥ **उत्तर** इच्छा होयतो करे आग्रह नाही सो कार्य बनवा॥ **प्रश्न ७** मेरे घर पधारिये वहां उतरिये॥

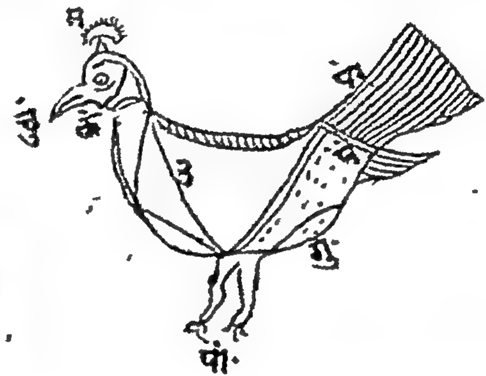


उत्तर अच्छा सो कार्य्य तुर्त सिद्धी होय॥ **प्रश्न ८** व्रजयात्रा में महादेव देवी आदि अनेक देवलों के दर्शन करे कि नाहीं॥ **उत्तर** व्रज के सब देवता बैश्नव हैं सो जरूर करना नातो कार्य्य अस विलम्ब ते होयगो॥

तिथिन के नाम लेने से पहले पढ़ने का **श्लोक** नसु लोके सु यत् सत्यं यत् सत्यं वेद बादसु। पती ब्रतासु यतसत्यं तत सत्यं मम दर्शनम्॥ इति शुभम्॥

चिड़िया के किसी जगह अनजान आदमी अंगुली रखवे जिसके फलाफल का॥ दोहा॥ चिड़िया

चंच दुख पंख मरन कराठे हो सिध काज॥
उदर भोजन गुरू धन मस्तक पावै राज॥
जो सुकलीणी पांय पडे तो पक्षी आवे आज॥



मेला

दफै: २५ दिशावरी ब्योपारी आने या कई दिन हज्जूम रहने का तो कोई नहीं नाम के मेले तपसील जैल्ल है - कोम ओसवालों का सुबह से साम तक बाग अमरसागर में - १ कार्त्तिक सुदी ३। दूसरा चैत्र वदी २। तीसरा भादों सुदी १० को इन्हों की अर्ज़ खातिर से श्रीजी साहब भी पधारे थे। ब्राह्मण पुष्करना का बड़े बाग सब दिन बैशाख सुदी ७ व भादों बदी ७ व तलाव घरसीसर सांम का बैशाख सुदी ४ व श्रावण सुदी ४ व भाद्र वदी ४ व मन्दिरों में चैत्र सुदी ८ इसोड़ा का। महेसरीयों का बैशाख सुदी ७ श्री गंगा जी का जन्म वुधी के कुण्ड में न्हाय के अमर सागर आते हैं व भादों वदी ७ अमरसागर श्रीजी साहब भी अर्ज़ व खातिर से पधारते थे - इसमें किसी को मनाई नहीं - ब्राह्मण व महेसरीयों का कार्त्तिक सुदी ८ अवला की पूजा मूलराजसागर का मेला था अब अमर सागर का है - व घरसीसर का फागुन वदी १४ शिवरात्री श्री महादेवजी के दर्शन को

श्री जी साहब भी पधारते थे व वैशाख सुदी ३ नीलचास देखने जाते हैं - सरकारी मेले चैत सुदी ४ गनगोर की सवारी मये लवाजमा घडसीसर और तारा अस्त हो तो मन्दिर पधारे - तथा दसहरा का आश्विन सुदी अष्टमी या नोमी को गढ के चौवटा में आम दर्वार होकर हाथी घोडों की पूजा आरती के बाद बकरे पाडे वध होते हैं व सुदी १० पर दरवाजा से बाहर चोगानिया पाडा निकालने को खांडा की सवारी बडे ही ठाठ से होती है व श्री जी साहब या ढाल तलवार से पधारे हैं व नजीक परगनह के हाकिम भी मये जमीयत खेडू आते हैं - आम मेले घरसीसर श्रावण सुदी ३ हरियाली व भाद्र वदी ३ कजली का साम को तलाव भरा हो तो गाहे २ श्री जी साहब भी पधारते हैं - व भाद्र वदी ५ तलाव महता सर केशरीये कुंड का मेला महता अजीत सिंह जी नवाजः करते हैं - व भाद्र वदी ४ श्री गनेश जी का मेला तलाब गंगासागर का था - सो तलाब ईशरलाल जी के होता है - व माही भाद्र सुदी ६ तलाब गजरूपसागर श्री स्वागियां जी के दरशन व सुदी ११ रामदेव जी का मेला तलाब गुलाबसागर व सुदी १४ रावतसरीयों के थान - ये चहू मेले तीन जगह सम्वत् १३ से हुये श्री बडे हजूर पधारते थे - व भादो सुदी ९ सरएा का मेला शहर से उत्तर ४ को - जहां सिद्ध जोगी की गुफा है - चमार लोग सब रात शब्द बोलते हैं व चैत वदी ७ श्री सीतल देवी का तलाव देदानसर सम्वत् २९ से होता है - अव्वल तो रानी जी साहबा की तर्फ से पूजा को मये लवाजमा जाते हैं बाद कभी कभी श्री जी साहब पधारते हैं और हर साल राजवी आदि सब सरदार मुसाहब पधारने से बड़ा हुज्जूम रहता है महता नथमल जी की जानिब से तवाजा होती है - नगारखाना व तायफा वगैरह के इनाम मुकर्रर हैं - केशरहिन्द का मेला माघ वदी ४ या १ जनवरी को तलाव गंगासागर सम्वत ३३ से होता है॥

खासकर दो मेले भारी हैं १ वैशाखी का इसमें अतीव लोग शहर व नजीक

मंडल के बैशाख सुदी १२ को जावे सो भंडारा व रसोई न्यात या किसी की होवे जितने दिन रहे सुदी १५ श्री दर्बार से व १ दिन फतेपुरी जी के ठिकाना की रसोई होवे ही है · व यात्री लोग सुदी १४ को शहर व देहात व मारवाड़ मलानी वगैरह के वहां जावें सो सुदी १५ सुबह को ब्रह्मकुण्ड में जहां अस्त भसमी डालने वाले से ॥) रुपया लेने व हर साल कुण्ड साफ़ कराने का बर्मसर के दाणी पर सम्बत ४३ से हुक्म है · न्हायकर बड़े बाग में आ रहे वहां बहुत से लोग शहर से जाते हैं दिन भर आनन्द व ठाठ रहता है · एक हाकिम मय जमीअत जाबते को साथ रहता है · ऐसे ही भादों सुदी ८ रामकुण्डे को कई लोग जाते हैं सो सुदी ९ को तलाब केलांरी पर शहर से दूसरे लोग भी गोगाजी के थान पूजन करके बड़े बाग में आते हैं · इन दोनों मेलों का साम के वक्त तलाव देदांनसर पर बड़ा भारी हज्जूम होता है · यहां भी गोगा का थान है व लोगों को एतक़ाद है कि गोगा चोहान की पूजा करे तो सर्प नहीं काटेगा · इसलिये हर गांव में गोगा का थान व खेजडी रूख होवेहीगा॥

मुसल्मानोंका

भादों सुदी २ नो हथे जोधों की कबरें व सिलावटें मूला की तलाव पर व सुदी को सिपाही कंधारी वग़ैरह भागुरे गाम फकीर उदाया की जाल जिसके २॥ पत्ते खाने से दिवाना कुत्ता काटने का ज़हर न रहे जाते हैं॥

मुतफ़र्रिक मेले

भादों वदी ११ तलाब खेतासर पर महते सरूदास वगैरह व सलीया की डूंगरी महते गोयदानी · व तलाब सुदासर सदा बिशानी · व श्रावण सुदी ५ तलाब सोनासर सोनारे व तलाब दर्जी आई भादों वदी · दर्जी तथा जेठ व भादों सुदी १३ या १४ को मौजे लुद्रवा में माताजी के थान सी को देखने नहीं देते॥

परगनात में · माही भादों सुदी ६ श्री स्वांगियांजी १ गाम भादीया में श्री भादा

रायजी के थान जहां पोकरन फलोधी वगैरह दूर दूर के यात्री भी आकर सई फडी छत्र सोने चांदी के चढाते है - ज्यूंही मनोर्थ होते हैं - दूजे श्री देगरायजी के थान जसोड कर्मेलो वगैरह नजीक गामो के लोग आते है व जसोडा टीमे मात्र गांमों में थान है जहां गाम २ के लोग पूजते है ऐसे ही माहा भाद्र शुदी गांम वाय मे श्री भैरू जी के भी दूर दूर से यात्री आते हैं मगर रात्रि को नही रह सक्ते - तथा इन बर्षो में वभूता सिद्धने बडा भारी चिमतकार दिखाया है - कि नाम लेनेसे सर्प नही काटता व पहिले काटे के रवडी बंधने से असर नहीरहता इसलिये गाम चारनआला में कालीया नाडे थान पर मारवाड बीकानेर शेखावटी सिंध वगैरह बहुत दूर दूर के लोग भाद्र शुदी ७ को यात्री आते हैं माह भाद्र शुदी ७ को श्री नेमडाय के थान नजीक गामो वाले आते है मौजे महाजलार से ९॥ कोस तक ख्याले पर सहजनाथ की समाध फागुन वदी १४ को मेला में धाट वगैरह से बहुत लोग आकर चडावा करते है क्योंकि सोढे इनके कन्ठी बध है ठिकाने की तर्फ से सीरा परसाद सब को जीमाते है गाम हुडा चडोया पास काले डूंगरेची यां गाम जानरा मे देवी मालण वगैरह मात्र गांमों में कोई देवता या पीर वगैरह के थान पर पर माह भाद्र शुदी मे गांव वाले पूजते ही है - गांव खीया से १ कोस तक पनरासर डूंगरी पर राहड पनराज जूंझार के थान भाद्र शुदी १० खडाली पल्लीवाल व रहाड कुल वगैरह लोग आते हैं गांव रामगढ़ से दक्षिण ४ कोस तक जीआदेसर पर जोगनीयां के थान भाद्र वदी १४ मालत मान व महोर व वाजे सिंध के लोग भी आते है ऐसे ही कोट खुयाला मे जोगनीयां के थान को हरी वगैरह पडोसी गांव वाले आते हैं ॥

सुरु आला जुझार के थान तो कुलडी वगैरह में भी हैं परन्तु मेला गांम कनोई माह भाद्र शुदी २ को होते है।

अब मनसा है

कि मेले दोय को तरक्की दी जावे एक तो कुलदेवी श्री भाद्रायारायजी के भादो जात जाये पर तर्फकी जात देवे व श्रीजी की तर्फ से पूजा करने को पन्डा जैसे को भेजे जावे व जात देने को

१ हाकिम मये जमीयत वहां रहें। दूजे वभूता सिंध के मेला में भी हाकिम का रहना होगा - दोनों जगह ठिकाना भारी बना कर सब तरह लवाज़मा का ठाठ बांधने वगैरह की तजवीज हिसाब सुधा न्यारी लिखी है - इन मेलों में दिशावरी ब्योपारी व और लोग खरीद फरोख्त वाले दूर दूर से आने को इश्तिहार मुल्कों में जनाव रजीडन्ट साहब बहादुर जी की मारफ़त जारी करना होगा - व मिती भी शुदी १ सिंध के व शुदी ६ श्री खागियां जी के मेला की रहेंगे सो ब्योपारी दोनों मेला साज कर शुदी ११ रामदेहरे जहां हरसाल आते हैं पहुंच सकेंगे - तथा सिद्ध के ठिकाने में पानी का कुण्ड या कुण्डे टांका व कुवा बगाने व पुजारी रहने वगैरह के लिये सम्बत् ४९ में नोख के हाकिम को तजवीज लिखी भी थी परन्तु कहत सालियां से कुछ न हुवा - सो ईश्वर की इच्छा होगी तो होगा - बिलफैल इच्छा मालूम नहीं होती॥

टकशाल

कदीम से १ ही जगह श्री जी के महलों नीचे छाप लगती है - शिक्का मुहम्मद शाही था सम्बत् १८१९ में श्री अखैसिंह जी साहब जसोल से सोनी नाथा को क़ैद से छुडाय लाये उसने छाप तो वोही रक्खी नाम अखैसाही कहा - जब से टकशाल नाथा नी ५ घरों पास है व छाप खोदने भी यही हैं - नमूना छाप १ तर्फ़ हिन्दी दूजे पासे फ़ारसी हरुफ हैं सम्बत् का अंक हिन्दी व छाप आधी लगती है तो भी बदमास खोटे बनाते हैं पूरा छाप को टिकडी डबढी चाहिये - व तोल में ११ मासे का कलदार बराबर में खार जियादे था ठाकुरां राज श्री केशरी सिंह जी ने खालिस चांदी का रुपाय १७ आने में चलाया तो लोगों को तकलीफ रही जब एक माशा कम करके पूरे १० माशे का रक्खा तो भी ब्योपारीयां ने माल नहीं मंगाया काम बन्द रहा - फेर फी रुपये १ रत्ती खार मिलाने की ठहरी व राज की छपाई भी फी सदी ३॥) रुपया अलावः हक़ अहलकारों के थे सो छोड़ कर १॥) रुपया रक्खा था सो ही न रह कर ।||) आने रहा था जिसमें ।) आने -

सुनारों को टाको जाय घडने कीमहनत वनीबू कोयलों का देते हैं इसपरभी व्योपारिया लालच से खार बधवाया सो अब १।। या १।।। रत्ती होगा । साहूकार लोग मुमाई खानपुर वगैरह से नीणाई चादी की पाटे खुरीया रायल व शिक्के वार नग वगैरह मालमगाते हैं - वतुमार निकलाकर मुसाहिबो ने हर जिन्स का निर्ख ठहराया है फेर माल अच्छा या हलका या नवी जिन्स आवे तो सब के रोबरू तपास कराके निर्ख ठहराते हैं जुने रुपये व जेवर कटकर नये रुपये व नये रुपये कटकर जेवर बनाते हैं । कलदार रुपये का निर्ख को इहाराण या बट्टा कहते हैं फीसदी ३ या ४ रुपया बधती रहता है कहैतसाली में जियादह व कभी दोय से कम होता है तो साहूकार लोग ३) रुपया लेकर अखेशाही छपाते हैं १ सुनार दरोगा जो तनख्वाह राज से पाता है रुपये की टिकडी तैयार हो जब देखे कि खार व डोल पूरा है तो छाप लगाने दे सम्वत मे सरकार दोलतमदार अंगरेजी के हुक्म से रुपये मे नाम अगले बादशाह का निकाल कर महाराणी जी कुइन विक्टोरिया का लिखा सो नमूना [coin impressions] है । हिन्दी सम्वत हर साल नया होता था सो १७ ही का है अठन्नी चोअन्नी दोअन्नी भी छपे हैं । सोने की अशर्फी १०।। माशे की व अधेली पावली दोअन्नी की छपाई ~।। आना है । सम्वत ४९ में इसको खूब सोच कर यह तजबीज करी कि रुपये डोल मे खोटे न करने व और ही वाजिब जानकर दो निशानी १ तो मेघाडम्बर छत्र व कुल देवी की यादगार पोलब याने चिडीया का चिन्ह बधाया - जिससे रुपये फूटरे व अच्छे होने से दूर दूर मे ।) आने व १) रुपया बधती मिलता है व छपाई भी ।) आने बधाकर पूरा १) रुपया कीया व जमा खर्च का कायदा भी बहुत अच्छा रखाया है कि नकशा तैयार होकर जिस तरह जो बात समझनी हो मालूम हो सके । तथा यह दस्तूर है कि व्योपारी लोग कामदार की मारफत टकशाल मे माल तोल देवे तो रुपये दिन १५ व बकाया १ महीने में चुकता करा देने का फर्ज कामदार पर है ढील

हो तो सूद दिलाया जावे और वाला बाला माल सुनारों को देवे तो कामदार जिमे वार नहीं। तथा रुपया तोल में कम या खार जियादह हो तो सुनार को सजा कैद व जुरमाना की होती है व लिख लीया है कि खोटा रुपया छापे तो हाथ कटाया जावे मुद्दा कि सब तरह से अच्छा बन्दोवस्त है तो भी निगरानी में जरासी गलती हो तो चालाकी हो ही जाती है तथा सम्बत् ९ से कामदार गोलकिया सुखराम व बेटा वछराज हैं

तांबेका

चलन पैसा अमरशाही था सो तो रोहडी सक्खर में है यहां भीमशाही जरब जोधपुर व किसी कदर झाड शाही जैपुर का निरख आगे १४ टके का था सो बधते बधते अब २८ से ३२ टके का है नया पैसा तोल में तो २० माशा ही है तांबा हलका है तथा कलदार भी चलते हैं॥

डोढियां

खास इसी शहर में ही हैं अव्वल किसी जमाने में छपा था फेर श्री अमरसिंह जी ने छपाया सो तोल में भारी व निरख भी १६ वीसी था सो कटकर व नया सम्बत् १९९३ में छपा सो तोल में कम है ज्यूं निरख भी ३० से ३६ वीसी तक रहता है नवे फारसी हर्फ न मालूम क्या हैं यह चलन ढीगला नाम मेवाड़ में भी है तथा कच्छ देश में आंनीयां ४८ दोकड़ा ३२ ढीगला १६ जो १ कोरी में चलता ही है। और १ रुपया में कोरी ३ फदीया ७॥ छकड़ १५ खुरदा ३० दुरगानियां ४० आना का पैका ६४ दोकड़ा १०० जेथल १५० जेथलों का पैका ६०० ये नाम सिर्फ हिसाब के लिये हैं जैसे गुजरात वगैरह में १ रुपया के दोकड़े १०० व १ दोकड़े में १०० फोकडे हैं चलन नहीं। सम्बत् ४१ के मृगसिर महीने से सायरात में तोल महाजनी व हिसाब में ऊपर लिखे नाम उठाकर कलदार पाई जो १ आना में १२ पाई हैं चलन जारी कीया

ओर कईबार सलाह हुई परन्तु काम नहीं हुआ सो यह है कि टकशाल मे माल राज का छपे - ब्योपारी के माल आवे तो उसी वक्त रुपये निर्ख से देकर माल राज ले इसमें दो कभाहते हैं सो तह होने बाद यह हो सके - व चलन तांबा का आध या पाव आना का नाम पैसा या आधीया या त्रांबीयां या जो मुनासब हो रखकर छपाना जरूर है कि भाव में कमी बेशी की तकलीफात न रहें व काम भी जारी रहकर नाम भी हो - ऐसे ही

तोलमाप

इलाकह जात में १ कीया जावैगा चुनाचेः लोहे के बाट छपाये हैं बिलफैल हर जगह मुख्तलिफ़ हैं - याने तोल तो भीमशाही पैसे १३ से ४५ तक कई किस्म का सेर है व/४० सेर का १ मन और पायली ७४ व माणी सेर ५ का सो भी अमरशाही तोल १से ३ सेर तक और गाम बारू में पायली सेर ५ का पोकरन मूजब व तनोट में टोपा सेर ८ का फलोधी मूजब है - तथा पायली १६की १सेई व १६ सेई की कलसी जो अमरशाही मन १२ की होगी बाहर गांमों में हैं - तथा कपडे नापने का हाथ शहर में १९ इन्च व देहात में २४ इन्च का है व १॥ हाथ का १ गज सिरकी ८ हैं ३६ इन्च का शाहजहांनी गज इससे सवाया समझो

सायरात

महसूल का रिवाज कोम कोम व रस्ते रस्ते जिन्स २ का जुदा जुदा था किअव्वल कोट मे पीछे शहर या किसी गाम में माल आया जब दाण लिया बाद बहुत सी लागें बिधा बंधान कनोती वगैरह फेर फरोख्त पर मापा उर्फ मुकाता वनेसार पर भी लगता था सो सब बंध कीया सो मुफस्सल हाल लिखना अब जरूर न रहा १०। ११ जगह हिसाब करने व पेशगी रुपये देने वगैरह तकलीफात ब्योपारियों को थी सो न रही श्रीजी साहिबों की उमर दराज होव सलाह जनाब रजीडन्ट कर्नेल

परसो डबल्यू पौलन्ट साहब बहादर नई तजवीज सम्बत ४१ का मृगसिर वदी १ से करा ई मान सरदारों भोमियों सेठों चोधरियों व्योपारियों वगैरह से सही कराइ जारी कि- या कि इलाकह भरमें एक जगह पूरा दांण लीया बाद दांण की खेंचल न होवै मा- कोमोंसे चाहै सो रस्ते माल आवे जावे दांण का धिरस्ता एक रक्खा है कि खास श्री दरबार के माल का भी दांण लगे होगा बिधा बंधान कनोंतियों वगैरह हकदारों को हक श्री दरबार से दीया जाता है व्योपारी से कम या बेश नहीं लीया जावे - माल आवे जावे सो अव्वल चोकी पर मंडी जे और गर्भ माल को तलासी होवे - तथा बीच की चोकी पर परताल की जावे लोप वहे सो कसूर वार व निज़र परवरिश रिआया ज़ुवार बाजरी का पैसा बिल्कुल माफ सिर्फ) आना फी ऊंट मदरसे का लिया जाता है सोही चारणों फ़कीरों डूमों स्वामियों से नहीं और व्योपार की तरक्की वास्ते पेशार दांण पूरा लिया बादने सार छूट है और पेशार में भी हाथी दांत अफ़ीम के सिवाय सब चीजों में कमी हुई सो नकशे के खाने औसत साबक़में लिखा है - जागीरदारों का हक़ पटे बरसलपुर का तो रावजी दांण लें और ठेके का रुपया १००) बारें महीनों का राजमें दे और बिकमपुर रावजी को दांण में पांचवां हिस्सा श्री दरबार से दिया जाता है और बाकी गांवों का माल परगना उतार नेसार में तो पैसा रुपया सरदारों का राज से वसूल देंना और पेसारमें उनका जी चाहे सो लें राज से मुद्दो नहीं और वहतीदातमें हक़ है ही नहीं यह हक़ सिर्फ पाटवी का रक्खा था पर वो समके नहीं जिस से सदाही रुपया पैदा हुआ सो रोलमें जिसके हाथ लगा उसने उडाया भोमियों का कुछ भी हक़ नहीं था सो मुखिये को दांण की निगरानी को श्री दरबार से १०) ऽ० पर ५) रुपया इस शर्त से करा दीया कि दांण चोरी न हो अगर कोई सख्स दांण चोरी करै तो मुखिया उसको पकडावे जब उसका माल नीलाम या जुरमाना हो उसमें भी मुखिये का हक़ हो चुका और जो मुखिये से दाला वाला खबर लगी तो मुखिये को दांण

जितनी सजा दी जावे और मुखबर मुलाजिम एज है नो चौथा हिस्सा और दूसरा सिरवाह है तो उसको आधा जुरमाने या नीलाम मे से मिलेगा नथा खाल्से गांम के मुखिये को, भोमिये से आधा हक निगरानी का उसी सर्तों से दिया जावे - व्योपारी माल लावैगा सो खरीद का बीजक या आढतिये की चिट्ठी या बिलटी रेल की नकल या दूसरी रियसत के दांण चूके की असल चिट्ठी बताओ माल तुलाकर चिट्ठी होगी बहलीवान दांण चुकायों से दिन ३१ मे माल इलाकह धार करेगा उपरान्त हासल पेसार का लगेगा - अगर किसी सबब से माल इलाकह हाजा में दूवालीसे बेचेगा तो हासल पेसार में वहलीवान वसूल होगा - और जो माल बेच के पीछे कढेगा वसूल नही मिलेगा और छाने बेचैगा तो सजा दाण चोरी की होगी - भार बरदारी व सवारी का ऊंठ गाडी व पहनने के कपडे या कपडे के टुकडे जिसकी कीमत ३) रुपये की है या खाने की जिन्स व रसाल का हासल नही देश की पैदावार चीज सिवाय धारु शहर के देश मे हीज एक से दूसरे परगनह से ले जावे तो गेहूं घृत तेल कपास इन ४ चीजों का पेसार मुजब दांण है बाकी माफ नथा देश का वासी देश मे हीज देश के वासी से बलध भैसा जीवाल मरकब लेवें देवे तो दांण छूट और रजपूती सिंधी याने खेड मे आवे सो बचारा डूंम फकीर स्वामी आपस में ऊंट लें दें वो भी छूट है कोटो का कामदार ताल्लुके मे वाजल जांणे जहां सायर की चोकी रक्खे हिसाब हर अमावस्या भए फारम व कौंसिल में भेजे अथवा रुपया हुक्मी चिट्ठी से खर्चे दांण की चिट्ठी छाप लगवाने में करें॥

दांण का खुलासा फारिस्त में है - और जो चीज लिखे से नवी आवे तो कीमत व ज्ञात दूसरी चीज से मिलाकर दांण लेनो नथा दाण मे कमी बेसी श्री दरबार साहेब जद कदे मुनासब ख्याल फरमावे तो हो सकेगा एक जगह दांन लेने मे व हकदारो को श्री दरबार से देने वगैरह २ तदबीरें ऐसी हुई कि राज व व्योपारियों से खसूसन

गुरवा लोगों को तो बड़ाही आराम व फ़ायदा हुवा ही सब पर इकसा होनेसे जिसर लोगों को माफ़ी थी सो न रही ॥

तथा हिसाब का कायदा भी निहायत ठीक है कि चाहो सो हाल बख़ूबी आसानी से मालूम होसके - सायर में क़दीमी तोल कच्चा. जो मन २० याने अमरशाही मन ६ का एक ऊंट था अब शाहजहांनी तोल है - बिधा बंधान कनोतियों का हक़ ऊंटों पर था सो आठ मन का १ ऊंट रक्खा है - और अमरशाही मन ६ का शाहजहांनी मन पांच का होता है ॥

रवन्ना याने दाण की चिट्ठी सायर

नम्बर व मिती	व्योपारी का नाम जात वगैरा	कहांसे माल आया कहां जावेगा किस रास्ते	पैसार याने सार या वहतीवान	तादाद भारबरदारी	नाम जिन्स	तादाद जिन्स मन शाहजहांनी	सरह महसूल	रुपया महसूल का	दस्तखत यानी निसानी सायरदारव व्योपारी

नक़्शा सरह महसूल व आमदनी सायरात

नम्बर जिन्स	नाम जिन्स	मन नग कीमत	सरह महसूल					औसत साबक़	सं. ४० कार्तिक सुदी १ था सं. ४३ कार्तीवदि सालः ३ की पैदास औसत								निर्खे औसत बाज़ार
			पेसार		नेसार		वहतीवान		पेसार		नेसार		वहतीवान		कुल पैदाव ष ३ के दाण का रुपया	औसत १ वर्ष का रुपया	
			परदेशसे	सब देशसे	शहर से	बाहर से			मन या नग या कीमत	रुपये हासल	मन या नग या कीमत	रुपये जगात	मन या नग	रुपये महसूल			
१	श्रीफल	म० १	७)	-	-	-	।)	१२॥	५६०॥	५६०।	-	-	३७॥	५७र्द	५६०॥)र्द	१८६॥)३	
	गिरी खोपरा	१	३।)	-	-	-	॥)	१८)	१२६)	[illegible]	-	-	म ६०६	३०३॥=)	१८३५)१२	६११॥=)४	

२	गुड	१	॥।)				३)	[illegible]	[illegible]	[illegible]		-	११३६५	२०७	२१०८५॥=)	७३६१=)	८६
	पुत्ती	१	।॥)				३)	[illegible]	१२६०	[illegible]	-		२४८	११०८६	१२८९७)	४२७)४	८४।
	चीनी	१	५॥)				।)	२॥)	६१५०	[illegible]	-	-	४५०४	११२३४	११३४६।)	११८॥)	८४
	मिस्री	१	५॥)			-	।=)	५।।)						-	-	-	-
३	नर्बोव रगत	१	६)	-			।)	६।=।।	२१६४	[illegible]		-	१८३१	८३०	१२७०७॥=)	७१६१॥=)	-
	लुगड़े	१	३)	३)	१)	३)	॥)	२॥)	११९६	[illegible]	२२२	३३१	६७)६	२८॥।)	१५७५॥।)	४३५।)	
४	ऊन	१	२)	१)	१)	३)	॥)	३।)	[illegible]	[illegible]	२७३४	[illegible]	-	-	३३८१८)	[illegible]	
	ऊनावड़े	१	२	२		३)	॥)	-	२०१४	[illegible]	[illegible]	३१२५	[illegible]	[illegible]	११६६१=)	५५३॥)	
	पसमीना	१०)	=)				३)	=	[illegible]	[illegible]			-		४०८।=)	१३६७६	
५	रेशीमाल	ए	७)	-		-	३)	६	[illegible]	[illegible]					१२५५॥=)	६१८॥=)	
६	जीकना	से	६।)	-	-		॥)		[illegible]	[illegible]				-	१००२॥)	३५०॥=)४	
	पमतुला	से	६।)	-		-	३)		[illegible]	[illegible]			६५॥	३१=॥	५०१॥=)	११६॥=)२	
७	घृत	१	१७=)	५)	१)	२॥)	॥)	३।)	६६८	१४६१२	३४८८	७३४	८०	५४८	२१६२९॥=)	७३७०॥=)४	८६
८	तेलसर्वे	१	७)	४)		१।)	॥)	१=)	३०४३	२८८५	२३२६।	२६५६	२३।	११=)	६७४४=)	२२४॥=)४	८५।
	तिलतेल	१	।=)	।=)	-	।=)	३)	।=)	३६६४	११५॥)	१८७०	२१७७	१३४८०	२७८८	२४३३८॥)	८९६।)	
९	चावल	१	।=)				।)	॥।)	११३५	३८७)		-	७०५४	१८४४	६६२८)	११८६॥=)६	[illegible]
	गेहूं	१	३)	३)		३)	३)	७३	[illegible]	११८८	६४८७	१६७	७५४	१४८=	१२८३५॥)	४६२३॥)	७२
	चना	१	३)	३)	-	३)	=)		५०२६	७४=			५४	१०७)६	७४६।)६	२४८७॥=)२	७।=
	मूंगमोठ	१	३)	३)		३)	३)	३)।	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९०३	११४=	३८३५॥)६	१२७३=)	[illegible]
	ज्वारमकी	१	३)	=)		३)	३)	=)		-				-	-	-	-
	नानदे ज्वार	१	=)		३)	३)	३)		-		१४१८	४३३२	२७	४=)	४२१६॥=)	१४१६॥=)	५१६=
	मर्फीज मानिया	१	=)		-	-	।)		११९८	२६८)			३०	।११।)	३६८॥=)	१२३)४	[illegible]

१०	दंतीदांत	१	३०)	·	·	·	१॥)	१२॥)	४५॥।३	२१३७	·	·	।।।३	१॥=)	२१३८।।ड)	७१२॥=)४	·
	मगरदंत	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·	·
११	घाटश्चव	१	३)	·	·	·	।।।)	३॥=)	३१०	८६६॥-)	·	·	१५॥।	१३=)	६१२।।।)	३०४।)	·
	ल्हो	१	११)	·	·	·	॥)	३।)	१७४६	११९६)	·	·	३६८३॥	१४१८)	२६३५।)	८७८।=)८	·
१२	बहीकागज	५७)	८	·	·	·	११॥)	८)	३२०४	२६५॥-)	·	·	१३१७	७८	२७२॥=)	६०४॥=)७	·
१३	रुई	१	२१)	११)	·	११)	॥=)	१॥-)	२४३१	२७१६ =)	११५॥	११८=)	६३	५०।४	२८८८=)	६६२॥=)४	·
	काकड																
१४	फिटकरी	१	।।।)	·	·	·	॥)	·	७६४ ॥६	५२८ ॥=)६	·	·	६३०।	४४८॥=	८७३।=)६	३२५॥-)२	·
	सजीखार	१	।)	·	·	·	·	।=)।	६०१	२१०॥=)६	२।	॥=)	२२७३ ५	३८०।=)	५८२=)६	१०७।=)२	·
	खारा	१	।=)	·	·	·	·	।।।)	२१० ॥८	·	·	·	·	·	·	·	·
१५	कस्तूरी	१०७	६।)	·	·	·	३=)	·	२०८१ ॥	८६॥-)६	·	·	३३२)	१	८७॥-)६	२८=)२	·
	कपूर	१०७	६।)	·	·	·	३=)	·	८२७)	५६॥=	·	·	·	·	५६।।।=)	१६) ६	·
१६	बदाम	१	१॥।)	·	·	·	॥=)	३।)	७१॥।	१२४॥=	·	·	३।)	१।=)	१२६।)	४२-)४	·
	पिस्ता	१	१॥)	·	·	·	॥=)	२।)	१०२	१६४॥- ६	·	·	१२५	५४=)६	२३१)२	७१)१	·
	नवजा																
	दाख	१	१॥।)	·	·	·	॥=)	२।)	१३६	५५)६	·	·	·	·	२५)६	४॥=)१	·
	खारक	१	॥।)	·	·	·	।।)	॥=)	२६८४	१२२१ ॥-)	·	·	६६७	३९५=)	१५२७)	५१२८)४	·
	खजूर																
	मेवासर्व	१	१॥।)	·	·	·	॥=)	२।)	६९८	३६४=)	·	·	४८३॥६	१५५-)	५५८६=)	१८३-)	·
१७	नील	१	८)	·	·	·	१।।)	८-॥)	४८॥)	३८५ १ ।=)६	·	·	६६८)	६१॥-)	१३०३=)६	४३॥=)६	·
	मजीठ	१	११।।)	·	·	·	॥=)	७)	१२३६)	१८२६ ।-)	·	·	६०६)	३०७॥=	२१४६॥=)	७३२।-)	·
	लाकुड खाल	१	।।।)	·	·	·	।।)	१)	७१॥	६९६	·	·	२०४६)	१२०८ ॥=)६	३२७॥)६	७०६।)२	·

१८	हरदी	१म	१॥)				॥=)		२१८५) ६	२६१२ ॥-)			२९०) ४	१२२=)	२७४५)	६१४४॥-)४
	मिर्चेसुर्ख	१	१)		-	-	॥=)		६७७) ५	२७१८=)			३३२)	२६६-)	२६८४॥)	८६४॥)४
	जीरासुफेद	१	२॥)	-	-		॥=)		१०५)	१२२=)	-		८४	७६	१२४)६	४०॥)२
	धनिया	१	॥)	-	-		॥)		३८५)	२८८॥-)			॥१९	।)	२६-)	६६।-)८
	हींग	१००	६।)				१म ।)	६।)	११५४)	७०॥)	-	-	२६४-	२६॥=)	६७।=)	३२।=)४
	आमचूर	१	४)				॥)		२२५)	११७॥-)	-	-	६॥	३=)३	१२४)६	३८)२
	जनमदाना															
१९	जरदा	१म	३)			•	॥)	३॥=)	७३)	१२१॥=)			•		१२५॥=)	४१॥=)
	मालवा															
	नासका	१	६)			-	१)	६)	३८।)	२३०-)		-	२४॥।)	२११=)	२५१।=)६	८४॥)२
	निरौसिधी	१	११)	-	-		॥)	१॥-)	९२८)	६३६० ॥)	-	-	४९४॥)	२०६)	६५६६॥)	३१६०)११
२०	मनेहारी	१७)	५)	•			१म	१=)	१६१०)	१५७६ ॥=)६			॥।७॥	॥)	१५७१।-)८	५२५॥-)२
	नकीमत						१)									
	चकेसेने	१००)	७)				१)	२१)	८१)	६)		•			६)	२)
	चादीरे															
२१	सूदस्फर	१म	३)	५)		३)	।-)	१)	१८५)	१८५)	२०७॥) ६	३२४॥-	४३)	१४॥=)	५७०।-)	१६०-)८
	गूगल	१म		३)	॥)	॥=)	।)	॥=)	१२५।)	६६॥-)	१४५३।)	७८६)	२०॥)	२।=)	८६५॥)	३८८॥)
२२	मुनवान	न १	॥)				॥)		३१४५)				१८३।)	७४५४-)	२३११।-)	७७०।=)
२३	बिलूघी	१	३)	३)	३)	२)	३)	३)	७८८न	२५१)	न२६	५४॥-)			२०५॥-)	८८॥)४
	ऊटसन्द	ऐ	२॥)	२॥)	३)	३)	४)		२६१२ ॥	५४३६ ॥-)	न ३००१	२२७८ ॥-)६	२८८	६४॥=)	७८०८॥=)६	२८९३।)१०
	नीलभैंस	ऐ	॥)	।)	॥)	॥)	।)	॥)	१०४४॥	५९२७)	न २३४४३	८११८ -)६	२८०	७९=)	६६७०॥)८	२२२३॥-)६
	घेटा बकरा	ऐ	=)			=)	।)	=)	२२७८	३२०।-)	न ३१३४	७८०८ ।)	१४८७८	२८३५)	६८०१५)	३२०॥)८

	त्रपन्न	ऐ.	≡)	-	-	≡)	ं)	॥।≡)	-	-	-	-	-	-	-	-	-
२४	नक्कडक्कर	४१ रु	≡)	≡)	-	≡)	-)	।)	१८८६	६०२ ≡)६	२८५५	२७१ ॥≡)३	४५९७	२८४=) ६	१३५८॥-)३	४५२॥-)६	-
	भांस्वावा	१११)	६।)	-	-	-	१म- ।)	६।)	३०)	५॥।≡)	-		म ५३१	२।≡)४	८।=)६	२४।)१०	-
२५	खाखडा	ऐ.	८)	८)	८)	८)	६।)	६।)	५०२।)	११६० ।)६	२१७०≡)	२४४६=)	५३५०।)	३५०४≡)	३०८७-)६	१०२६)६	-
	दोनों																
२६	पत्थर	गाडा १	-	-	३)	३)	-	-	त ५१८	२८६॥)	गाडा ४६ त७४	१६०८≡) ३	त२१७	२१॥=)	१०११॥≡)८	३३७।-)२	-
	चक्की	म १	-)॥	-)	-	-)	-)	-		)	१२७३२ ॥	७९३=) ६	-	-	-	-	-
	सूनामिट	शेन१	-	-)	-	-)	-	-	म ३११४	१६१=)	८८२२ म	७०६)	-	-	६०३=)	३०१)८	-
२७	बारदानो	१००)	६।)	-	-	-	मं १ ।)	६।)	५३२४ ।)	३०४≡) ३	८२६।)	५५।)	मं १३४	२।॥=)	३६२१-)३	१२०॥।)५	-
२८	कारियांणो	-	-	-	-	-	-	-	म. ४७३०	४४३६ ॥)६	मं ८।	३=)	म २४६१ ।)	६६०।)	५१३०=)६	२११०)१	-
२९	परचूण	-	-	-	-	-	-	-	म. २१७७	६२६।)	म २७७७ ।६	५८७॥।) ६	म ८७॥	३८०-)	१५३५-)६	५११॥≡)२	-
३०	अफीम	१	६५)	-	-	-	-	-	म. ५१५१	५०३६६ ।॥=)	-	-	-	-	५०३६६॥=)	१८७६८॥=)	-

बालीसें मंडे तो रु० ६५) में ५) रुपया जोधपुर का व दूसरी तर्फ से आवे तो रुपया १००) कलदार है नेशा रअमुद्दा नहीं

	जोड़	-	-	-	-	-	-	-		२०६७०॥-)		१३६५॥=)		२०३४०॥-)	१३७०॥)	१३३४०॥-)	-

पेशगार	राहदारी	नक़शे में लिखी के सिवाय जिन्स के महसूल की सरह पेशगार व राहदारी शाहजहानी पर
।)	॥)	आंवला, आलू, आरवी, करवला, महंदी, लसोडा-
॥।)	॥)	केचूला, कल्मीसोरा, कसीला, कायफल, कौचबीज, कपूरकाचरी, कासनी, कमरकस, कोकीला, सुवा, पनीरफोडे, सीधव, सेंबल, पवनडोडे, समुद्रफेन, सनाय, आंवला, अजमोद, असगंद, ईसबगोल, उदीसन, लोद, उपलेट, तुख्मरस्या, तुख्मबलंगा, मिझाली

		बेकचरी, वहेडे दोनो, बलबीज, रेवनचोनी, खोजनी, छडछबीला, भोडल, मूगफली, आरीठा॥
३)	॥)	नकछिकनी, नोसादर, नीबू फूलगुलाब, गरमाला गिलोय, गोखरू गोरखमुंनडी, सिगोड़े, साभार, काकडासीगी, सनावर, कत्था, कटखजूर, किरमच, कुटक, आलूबुखारे, अड़ूसा, इन्द्रजव, उन्नाव, ऐलीया, मैदालकडी, मालकांकणी, पतग, पित्तपापडा, हरडे, बायफुंबा, घोडावछ, भारंगी, नालमारवाना, राल धूप॥
५)	॥=)	साबन, सहैत, चन्दन डोला, चिनक, कालीजीरी, कायता, कनजा, कसीस कबाब चोनी, जो हरडे, जमाल गोटा, जरीस्क, मुलहटी, मोचरस, मुर्दासिंगी, बायबिडंग, बिदारीकन्द, ब्रह्मी, देवदार, दारुहरदी, रीगनी, गन्दफ, खस, खसखास, पद्माख, नमालपल॥ नागकेशर
५॥	॥=)	लाखबाटिया सोनागेरू, सुपारी हर्त, सकाकुल, सूतली, भोजपत्र, भोजगंद, विजयाखेर, बहमनसुर्ख, गाजवां, वनप्सा, हजरतबोर, हंसराज, माजूफल, जेरनालेरगेरी, अतीस, धावडे फूल, चिर्मीसर्व॥
२)	॥)	सिंदूर, सोठ, कसूवा, केशरीपिवल्ली गुलालमूसली दोनो, निशोद॥
२॥)	१)	अगर, आंवलासारगधक, अकलकेरा, इलायची, नगर मलागरी, मेणा, सुमीरा, मोरथोथा, हरनाल, हींगलु कोकू, केशरेकेफूल, कपूर, काली मिर्च, गुलाबजल, सुरतेल, शिलारस, सीगीमोहरा, शाखिया, सीतलमिर्च, सुर्मा, सोभ्रगी, सपेदा, स्याहजीरा, सुपारीदखिनी, चपडा, चन्दरस, पीपरा, पीपरामूल, पीपरदराज, पनडी पारा, वडेडोडे, कणा, जावत्री, जायफल, जेरकुर्दाने, जमालजवारखार, रसकपूर, रत्नजोत, रसोन, वीदाना, वंशलोचन, खैरसार, रसाकूरिसा, दाल चीनी, ओछाया, लोग, भिलावा, बेरजो, चोपचीनी, सरम॥

आमदनी नक़शे के अलावा इलाकह् बरसलपुर का रावजी से १००) रुपये १२ महीने को ठेका है - बाकी लाठी तनोट दारवणी वासिया वग़ैरह् गांमो का दांन नही मंडा है व राजड़ां म्होरी लोगां दान चोरी करी सो अलग- अगर पूरा दांण मंडे तो पैदा ड्योढी है तथा परचुण दाण रूई की गठड़ी वा खाली ऊंटा वग़ैरह् के में चोरी व कमअक्षत हद से परे है सो जो जो चीज छोटी याने चोरी छिपा सके सो छूट करके गुंजायश की चीजों पर ऐसी तजवीज हो कि हर्ज़ हरकत न रहे॥

सायरमापाउ-

तकड़ी मुकाता में सम्बत् ४१ से सिर्फ इतना रहा है - बाकी सब उठ गया- जेवर व बरतन फरोख्त का २॥) रुपया पै ७) रुपया व हिरण्य तोले ३० पै ७) रुपया व चांदी रुपया १००) पै ।) चार आना लगता है सो बिके उसी दिन विगत से मंडवावै - सो चोरी धाड़गड़े का माल नहीं बिक सके - कंदोयां से खांड गालने पर व मिश्री बनाने पर फी मन व दूसरे लोगों के खांड गालने की महनत में च्यामें सो हर पख वाड़े मंडाय दे - दरवाजों की लाग घास चारा पर फी ऊंट २ आना - इसमे हजूरी कंधारी वग़ैरह् को छूट भी है - फाटका सोदा पर लाग सम्बत् २० से लगी है सो सब दें - १००) रुपया पर ॥) आठ आने दोनों फरीक से - व सवदा हो उसी दिन व्योपारी या दलाली का मडवादे - कि झगड़ा न पड़े व भाव करने वग़ैरह् कायदा की कलमा सम्बत् ४१ सं लिखाई हैं - दलाली का ठेका या आध है पहले ॥=) आने राजके थे - न्यारिया का इजारा रु० ठहरे सो - लखारां का इज़ारा दरकल्ला के दरोगा की तनख्वा ह है - पटवा का काम करने वाले से हर महीना में ७ रुपया था सो कई साल से नही लीया गया ऐसे ही पींजारे कसाई वग़ैरह् से भी था सो नही है - ऊपर लिखी लागों में कम बेश करके पुख़ता बन्दोवस्त करना जरूर है कि दाण चोरी न रहे॥

बरसोत

लाग रिश्राया से धुवा सरा भूमी ठाणा भासोला डंड नेत्रालिया बाधालिया व इजारा वगेरह कई नाम तो मौका मौका पर लिखे गये व फुटकर नाम बहुत से है कि सालिया ना बाबत रुपया १० हजार करीब होगी सो एक जगह जमा न होने से ठीक हिसाब भी मालूम नही होता है ऐसे ही तबेलाणलके मोचीया चमारी का इजारा बेगार वगेरह वाहका बहुत काम है और घास चारा मूगधण पानी वगेरह का खर्च भी यहा ही से होता है इस काम मे बन्दोवस्त लिखा तो है परन्तु कीया नही सो जरूर ही करना चाहिये - कामदार व्यास मुल्तानचन्द है इनके ताल्लुकः खीमा खाना व घोडों ऊंटा का सज बनाना सांभन व और ही मुतफर्रिक कई काम है - तथा बाग का काम याने बागा की पैदा व सीधा दाणा लाग व मालीयां से बरसोत वगेरह की पैदा व तीनू बागो का खर्च अगरचः राज का है मगर अलहदा रक्खा गया है - सो अब समूल समझा जावेगा - और बाग बावड़ी याने आबाद होकर हर तरह की रसाल व आमदनी होने की तदबीर सम्वत् ४१ में बहुत ही खूब की गई हे क्योंकि ख्याल कियाकि एक पेड आम वगेरह व एक कूवा व एक कर्षा हो जहां बहुत पैदा होती है सो सदहो पेड व ऐसे ही कूवे कर्षे होकर नुकशान क्यों रहता है मालूम हुवा कि मालीयों ने पैदा करने की कसम वास्ते न देने राज व कर्ज के की है - इस वास्ते इन्हो से मुनासब कल्मा लिखा लिया है परन्तु जमाना आने से बनैगी॥

नमक

शहर से उत्तर १० कोस गांम कानोच के। कोरन मे बारस का पानी सूकने बाद बेरे का पानी क्यारियों में - सीयाले के दिन २०।२५ मे ३।४ दफा व ऊनाले के दिन १५।२० में ४।५ दफा भरने से नमक जमता है - सिवाय पानी व जमीन की सोरेयत के कोई चीज

नहीं रंग सुपेद सेमर से सोरीयत् माइल है - नमक में जागीरदार वगैरह का हक नहीं राज ही मालक है - खार वालों को महन्तांने का हिस्सा तीसरा था सम्वत् ३३ से फी मन शाहजहांनी का १ आना दीया जाता है नमक बनाने के औज़ार व बेरा क्यारीयां का खर्चा में खारवालों के हैं - तथा निर्ख अमरसाही तोलसे ७ रुपया आगर पै मन ५ से १४ व शहर व परगनह में १ मन था - सो अब शाहजहांनी मन एक पै ७ आने की मन व ७ रुपया महसूल आगर पर रक्खा और शहर व परगनह में किराया ५ मन पर एक कोस का) आना ज्यादह सो सम्वत् ४४ के चैत्र में सब जगह निर्ख सेर ॥ ९ का व आगर पर दोनों गांम काणोध के सिवाय बेचना मना करके परगनात में कोठार कराये सो गांम वाले नजीक कोठार से लेवैं जिसका नाम ग्राम लिखने वगैरह कायदे की किताबें छपाकर बेचने वालों को दी गई कि राज का नमक बेचने की आडत तुलाई की जगह का भाडा फीसदी ३) रुपया मिलेगा निर्ख में फ़र्क न रक्खें और जो रुपये पेशगी दें जिसको ३) रु॰ कमीशन जुमले ६) रुपया दीये जावें व निर्ख भी ७ रुपया से कमती लेने वाले को ९ सेर कमती देवे - परन्तु दोनों सूरतों में हिसाब हर महीने तालकुके के हाकिम की मारफ़त नमक के महकमा में भेजा करें - सो साल तमाम पर नकशा तैयार होवे कि किस किस कोठार व गांम में कितना नमक कितने मनुष्यों ने लीया - व पैदा खर्च वगैरह सब हाल मालूम हो सके - और आमदनी वजबा से निस्फ भी नहीं होती है सो ऐसे काम चला तो सही हाल खुल जावेगा -

सिवाय इसके मौजे वाय में भी रन है मगर नमक निकालना बन्द है व गांम वरमसर व पहाडों के रनमें खारा पानी के बाइस ज़रात तो क्या घास भी नहीं होता और न खारी नमक होता है - तथा मोहनगढ के रनमें पानी तो खारा होता है लेकिन ज़रात दोनों फ़स्लें सम्वत् ४१ से होती हैं । रजीडन्टी में रपोट निर्ख की हर पखवाडे व नमक खानों से निकालें व बेचे की सेमाही व साल तमाम पर की जाती है । तथा सम्वत् ३३ में सरकार

दौलतमदार ने मारवाड वगैरह का नमक ठेके लिया जब यहां से दीवान नथमल जी को जोधपुर बुलाकर जनाब कर्नल साहिब बहादुर व रजीडन्ट साहब ने कहा कि यातो खानो को बन्द करो खर्च के लिये नमक सरकार से मिलेगा या खानो पर सरकारी बन्दोबस्त मंजूर करो । अर्ज करी कि इतनी गुंजाइश नही है कि सरकार नमक निकाले और बन्द करने सरकार को नमक पहुंचाने में ५०।६० हजार खर्च होगा सो मुनासब जाने तो सरतें लिखा कर राज को खर्च जितना नमक निकालने की इजाजत दी जावे जनाब कर्नल वाल्टर साहब बहादुर ने मदरसे मंजूरी मंगाकर ऐसा ही किया कि नमक ५५००० मन से ज्यादह वगैरे हुक्म नही निकाले । सरकारी महसूल चुके नमक का इस इलाके मे राहदारी नही लेना । ३ नमक गैर इलाकह नही जावे ।४।५ में निखे वरपोट का हाल ऊपर लिखा है । ६ मारवाड में सरकारी नमक का कामजारी हो जब से जारी करना चुनान्चे इस मूंजब बरतै है । कानो धमे तो कामदार गो बछराज व एक दरोगा दो असवार व शहर मे गो तुलाराम है । तथा नमक हर जगह पहुचाने व बाजरी वगैरह लाने के लिये राज के ऊंट पे हरीदास जीवणदास मिंधा व कई हाली रखे कि खर्च से चौगुना फायदा होगा परन्तु उलटा नुकसान रहा सो अब कोई ठेकेदार ५० ऊंट रखकर शर्तो मूंजब काम देतो बडा ही नफा व सबको आराम रहे ॥

दीवानी फौजदारी

कानवा कायदा सम्वत् ४४ का माघ से आम लोगों को सुनाया गया परन्तु तामील न हुई सो होईगा (खुलासा दीवानी) लेन देन का रिवाज ७ पीडी का था अब ५५ वर्ष से पहले की सफाई या दावा ४ साल तक कर लै पीछे सुनाई न होगी वरसूम मुदई को रुपये दिलाने मे च्यारम राज व फीसदी ३) रुपया धर्मादे ऊपर गई के दोनो फरीक से व ७) रुपया फैसला का लेते थे सो छोडकर फीस नीचे लिखे मूजब वक्त दावा के मुदई से

ली जावें सो व क़ फैसला के हाकिम अदालत वाजिब जाने जिस पर रक्खें व मुतालबा तल-वाना व नक़ल फैसला वग़ैरह वग़ैरह का इष्टाम भी नीचे लिखे हैं अपील सिर्फ ॥) आना के काग़ज पर हो सकैगी॥

फीस

२००) रुपया का ८) रुपया, तो ५०००) रुपया के दावा तक — ऊपर दावा ५ हज़ार पर कमती याने रुपया ६।७। ३।२ फेर चाहे जितने हो फीसदी ५) रुपया के हिसाब से जिसके जुज - रुपया ५) तक ।) आने, रुपया ८) तक ॥) आने, रुपया १६) तक १) रुपया, २५) रुपया तक २) रुपया, ४०) रुपया तक ३) रुपया, ५०) रुपया तक ४) रुपया, उपरान्त २००) रुपया तक जुज २५ को, ५००) रुपया तक ५०) रुपया का, १०००) रुपया तक १००) रु० २०००) रुपया तक २००) रुपया का, ५०००) रुपया तक ५००) रुपया, १० हज़ार तक १०००) रुपया का, २० सहस्र तक २०००) रुपया का, व २५ हज़ार तक २५००) रुपया, पीछे जुज २ आसुल का है। सो हिसाब फ़ीस के ५०००) रुपया के ४००) रुपया, व १००००) रुपया के ७००) रुपया, व १५ के ८ व २० के १०॥ व २५ के ११॥ व ३० के १२ व १ लाख के १९००) रुपयास मक़ो। तथा लोगों के आपस में तहरीर सं० ७७ का माघ पिछली स्टांम पर सही होगी जिसका दस्तूर॥ (स्टांम्प) लगाने का यह है कि हुंडवी हर किता पर एक दफा १ सौ तक नहीं ऊपर ३००) आना ६०० तक =) आना १००० तक ≡) आना १५०० तक ।) आना २००० तक ।=) आना ३००० तक ॥) आना, ४००० तक ॥=) आना, ५००० तक १) रुपया, ऊपर १) रु० ज्यादा नहीं व पैठ पर पैठ पर सिर्फ =) आना के पर हुंडी पर नहीं लगा हो तो पूरा। सूदी देंन लेंन पर (स्टांम्प) चलू खाता साहूकारी पै नहीं और खत खाता व रुक्का वग़ैरह में सामले से सही निशानी करावे तो अंग उधार या ज़ेवर बर्तन वग़ैरह जंगम चीज़ गिरवी पर सूद ॥) तक है तो फ़ीसदी =) आना का और सूद १) रुपया तक हो तो फ़ीसदी ॥) आना

व सूद ९ से ज्यादह पर दूना जिसका जुज रुपया २५) का तथा रजिस्टर किसी कचहरी से करावे तो २५) रुपया पै =) जुज का हिसाब से लगेगा । जगह जमीन खेत कूवा वगैरह स्थावर आडत पर ऊपर लिखे हिसाब से ड्योढा । नया या पुराना हिसाब करके रुपया बाकी निकाले जिसपर ऊपर लिखे मूजिब । खेत जमीन वगैरह का सनदी हुक्म किसी कचहरी से का रुपया ७) पर लिखा सही होगा । बेटा गोद लेने रुगाडे करने तलाक लिखने वगैरह ऐसी तहरीर का रुपया ७) पर लिखी सही होगी । रसीद इकरारनामा जामनी भाडा चिट्ठी वगैरह ऐसी तहरीर का ~) आना पर । फारखती अभिराम न दावा की रुपया २५) का =) आना जुज के हिसाब से रुपया ७) तक हद है । ठेका इजारा किसी किस्म का रुपया २५) जुज का =) आना के हिसाब से । सीर साझा किसी किस्म का मवेशी जगह जमीन व कोई जिन्स या व्योपार दुकानदारी वगैरह की लिखावट रुपया २००) तक =) आना रुपया ५००) तक का ।) आना रुपया ८००) तक का ॥) आना रुपया १६००) तक का ७) रुपया, रुपया २५००) तक रुपया ३॥), से उपरान्त रुपया ३) से बडती नही । घृत ऊन धान वगैरह जिन्स लेनी लिखावे तो का बधव्याज मूजिब पर मगर ऊन तिल वगैरह खरीद करने का सट्टा व्योपारी लिखावे तो का फीसदी ~) आना मर परन्तु इसमें माल कमती तुले का भाव नहीं मिलेगा रुपये सूद से लेने होगे॥

इस्टाम

घर काम या बेचने को इकट्ठे १००) रुपये से बधती खरीदे तो कमी श्रम फीसदी ५) रुपये से २०) रुपये तक बधती जिसका जुज यूं है कि २५) रुपया तक ५) रुपया ५०) रुपया तक ६) रुपया १००) रुपया तक ७) रुपया व ऊपर २०) रुपया का इस्टाम रुपयों के हिसाब से मिलेगा परन्तु अदालत की फीस का कागज पूरे मोल

कचहरी से हीज लेनाहोगा · ऊपरलिखे में काम वेश करना श्रीजी साहव के हुक्म से हो सकेगा · जिसका इश्तिहार जारी कीया जावेगा · ऊभरतांगा याने चौपाया जबरन छीन ली या है या देने करिके नांहि दीया है तो दावीदार ८·६१ भीतर मजाज कचहरी में दरखास्त देकर सफ़ाई करले वरना जदही दावा करेगा कीमत मिलेगी · ऐसेही खाते में लैनी करी जिन्स नहीं आवे तो सियाद वाद सफ़ाई करले भाव नहीं मिलेगा · रुपये सूद से सही होंगे · तथा जगह ठगा की मसवाड़ भी ३ साल तक लेही लें पीछे ज्यादह डुकही नहीं मिलेगी। खेतमें विगाड़ हो सो तो जिसपर दावा लग सके उससे भर लेना परन्तु खेत छोड़ना नहीं अगर खेत छोडेंगे तो दावा खारज · असला हाजुल कयास ऐसे झगड़े पुराने रिवाज के नहीं रहे·

दफ़:२६

बड़े शहर व रेल तक रस्ते में गांम का नाम व दूर कोस व कू · गहरा व पुखता व बेरी व त· बड़ी छोटी

जोधपुर पु· ३० को·					
१	मोकलात	४	३ नहीं	है	छो·
२	वासनयां	२	४·मी	है	व
३	चोघन	७	१८	है	छो
४	सेदाकोर	४	३·मी	०	छो
५	लाली	२	२·मी	०	हे
६	श्राद्धोनि या	६	२४ख	·	व

बालोत्रा रेल है ५५ को·					
१	डाभला	५	७नी	है	व
२	आकल	२	०	०	व
३	छोड	४	३५मी	है	व
४	देवीकोट	२	६०नी	है	व
५	लखमन	३॥	८०मी	०	छे
६	छोडिया	१॥		०	व

कच्छभुज १४७ को· व माडवी द्वारका					
१	जीया	३॥	·	·	छो
२	लु·	१॥	·	है	व
३	पीथोडार	१	२५मी	है	व
४	कोरुवा	४	०	है	व
५	चेलक	४	७०की	·	व
६	देवडा	५	५०पै·	·	व

७	पोकरन	६	१०मी		व
८	लउवा	४			र
९	मडला	५	मी		व
१०	देछू	५	४०भे		व
११	ढाढीवा	२	मी २५		छो
१२	लाडता	२	३०मी		छो
१३	चांमु	५	३०पे		छो
१४	पाचुला	५			
१५	चडालीपा	२	१०मी	है	ऐ
१६	वालरवा	४	नगवावे	हे	ने
१७	इद्रोरवा	२	वेरा	मी	ऐ
१८	नाहरसडा	१	वेरा	मी	ए
१९	दानागोयन	१	देरा	मी	रे
२०	खासजोधपुर	३	मी	है	व

दूसरा रस्ता चलनेको गावोमेहोकर दो तीन हे जिससे नाम नहीं लिखे व वालोनासे रेल हे

७	डांगरी	३	८ क्न		व
८	खोला	४	८मी		छो
९	खारा	२	८मी		ऐ
१०	ऊडू	७			
११	रतेउ	२			
१२	सुवाउ	४			
१३	उत्तरणी	७		रु	
१४	मलवा	५		रु	
१५	खेड	६			
१६	वलोतरा	०			

वह्लाडमेर ।को ४३

गाव भू सीतु डाई रामा रवडीमें डाईतक इलाकह हाजा गोवगूगा याहडैवासौसिवाय ईलाकह मारवाड फेरगैवभाडखासे वाहडमेर और वहासे गुडा हौथी गावधनी धरवाव सुईगाव वगैरह होतेहुए कच्छभुजकाभी रस्ता हे

१	कुकासाउ	२	१०मी		
७	जोगीदास रे गोव	२	८क्न		व
८	कोहरा	२	१६मी		व
।	मणकलीजुडीयातघु कापार				
९	हरसानो	१०	११रा	है	व
१०	गढडा	१२	खा	है	वो
११	मोहली	६	१२मी		
।	खोवसरवविछडापारेह्लकर				
१२	कालरा	१४		है	
१३	भोरीला	१२	खा		
१४	मिठी	१०			
१५	दीपला	१३	मी		
१६	वलेहारी	५			
।	रनमेथमेथलफेरदोवाणोकी नाहसे				
१७	खावडा	२०	मी		छो
।	वोनमे ३।४गाव हे शेर				
१८	भुजनगर				

फेरमाडवी सो २० वरस्तागरमेन्ना १४जहा जचन्न गस्योहारकानोंवैरने गामके मेगोमनोजोहै मनउसे गामापुग उम डक्रे २५ फानगतासरको १५हुं

हैदराबाद सिंध को - १०० (१) सता को ७ कूवा पुरखतः १५ मीठा त - (२) खुहड़ी कोश ७ कूवा पुरखता १२ मीठा (३) न - बल्लणाई कोश ६ (४) फुलिया कोश ५ कूवा पुरखता ३७ मीठा त - (५) महाजल्लार को ५ कूवा पुरखता ४० मीठा (६) व्यधीवावल्लो कोश ८ चौहद्दी है - कूवा पुरखता ४५ खा - (७) सैदाउ कोश ५ कूवा पुरखता १५ मीठा (८) जाफराउ कोश ५ कूवा पुरखता १० मीठा (९) रणाउ कोश ५ कूवा पुरखता १६ मीठा (१०) आसराडहर कोश २ कूवा पुरखता १८ मीठा (११) गपनीरो ढहू कोश ६ पानी लूण छाया (१२) हयूंगा कोश ४ यहां तक कोश ३० रेत के टीबे हैं पानी का नाला व कुण्डा हैं (१३) खिपरा कोश २ बाबा है (१४) खिराउ कोश ६ (१५) मीरपुर जूना कोश ४ (१६) मीरपुर नया कोश २ (१७) नंडा अल्लायार कोश ६ (१८) लाठी कोश ४ (१९) खास शहर हैदराबाद कोश ६। दूसरा रास्ता कोट महाजल्लारसे गांव सुन्दरा कोश ७ ईलाकह मारवाड - गांव रागरणदेर कोश ७ ईलाकह सिंध - फेर परचीरा बेरी होकर गांव ढोल कोश १५ बेरें है नाला भी है - गांव अमरकोट कोश ७ सांडला कोश ८ फेर ढानियां होकर नंडा अजायार से हैदराबाद। अगाड़ी नगर थटा कोश - व किराची कोश ६० है - वहांसे केलात व बलोचिस्तान व मक्का सरीफ़ व देवी हिंगलाज़ को जाते हैं - तथा किराची से बम्बई बन्दर व बिलायत ईङ्गलिस्तान को जिहाज़ जाते हैं॥

राह डीभरखबरयानदीसकवर कोस १०० हां से १२ शहर शिकारपुर व कोश १२ खैरपुर मीर साहब का है जिसका रास्ता कोट सहागढ़ में हो कर भी है (१) चुंधी कोश ४ कुण्ड मीठा (२) छचेल कोश ४ वेरी पुरखता ७ मीठा (३) कुछड़ी कोश ७ वेरी पुरखता ६ मीठा (४) कोटखुंयाला कोश ५ कूवा पुरखता १२ मीठा (५) बांघा कोश ४ वेरी पुरखता २ मी - पानी कम (६) असू कोश ८ कूवा पुरखता ४० मीठा (७) कोट घोटहडू कोश ८ कूवा पुरखता ५० मीठा (८) सोजरे का कूवा पुरखता २४ मीठा - इलाकह हाज़ा (९) मिठडाउई सिंध

कोश १६ कूवा पुखता ७ मीठा (१०) उघड कोश ८ वेरी पुखता ७ मीठा (११) मनेरीखु ई कोश ४ वेरी पुखता ७ मीठा (१२) वस १२ कोश वेरी पुखता ७ मीठा (१३) सिंगरार कोश ७ कूवा पुखता मीठा (१४) भिंडो कोश २ रोहडी कोश ६ दरीयाव है॥

खेरपुरडहरका कोश ७२ (१) रामकुण्ड कोश ४ मीठा (२) लाणेला कोश ३ वेरा तलाव (३) भादासर कोश ९ वेरा त-है (४) मोकल कोश ९ त वेरा (५) संनु कोश ६ कूवा पुखता ६० (६) कोटरामगढ कोश ६ वेरे है (७) खेरड कोश ३ वेरे हैं (८) रणाउ कोश ८ कूवा पुखता ३२ मीठा (९) घेटाली कोश ५ कूवा पुख ता २० मीठा (१०) नणोट कोश ३ कूवा पुखता १८ खारी (११) खेरगढ ईलाक ह डहर कोश १६ वेरे है (१२) खजुकारू कोश ८ कूवा पुखता ८ मीठा (१३) खेरपुर को श ८ पानी का वावा है फेर रेल है सो सक्खर कंडेरा अहमदपुर वेगड की गढी वहा वलपुर पंजाब वगैरह को जाती है॥

खानपुर ईलाक ह वहावलपुर कोश ७३ (१) वरसमसर कोश ४ तालाव कुण्ड वेरा है (२) सुलरे कोश ३ तलाव कूवा पुखता २५ मीठा (३) कंडीयाला कोश २ कूवा पुखता ३५ खारी तलाव है (४) खावलसर कोश ५ तलाव कूवा पुखता खारी (५) रता कोश ९॥ कूवा पुखता २५ मीठा तलाव (६) डावर कोश ३ तलाव झरना है (७) वराह्म कोश १० कूवा पुखता ३२ खारी ईलाक ह झजा (८) न्हवर कोश ८ ईलाक ह वहावलपुर कूवा पुखता ३५ मीठा (९) मूराटोभा कोश १२ (१०) लणारपार कोश १२ झरना है (११) खानपुर कोश १२ खुला वावा है दूसरा रस्ता न्हवर से मिठा कोश २४ वेरा है फेर रेल है॥

बीकानेर कोश ८३ चारनपी चांधना सोढा कोर तक कोश १६ (५) भाड़ीया को श ३ कूवा पुखता २५ मीठा तलाव (६) नवानली कोश ३ कूवा पुखता २८ मीठा तलाव (७) लुहारखी कोश ४ कूवा पुखता ४५ मीठा तलाव (८) टेकरा कोश ६ कूवा पुखता

४५ मीठा कम तलाव करला हैं (९) सोहड कोश ३ कूवा पुखता ३८ मीठा तलाव (१०) सखासर कोश ६ तलाव (११) बधाऊडा कोश ३॥ तलाव (१२) कोटवाय कोश २॥ तलाव वेरी पुखता ७ हैं (१३) गाउण कोश १॥ तलाव (१४) वडी सिंडे कोश २ कूवा पुखता २० खारी, तलाव (१५) गुलजीरी सिंडे कोश २। कूवा पुखता २८ मीठा, तलाव (१६) नोखडा कोश ६ बेरी तलाव कूवा पुखता २६ मीठा ई० हाजा (१७) रावणीयेरी कोश ४ ई० वीकानेर कूवा पुखता (१८) देशाना कोश ३ कूवा पुखता तलाव (१९) मड कोश ४ कूवा पु० तलाव (२०) चांनी कोश ३ कूवा तलाव (२१) गजनेर कोश ३ वाग तडाग व राजभवन हैं (२२) नाईयारी वस्ती कोश २ (२३) प्हो कोश २ (२४) खास शहर बीकानेर कोश ४ और सरसा भीयानी देहली वगैरह का भी यही रास्ता है · तथा सोहडा से फलोधी होकर नागोर का रास्ता कोश ८ है॥

कौम राजपूतों के सादी ग़मी में खर्च वग़ैरह की रीत

जनाव कर्नल साहब कर्नेल वालटर साहब बहादुर जी ने बमूजिब हुक्म वाइसराय गवर्नर जनरल मात्र रियास्तों के जो इख्तयार मोतमद व केवराजों की कमेटी से मुकाम अजमेर सम्बत ४४ का चैत्र में कौम राजपूतों के शादी व ग़मी में खर्च वगैरह का वन्दोवस्त कराया कि सगाई के वक्त वेटी का बाप बडे सिरदार तो टीका देते थे और ग़रीव रजपूत रुपया लेता था यह रस्म कितई बन्द · अगर कोई विल्कुल नादार हो तो विवाह के वक्त रुपया १०७ से कम लेकर विवाह को लगादें और सगाई करें जब अमल दस्तूर के बाद सगपन कीये की चिट्ठी एक दूसरा लिख दें कि फेर झगडा नहीं पडे · तथा विवाह में खर्च की तादाद भी हैं सियत मूजिब लिखी है उसमें चारणों भाटों ड्मों वगैरह की त्याग की तादाद शादी के खर्च में फीसदी ६॥) रुपया उस इलाकह वाले को देवे कि जहां मादा है दूसर-

इलाकह का मंगत आवे सो ताल्लुके का हाकिम सजा दे और इलाकह के रोली में चारन नहीं है जिससे येरवाबाटी का जाने की इजाजत है इस बन्दोबस्त से इलाकह हाजा मे शादी की बाबत बडे सरदारों के तो ठीक कुछ सो आसानी से चलेगा और गरीबो के रुपया लेना का रिवाज पुस्तों से है सो मुश्किल से मिटेगा मगर यह तजवीज हर हाल है नेकसी राज से पूरी कोशिश होकर मिटीसी हो बाकी मोसर में खर्च की तादाद रक्खी है सो चलने की नहीं क्योंकि पैदा के हिसाब से तो ओसर हो सके ही नहीं और करना एन फर्ज है ज्यूं इस खर्च में हर्ज भी नहीं है भाई गनायत हेतू वगेरह दवदार पूरी मदद देते हैं अलावा इसके शादी में उमर की कैद लगाई है सो भी हो सके नहीं कैद बमूजिब उमर के बर कन्या का मेल लगना मुहाल है हां यह ख्याल बहुत मुनासिब है कि ठाकुर के कुंवर रहो तो ४५ बर्ष की उम्र बाद शादी न करें नथा इस के बंदोवस्त को राज में कमेटी रहवे वह हर छ माही रिपोर्ट एजंटी में देने का हुक्म है सो हुसी ही इसवास्ते हुकूमतों से रिपोर्टों के आने से नकशे का नमूना जेल में दर्ज है और हुक्म है कि सगाई विवाह होवे उसी दिन नकशे में लिखवे॥

नकशा मिती वदी "शुदी" छमाही इलाकह जेशलमेर में कोम राजपूतों के बेटा या बेटी की शादी हुई का सबत ४ मिती शुदी १ थी

नम्बर शुमार	बेटी का बाप					अगीली विवाह हुआ हो	बेटे का बाप					सगाई का तौक्या	रुपया लिया सौ कितना	कैफ़ियत
	गांव व इलाकह	खांप	नाम	बापकानाम	बेटी कानाम व उमर जिसकी शादी हुई		गांव व इलाकह	खांप	नाम	बाप का नाम	बेटे का नाम व उमर जिसकी शादी हुई			वीद की शादी पहली है या कितनी वीद पाटवी है या भाई मतीजा वगेरह तथा और हो जो रहाल वर्ते सो

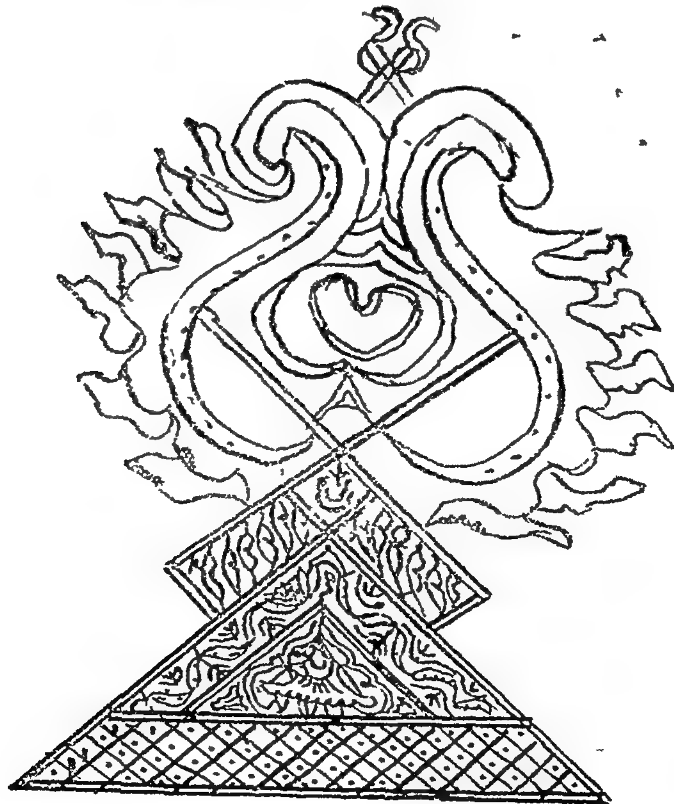
तथा साहूकारों कोभी बहुतसी हिदायतें प्रबन्ध बाँधनेकी की हैं व खसूसन सगाई बाबत समझाया कि कोई बेटी के रुपये लेवे ही तो उधारे कर लें सो पीछे दीये बाद आड़ा ओसर कर सके और घटा करे तो सटाई मर्द औरत जीवे जितने आडा ओसर न हो परन्तु बिलफैल तो असर न हुवा मगर यकीन है कि ऐसे ही होगा ॥

इति

शुभम्भूयात

इति श्री तवारीख जैसलमेर के राजपूतों की सम्पूर्णं

शुभम



श्रीगणेशायनमः ॐनमः

तवारीख

अथतीसराभागलिख्यते

जोकि ब्रह्माजी के स्वयम्भू मनुजी आदि हिन्दू राजे जो सूर्य्य चन्द्र वंश में हुए जिन के नाम व राम कृष्णादि अवतार व औरही बडे सामर्थ वान होकर जो जो काम किये सो भागवतादि पुराणों में हैं ऽ उसके पीछे के नाम व हालात् शिलशिले वार जो मिलता तो तिमिरनाशकादि बहुत ग्रन्थ बने हैं जिसमें लिखतेहीं ज और भाटी वंश के नाम श्री कृष्ण चन्द्र से आज पर्य्यन्त तवारीख मे लिखेही हैं बल्कि उदयपुर की तवारीख में नाम थे ज्यों दूसरे रईसों के नाम वगैरह हाल मालूम हो सका सो वह बादशाहान दिल्ली व लाट साहब व रजीडन्ट साहब बहादुर व रजीडन्ट गरबी राजपूताना के नाम व सन् जलूस व चार्जका इस भाग में लिखाजाता है

दफा १

बादशाहानदेहलीके नाम और लकब व कौम व जलूस व सन् विक्रमी

(१) सुल्तान साहबुद्दीनगोरी सं॰ १२३९ (२) कुतबुद्दीन ऐबक सं॰ १२५९ (३) आरामशाह सं॰ १२६६ (४) समसुद्दीन सं॰ १२६७ (५) रुकनुद्दीन फीरोजशाह सं॰ ९३ (६) रजीयावेगम सं॰ १२९३ (७३) मोजुद्दीन बहरामशाह सं॰ १२९७ (८) अलाउद्दीनमहमूदशाह सं॰ १३०० (९) नासरुद्दीन महम्मशाह सं॰ ३(१०) गयासुद्दीन बलबन सं॰ २२ (११) मोजुद्दीन कैकबाद सं॰ ४४ (१२) शमसुद्दीन

कैकाउस सं. ८७ (१३) जलालुद्दीन फरोज शाह खिलजी सं. ८७ (१४) शमसुद्दीन इब्राहीम खिलजी सं. ५३ (१५) अलाउद्दीन खिलजी सं. ५३ (१६) शाहवुद्दीन उमर खिलजी सं. ७३ (१७) कुतबुद्दीन मुबारक शाह खिलजी सं. ७३ (१८) गयासुद्दीन तुगलक शाह सं. ७८ (१९) सुल्तान महमूद तुगलक शाह सं. ८२ (२०) फीरोजशाह तुगलक सं. १४०८ (२१) गयासुद्दीन तुगलक शाह दूसरा तुर्क सं. १४४७ (२२) अबूबकर शाह तुगलक सं. १४४७ (२३) नासरुद्दीन मुहम्मद शाह तुगलक सं. १४४७ (२४) सिकन्दर शाह तुगलक सं. १४५० (२५) नासरुद्दीन मुहम्मशाह तुगलक सं. १४५० (२६) दौलतखां लोदी पठान सं. १४६८ (२७) सय्यद खिजरखां सं. १४७४ (२८) मोज्जुद्दीन अब्बुलफतेः मुबारकशाह सं. १४७८ (२९) मुहम्मद सं. १४८० (३०) अलाउद्दीन सं. १५०२ (३१) हमीरखां पठान सं. १५०३ (३२) सुल्तान बहलूल लोदी सं. १५०७ (३३) सुल्तान सिकन्दर लोदी सं. १५४६ (३४) सुल्तान इब्राहीम लोदी सं. १५७४ (३५) जुहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर शाह गाजी सं. १५८३ (३६) नसीरुद्दीन मुहम्मद शाह हुमायूं शाह बादशाह गाजी सं. १५८८ (३७) सोहरशाह सूर सं. १५९७ (३८) सलीम शाह सूर सं. १६०२ (३९) मुहम्मद शाह अदली सं. १६१० (४०) बादशाह इब्राहीम सूर सं. १६११ (४१) सिकन्दर शाह सरी पठान सं. १६११ (४२) नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायूं बादशाह दूसरा मुगल सं. १६१२ (४३) अब्बुल मुजफ्फर जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह गाजी सं. १६१२ (४४) नूरुद्दीन मुहम्मद जहांगीर शाह बादशाह गाजी सं. १६६२ (४५) शाहबुद्दीन मुहम्मद शाह जहां बादशाह गाजी सं. १६८४ (४६) मुहीजुद्दीन मुहम्मद औरंगजेब आलमगीर बादशाह सं. १७१४ (४७) कुतबुद्दीन मुहम्मद आजम शाह सं. १७६३ (४८) शाह आलम बादशाह सं. १७६४ (४९) मोजुद्दीन जहांदार शाह सं. १७६५ (५०) जलालुद्दीन मुहम्मद फर्रुखसीयर सं. १७६६ (५१) रफीउदरजात सं. ७६

(५२) रफीउद्दोला सं १७७६ (५३) रोशनअखतर मुहम्मद शाह बादशाह सं० १७७६ (५४) अबुलहसन अहमद बादशाह सं० १८०५ (५५) अजीजुद्दीन आलमगीर शानी सं १८११ (५६) महीउलसुनत सं १८१६ (५७) अली गोहर शाह, आलम बादशाह सं० १८१७ (५८) अकबर शाह बादशाह शानी सं १८६३ (५९) सराजुद्दीन अबूजफ़र बहादर शाह बादशाह गाजी सं १८९४ सं १९१४ मे काला लोगों के गदर सें सामिल होने से नामकी बादशाही करके कैद हुवा॥

दफा २

सरकार दौलत मदार अङ्गरेज़ बहादुर

जनाब मलिका मोअज्जमा रफीउलदरजात क्वीन विक्टोरिया क़ैसर हिन्द बादशाह इङ्गलिस्तान का जन्म सन् १८१९ ईसवी। सन् १८३७ मे काका चौथा उईलियम के तखतनशीन होकर सन् १८४० ई० के जनवरी में जरमन का प्रीन्स आलबर्ड साहब से शादी करी और राज काज करने की खूबियों मे व इकबाल बिलन्द का हाल मशहूर आम है लिखने की हाजत न ताकत खुदा उमर दराज करे ६२ किरोड़ मनुष्यों का अन्नदाता नसीब है और औलाद का नाम व शादी नीचे लिखी है मये सन व माह व तारीख॥

विक्टोरिया अडलेडी मेरी लुईस का जन्म ४०।११।२१ प्रेसीयाके शाहनशाह फ्रेडरिक उईलियम से शादी ५८।१।२५।(१) प्रेन्स ओफवेलस आलबर्ड इडवर्ड का जन्म ४१।११।९ डेनमार्क की बेटी अलेखजनुरा से शादी ६३।३।१० प्रेन्सस आलस मोडमेरी ४३।४।२५ हिसीडारमिस्टाड का लुईस से शादी ६२।७।१।(२) प्रेन्स आलिमेड अरनेस्ट आलबर्ड ४४।८।६

सन् ६६।५।२४ प्रेन्सस हलेना अगस्टा विक्टोरिया ४६।५।२६ हसथन का कँवर क्रसयन

से शादी । । प्रेंसस लुईस कारोलाइन एलबर्ट ४८।३।१८ लोर्ने का मारकुइस से शादी ७१। ३ ।२१ (३) प्रेन्सस आर्थर विलियम पाटरीक अलबर्ड ५०।५।१ (४) प्रेन्सस ल्यूपावलन जरजड़ नकेन अलबर्ड । । ।

सन् १८७८।१।१ को केशरहिन्द का खिताब स्वीकार किया सन् १८८७ में सन् जुबलीकी खुशी मात्र जहांन में हुई सन् ६१ में प्रेन्सस आलबर्ड के फौत होने का शोक ४ वर्ष रक्खा था॥

इङ्गलिस्तान में वजीरआजम के लकब व नाम व तारीख चार्ज

(१) भाई कवंट मेलब्रान सन् ३५।४।१८ (२) सररबर्ट पीलू से० ४१।८।१ (३) लार्ड जोनरसल ४६।७।३ (४) अर्ले आफ़ डर्बी ५२।२।२७ (५) अर्ले आफ़ अबेर्डेन ५२।१२।११ (६) भाई कवंट पामरन ५५।२।८ ओर्ले आफ़ डर्बी ५८।२।२६ (८) भाई कवंट पामरन ५९।६।१८ (९) अर्ले रसल ६५।११।६ (१०) अर्ले आफ डर्बी ६६।७।१६ (११) वनजामन डीज राइल ६८।२।२७ (१२) विलीयम वार्ट ग्लेडस्टून ७४।२।२१ (१३) डजराइल । । (१४ वलीयम वार्ट गलर्लेडस्टुन ८०।४।२८ (१५) मारकुइस आफ़ सालसबरी ८५।६।२४ (१६) बलीयम वार्ट गलडस्टुन ८६।२।६ (१७) मार्कुइस आफ़ सालसबरी ८६।८।३

गवर्नर जनरल केशरहिन्द व तारीख चार्ज

(१) राइट आनरबल वार्न हेस्टंस ७४।१०।२० (२) लार्ड कोर्नवालस केजी ८६।९।१२ (३) सर्जन शोरवाड़े ९३।१०।२८ (४) दीमारकुइस आफ़ अलस्ली ९८।५।१८ (५) लार्ड मिन्टू सन् १८०७।७।३१ (६) मार कुइस आफ हेस्टंस सन् १८१३।१०।४ (७) लार्ड एमहर्स्ट सन् १८२३।८।१ (८) लार्ड आर्ड विलियमबटंग सं० १८२८।७।४ (९) सर चार्लेस मीटकोफ़ कायम मुकाम सन् १८३५।३।२० (१०) लार्ड अकलेंड सन् १८३६।३।४ (११) लार्ड इलनबरा सन् १८४२।२।२८ (१२) लार्ड हार्डीन्ज सन् १८४४।७।२३ (१३) दीमारकुइस आफ़ डेलहवसी सन् १८४८।१।१२ (१४) भाई कोंट किना सन् १८५६।२।२८ —

(१५) लार्डइल्गन सन्१८६२।३।१२ (१६) सरजान लोरेंस सन्१८६४।१।१२ (१७) अर्ले मेयो सन् १८६६।१।१२ (१८) लार्ड नार्थब्रुक सन्१८७२।१।३। (१९) लार्ड लीटन सन् १८७६।४।१२ (२०) मारकुइस ओफ्रीपन सन् १८८०।६।८ (२१) लार्ड अर्ले ओफ्डफ्रीन सन् १८८४।१२।१३ (२२) दी राइट आनरबल ओफ़ लेन्सडोन वाइस राय इनु गवर्नर जनरल इंडिया सन् १८८८।१२।१० चार्जलिया सम्बत् १९४५ मृगसिरसुदी ८ चन्द्रवार॥

साहेबान अजन्टगवर्नेर जनरल राजपूताना।

(१) जनेल दिवीड अक्टर लोनी दिल्ली सन १८ । । । (२) सरचारल्स मिटकाफ २५ । । । (३) मिस्टर सर एकालब्रुक सन् २८ । । । (४) कर्नेल लाकट अजमेर- ३२ - - (५) कर्नेल अलबीस - - (६) कर्नेल जे- सदर लेन- ३८ - - (७) मेजर जेथयोरस्बी कायम मुकाम- - (८) कर्नेल जे- सदरलेन- - (९) क जे- लेवो- - - (१०) सरहनरी लारेंस आबू - - (११) जरनेल जार्ज लारेंस- - - (१२) क- डबल्यू एफ ईडन कायम मुकाम ६० - - (१३) जर्नेल जार्ज लारनस साहब ६१ - (१४) कर्नेल सी के इलियट साहब ६४ - (१५) क- डबल्यू एफ ईडन साहब ६४- - - (१६) क- आर एच कीटंग साहब- ६७- - (१७) क जेसी ब्रुक ७०- - (१८) सरज्युइस साहब- ७३ - - (१९) मिस्टर ऐसी लायस साहब ७४- - (२०) क- सी के एम वालटर साहब कायम मुकाम ७७ (२१) मिस्टर ऐ सी लायल साहब- ७८ - (२२) क- ए आरसी ब्राडफोडसाहब - (२३) क- सी के एम वालटर साहब कायम मुकाम- - (२४) क- ए- आरसी ब्राडफोड साहब- - -

(२५) क. सी. के. एस बाल्टर साहब बहादुर सन ८७.

मातहत यूरोपियन साहब बहादर बहोत से हैं चुनांचे: अलावा सिकत्तरों के अजमेर में कमिश्नर व उदैपुर व जैपुर जोधपुर में रजीडन्ट व भरतपुर देवली में अजन्ट साहिबों के पास पडोसी रियासतों के वकील वास्ते: काम पंचायत वगैरह के रहते हैं तथा बीकानेर अलवर कोटा झालावाड में पोलटीकल साहब व नये शहर वगैरह में भी रहते हैं और जैशलमेर सिरोही मलानी का रजीडन्ट साहब जोधपुर व बूंदी टोंक लावा का अजन्ट देवली में व डूंगरपुर बांसवाडा देवलिया प्रतापगढ़ का रजीडन्ट उदैपुर में व करोली धोलपुर का अजन्ट भरतपुर सम्भाल वरपोर्ट करते हैं. और अजनाव कुल्लां साहब बहादुर जी पास १४ वकील उदयपुर जैपुर जोधपुर जैशलमेर बीकानेर किशनगढ़ अलवर भरतपुर करोली धोलपुर टोंक बूंदी कोटा झालावाड के रहते हैं. तथा यहां के वकील मुंशी लखपतिराय थे सं. १८८८ में हजूरी रामजी दास जी फेर सं. ९९ में मो. सरदारमलजी गये सं. ९६ में अजमेर का लाला पहोकरनलालजी को नायब रकवा सं. ३ में मो. जी मिम्बर कौंशिल रहे व सं. ८ में फोत हुये तो लालाजी कायम मुकाम रहे सं. १० में गांभूका का सोढ़ा ठा. ऊमजी गये फेर बेटे जोधसिंह को रकवा था सो सन् १२ में आया बाद लाला जी व बेटा लखपतिराय को काम दिया. सं. १९ में व्यास धनसुखदास वकील हुवे. सं. २० का कार में महता नथमलजी दीवान साबिक जरूरी काम के लीये वहां गये सो कुल्लां साहब बहादुर जी के साथ जेसलमेर आये जब सं. २१ के कार्त्तिक में महता अजीतसिंह जी का साथ ले गये सो सं. २३ के अषाढ़ में पीछे आये बाद पोहकर लालजी का बेटा गुलाबराय जी जो नायब था अच्छा काम देने लगा लइकदार था ही. वकील हुवे सो हैं॥

पोलटीकल अजन्ट मारवाड जेशलमेर के रजीडन्ट गरबी राजपूताना

(१) कप्तान वल्डर साहब अजमेर से १९ - (२) कप्तान जैमसटाड साहब उदयपुर - - (३) न्वर्लीयम साहबअ - - (४) एच २ ग्रेथर्ड साहब सन् १८३७ - (५) मेजर जान लडलु साहब - - (६) कप्तान मांच साहब सन् ४४ - - (७) मि. ग्रान्टहेड साहब सं. ४५ - - (८) कप्तान मेकमीसन साहब - - (९) मेजर मालकम साहब स. ४८ - (१०) कप्तान हाडकप्टन साहब सं ५१ - - (११) क. सिक्तफ़ियर साहब सं ५१ - - (१२) कप्तान मीसन साहब सं ५६ - - (१३) कप्तान मारीसन् साहब सं. ५७ - - (१४) क. ब्रुक साहब - कायममुकाम सं ५८ - - (१५) मेजर निकसन् साहब सं. ५९ - - (१६) मेजर ईम्पी साहब सं. ६५ - - (१७) क. ब्रुक साहब का. स. ६८ - - (१८) मेजर ईम्पी साहब स ७० - - (१९) मेजर एवर्ट साहब ७२ - - (२०) मेजर सी के एम. वाल टर साहब सं. ७३ - - (२१) मेजर सी ऐ. वेली साहब सं. ७५ - (२२) मेजर केडल साहब सं ७८ - (२३) कप्तान बार साहब का - - (२४) क. परसी डबल्यू पौवलट साहब सन् ७९ - - (२५) क. टोडी साहब सं १८८० - - (२६) क. परसी डबल्यू पौवलट साहब स ८२ - - (२७) मेजर सी. ऐ वेली साहब सं ८४ (२८) क. परसी डबल्यू पौवलट साहब सन् ८५ - (२९) कराफोर्ड साहब - - (३०) क. पौवलट साहब बहादुरजी स. - हैं

रियासतों के बाहमी मुकद्दमात की पचायत वास्ते ८ वकील उदयपुर जयपुर जोधपुर जेशलमेर सिरोही सिरोही पालनपुर बीकानेर किशनगढ़ रहते हैं ।

यहांके वकील सं· ४ में व्यास वद्रीदास व सं· १७ में हाफ़िज़ अबदुलहकजी वासदे नागोर जो नायव थे सं· ३७ में फौत हुए बाद बेटा अब्दुल हसनजी हैं दोनों को पैर में सोना मिला·

अजन्टीमें

नक़शा व रपोर्ट भेजते हैं

(१) हरदफ़ै: नक़शा बारस (२) हर पखवाड़े निर्ख बाज़ार (३) से माही नक़शे पांच· ।१ में फुटकर नमक डाका ठगी डकैती (४) शशमाही महाजन व दिसम्बर के आखीर में· ।तादाद फौज सवार पैदल व तोपा· तादाद मुलाज़िम ईसाई बिलायती मकरानी· ।तनख्वाह· सिलावटे व मज़दूर। तादाद मुजरमान जो इलाक़ह गैर से आये· मये हाल उसको सलाह वग़ैरह का· ।तादाद अफयून देशा में पैदा व दिसावर से आया व खर्च हुवा व रुपये महसूल· ।पैमायश के मिनारे सम्भाल कर रपोट करना। राजपूतों के शादी गमी का हाल (५) सालयाना रपोट आखीर दिसम्बर में· ।तादाद बारोठये हैं व इमसाल हुवे की·। बीज गंदम व रूई कितनी ज़मीन में कितना बूहा· कितना पैदा व खर्च व ने काल कहां को हुवा मये निर्ख व आमदनी राज· ।तनदुरुस्ती व सेहत आम खलायक· ।मेउ कालेज अजमेर में कौन गया· ।हिसाब व कुल पैदा खर्च की· ।तादाद वारदात साल तमाम व सज़ा मुजरमान· ।तादाद दीवानी फौजदारी में कितने· बकाया साबक व नये रजू व फैसल मये पैदा राज· ।जो कोई तरक्क़ी व तनज्जुल इमसाल हुवा हो· (६) हालात पूछने पर· करज़ा· घास· चारा· घोड़े· बैल खच्चर वग़ैरह वग़ैरह लिखा जाता है (७) रज़ीडन्सी से नक़शा माहवारी महसूल अफीम का जो पाली में सं· २९ से बेते हैं व छ: माही हिसाब खजानची का आता है॥

यूरोपियन साहब बहादुर शहर खास व इलाके जैशलमेर में

तशरीफ लाये

(१) जनाब साहब वाला लाकट साहब बहादुर जी सं १९८२ श्रीसरकार से हथनी एक लक्ष्मी व सोगात लाये (२) नबलिया साहब सं ८९ में बीकानेर महाराज से मुलाकात कराई (३) लडलू साहब बहादुर स में वक्त फलोधी की सींव निकाली (४) जौकिन्स साहब सं ८२ बहाडमेर मुफसिदों को सजा दी (५)(६) कलेजर साहब मेघलादन साहब श्रीजी गंगाजी पधारे जब साथ थे (७) सा स० में साकल से जमीन मापते थे (८) जनाब क० ज्यान सदरलेन साहब बहादुरजी सं ४ माघ सुदी १८ का तशरीफ लाये दिन १५ मुकाम डाक्टर साहब व लिकलर साहब साथ थे (९) कप्तान बीचर साहब स० ९१ ६१७ में आये सिंध से सींव निकाली (१०) कप्तान सिब्वल सं० ८ में पोकरन सी सींव निकाली (११) साहब सं में आकर मुल्तान गये वहां काम आये (१२) सिंघ से कमिश्नर साहब के भेजे सं १५ गदर में अजमेर जाना भये फौज बलोचों का रिसाला साहब व ७ दूसरे साहब आये थे तोफा रिसाला भी साथ था (१३) तरवट साहब साहब अमरकोट से स १५ में आये दिन रहकर ऊंठ खरीद किये (१४)(१५) (१६) कप्तान ब्रुक साहब व डाक्टर साहब व डिकन्सन साहब स १४ फाल्गुण सुदी १४ को आये चैत्र वदी को कूच (१७) मकाली साहब सिंघ से तोपखाना ले जोधपुर गये दो साहब साथ थे सो पीछे आकर सिंघ गये (१८) मकाली साहब सवार ५०० सिंघ से आये थे केरजी साहब सं १५ आषाढ सुदी ७ को सवार ४०० साथ

* अखबारात के आडीटरों में से पहला अडीटर जो सन १८८८ ई० के अन्त में जैसलमेर में आया उसका नाम मोलवी मुहम्मद मुराद अली अडीटर राजपूताना गजट अजमेर है इनकी मुलाकात श्री महारावल वैरीशाल जी साहब से हुई और दर्बार ने २०) रु० एक टंक और दुशाला व पाग इनको बख्शा था

अजमेर से आकर सिंध गये (१९) गुलसमद साहब सं· १५ माह सुदी १२ अमरकोट से आये दं रहे फेर पोकरन से पीछे आकर सिंध गये (२०) डिकसन साहब सं· १५ कार्त्तिक वदी ५ सवार दो सौ साथ आये थे (२१) (२२) जेकिसन साहब पाटीदर साहब सम्बत १७ माह वदी ६ वहाडमेर तोफ़ा लाये (२३) नैकिसन साहब बहादुर अजन्ट जोधपुर सं· १७ माह सुदी १ वहाडमेर से आये सो गिरिराजसरतशरीफ़ ले गये (२४) सिकन्दर हिमलटीन साहब सं· १७ कार्तिक में बीकानेर का कांकड देखा सं· १९ में सरहद निकाली (२५) कप्तान इष्टन साहब सं· १९ पोष सुदी ११ को आये· सुदी १४ को कूंच· फेर चैत्र वदी ७ को आये· वदी ६ को कूंच (२६) निकसन साहब बहादुर जोधपुर से सं· २१ के मृगसिर वदी ३ को आये, वदी ८ को कूंच (२७) जनाव कर्नल· इडन साहब बहादुर जी सं· २१ कार्तिक वदी १३ को तशरीफ़ लाकर श्री जी साहबों को तख्त नशीन कीये· डाकर लोंग साहब व सिंध विलीयर व रापर्ट साहब साथ थे (२८) जोधपुर से इस्पी साहब बहादुर सं· २७ कार्तिक वदी १२ को आये वदी को कूंच पैमायश के काम पर (२९) टाने साहब सं· ३० माघ सं· ३२ पोष सं ३३ पोष माघ कार्तिक सं· ३५ के कार्तिक में गये (३०) राक्स साहब सं· ३२ के चैत्र में आये सो जनाब बालटर साहब के दोश्त लिखने से खातिर ज्यादह कराई (३१) आय साहब सं· ३१ व सं· ३३ मृगसिर माघ चैत्र व सं· ३४ के कार्तिक सुदी १२ को आये थे (३२) बूलर साहब बुम्बई से आकर सं· ३० के माघ में जैन का शास्त्र देखा दं केई उतराया कि नया मिला एक साहब शैर करने को बिलायत से आया साथ था (३३) जोधपुर से एजीडन्ट बालटर साहब बहादुर सं· ३० आसोज सुदी ६ को आये बड़ी धूम से दसहरा हुआ· फेर सं· ३२ के फाल्गुण में श्री जी साहब की मिजाज पुरसी के वास्ते तशरीफ़ लाये डाकर साहब जी से ये युमन साहब साथ थे उनको बाज़ रात घोड़ा व रुपये देराये (३४) -

विलारफोर्डसाहब से-३२फाल्गुणसुदीकोपत्थरदेखा डूंगर तेमडे द- तेजुवां मेघातु कहकरपत्थरलेगये (३५) कप्तानकानलसाहब बहादरव एवजरजीडन्टसाहबस- ३३के पौषसुदीमें आकरकेशरहिन्दकादर्बारकिया (३६) पष्टनसाहब सं-३३के बैशाखमें फलोधीसेनमकका आगरदेखनेआये (३७) फिरंटीसाहबसं ३३केवैशाखवदी १ (३८) जनाबबारसाहब बहादुररजीडन्टजोधपुरसेसं-३४केमाघमेंफलोधीसेआयेकाबुलपरसर्कारकीचढाईकेलियेऊंटखरीदकराये (३९) जनाबकर्नलमे ब्राडफोर्डसाहबबहादुरजीसं-३४केकार्तिकवदी५कोतशरीफलायेवदी६कोकूच (४०) जनाबक० पोलटसाहबबहादुररजीडन्टजोधपुरसे (४१) मिअोलडामसाहबसं ४२ ४३ मेंदेशकेडूंगरदेखे (४२) डाकरएडमसाहबसं- मे आये॥

दफा ३

नकशारियासतहायजोसूबाअजमेरवआबूकेराजपूतानामेंआबादीव आमदनीवगैरहकासन१८८१ईस्वीबमूजिब

नम्बर	नामरियासत	लकब	नामरईस	रकबामीलमुरब्बा	तादादगांव	मरदुमशुमारी				आमदनीसालाना
						घर	कुलमनुष्य	मरद	औरत	
१	उदयपुर	महाराना	श्रीसज्जनसिंहजी	१२६७०	५७२२	३२४१६	१४४३१९४	७७२८८५	६७ ४४२	५१००००)
२	जयपुर	ऐ	श्रीरामसिंहजी	१४४६५१	५९६४	५२६८६	२५३४३५७	१३३९१३४	११९५२२३	५०००००)
३	जोधपुर	ऐ	श्रीजसवन्तसिंहजी	३७०००	३७८५	३६६७४	१७५०४०३	९६६९९१	७८३४१२	५००००)
४	जैसलमेर	महारावल	श्रीवैरीसालजी	१६४४७	४९६	२६२१७	१०८१४३			
५	बीकानेर	महाराज	श्रीडूंगरसिंहजी	२२३४०	१७३६	१८७४९	५०९०२१	२६३६९०	२४५३३१	१२५०००)

६	अलवर	महाराव	श्रीमंगलसिंहजी	३०२४	१७५७	७३२३४८	६८२९२६	३६०३५४	३२२५४२	२३०००००)
७	भरतपुर	महाराज	श्रीजसवंतसिंहजी	१९७४	१३५९	८८१०४	६४५५४०	३५०४७५	२९५०६५	२८०००००)
८	करोली	महाराज	श्रीअर्जुनपालजी	१२०८	८६२	२५९३०	१४८६७०	८०६४५	६८०२५	५०००००)
९	टोंक	नवाब		२५०९	२१९२	७३४८७	३३८०२९	१७६८६९	१६११६०	१२०००००)
१०	बूंदी	महाराव राजा	श्रीरामसिंहजी	२३००	८४२	६०५६५	२५४७०१	१३३१०३	१२१५९८	६०००००)
११	कोटा	महाराव	श्रीशत्रुसालजी	३७८७	१६११	१३८९९८	५१७२७५	२६९९२४	२४७३५१	२९५००००)
१२	झालावाड़	राजराणा	श्रीबख्तसिंहजी	२६९४	२४५७	६३००१	३४०४८८	१८३०२८	१५७४४८	१५०००००)
१३	सिरोही	रावराजा	श्री	३०२०	३६६	३०५२२	१४२९०३	७६१३२	६६७७१	
१४	डूंगरपुर	रावलजी	श्रीउदेसिंहजी	१००००	४२२	२९९१६	८६४२९	४४५६८	४१८६१	२०००००)
१५	बांसवाड़ा	रावलजी		१५००	१०८१	३५८२०	१०४०००	४१११८	३८१८०	२८००००)
१६	प्रतापगढ़	रे॰		१४६०	५६८	१८६२२	७९२९८	५९०९८	५३५३५	
१७	किशनगढ़	महाराजा		७२४	२१३	२४९२८	११२६३३	५९०९८	५३५३५	२८००००)
१८	धोलपुर	रे		१२००	५३८	४८४२९	२५९६५७	१३८३४२	१११३१५	११०००००)
१९	शाहपुरा	राजा		४००	११८	१०८४९	५१७५०	२७३१७	२४५३५	३५०००)
२०	लवा नरूकाका टूंकसे अभी [illegible]									
२१	अजमेर सरकारी सूबा कमिश्नर साहबहैं राजा नहीं केई ठिकाने राठोड़ वगैरह इस्तमुरारहैं			२७११	७४२९	६४११८	४६०७२२	२४८८४४	२११८७९	

तथा भीलोंने खानेशुमारी नहीं कराई सो तखमीनन उ०५१०७६ इ०६६०५२ बी०४८०४१ ई० २७० कुल १६६३ ४३ हैं॥

इति शुभम्॥ सम्वत् १९४८ माघ शुक्ला १ सन् १८९२ तारीख ३ फरवरी॥ इति

हस्ताक्षर रामरिखसेन कालो ब्राह्मण गौड़स्य

* दफा ४

दूसरी रिआस्तों वरईसों के नाम जैल में लिखे हैं और उनके तेज प्रताप व दातारी वीरता के हालात तवारीखों में हैं ई यह ग्रंथ बधजाने के लिहाज से नहीं लिखे

रियासत उदयपुर

श्री आदि नारायण से ६७ पुस्त श्री रामचंद्र अवतार के पुत्र लव के वंस मे ७८ विजैनाभ से कौम गहलोत हुई १३२ गंधर्प सेन ने (१) तंबावती व १३५ कनकसेन ने उजेन बसाई - १४२ किरीये जी मयांने कुआब में राज किया अयोध्या छुटी १६० केसवदत्त मगरे ईडर मे रहे १६१ नागदत नागदा में राज किया १६४ आसादत्त अड बसाई १६७ ग्रहदत्त ईडर के राजा से लड मरे - कु आपा ब्राह्मण के घर में रहे सिव हरीदत ने आंइकलिगजी के दरसन कराय दफीना बताया जब मोरीया से चीतोड लेकर राजधानी करी रावल कहाये २०५ समरसी प्रथीराज चहुहान की मदद गये कनोज के राजा जैचंद से फतह पाई बादशाह महम्मद से लड मरे प्रथीराज को पकडकर बादशाह गजनी लेगया - २०७ करन सिंह के छोटे पुत्र रायपत ने डुंगरपुर का राज किया व सिसून को नाग काटा - भोपुजने जिलाया सो सीसोदिये महाजन हुए - २०८ महीपत मंडोवर के राजा को पकडने से राना कहीजे २१९ रत्नसिंह सिंगलद्दीप मे पद्मावत से ब्यादी करी - २२० अजीतसिंह ने अडसी के बेटे हमीर से मौजे बादशा को मरवाय गोढवाड में दखल किया हमीर को जो क्यामातीया राज दिया और कु- सजन सिंह ने सतारे का राज पाया- २२४

२ सफे २८२ मे कानिव ने गलती से किनारा हाजाको समाप्रिन लिख दिया दे पाठक क्षमा करे म-मुगुर अली

-२८२ آخر میں ... [illegible]

मोकल जीको राठोड़ों ने चुक करना चाहा जब मंडोवरहीलेली थी छोटे कुं· रूपनारा देवलीये रावत हुवा जिनके सूर्जमल प्रथी सिंह - बाघजी - भानु - हरी सिंह - प्रतापसिंह - गोपाल सिंह - सालमसिंह जी अब है - २२५ कुंभाजी १४९० इनियां सिवाय पासबानोके थीं ३६ क़िले जदीद वफ़तह किये - करा- माती थे ब्राह्मनके क़ालिबसे अपनी रूह तबदील करके स्वर्ग गये ब्राह्मन ने गद्दी बैठकर यह हाल कह दिया जब कुं· उदाजी ने उसको मारडाला जिससे छोटे कुं· रायमल जी गद्दीनशीन हुए - २२७ सांगा जी क़िला रंगात भौरंबना या - व ढूंढाड़ में सांगानेर बसाया मंदसौर तक अमलदारी हुई - कुं· भोजराज मौकूफ़ हुए - रत्न सिंह राज बैठे - शेर विक्रमावत जीको खवासबने भीर नेचूक किया और आपराजबैठा जिसको निकालकर २३१ उदयसिंह जी- सं १६०८ में राज बिराजे - सं· १६२२ में चीतोड़ में बादशाह का क़बजा- हुआ जब देवड़े राजपूतों से गिरदो व कई गांव जहेज़ में मिले थे यहां रहे - उदयपुर शहर बसाया व उदयसागर तालाब बनाया - सांगा राठोड़ से सलूंबर लेकर रावसिंगजी सावे वाले को दी बदले कनवारिया दिया - सं· २४ में चीतोड़ ही क़बज़े हुई - २३२ प्रतापसिंह जी सं· १६२८ पांचवां कुं· बाघजी जहाज़पुर गये - २३३ अमरसिंह सं· १६५२ बादशाह की खिरनी ५ हज़ार देनीकर थाने- थाने उठाये - फेर नहीं दी - तीजा कुं· सूर्जमलजी सायपुरे गए - जिनके २३४ कर्ण सिंह जी सं १६७६ शाहज़ादे खुर्रम को तख्त बैठाया जब इलाक़ा मालवा दिलाया - २३५ जगतसिंह जी सं· १६८४ - २३६ रायसिंह जी ब्रजसे पधारे जो हनोज़ दराजे हैं - २३७ जैसिंह जी सं· ३७ इलाके से बादशाही थाने उठाये २३८ अमरसिंह जी १७५५ - २३९ संग्रामसिंह जी सं· १७७६ - २४०

जगत सिंहजी स १७९० भानेज माधो सिंहजी को जेपुर गदी नशीन किया-
दूसखर्च में १५ लाख का इलाका भानपुर रामपुर मलार राव को दिया २४१
प्रताप सिंहजी सं १८०७ - २४२ राज सिंहजी स १८१० - २४३ अडसी
जी को सं १८१७ राज बिठाया ज़िला नीमच माधोजी सींधीये को दिया - २४४
हमीरसिंहजी सं. १८२४ - २४५ भीमसिंहजी स ३३ लूशीग्रखतर साहब
ने छावनी नीमच आबाद करी यट साहब ने उदयपुर में कोठी बनाई - २४६
ज्वान सिंहजी स. ८४ - २४७ सरदार सिंहजी सं. ९५ छोटा भाई सेरसिंह को
बाघोरदा - २४ सरूप सिंहजी स ९८ रियासत सरसवज करी - २४९ शिंभूसिंह
जी स. १९१० अजंटी कायम हुई - २५० श्री सजनसिंहजी स १९३०
आसोज सज्जनगढ बनाया - २५१ श्री फतह सिंहजी स १९४१ सावरा सुद
४ चिरंजीव

रियासत डूंगरपुर

जो उदयपुर महाराना के खान्दान में शाख हे ॥

येयात में लिखा है कि अनादि पुरुश ॐ से १६७ पीडी रावल समतसिंह के
बडे कु सीहड ने पिता की आज्ञानुसार छोटे भाई भूहण को गद चीतोड का
राज देकर आप उत्तर दिशा में नदी सांम पास यवनो से लड कर धरती ली-
और राजधानी करी - ॥

१ रावल सीहड ॥ २ दूदा ॥ ३ वीरसिंह ने सं १३५५ में डूंगरा भील को
जो १० स्हस भीलो का सरदार लुटेरा था मारकर उसे पुर में शहर बसाय डूंगपुर
कही - ॥ ४ भरतुड ॥ ५ डूंगरसी ॥ ६ कारमसी ॥ ७ कानडदे ॥
८ पाताजी ॥ ९ गेवाने जी गेब सागर तालाव बनाया ॥ १० सोमदासजी

* असिल नाम इनका एक टरलोनी था यह दूसरी जी फौज के जनरल थे शाह आलम बादशाह ने इनको नसी
रुद्दौला का खिताब दिया था छावनी नसीराबाद उन्ह साहिब ने अपने ही नाम से बसाई थी - ॥ म मुएसी

११ गांगाजी से गहलोत हुए ॥ १२ उदेसिंह ॥ १३ प्रथीराज ॥ १४ आसकर्न ॥ १५ सहंसमल ॥ १६ करनसी ॥ १७ पूंजोजी ॥ १८ गिधरजी १९ जसवन्तसिंहजी २० खुमाणसिंह ॥ २१ रामसिंहजी २२ सेवसिंहजी ॥ २३ वैरीसाल जी ॥ २४ फतहमलजी ॥ २५ जसवन्तसिंहजी हरीभगत हुए बहुत द्रव पुन्य कर के मथराजी में देह त्यागी ॥ २६ रावलजी श्री उदैसिंह जी चिरंजीव कुं. जी श्री खुमाणसिंह जी भंवरजी श्री विजयसिंह जी ॥

रियासत जयपुर

श्री रामचन्द्र जी पूरण अवतार के पुत्र कुस के बंस में सुमित्र के बेटे कुर्म से कूर्म व पोते कनस्व खांध के कछवाहे कहीजे मगधदेश के नागवंसीयों से अयोध्या छीन ली जबसे अन्तरवेद में मौज़े मुगट फेर नरवर में रहे - और ग्वालिअर भी ताबे किया सो ईसरीसिंह ने अपने भानेज तुंवर जेसा को दिया पीछे मंडावली में रहे इनके कुं. १ सोड देव ने मोरियां द बडगूजरां से दोसा लेकर सं. १०२६ में राजधानी करी बाद मीना का मुल्क माची षोह गरोट - भोटा राहा लेकर किला रामगढ बनाया ॥ २ दुलहराय षोह में ३ काकलदे आंबेर में राज बैठा - ४ हणुदेव ५ जैनड ६ प्रद्युमन ७ मलेसी के ३२ पुत्र हुए ८ बाजल राज बैठा कूकीसे व आन जाति महाजन नाई आदि और हुए ९ राजदेव से पीछे लडा हुई - छोटे कुंवर भोजराज के - ८ सारव कछवाहे हैं १० केलण - केलणगढ बनाया ११ कुंतल कुं. हमीर के हमीरदे गांव दूणी रावजी १२ जूणसी कुं. कूंभे के कुंभाणी १३ उदैकर्ण

कुं॰ नरसिंह व बरसिंह के नरूके गाव लदाणा उनेहारा लावा वगैरह हैं- और खाला के सेखावत मौज़े मनोहरपुर व सीकर खेतडी चोकडी व गैर में है - व सो ब्रह्म के सोब्रह्म पोते व पातल के पातल पोते वपीथा के पीथापोते(१४)नरसी (१५)बनभीर कु॰ भगल के भगलपोते वबरा के बरापोते वनरा के बनभीरपोते (१६)उधर्ण (१७) चन्द्रसेन कु॰ कूभाके कूभावत (१८) प्रथीराज के १९ पुत्र में पूर्णमल व भीम व भीम का बेटा रत्नसिंह व आसकर्न ने तो थोडा थोड़ा राज्यकिया और १२ की १२ कोटड़ी हुई जिस मे कई लुप्त हुई ज्योंही दूसरे मिलाये गये ॥ पिचान के पिचानोत ॥ सुलतान के सुलतानोत ॥ गोपाल के नाथावत गाम चामू ठाकुर सरमोद रावलजी मुसाहिबी के हक- दार है ॥ जगमाल के षेषारोत गाम डिगी ॥ बलभद्र के बलभद्रोत - गा॰ अचरोड ॥ रामसिंह के रामसिंगोत ॥ प्रताप के परतापोत ॥ साईं दास के साईंदासोत ॥ चतुरभुज के चतुरभुजोत गां॰ बगरू ॥ कलपां- ण के कलपाणोत ॥ पूर्णमल के पूर्णमलोत गा॰ नीमाडा ॥ सांगा (१९) भारमल कुं॰ भगवानदास के बांकावत ॥ सुन्दरदास के सुन्दर- दासोत ॥(२०)भगवतीदास कु॰ मांधोसिंह के मधाणी व सूरसिंह के सूरसिंहोत ॥ बनमाली दास के बनमालीदासोत ॥(२१) मानसिंह जी से राजावत हुये ॥ कुं॰ दुर्जनसिंह के दुर्जनसिंहोत गां॰ धूला भावसिंह राज किया मिरज़ाराजा का खिताब पाया चिम्बा गांव बसाया ॥ सगतसिंह के सगत सिंहोत ॥ कल्यानसिंह के कल्यानसिंहोत ॥ हिम्मतसिंह के राजावत ॥(२२) जगतसिंह जी ॥ कुं॰ जूझारसिंह के पुत्र संगराम का न्लाय ॥ प्रथीसिंह के खिराणी व ईशरदे है ॥ अनोपसिंह के राजावत ॥ तानार सिंह ने राय

ज़ादा का ख़िताब व नागोर का परगना पाया ॥ (२३) महासिंह ॥ (२४) मिरज़ा राजा जैसिंह जी ॥ (२५) रामसिंह जी बादशाह ने आमेर खाल से कर पीछी बख़शी ॥ (२६) किशनसिंह जी ॥ (२७) बिशनसिंह जी - हिन्डोन का परगना पाया था ॥ (२८) सवाई जैसिंह जी सं० १७५६ बड़े ही प्रतापी हुये सं० १७८४ में शाह जैपुर बसाय राजधानी करी सवाई तथा राज राजेंद्र का ख़िताब पाया बादशाह ने आमेर खालसे कर पीछी दी बाद ईशर सिंह जी राज बैठे थे - बूंदी छीन लीथी ॥ (२९) सवाई माधोसिंह जी - क़िला रणत भोर फ़तह किया - प्र० टव व रामपुर हरखनीयों को दिया शहर माधोपुर व सवाई माधोपुर बसाया बेटा प्रथीसिंह ने भी १० वर्ष राज किया (३०) सवाई प्रतापसिंह जी सं० में हुये इनके अहद में मांचोड़ी रावनरूका प्रताप सिंह जो ६ हज़ार का जागीरदार था अकल व बीरता से जैपुर - भरतपुर - मेवात वगैरह का मुल्क दबाकर अलवर में राजधानी करी - बख़्तावर सिंह जी को गोद लिया जिनके बने सिंह जी उनकी शिवदान सिंह जी उनका मंगल सिंह जी - अब राव राजा हैं ॥ (३१) सवाई जगतसिंह जी सं० १८६० इनके बाद नरवर से मानसिंह जी को लाकर राज बैठाया था परंतु कुं० जैसिंह जी - पैदा हुये तब उठा दिया - (३२) सवाई जैसिंह जी सं० १८७६ ॥ (३३) सवाई रामसिंह जी सं० १८९१ राज विराजे अकल व होशियारी से राज बढ़ाया व सरदारों के ठिकाने सरसब्ज़ किये खालसा ३२ लाख का था सो ९५ का हुआ सरकार अंगरेज़ी की मेहरबानी से कलकत्ता कौंनसिल में मेम्बर हुये कोट का सम का प्र० पाया और नेकनिय्यती या नेरवास व आम पर नेकनज़र वगैरह २ ख़ूबियां अज़हद थी एक काम बहुत ही बुरा किया कि श्री वल्लभकुल के मन्दर उठा दिये - उत्राधिकारी न होने से ईश्वर के

* २१ मई सं० १८९२ ई० को महाराजा मंगल सिंह जी मौसूफ नैनी ताल के पहाड पर जहां आबवहवा बदलने गये थे स्वर्गवास हुये लाश २५ को अलवर में लाई जाकर दाग दिया गया ३ जून को इनके पुत्र जैयसिंह जी १० वर्ष की उम्र व स्थाने गद्दी नशीन हुये - सं० मंगल वृक्षी -

ठा० कायमसिंह को कि जिसको ईश्वरदे तो क्या इलाके सेही खारज किया था इसके लेकर माधोसिंहजी नामरखा ॥ (३४) सवाई माधोसिंहजी सं० १९३७ राजवैठ चरजीव ॥

नकशा रियासत उदयपुर के १६ सरायतों का

नम्बर	खापे	लकब वनाम जागीरदार		ठिकाना	आमदनी	कैफियत
१	झाला	राजराणा	राजसिंहजी -	सादड़ी	-	
२	चौहान	रावजी	× वख्तसिंहजी -	बेदले		
३	ऐ०	ऐ०	केसरीसिंहजी	कोठारिया		
४	सीसोदिया	रावतजी	जोधसिंहजी	सलूंबर		
५	पोवार	रावजी	गोवर्द्धनदासजी	बीजोलिया		
७	चूंडा०	रावतजी	किसनसिंहजी	देवगढ़		
८	ऐ०	ऐ०	मेघसिंहजी	वेगू		
९	झाला	राणा	× फतहसिंहजी	देलवाड़े		
१०	चूंडा	रावतजी	शिवनाथसिंहजी	आमेट		
१०	ऐ०	ऐ०	अमरसिंहजी	मेजारी		
११	झाला	राणा	मानसिंहजी	गूगोंदा		
१२	सारंगदे	रावतजी	न्हारसिंहजी	कानोड		
१३	सगतावत	महाराज	मदनसिंहजी	भींडर		
१४	मेडतीया	ठाकुर	केसरीसिंहजी×	वदनोर		
१५	सगता	रावतजी	मानसिंहजी	वान्सी		
१५	किस्नावत	ऐ०	प्रतापसिंहजी	भैसरोड़		
१६	चुहान	रावजी	रत्नसिंहजी	पारसोली		
१६	किस्नावत	रावतजी	चेतसिंहजी	कुड़ावर		सरजमें मिसल किस्नावत रावजी अर्जुनसिंहजी गावका आसींद वाले हैं -
५	मेडतीया - घाणेराव था सो अब गोढवाड़ साथ मारवाड़ में गया - ---					

× रावरत्नसिंहजी का जून सं० १८९२ ई० के अन्त में देहान्त होगया इनकी जगह इनके पुत्र करणसिंहजी गद्दी पर बैठे हैं मु० मुरादअली

× इसका भी देहान्त होगया अब इनके पोते ठाकुर सारदूलसिंहजी साहिब वदनोर के ठाकुर हैं म० मुरादअली

× फतहसिंहजी का देहान्त होगया उनके पुत्र राणा जालिमसिंहजी मालिक हैं-॥ मुहम्मद मुरादअली

रियासत जोधपुर

कमधज या कमंध याने राठोडों की तवारीख़ सिलसिलेवार नहीं मिली शहर कनोज में बड़ा राज था ॥ १ राजा जैचन्द के बाद २ सेत मारवाड़ में आये और कई पुस्तों बाद गोयलों से मुल्क लेकर खेड़ में रहे ३ सीहा ४ आस्थान ५ धूंहड़ ६ रायपाल ७ जालणसी ८ छाडा ९ तीडा १० सलखा जी के बड़े कुं० मलीनाथ के जगमाल का तो मालानीमें वकूंपावगैरह कोराज जैसलमेर से ब्हाडमेर कोटडा गिराब सए परगने मिले और जैतमाल अहमदाबाद जाते आगानंदा खुवारांको गोठ जिमाय चुक करके गुडा राडधरा मय ४८ गांवों के लेकर राणा कहीजे तथा ११ वीरमजी ने दलाखां वगैरह जोईयों को पनाह दी फेर उनके मुल्क में जारहे और वहां ही मारेगये- बाद कुं० गोगादे ने दलखां वगैरे को मारे दलखां के बेटे ने गोगादे को स्वर्ग भेजा ॥ १२ चूंडाजी को ईदां ने मंडोवर दी ॥ कुं० चवदे राव भए ॥ १३ रिडमल जी उदेपुर में काम आये मंडोवर ही छुटी थी सो १४ जोधाजी ने पीछी ली- फेर- सं० १५१५ में गढ बणाहर जोधपुर आबाद कर राजधानी करी फेर तो राजनीत याने क्षत्री धर्म मूजब ज़मीन के ग्राहक हुए चुनाचे हरपीडी में हर तरफ़ पड़ोसियों वगैरह का बहुतसा मुल्क दबाते रहे बल्के बीकानेर किशनगढ रतलाम झाबुआ वगैरह कई जगह जुदा२ राज बांधा १५ सूजाजी १६ बाघाजी १७ गांगाजी १८ मालदेजी १९ उदेसिंहजी २० सूरसिंहजी २१ गजसिंहजी २२ जसवंतसिंहजी २३ अजीतसिंहजी कई बर्ष पहाड़ों मे रहे गढ में बादशाही थाणा रहा २४ अभैसिंहजी को गढ मिला- कुं० रामसिंहजी को निकाल कर

भाई २५ बखतसिंहजी राज बैठे - २६ बिजैसिंहजी के पोते- २७ भीमसिंहजी सं॰ १८४८ में राजबिराजे - फेर गुमानसिंहजी के कुं॰ श्रीमानसिंहजी सं॰ ६० में राजा हुए जब फेर मानसिंहजी म्हाको बैजड़ले ठा॰ सगतीदानजीने बड़ा म्हेब का सुनश्ग लाकर राज बैठाया - बाद श्रीम नगर से २८ श्री तखतसिंहजी साहब को सं॰ ९८ मे तखतनशीन किस- सरकार अंगरेजी का अजन्द रहने से वा आराम राज किया सिलारे हिन्द का तुगमा पाया -

३० श्रीजसवंतसिंहजी स॰ १९३० फागुण बुदि १ चरंजीव - नेकनियती - कीवरकत व वलन्द अकबाल से रजीडन्ट तो करनल पावलट साहब बहादुर - और कारमुखतार छोटा भाई महाराज सर प्रतापसिंहजी मिले वो रिआ- सत सर सब्ज होगई चुनाचे लाखीये से जोधपुर - पालोतरा तक रेल होने व नमक काठे का सरकार अंगरेजी को देने व दीवानी फौजदारी व सायरात वगैरः २ का नवाबन्दो बस्त करने से आमदनी १८ लाखथी सो सह चन्द हुई और ऐसी ही कारखाई रही तो इस से भी दो चन्द होजावेगी तथा सरदारों से हर पीड़ी में बखेड़ा रहेथा सो नाम ही नही रहा - जसवन्तपुरा गाव व जसवंतगढ़ बनाया -

जागीरदारो के गावो की तादाद व आमदनी वगैरः का नकशा स॰ १९२६ के फैस- ला मूजब जुदा लिखा है -॥

जीसी एस आई का तुगमा मिला श्री प्रतापसिंहजी साहब इंगलस्तान - जाकर कैंमवोसी हासिल करी* - के॰सी॰एस आई॰ का खिताब पाया - स॰ ४६ मे महाराजकुमार श्री सरदारसिंहजी जन्मे -

* इजुरकेसर हीन्द की

आठ मिसलों के खांपां व गांव दोहा व सोठा में लिखे बाकी १६ । ३२ थाने बहुत से हैं-

दोहा - चांपा कूंपा मेड़त्या ऊदावत कनोत-। आठ मिसल जोधाअस जैतावत अमसोत-॥ सोठा

आउवा व आसोप रियां रायपुर कारणोत्तां । आठु मिसल अनूप पिसा दोकनरेवर नीमाजरास आहूजुरा
आड़ा खींवसर - ॥ अगनायानेहकूमतोंकेनाम

(१) जोधपुर (२) नागोर (३) डीडवांणां (४) मरोट (५) परबतसर (६) मेड़ता (७) जैतारण (८) सोजत (९) बीलाड़ा (१०) पाली (११) बाली (१२) जालोर (१३) भीनमाल (१४) सांचोर (१५) शेरगढ़ (१६) पचपधरा (१७) शिव (१८) सेरगढ़ (१९) फलोधी (२०) सांभर - (२१) नवा - (२२) जस्वन्तपुरा - और थानहत थाने बहुत हैं ॥

रियासतमारवाड़मेंजागीरदारोंकेरेखवधारोंकेगांवोंवआमदनीकी तादादसं०१९९६ के फैसले मूजब ॥

नम्बर	नामखांप	तादाद गांव		तादादपैदा		कुल	
		रेष	बधारे	रेष	बधारे	गांव	पैदा
१	चांपावत	२३५	×७५॥।≡	३२०१४)।	१७२१२५॥)	३१०॥।≡	४९२२९८)।
२	कूंपावत १००	७७	× १३	१४४५३७)	५५४९२०)	९०	१९०७५७)
३	जैतावत ५१ २६	२२	× ३॥	३९९७०)	५२२५)	२५॥	४५०९५)

४	करनोत १८	३७॥	०	६५८६३	०	३७॥	६५८६३
५	मेडतीया २२१	५८६॥।=	६	१४९२३७॥	१६५००	५९५॥।=	१४२५५७॥
६	जोधा १४५	२२२॥	६॥	४१७४५७॥	३१०००	२३२	४४८४५७॥
७	ऊदावत ७०	१२७	१७॥	२८२३४०	६६६८०	१४४॥	३५२०२०
८	कर्मसोत ३४	४४	१७	२७०००	१३४७५	६१	४०४७५
९	नरावत ७	६॥	०	१६५००	०	६॥	१६५००
१०	महेचा ९	१३॥	५	१८६६२	३०३६६	१८॥	२१६६८
११	धवेचा २५	३४॥।	॥	३०६६६	४००	३४॥।=।	३१०५६
१२	जैतावत ३	२॥	०	२७५०	०	२॥	२७५०
१३	पातावत ३७	४२	०	६३५८०	०	४२	६३५८०
१४	रूपावत ४	२॥	०	३०००	०	२॥	३०००

१५	बीदावत २	२।=	०	१७५०)	०	२।=	१७५०)
१६	कलावत ६	२॥	३=॥	४२५०)	२४३३)	५।=॥	६६८३)
१७	कांधलोत १	१	०	६२५०)	०	१	६२५०)
१८	रायपालोत ६	३॥	०	६०००	०	३॥	६०००)
१९	मांडणोत ८	७	०	१८५०२)	०	७	१८५०२)
२०	मंडला १०	१४	१॥	३२५००)	२२५०)	१५॥	२४७५०)
२१	बाला ३९	६१।=।	॥	७८३६१)	२०००)	६१॥=।	८०३६१)
२२	ऊहड २१	४१॥	०	६०३७५)	०	४१॥	६०३७५
२३	नरानोत १	॥	०	१०००)	०	॥	१०००)
२४	पूनावत १	१	०	३०००)	०	१	३०००)
२५	भीयोत १	०	॥	०	६५०)	॥	६५०

२६	सीधल १	३८	०	३१९८०२)	०	३८।	३१९८०२)
२७	देवराजोत २	२०	०	२०४७५)	०	२०	२०४७५)
२८	जूझारणीया २	१	०	४०००)	०	१	४०००)
२९	चाहडदे	११	०	२६००)	०	११	२६००)
	जोड ८५८	ठिकानेरो जोड ९०५		ठिकानेदसी जात २९३।		जोडदोनो कीरेख	३५१३२९९८
१	भाटीसरदार ८४	१२४।।।	३५।।	१६२९)	२०४००)	१६०।	१७३३०२)
२	चुहान ७४	१५	३	१२८६३५)	६६५०	१५८	१६४३८५)
३	सेखावत २६	२०।	१	४७०१३।।	८७५)	२१।)	४७८८७।।
४	रांणावत २	४८	०	४१८७५)	०	४८	४१८७५)
५	देवडा १०	३०=।।	०	२८२९२	०	३०=।।	२८२९२
६	सोलखी ३	२८	०	३३५५०)	०	२८	३३५५०)

७	सोनगरा ४	१॥=॥	०	४७५०)	०	१॥=॥	४७५०)
८	पीपडा १	१	०	५००)	०	१	५००)
९	सांखला ३	२॥	०	३९००)	०	२॥	३९००)
१०	बोडा २	११	०	११२२५)	०	११	११२२५)
११	काबा ३	२८	०	२०००)	०	२८	२०००)
१२	रंदा ३	४९	०	१०३५०)	०	४९	१०३५०)
१३	खुमाणल १	१॥	०	२०००)	०	१॥	२०००)
१४	मांगडीय २	२३	०	२३००)	०	२३	२३००)
१५	सोलंका ४	४	०	५०००)	०	४	५०००)
१६	वालोचा १	१	०	१०००)	०	१	१०००)
१७	मुर्धा ५	५	०	३८५०)	०	५	३८५०)

१८	पुवार १	॥	०	१००)	०	॥	१००)
१९	खालोत १२	२२	०	२२६२५)	०	२२	२२६२५)
२०	गैलोत २	२	०	२४००)	०	२	२४००)
२१	भायल २१	२३॥	२	१२७०३)	२२००)	२५॥)	१३६०३)
२२	डोडाया १	१-॥	०	१६६६७)	०	१-॥	१६६६७)
२३	आसायच १	१	०	७५०)	०	१	७५०)
२४	तुवर ४	७	०	२४५०)	०	७	२४५०)
२५	पूरवीया ३	३	०	१०००)	०	३	१०००)

मजमूई हालत रकबा रियासत ३५६७२ मील मुरब्बा आबादी १७४६८०२ आमदनी ७२ लाख खिराज सरकार अंग्रेजी ९८ हजार फौजखर्ची १ लाख १५ हजार रुपया है तादाद फौज ६ हजार शहनशाही खिदमात की फौज के अलावह है
अखत्यार गोद लेने का हासिल है सलामी १९ तोपे और सरकार से सितार:हिन्द, इसने अव्वल का खिताब मिला है खास लकब स्वस्ति श्री जोधपुर सुभस्थान सिध्धस्थी महाराजाधिराज राजेश्वर श्री महाराजा जसवन्त सिंह जी है श्री महाराज कुवार सरदार सिंह जी साहिब मिती माघ सुदी १ सम्मत १९३६ को जन्म धे चिंजीउ॥

इनगाओं की पैदा बहुत कमती है तथा इसके सिवाय बिलारेख के बहुत गांव हैं ॥

जोधपुर के अव्वल और दूसरे दरजः के सरदारों का नकशा

नम्बर	नामठेकाना	खांप	तादादगांव	सालानाआमदनी	कैफियत
१	पोहकरन	चांमपावत राठोड	१००	२०००००)	यहठिकाना बहुत जबरदस्त है मयोका लिज में तालीम पाई है·
२	आसोप	कुंपावत	५	४००००)	राठोड
३	खेरवह	जोधा	२०	३००००)	औजन
४	रास	उदावत	१७	४००००)	औजन
५	नीमबाज	उदावत	१०	४००००)	औजन
६	आहवा	चांमपावत	१६	१६०००)	यहजागीर पहिले जियादः थी मयोकालिज में तालीम पाई है·

७	रीयान	मेडतिया	८	३६१००)	राठोर
८	भादराजून	जोधा	२७	३२०००)	अैजन
९	रायपुर ×	उदावत	३८	५००००)	अैजन
१०	कुचामन ×	मेडतिया	१६	४८०००)	अैजन
११	घानेराव	अैजन	४२	४५०००)	सौवर्षपहिलेमेवाड़ केमातहतथा-
१२	आहोर	चामपावत	१०	२३०००)	राठोड
१३	रासपह	अैजन	१३	२६०००)	अैजन
१४	रूयट	अैजन	११	१७०००)	अैजन
१५	कन्टालियह	कुंपावत	१२	१५०००)	अैजन
१६	लाविया	उदावत	७	१९०००)	अैजन
१७	गुलर	मेडतिया	५	२३५००)	अैजन
१८	भवरी	अैजन	५	१९५००)	अैजन
१९	बूकसू	अैजन	२४	३८०००)	अैजन
२०	मेढा	अैजन	२९	३७०००)	अैलन
२१	नन्नोंदा	अैजन	६	२०५००)	अैजन

× अब इस को वर्त्तमान ठाकुर हरीसिंहजी के नाम से हरीपुर कहते हैं और रेल का स्टेशन भी हरीपुर लिखा जाता है × इस ठिकाने को अपने यहां टकसाल रखना और सिक्का चलाने का अधिकार है म मुरारअली

२२	खेमसर	करमसोत	३२	१३०००)	राठोड़
२३	राखी	चोहवान	२२	२२०००)	गैर कोमजागीरदार
२४	कानानह	करनोत	३	१२०००)	राठोड़
२५	मनाना	मेड़तिया	७	१७०००)	ग्रौजन
२६	पालासनी	उदावत	२	१५०००)	ग्रौजन
२७	खनवाडा	चांपावत	१७	१६५००)	ग्रौजन
२८	बाकरः	ग्रौजन	७	२७५००)	ग्रौजन
२९	चंदावल	कुंपावत	८	२२०००)	ग्रौजन
३०	आगेवह	ऊदावत	३	२१०००)	ग्रौजन
३१	आलन्यावास	मेड़तिया	४	१५०००)	ग्रौजन
३२	चांनोद	ग्रौजन	२४	३४०००)	ग्रौजन
३३	जावला	ग्रौजन	८	३८०००)	ग्रौजन
३४	दरू	मेड़तिया	१२	३३०००)	ग्रौजन
३५	मीठडी	ग्रौजन	१५	२८०००)	ग्रौजन
३६	लाडनू	जोधा	७	२००००)	ग्रौजन

३७	पगडी *	जैनावत	७	१६०००)	अैजन
३८	कल्यानपुर	चोहान	७	१००००)	गैरकौम
३९	खेजडला	भाटी	८	१५०००)	चंद्रवंसी गैरकौम
४०	झालामड	राणावत	८	१५०००)	गैरकौम
४१	कुडियाना	मेडतिया	९	३३०००)	राठोड

सिन्धी साहिबजादह अब्बास अलीखां की इज्जत तमाम सरदारो से खासतोर परजियादह है - यह दोनो दरजेके सरदार पांचसौ रुपया सालाना आमदनी पर ए कसवार के हिसाब से नोकरी और हाजरी देते है - ॥

राज्यबीकानेर

यह राज्य राजपूताने के उत्तर में फैला हुआ है जोधपुर के सिवाय दूसरी समस्त रियास्तों से लम्बाइ व चौडाइ में जियादह है इसके उत्तर में हरियाना - भटयाना जिले हिसार व सिरसा पश्चिम में भावलपुर जैसलमेर दक्षण में जोधपुर का राज्य - और पूरब में शेखावाटी है लम्बाई पूरब से पश्चिम को २०० मील चौडाई उत्तर से दक्षण को १६० मील रकबा २७६७८ मील मुरब्बा आबादी ६ लाख आदमियों की है आमदनी खालसा आठ लाख से अधिक है और फौज सवार व पैदल ७ हजार के लगभग है - इस मुल्क में तीन भाग जाट और चौथा हिस्सा राजपूत राठोड - सारस्वत ब्राम्हण नोहया दाहिया जात के राजपूत (जोमुसलमान हो गये) और चारन भाट माली आदिबस्ते हैं इनमें एक हिस्सा थोरी - धानक वौ रह जात के लोग भी हैं जिनका पेशा चोरी लूट का है - यहां का ऊंट उमदा होता है

* यहां का ठाकुर श्री दरबार जोधपुर को राज तिलक देता है जबलो तिलक न दे पगडीजब्त रहती है - म - मुरादअली

जिसको रेत की मांय कहना चाहिये और भेड बकरी भी देहात के रहने वाले बहुत पालते हैं जिनके बालो से उम्दा कंबल बनाये जाते हैं बीकानेर का जियादह मुल्क रेगिस्तान है लिहाजा यहां फसल एक फसिल बाजरा मोठ की पैदा होती है तरबूज यहां का जिसको मतीरा कहते हैं बहुत मीठा होता है खास बीकानेर की मिसरी मशहूर है कुयें ऊंचे होते हैं और अक्सर खारा पानी निकलता है इसी कारण बहुधा लोगों का गुजर तालाबो के पानी से होता है नदी या पहाड इस राज्य में कोई न्हीं - ॥

तवारीख

बीकानेर वाले जिनकी रियासत आज से चार सौ वर्ष पहिले स्थापन हुई थी जोधपुर के राठोडो की खांप है राव जोधाजी ने जब सम्मत १५१५ में पुरानी राजधानी मंडोर को छोड कर जोधपुर बसाया तो उस का बेटा बीका नामी अपने काका कांधलजी की सहायता से तीन सौ राठोडों को लेकर उत्तर दिशा के जंगली मुल्क को विजय करता हुआ चलागया और वहां के सांखला राजपूतों और पुंगल के भाटियों से लड कर कोरमदेसर नामी नग्र पर कबजा किया और उस मुल्क के जाटों को जो आपसके झगडों से बरबाद हो रहे थे अपना सहायक बना कर जोयों और भाटियों का जोर घटाया और अच्छी तरह से दखल कर लिया तो मंडोर छोडने से ३० बरस पीछे वैसाख बदी १५ सं० १५४५ में बीका ने अपने नाम पर राजधानी बीकानेर को बसाया और उसके चचा कांधल ने उत्तर देश को अपने कबजे में कर लिया जहां आजलों कांधलोत अपनी राजधानी बहादुरा नग्र के इधर उधर बस्ते हैं - राव बीकाजी १४९५ में उतपन्न हुये सं० १५४५ में पाट बिराजे और सं० १५५१ में बीकानेर बसाने मे ६ बरस पीछे ५६ बर्ष की अवस्थामें वैकुंठ बास हुये यहीं से बीकानेर

राज्य की बुन्याद पडी - ॥

बीकाजी के १३ पुत्र थे जिनमें से बीकाजी के देव लोप होने पर बडा बेटा राव नाराजी गादी पर बैठा नाराजी सं॰ १५२६ में पैदा हुये और सं॰ १५५१ में गादी बिराजे और थोडे दिन राज करके सं॰ १५५१ में देव लोप होगये - ॥

राव लुनकरन सं॰ १५२७ मे उतपन्न हुये १५५१ मे पाट बिराजे और १५८३ में स्वर्गबाश हुये - ॥

राव जैतसी १५७६ में जन्मे १५८३ में गादी बिराजे और सं॰ १५९८ में देव लोप हुये इनके वक्त में जोधपुर के राव माल देव ने बीकानेर इन से छीन ली थी परन्तु इनके बेटे राव कल्यानमल को **अकबर बादशाह** ने माल देव से वापिस दिलवादी - ॥

राव कल्यान मल सं॰ १५७५ में जनमे और १६०१ में पाट बिराजे और संम्मत १५९८ मे देव लोप हुये यह नागोर में अकबर बादशाह के हजूर में हाजिर हुये और अपने भाई कान्ह सिंह की बेटी अकबर को ब्याही जिससे राव मालदेव को निकाल कर बीकानेर पर कबजा पाया - ॥

राव रायसिंह सं॰ १५९८ में जनमे १६२८ मे गादी बिराजे और १६६८ में देव लोप होगये इन पर अकबर बादशाह की बडी मेहरबानी थी गुजरात की लडाई में बादशाह के साथ थे **ताजखां** जालोर वाले और सरोही के **सुरतान देवडह** को पकड कर बादशाह के हजूर मे हाजिर किया एक हजारी का मनसब पाया अकबर के मरने पर उसके बेटे जहांगीर ने रायसिंह को पाचहजारी जात का मनसब और चार हजार सवार रखने का रुत्बा बख्शा - ॥

राव दलीपसिंह सं॰ १६२१ में जन्मे १६६८ मे पाट बिराजे सं॰ १६७० में परलोक बाश हुये इन्हो ने अपने पिता रायसिंह के मरने पर हाजिर हो कर जहां

गीर बादशाह से राव का खिताब और खिलअत पाया - खुद जहांगीर ने अपने हाथ से दरबार में राज तिलक देकर दो हजारी जात और हजार सवार का मनसब बखशा - परन्तु अंत को बादशाह से बगावत करने के अपराध में कतल किये गये और राज इनके छोटे भाई सूरसिंह को मिला - ॥

राव सूरसिंह सं० १६५१ में जन्मे और १६७० में गादी बिराजे और १६८८ में देहान्त होगया दो हजारी जात और हजार सवार का मनसब पाया सं० १६८८ में दक्षिण की लडाई में काम आये - ॥

राव कर्णसिंह सं० १६७३ में जन्मे और अपने पिता सूरसिंह की जगह सं० १६८८ में पाट बिराजे सं० १७२६ में देवलोप हुये यह दक्षिण की लडाई में बादशाह से सीख लिये बिना भाग आये थे बादशाह आलमगीर ने खफा होकर इनके बडे बेटे अनूपसिंह को गादी पर बिठा दिया और यह दो बर्ष कैद भुगत कर मरगये-

राव अनूपसिंह १६६५ में जन्मे १७२४ में पाट बिराजे सं० १७५५ में देवलोप होगये सं० १७७६ में अनूपगढ बसाया और कारगुजारी दिखला कर आलमगीर बादशाह से राजा का खिताब पाया - ॥

राजा सरूपसिंह सं० १७४६ में पैदा हुये सं० १७५५ में पाट बिराजे सम्मत १७७५ में देवलोप होगये - ॥

राजा सुजानसिंह सं० १७४७ में जन्मे सं० १७५७ में गादी बिराजे और सं० १७६२ में देहान्त होगया - सुजानगढ बसाया - ॥

महाराजा जोरावरसिंह सं० १७६६ में जन्मे और सं० १७८२ में पाट बिराजे और १८०२ में परलोकवास हुये - इन के अहद में जोधपुर के महाराजा अभयसिंह ने बीकानेर का मुहासरा कर लिया था परन्तु सं० १७४० में जैपुर के महाराजा सवाई जयसिंह और नागोर के हाकिम तखतसिंह ने बी

कानेर से २१ लाख रुपया दिलवा कर जोधपुर का कबजा उठवा दिया - ॥

महाराजा गजसिंह सं० १७८० मे जन्मे सं० १८०२ में अपने भाई जोराव रसिंह की जगह पाट बिराजे और सं० १८४५ में देव लोप हुये - ॥

महाराजा राज सिंह सं० १८०१ मे जन्मे सं० १८४५ में पाट बैठे और छो टे भाइ सूरत सिंह की मां के जहर देने से २५ दिन राज करके सं० १८४४ मे मर गये

महाराजा प्रताप सिंह सं० पैदाश मालूम न्ही सं० १८४५ में पाट विराजे सं० १८४५ मे देवलोप हुये ॥

महाराजा सूरतसिंह सं० १८२२ में जन्मे और सं० १८४५ में अपने भतीजे को मार कर पाट विराजे और सं० १८८५ मे फौत हो गये - इन के वक्त में संम त १८६१ में किला भटनेर[१] मुसलमान जोईयेराज पूतों से फतह हुआ जोधपुर के दावीदार **धोकलसिंह** का साथ देने में २४ लाख रुपया खर्च किया पर न्तु नवाब **मीरखां** के दबाव से हार कर बैठ रहे संमत १८७४ में सरकार अं ग्रेजी से अहदनामा हुआ महाराजा साहिब सवनोराब रहे अंत को ५० वर्ष राज्य करके देवलोप हुये

महाराजा रतनसिंह १८४७ में पैदा हुये सं० १८८८ में गादी बिराजे और १९०८ में देवलोप हुये - ॥

महाराजा सरदारसिंह १८७५ मे जन्मे और सं० १९०८ गादी बिराजे और १९२८ मे देवलोप हुये इन्हो ने गदर स० १८५७ ई० में मदद देने के बदले में सरकार अंग्रेजी से टीबी का परगना पाया जिस की आमदनी १५ हजार ३ सौ रुपया सालाना है इनके समय में सरदारो और दरबार में बखेडा खडा हु आ - जिसका सरकार ने फैसला कराया - ॥

महाराजा डुंगरसिंह सं० १९११ मे जन्मे और १९२८ पाट बिराजे और सं० १९४० में बद नजमी रियासत के सबब माजूल किये गये और माजूली

[१] यह बहुत पुराना किला है सुलतान महमूद गजनवी ने हिन्दुस्थान मे गयारवां हमला इसी गढ पर किया था सरकारी जिला सिरसा और बीकानेर की ठीक सीमा पर है - हमने भी इसे देखा है - म-मुराद अली

ही की हालत में सं० १९५४ मे परलोक बास हुये-यह महाराजा गज सिंहजी में छटी पीढी में मिलते थे इन के वक्त में समस्त जागीरदार नाराज हो गये थे अन्त को सरकारी फोज ने सं० १९५० में बिदासर में जा कर ठाकुर रामसिंह रईस महाजनव ठाकुर मेघ सिंह रईस जसाना और ठाकुर बिदासर को पकडा और महाराजा साहिब को माजूल कर दिया चार वर्ष पिछे उक्त सरदारों के वीकानेर जाने की आज्ञा मिली - ॥

महाराजा गंगा सिंह-जी येह सं० १९३६ में जन्मे और १९४४ में आप ने बडे भाइ महाराजा डुंगर सिंह जी की जगह पर पाट बिराजे अभी आप की उमर गयारा वर्ष के लग भग है मयो कालिज में तालीम पाते हैं चिरंजीव रियासत का वन्दो बस्त साहिब एजन्ट बहादुर की निगरानी में कौनसिल द्वारा होता है जिसके वाइस प्रेसीडन्ट राय वहादुर सोढी हुकम सिंह जी है - ॥

तवारीख राज्य किशन गढ

राजपूताने के मध्य में राठोडों की छोटी सी (परन्तु रुत्बे में बडी) रियासत है जिस के उत्तर व पश्चिम में मारवाड और पश्चिम व दक्षण में अंग्रेजी जिल्ला अजमेर और पूरब में जेपुर का मुल्क है रकबा ७२५ मील मुरब्बा - आबादी एक लाख२ हजार से अधिक खालसा आमदनी साढे तीन लाख और इससे कुछ कम आम दनी की जमीन जागीरदारों के कब्जे में है फौज सवार व पैदल ६०० आदमी कहे जाते हैं तोपें ३० है सलामी १५ तोपों की है जमीन कम पैदावारी की है अतएव तलाओं के पानी से खेती होती है - जियादः जमीन पहाडी है जिनमें थूहड के रूख बहुत हैं - समस्त राज्य में किशन गढ - रुपनग्र - सरवाड* तीन ही परगने हैं जागीरदारों में ठिकाना फतह गढ मशहूर है जो राजा कहलाता है -

* सरवाड में तांबडा पत्थर बहुत अच्छा निकलता है जिसके कंठे और नगदूर२ जाते हैं कलों द्वारा खान की खुदाई हो तो राज्य का बहुत फायदा हो - म: मुराद अली -

खास राजधानी किशनगढ मे ८ हजार आदमी बस्ते है - ॥

इतहास

यह रियासत आज से पौने तीन सो वर्ष पहिले जहांगीर बादशाह की मेहरबानी से कायम हुई थी जहांगीर ने जोधपुर के मोटा राजा उदय सिंह जी के बेटे किशन सिंह को उस की खिदमत गुजारी और अच्छी च्याकरी से खुश होकर जिले अजमेर में सीट्ला आदि गाव सं० १६६६ मे बखशे थे उस के दो वर्ष पीछे किशन सिंह ने अपने नाम पर किशनगढ बसा कर वहां रहना अखतियार किया - किशनगढ वाले यध्यपि जोधपुर के छुट भईये है परन्तु बडेरों की जागीर मे से कुछ हिससा न पाने और अपने परीश्रम से ठिकाना बनाने के कारण जोधपुरवालों का अहसान न्ही मान्ते - बादशाही राज्य मे किशनगढ के रईस का कुर्ब जैपुर- जोधपुर बीकानेर- बूंदी कोटा के पीछे मानाजाता था परन्तु आलमगीर बादशाह के मरने लो उसको राजा या राव आदि का लकब न्हीं मिला था तो भी चारहजारी मनसब रखता था मुहम्मद शाह बादशाह ने बहादुर सिंह को राजा का खिताब बखशा और २८० वर्ष में १५ रईस इस गादी पर बैठे जिनका हाल यह है - ॥ किशन सिंह ने सं० १६६६ में सिट्ला की जागीर बादशाह से पाई महाबत खा के साथ मेवाड में साका किया २० आदमियो को मारा ३०० को पकड कर बादशाह के पास लेगये बादशाह ने खुश होकर ३००० हजारी म्नसब और १५०० सवार रखने का कुर्ब बखशा १६७२ में गोविन्ददास भाटी प्रधान मारवाड से लड कर अपने भतीजे करन समेत काम आने राठोड सहसमल राठोड जगमाल यह महाबत खां के बेटे अमानुल्ला खां से लड कर काम आये - राठोड हरी सिंह सं०

१६८५ में गादी बिराजे २५ वर्ष राज किया राठोड़ रूपसिंह १७०० में गा
दी बिराजे इन्होंने बादशाही फौज के साथ बलख बदुखशां काबुल आदि में
अच्छी चाकरी की सादुल्ला वजीर के साथ चितोड़ का गढ़ तोड़ने में ब
हादुरी दिखलाई जिससे बादशाह ने खुश हो कर मांडलगढ़ इलाके मेवा
ड़ का परगनह बखशा* सं० १७१५ में आगरे के निकट औरंगजेब और शाह
जादे दाराशिकोह की लड़ाई में दाराशिकोह की तरफ से औरंगजेब के हाथी
पर तलवार मारते हुये काम आये - राठोड़ मानसिंह सं० १७[illegible] में [illegible] कर
के काम आये - राजा राजसिंह १८०५ में देवलोप हुये - राजा [illegible]सिं
ह राजा बहादुरसिंह रियासत की आमदनी के दसवें हिस्से की जागीर फ
तहगढ़ इन्हों ही ने अपने बेटे बाघसिंह को बिना रेख बखशी थी महाराजा
सिद्धसिंह सं० १८५५ में गादी बिराजे और सं० १८५८ में देवलोप होगये
महाराजा कल्यानसिंह १८५८ में गादी बिराजे परन्तु सरदारों ने फसाद
किया तो साहिब एजन्ट की सलाह से ३६ हजार रुपया सालाना तनख्वाह
लेनी करके राज अपने बेटे मुहकमसिंह जी को सोंप कर दिल्ली चले गये ज
हां ६ वर्ष पीछे मिर्त्यु को प्राप्त हुये - महाराजा मुहकमसिंह ८ वर्ष राज
करके सं० १८९७ में बे औलाद मर गये - महाराजा पृथ्वीसिंह सम्वत
१८९८ में ठिकाने फतहगढ़ से गोद लिये जाकर चार वर्ष की अवस्था में राज
बिराजे - यह बड़े बुद्धिवान व दयावान रईस थे सं० १९२७ में ३ लाख रु
पया खर्च करके अपने राज्य में तालाब खुदवाये इनके राज्य में हो कर रेल निकलने
से ६० हजार रुपया सालाना राहदारी के महसूल की आमदनी का मारा गया
परन्तु महाराजा की लायकी और गरीबी को देख कर २० हजार सालाना सर
कार उस हानी के बदले में देती है बहुतसे शुभ कार्य करने और धर्मश

* दोलाख की जागीर में

न्य करने के पीछे सं॰ १९३६ मे स्वर्ग वास हुये माहाराजा सारदूलसिं हजी (चिरंजीव) जैनवरी महीने की ८ ता: सं॰ १९३६ में पाट विराजे आप ने पिता के समान नेक नीयत सादा मिजाज धर्म कर्म के पक्के हैं सं॰ १९४२ में बाबू श्यामसुन्दर लाल जी मयो कालिज के हीयम मास्टर जनाब करनेल ब्राडफर्ड साहिब बहादुर एजन्ट गवर्नर जनरल राजपूताने की आज्ञा अनुसार किशन गढ के प्रधान नियत हुये बाबूजी ने दीवानी फौजदारी अपील आदि महकमे जारी किये और श्रीदरबार का इजलास महकमाखास कहलाता है - इस्टेम्प भी जारी किया गया - श्रीमहाराजा साहिब बहादुर को मई सन १८९२ ई॰ में सरकार से जी-सी-एस-आई का तमगा भी इनायत हुआ जगदीश्वर मुबारक करे सरकार अंग्रेजी के खरीतों के लिफाफे पर बमुलाहिजे महाराजा साहिब मुशफिक मेहरबान मुखलिसान महाराजाधिराज - लकब और श्रीनामे पर महाराजा साहिब मुशफिक मेहरवान मुखलिसान सलामत लिखाजाता है कागज सुनहरी थैली कमखाब की होती है - ॥

राज्यबूंदी

राजपूताने के दक्षण और पूरब दिशा में बूंदी का राज्य दूसरे दरजे का पुराना राज्य है जिसके उत्तर में जैपुर पश्चिम में जहाज पुर इलाके मेवार- दक्षण में गवालियार - पूरब में कोटे का इलाका है - लमबाई ५० मील चौडाई ५० मील रकबा २२९१ मील मुरब्बा आबादी २लाख ५५७-१ आदमियों की है खालसा की सालाना आमदनी ५लाख रुपया और इसी के लगभग जागीरदारों की आमदनी है - फौजसवार और पैदल दोनो २५०० हैं १ लाख २००० रुपया सरकार अंग्रेजी को खिराज देते हैं सलामी १७ तोप है शहर बूंदी

जो इस राज्य की राजधानी है आगरा से २९५ मील दक्षिण दिशा में पहाडी घाटि के मध्य में बस्ता है इस में ५० हजार आदमियों की आबादी है महाराजा साहिब के महल ऊंची पहाडी के ढलाव पर उत्तम रीति से बने हैं जिनकी खूबसूरती प्रसंसा के योग्य है - ॥

तवारीख बूंदी

बूंदी वाले चौहान जाति के हाडा खांप में अजमेर के राजा मानक चंद के पोते अस्तपाल के बंस में से हैं आदमें हाडा भिन्न २ स्थानों में रहे और अंत को सं० १३९८ में मेवाड के महाराना की सहायता से बूंदी का राज पाकर सवा दो सौ वर्ष चीतोड के मातहत रहे और सं० १६२६ में वह **रतनभोर** का गढ अकबर बादशाह को सोंप कर खुदमुखतार राजा और बादशाही मनसबदार बने - मतलब यह है कि आजसे ५५६ वर्ष पहिले वह राजपूताने में सरदारी के दर्जे पर पहुंचे थे और ३१८ वर्ष पहिले खुदमुखतार राजा हुये राजपूताने में आने के समय से आज लों उन की २५ पीढियां हो गुजरी हैं बूंदी के रईस मेवाड की मातहती से इनकार करते हैं - परन्तु सत्य यही है कि उनको दक्षिण से निकलने के पीछे मेवाड ही में पनाह मिली और मेवाड ही की सहायता से पहिले भैंसरोड और फिर बूंदी का राज्य पाया जैसा कि बादशाही मनसबदार बने से पहिले अकबर का वजीर **अबुल फजल रावसरजन** को मेवाड का मातहत लिखता है और इकबाल नामे **जहांगीरी** व बादशाहनामे शाहजहानी आदि इतहासों में भी ऐसा ही लिखा है अस्तपाल के बडेरों में से अजेपाल ने अजमेर को बसाया उसके पीछे **मानक** राज ने सं० ७४१ मे साखंभरीदेवी के नाम से सारवंभरीग्राम बसाया - जिसको अब सांभर कहते है (सांभर का लोन प्रसिद्ध है) इसी मानक

राय की औरलाद मे एक खाप की नवी पीठी में प्रथ्वीराज उतपन्न हु वा था खीचीं हाडा मोहल- निरभाणा-देवडः हिडोरिया- भोरीचा धनेरया- बागेरचा-आदि चौहानो की खापे है मानक राय का वेटा **अनोरराज** असी अर्थात **हांसी** काराजाथा जिस के वेटे अस्त पा लको शत्रुओ ने सं० १०८१ में वहा से निकाल दिया वह दक्षण मे जा कर **असीर** का राजा हुवा वही से हाडा खांप चली अस्तपाल के पीछे **लोकपाल** हुआ जिस का वेटा **हमीर** प्रथ्वीराज के साथ सं० १२४९ में **शहाबुद्दीगोरी** से लड कर काम आया हमीर के पीछे कालक रन- माहमगदः राव बांचा रावचंद्र आसीके राजा हुये राव चंद्र को स० १३५२मे **अलाउद्दीन खलजी** वादशाह ने कतल किया तव उसका वेटा रैनसी ढाई वर्ष की अवस्था में हिफाजत के लिये चितोड मे लाया गया रैनसी ने जवान होकर मेवाड वालों की सहायता से **डोंगा** भीलको मार कर भेंसरोड गढ लिया- रैनसी का वेटा **कोल्ह** और उसका वेटा **बांगा** हुआ बागा के वेटे देव ने जोर पाकर मीनों को जेर किया स० १३९८ मेवा दो घाटा के वीच मे शहर **बूंदी** वसाया जिस के गिर्द हाडो के फैल जाने सेउ स देश का नाम भी हाडोती होगया राव देव का वेटा **समरसी** और समर सी का **नापूजी** नापूजी का वेटा **हामू** स० १४४० में गादी परवैठा और १९ वर्ष राज करके मरगया उसका वेटा **वीरसिंह** सं० १४५९ मे पाट वैठा और सं० १५२९ में मरगया तव उस का वेटा राव वांदो गादी पर वैठा परन्तु उनके दो छोटे भाइयो ने मुसलमान होकर वादशाह की सहायता से बूंदी छीनली और **समरकन्दी** व **उमरकन्दी** नाम से बूंदी के राजा कहला ये राव वांदो २१ वर्ष पहाडो में खराव हो कर मरगया तव **राव नरायन**

राव अपने भाई सुरजन का काम्रों को कतल करके राज विराजे और
३२ वर्ष राज करके मर गये उनका छोटा भाई महाराना संग्रामसिंहकेसाथ बाबर
बादशाह से लड कर काम आया - ॥

रावसूरजमल सं० १५८० में पाट विराजे और महाराना सां गा के बेटेर
तनसी से शिकार में लड कर काम आये - ॥

राव सुल्तान सं० १५८१ में गादी विराजे परन्तु राजका काम न चला सके
सरदारोंने इनको गादी से उतार दिया इन के कोई बेटा नथा अतएव सरदारों
ने राव बांदो के पोते अरजुन को पाट बिठाया - राव **अरजुन** सं० १५८२ में
५०० हाडों समेत चीतोड के गढ में **बहादुर शाह गुजराती** के सुरंग उडाने
से उड गया - ॥

राव सुरजन सं० १५८८ में गादी विराजे और सं० १६२६ में रतम भोर का
गढ अकबर बादशाह को सौंप कर मेवाड की मातहती से निकल कर बाद
शाही चाकरी में गये इसी कारण उनका कुर्ब जैपुर जोधपुर के पीछे बीका
नेर आदि के बराबर रक्खा गया और सुरजन सं० १६४१ में देवलोप हुये - ॥
राव भोज अपने पिता के सामने सं० १६३५ में गादी विराजे और १६६४
में मित्यु को प्राप्त हुये (कियोंकि इनके पिता इनको राज्यसोंप करबादशाहीचाकरीकरनेचले गये)

सरबुलन्द रावरतन गादी पर बैठ कर **बादशाह** से सरबुलन्द का लकब
और ढाई हजारी जात मनसब और १००० सवार का कुर्ब पाया और अंत
को पांच हजारी मनसब और राय राव का खिताब पाकर सं० १६८८ में द
कन की लडाई में काम आये - रावरतन का पाटवी कुंवर गोपीनाथ पहिले
ही मर चुका था इसवास्ते बादशाहने उन के पोते शत्रुसाल को बूंदी का राज दि
या और दूसरे बेटे **माधोसिंह** को कोटा और पलायता की जागीर दे कर

ढाई हजारी मंनसब बखशा उसी दिन से कि(२५०) वर्ष हुये कोटा बूंदी से अलग हो गया - ॥

राव शत्रुसाल सं० १६८८ मे राज बिराजे सं० १७१५ में आगरे के निकट लडाई मे काम आये ॥

राव भाउ सिंह सं० १७१५ में बाप की जगह पाट बिराजे और सं० १७३२ मे बे औलाद मिर्त्यु को प्राप्त हुये ॥

राव अनरूध सिंह सं० १७३५ में पाट बिराजे और स० १७६२ मे काबुल में लड कर काम आये - ॥

रावराजा बुधसिंह इन को बादशाहने रावराजा की पदवी बखशी इन मे और कोटे वालो में खब लडाइयां हुई यह अंत को सं० १७८६ मे **बंगों** में देवलोक हुये - बुधसिंह के छोटे पुत्र **दीप सिंह** को कापरन जागीर मे मिली और बडे उमेदसिंह राज के मालिक हुये - ॥

रावराजा उमेद सिंह ने सं० १८०० में राज पाया कुंवर **अजीत सिंह** उदयपुर के महाराना **अरसी जी** इन्हों ही ने शिकार मे धोखे से मारा था- जिसका रज बूंदी और मेवाड में आज लो है परन्तु उसी पाप से कुछ दिन पीछे अजीतसिंह कोढी होकर मरगया ॥

रावराजा बिशन सिंह स० १८६१ में पाट बिराजे और सं० १८७५ फरवरी महीने की १०ता० को सरकार से दोस्ती का अहदनामा किया और संम्मत १८७८ मे देवलोक हुये - ॥

महाराव राजा राम सिंह १८७८ मे दस वर्ष की अवस्था में करनेल टाड साहिब के सामने पाट बिराजे यह रईस बहुत बुधिवान और विद्वान थे उनके समय में बडी २ बातें हुई सरकारने दिल्ली के दरबार सन १८७७ई०

में इन को सितारःहिन्द और मशीर कैसरहिन्द की पदवी बरव्शी यह बडे पंडि त और धर्म कर्म के बहुत पाबन्द थे परन्तु अैसे दाना और दयावान होने परभी का पहल का ठिकाना जब्तकर लिया जिससे कई सरदार इनसे नाराज रहे - राजपूताने में इन की उमर से बडा कोई रईस नथा इस लिये सरकार इनकी ब हुत इज्जत करती थी सन १८७९ ई॰ में ८० वर्ष की अवस्था में ७० वर्ष राज करके नेकनामी से देवलोप हुये - ॥

महाराव राजा रघुबीर सिंह २८ ताः सेपटम्बर सन १८६९ ई॰ को जन्मे थे और बडे भाई भीम सिंह जी के स्वर्ग वाश होने से पाटवी करार पा कर सन १८७९ ई॰ में अपने पिता की जगह राज बिराजे यह भी अपने पिता के समान धर्म संबन्धी कामों में सरगरम और अच्छे रईस हैं रियासत का का म बदस्तूर पुरानी रीति से चल रहा है बूंदी के राज्य में ५० सौंन्सकृत पाठ शा ला और १० फारसी के मदरसे हैं - ॥

राज्य कोटा

राज पूताने के दक्षरा और पूरब में कोटा का राज्य आमदनी के लिहाज से जे पुर - उदयपुर - जोधपुर के पीछे दूसरी रियास्तों से बडा है इसके उत्तर में बूंदी पश्चिम में भैसरोड इलाके मेवाड दक्षरा में मकन्दरः घाटा इलाके इन्दौर हुलकर और पूरब में टोंक और गवालियार है लम्बाई पूरब से पश्चिम को ९० मील चौडाई उत्तर से दक्षरा को ८० मील - रकबा ४३५० मील मुरब्बा आबा दी ५१७२७५ आदमियों की सवार वपैदल ५००० आमदनी खालसा २८ लाख रुपया है जिसमें से २ लाख ५० हजार रुपया खिराज और देवली की सरकारी फौज के खर्च की बाबत सरकार अंग्रेजी को दिया जाता है शहर **कोटा** जो राजधा नी है चंबल नदी के किनारे परबसा है और नदी में रईस के रहने को जलमहल

भी वना है इस रियासत की जमीन सरसबज है परन्तु हवा खराव होने से वीमारी अक्सर रहती है ॥

तवारीख

कोटा के रईस हाडा जाति के राजपूत बूंदी वालों से निकले हैं जैसा कि बूंदी के इतहास मे हमने लिखा है- शाहजहां वादशाह के शुरु अहद मे उन्ही की मेहरबानी से यह रियासत कायम हुई है - ॥

राव माधो सिंह बूंदी के रावरतन के मरने पर इनके भतीजे बूंदी की गादी पर बिराजे और शाहजहां बादशाह ने इन की चाकरी से खुश होकर कोटा और पलायता की जागीर इनको सं० १६८८ में वखशी और तीनहजारी जाति का मनसव दिया उस वक्त इन की अवस्था १५ वर्ष की थी सं० १७०० मे देव लोप हुये - ॥

रावमकुन्दसिंह माधो सिंह के पांच बेटे थे वडे मकुन्द सिंह गादी विराजे और मोहन सिंह को पलायता जुझारसिंह को कोटरा कन्हीराम को कोयला और किशोर सिंह को सांगोद जागीर में मिले - रावमकुन्दसिंह सं० १७१५ मे उज्जैन के निकट लडाई मे काम आये इन्हों ने उस बडे घाटे में जो हाडोती को मालवह से जुदा करता है महल बनाये थे इस से वह घाटा मकुन्दरा के नाम से आज लों प्रसिद्ध है

रावजगत सिंह यह अपने दादा मकुन्द सिंह के मारे जाने के पीछे आलमगीर बादशाह के हजूर से दोहजारी मनसब पाकर पाट बिराजे और बादशाह के साथ दक्षण की लडाई मे लडकर सम्मत १७२६ में काम आये- ॥

राव भीमसिंह जगत सिंह के मरने पर कन्हीराम के बेटे भीम सिंह गादी पर बैठाये गये परन्तु सरदारो ने उन को बेवकूफ समझ कर कोयला की जागीर पर भेज दिया जहां अब लों उनकी औलाद मालिक है - ॥

राव किशोर सिंह भीम सिंह को निकालने के वाद सांकोद से किशोरसिंह

को लाकर गादी पर बिठाया यह सं० १७४२ में बादशाही फोज के साथ द क्षरा में लड़कर काम आये इन के तीन बेटों में से बडा बेटा बिशुन सिंह बाद शाह की चाकरी मे नजाने के कारण राज से महरूम रहा उस को अंता की जागी र मिली और दूसरे बेटे राम सिंह ने राज पाया ॥

रावराम सिंह इन्होंने बादशाही चाकरी दक्षरा में दिल से करी जिस के बदले में मौ मैदाने का परगनह भी जागीर में पाया और रावराजा की पदवी मिली बूंदी और कोटा में इन्ही के अहद में बैर पडा सं० १७६३ में काम आये

महाराव भीम सिंह सं० १७६५ में गादी बिराजे और सं० १७७७ मे सात हजारी मनसब तक पहुंच कर नरवर के राजा गज सिंह के साथ बादशाह की त रफ से हैदराबाद के निजामउलमुल्क से लड कर बुरहान पुर में काम आये ॥

महाराव अरजुन सिंह सम्मत १७७७ में पाट बिराजे और चार वर्ष राज कर के लावल्द फौत हुये ॥

महाराव दुरजन साल सं० १७८१ में पाट बिराजे मुहम्मद शाह बादशाह ने इन को राज तिलक औ खिलअत बखशा मरहठों को मदद देने के बदले में नाहरगढ पाया इस के दूसरे वर्ष पीछे हिंमत सिंह किलेदार का भतीजा

जालिम सिंह भाला (भालावाड वालों का बडा) पैदा हुवा इन्ही महाराव को मेवाड़ के महाराणा जगत सिंह ने बेटी व्याह कर गादी के बाई तरफ बैठने की इज्जत बखशी सं० १८०० में जैपुर ने बूंदी दबा कर कोटा लेना चाहा परन्तु हार कर वापिस आये सं० १८०५ में महाराव ने हुलकर से सिफारश कर के बूंदी उल्टी जैपुर से बूंदी वालों को दिलाई सं० १८१३ में महाराव ला वल्द देवलोप हुये ॥

महाराव अजीत सिंह ८ वर्ष की अवस्था में अंता की जागीर से गोद

आकसं० १८१३ में पाट बिराजे और ढाइ वर्ष राज करके स्वर्गवाश हुये इन्हीं के समय में हिम्मत सिंह झाला के मरने पर जालिमसिंह झाला उनका भतीजा किल्लेदार हुआ - ॥

महाराव शत्रुसाल्ल १८ १६ में पाट विराजे जैपुर की फौज कोटापर चढ आई परन्तु जालिम सिंह झाला की बहादुरी से जिसने हुलकर को मदद के लिये बुला लिया था बटवारह नामी स्थान से लोट गई सं० १८२२में देवलोप हुये

महाराव गुमानसिंह अपने भाई शत्रु साल की जगह राज पाकर जालिम सिंह किलेदार की जागीर जबत कर ली वह मेवाड में चले गये परन्तु फिर कोटा को लोट आये और मरहठों से ६ लाख रुपया देकर महाराव की सुलह कर दी जिस से फिर नांदलह की पुरानी जागीर महाराव ने उन्हे बख्शी सं० १८२७ मे महारावने बीमारी की हालत में अपने बेटे उमेद सिंह को जिन की अवस्था १० वर्ष की थी जालिम सिंह की गोद में बिठाया और आप देव लोप हुये - ॥

महाराव उमेदसिंह इन के समय में दीवान जालिम सिंह को राज का कुल कुलों अधिकार होगया दीवान ने २५ लाख के बदले ३५ लाख की खालसा आमदनी बढाई फकीरों मेहतरो रेंडियो आदि पर टिक्स लगया जागीरदारो की जागीरें दबाली हुल करने चढाई करके १० लाख मागा परन्तु मीर खा की सिफारश से तीन लाख लेकर चलागया जालिम सिंह के पास २० हजार फौज बहादुर पठानो की थी सं० १८७५ मे जालिम सिंह ने अंग्रेजो को बहुत मदद दी जिससे खुश होकर सरकार ने दिग- पंच पहाड अहवा- गगरार इनाम मे दिये परन्तु जालिमसिंह ने महाराव उमेद सिंह के नाम इन परगनो की सनद लार्ड हिसटंगर साहिब से का गुली खुद न्हीलीये - इसी सम्मन मे सरकार से कोटे का मदद नामा हुआ जिस मे जालिम सिंह के खानदान मे सदा लो दीवानी का

ओहदा रहना सरकारने मनजूर किया जिस से रियासत झालरापाटन की बुन्याद पडी सं० १८८६ में राव उमेद सिंह लावलद फोत होगये ॥

महाराव किशोरसिंह १८८६ में पाट बैठ कर जालिमसिंह झालाके अख तियारात लेने की कोशिश की परन्तु न्ही लेसके कियों कि अंग्रेजी अफसर जालिमसिंह की मदद पर रहे महाराव नाराज होकर सं० १८७८ में विन्द्राबन चले गये परन्तु थोडे दिनो मे वापिस आकर दीवान को बेदखल करना चाहा - दीवानने भी लडने की तैयारियां कर लीं जिस की मदद पर सरकारी फौज की दो पलटनें छ रिसाले और एक तोप रवाना था दीवान के पास ८ पल्टनें १५ रिसाले और ३२ तोपें थी इनसब को साथ लेकर दीवान ने महाराव पर हल्ला किया महाराव के बहादुर राजपूतों ने भी बडी बहादुरी दिखलाई बडी घमसानकी लडाई हुई महाराव साहिब अपने साथियों समेत चंवल नदी के पार उतरगये और जुवार के खेतों की आड पकड कर फिर लडे जिससे अंग्रेजी रिसाले का मुह फिरगया करनैल विर्च साहिब घायल हुये किलाकी साहिव और रीड साहिब दो सरदार मारे गये महाराव के छोटे भाई प्रथ्वी सिंह भी काम आये महाराव अपने साथियों समेत मेवाड में हो कर **नाथद्वारा** में पहुंचे और कोटा को नाथद्वारा के नाम श्रीकिशनार पुन्न कर दिया (जिसके बदले में ५०००रु० साल्लाना कोटा के गढ का किराया अब लों नाथद्वारा में दिया जाता है) कुछ दिन पीछे महाराणा भीम सिंह जी की सलाह से मेजर टाड साहिब ने दीवान और महाराव की सुलह करादी जेठ सुदी ८ सं० १८८० को ८५ वर्ष की अवस्था में दीवान जालिम सिंह देवलोप हुये यदि सरकार से कोटा का अहदनामा हुआ होना और दीवान से केवल ओहदः दीवानी के बहाल रखवाने का जिम्मा सरकार न करती तो दीवान के कोटा लेलेने में कोई संदेह न

था जालिम सिंह के मरने पर उसका बेटा **माधो सिंह** दीवान हुआ उस ने रईस को राजी रक्खा सं० १८८५ में महाराव किशोर सिंह और थोडे दिनो पीछे दीवान माधो सिंह दोनों परलोक बाश हुये -॥

महाराव रामसिंह इन के गादी बैठने पर माधो सिंह का बेटा और ज़ालिम सिंह का पोता मदन सिंह दीवान हुवा परन्तु महाराव और दीवान में हमेश बिगाड रहने से दीवान के लिये कोटा राज के तीसरे हिस्से की अर्थात १२ लाख सालाना की जागीर सरकार अंगरेजी और महाराव की मंजूरी से सं० १८९४ में निकाली गई - और मदन सिंह से दीवानी कोटा की बाबत हमेशा के लिये इस्तैफ़ा लिया गया सरकार अंगरेज़ी से मदन सिंह को महाराज राना का ख़िताब मिला और अस्सी - हज़ार रूपिया सरकारी खराज क़ायम किया गया - महाराव राम सिंह जी सम्वत - १९२२ में फौत हुए ॥

महाराव शत्रुसाल जी सं० १९२२ में पाट बिराजे - यह नातजरबाकारों के बस में फसकर नुक़सान करने लगे - रियासत क़रजा से ज़ेरबार हो गई - तब सं० १९२६ में एजन्ट साहब ने सरकार में बहुत बडी शिकायत लिखी - महाराव साहब ने भी - तंग आकर साहब की सलाह से सरकारी बन्दोबस्त होने की दरख़्वास्त की - जिस पर सं० १९२९ में नवाब बख़शी **फैज़ अली खान** जी जो जैपुर में बख़शी फ़ौज और प्रधान रह चुके थे सरकार की तरफ से सुपरन्टन्डन्ट रियासत होकर आये - इन्हों ने कोटा का राज ९ निज़ामतो में तकसीम करके नया बन्दोबस्त किया - दीवानी - फ़ौजदारी और माल के महकमे क़ायम किये - नवै लाख रूपिया जो राज के जिम्मे कर्ज था उस के उतारने का यह बन्दोबस्त किया कि कर्जदारो को रूपिया पीछे ॥) देने करके अजमेर के राय बहादुर सेठ **समीरमल जी** लोढा से इकट्ठा रूपिया कर्ज लेकर सब को चुका दिया - फ़ौज के खर्च मे ९ लाख की कमी की गई - रसोडा आदि

का खर्च भी घटाया और अच्छा बन्दोबस्त किया परन्तु खुशामदी लोगों ने महाराव जी के दिल में यह वहेम डाल दिया कि ज़ालिम सिंह झाला के समान नवाब भी कोटा का मालिक बन बैठेगा - इस्से महारावजी घबराये और नवाब की शिकायत बड़े साहब को लिखी इसपर नवाब ने सं० १९३२ में इस्तेफ़ा दे दिया और कप्तान सवट साहब बहादुर नियत हुए - इन्हों ने भी अच्छा बन्दोबस्त किया फिर मेजर पावलट साहब बहादुर और फिर मेजर बेली साहब बहादुर सं० १९३६ में मुकररिर हुए - जिन्हो ने मीर जाफ़र हुसेन और बाबू अबदुल्ला इत्यादि अफ़ीसरों को सरकारी इलाके से बुलाकर अच्छा बन्दोबस्त कराया - कोटा में ४० लाख आमदनी के २४९३ गांव हैं जिनमें से चौथा हिस्सा जागीरदारों व धर्मार्थ के क़बज़े में हैं - ८ जून सन १८८९ ई० को महारावजी ने बीमारी की हालत में महाराज छगन सिंह जी के छोटे कुंवर उदैसिंह जी को गोद लेकर नाम उन का उमैद सिंहजी रखा और मंज़ूरी के लिये सरकार में ख़रीता भेजा - परन्तु जवाब आने से पहिले ११ जून सन १८८९ ई० को ६ घड़ी दिन चढे महाराव शत्रुसाल देवलोक हो गये - अन्त समय महारावजी ने एक लाख रुपया दान किया - ब्राह्मणों की ११ कन्याओं का विवाह करा दिया - १६ हज़ार ब्राह्मणों को भोजन दिया था इनके देवलोक होने के पीछे रामचन्द्र जी राज वैद और धा भाई धीसाजी महारावजी को ज़हर देने की इल्लत में क़ैद हुए परन्तु सबूत न होने से छूट गये -

महाराव उमेद सिंहजी - जेठ सुदी ८ मुताबिक़ ८ जून सन १८८९ ईस्वी को १६ बर्ष की अवस्था में पाट बिराजे - मेओ कालिज में तालीम पाते हैं - सरदार होनहार मालूम होते हैं - चरंजीव - राज का बन्दोबस्त सरकार के हाथ में है ॥

राज्य झालरा पाटन

राजपूताने के दक्षिण व पूरब में सम सन रियासतों से पिछली और आमदनी के लिहाज़

से दूसरे दरजे की रियासत झालरापाटन है- इसके उत्तरमे घाटा-मकुन्दरा और कोटा- और पश्चिममे राज्य हुलकर-वगवालियार और पूर्वमें राज्यटोक वगवालियार वदक्षिरामें भी इलाका टोंक है- रकबा २५०० मील मुरब्बा आबादी २४५०० आदमीओ की- और आमदनी खालसा १९ लाख रुपया सालाना है- फौजसवार व पैदल ४००० जागीरदारों केकबजे मे केवल एकलाखकी जागीर है ८० हजार रु० सरकार अंगरेज़ी को खराज दियाजाता है- रईसको सरकार अंगरेज़ीसे राजराना-का खिताब और १५ तोपे सलामीकाकुरब हासिल है- इस रियासतकी जमीनबलिहाज पैदावारी सब से अच्छी है- क्यों कि झालोंने अपनीमरज़ी के अनुसार कोटा की रियासतमें से अच्छी २ पैदावारी कीजागीर निकालीथी- यही कारण है कि सिथर-होनेकी अवस्थामे जोजागीर १२लाखकी थी अबउसीमें २०लाख उतपन्न होते हैं- राजधानी शहरझालरापाटन जिसको जालिमसिंहजी ने वसायाथा बकौल-करनल **टाडन** साहबबहादुर बहुत हीखूबसूरत जैपुरनग्र केसमान बसा है- और साहूकारों के अधिक होने से बणिज व्योपार बहुत होता है-

तवारीख झालरापाटन

कोटाकी तवारीख में इसराज के स्थिर करने वाले का हाल हम लिख चुके हैं अत्त सब- यहां दुबारा लिखना फिजूल समझकर मुख्तसिर लिखते हैं झालाराजपूतों का पराचीन ग्राम झालावाड इलाके काठियावाड है- राजराना जालिमसिंहजी **हलोद** के झालासरदारकी औलादमे सेथे- हलोद वालो मे से **भाऊसिंह** नामक एकराजपूत ने **आलमगीर बादशाह** के फौतहोनेके पीछे आजसे डेढ़सौ बरस पहिले नोकरी कीतलाशमे अपनादेश छोड़ाथा **भाऊसिंह** का बेटा **माधोसिंह** कोटाकेमहाराव **भीमसिंह** के पास आकर नौकर हुआ और उसकी बहिन के साथ महारावके बेटे दुरजनसाल की शादी हुई- इस सम्बन्धके कारण **नांदता**

ग्रामकी जागीर और फौजदारी उनको मिली ..... कोटा में उनको मामाजी क
हा जाता था-माधोसिंह के पीछे **मदन सिंह** और उस के मरने पर **हिम्मत सिंह**
किलेदार व फौजदार हुआ- इन्हो ने मरहटों के साथ अहेद नामा करके कोटा को उन
का खराज गुज़ार बनाया- और राज्य को मरहटों से बचाया- जिस से दरबार कोटा में
इनको इज़्ज़त मिली- हिम्मतसिंह के देवलोप होने पर **ज़ालिमसिंह** जी उनके
भतीजे किलेदार और फौजदार नियत हुए- और जैपुर की फौज से लड़ने में नाम पाया
परन्तु महाराव गुमान सिंहजी से बिगाड़ होने के कारण ज़ालिमसिंहजी मेवाड़ में च-
ले गये- और हद्दस **देलवाड़ा** की मारफ़त दरबार मेवाड़ की नौकरी करली- किन्तु
थोड़े ही दिनों पीछे कोटे को लौट आये- और महाराव गुमानसिंह और मरहटों में सु-
लह करादी- जिससे नांदला की जागीर और फौजदारी जो ज़ब्त हो गई थी दोबारा
पाई- और महाराव ने मरने के समय अपने बेटे महाराव उमेद सिंह को जो १० बर्ष
के थे इनकी गोद में बिठाकर राजकाज ज़ालिमसिंहजी को सौंपा- ज़ालिम सिंह जी
ने उमेदसिंह जी के राज में कि पचास बर्ष लों रहा बड़ी ताक़त पैदा की -(देखो तवारीख
कोटा) और महाराव किशोरसिंह के अहद में ८५ बर्ष की अवस्था पाकर सं० १८८० में -
ज़ालिमसिंहजी अद्‌भुत चरित्र दिखलाकर स्वर्गबास हुए- इनके पीछे इनके पुत्र
माधोसिंह दीवान कोटा नियत हुए- और सन १८८८ में देवलोप होगये- माधो
सिंह के देवलोप होने पर उनके बेटे **मदन सिंह** दीवान नियत हुए-परन्तु महारा
व और दीवान में कभी मिलाप नहीं हुआ- नित प्रति दिन बखेड़ा रहता था अतएव-
कोटा के महाराव **रामसिंह** जी के अहद में सरकार अंगरेज़ी ने यह फ़ैसला कराया
कि कोटा के राज के तिहाई की जागीर जिस की आमदनी १२ लाख सालाना होती है-
मदनसिंह को अलग देकर दीवानी से हमेशा के लिये इस्तैफ़ा लेलिया जाय-सं० १८९५
में यह तजवीज़ सरकार अंगरेज़ी की सलाह से महाराव कोटा ने मंजूर करके मदनसिंहजी

को १२लाख की जागीर रियासत कोटा मे से निकाल दी - और वह खुदमुखतार रईस माने गये - और सं॰ १९०१ मे ७ वर्ष राज करके मदनसिंहजी देवलोक हुए - ॥

महाराजराना प्रथवी सिंहजी सं॰ १९०१ में अपने पिता की जगह राज बिराजे और सं॰ १९३२ मे ३० वर्ष राज करके स्वर्गवास हुए - इनके अहद में फजूलखर्ची के कारण रियासत २४लाख की करजदार हो गई थी तो भी इन्हों ने अच्छे २ मकानात बनवाए - बागात लगवाये - आगरा - काशीजी - दिल्ली - आबू - नाथद्वारा आदि की यात्रा और सैर की - राजपूताना के प्राचीन रईस इनको बराबर कुर्ब देने मे उज़र करते थे - परन्तु महाराना **शिम्भूसिंह** जी स्वर्गवाशी मेवाड़ाधीश ने महाराजराना प्रथवी सिंहजी को ताजीम देकर अपने बाई तरफ बराबर बिठाया जिससे अब कोई रईस उज़र नहीं कर सकता ॥

महाराजराना ज़ालिम सिंहजी इनका नाम पहिले कंवर बख्तसिंह जी था ठिकाने **[illegible]रोल** इलाके काठियावाड़ से सरकार की मंजूरी लेकर गोद लिये गये परन्तु महाराजराना प्रथवी सिंहजी स्वर्गवाशी की एक महारानी साहबा ने कहा कि हमको हमल है - इस वास्ते मसनद नशीनी बहुत दिनों तक मुलतवी रही - अन्त को रानी साहबा की बात बेएतबार साबित होने पर इन्ही को वारिस करार दिया और नाम इनका राजराना जालिमसिंहजी रखा - यह सं॰१९३२ मे गोद लिये गये थे और जब जो नाबालगी मे मेऊ कालिज में इल्म पढ़ते रहे - रियासत का बनदोबस्त सरकार के हाथ मे रहा - पहिले कपतान **एबट साहब** बहादुर (जो अब करनल एबट साहब एजीडन्ट मगरबी राजपूताना हैं -) रियासत के मुन्तज़िम रहे - साहब मौसूफ ने बड़े २ लायक अहिलकारो को एकत्र किया - राज भवन - बागात - सड़कें बनवाईं - दीवानी - फौजदारी का बहुत अच्छा बन्दोबस्त किया रियासत का करज खन्दी करके उतारने का बन्दोबस्त किया - रियासत सरसबज हो गई - इनके पीछे - कपतान एफ - मारटगर्ल साहब रियासत के मुंतज़िम रहे सं॰ १९४३ मे सरकारी बन्दोबस्त उठ गया और राजराना जालिमसिंहजी को रियासत के पूरे अधिकार सरकार ने इनायत किये

परन्तु महाशोक कि इन्हों ने राज पाकर सरकार की मरज़ी के अनुसार काम नहीं किया-
जिसका पूरा २ वृतांत हम नहीं कर सकते अन्त को उन बातों का यह फल प्राप्त हुआ कि
सं॰ १९४४ में सरकार के हुकम से मेजर टाल्बट साहब बहादुर ने झालरा पाटन में पहुं-
चकर राजराना ज़ालिमसिंहजी को माज़ूल करदिया और राज के कार्यों का अधिकार
अपने हाथ में लिया - जब से आज लों सरकारी बन्दोबस्त है राज का काम एक कौंसिल
के द्वारा चलता है - जिसके मेम्बर बड़े २ लायक़ और विद्वान लोग हैं - जैसे धा भाई-
हरलाल जी साहब - व मुन्शी कालीचरन जी आदि - राजराना के लिये तनख्वाह
मुक़र्रर है - राज के कामों से कोई सरोकार नहीं - यदि अब भी राजराना साहब अपने
को सम्भालें और सरकार अंगरेज़ी के अफ़सरों की सम्मति पर चलें तो अंगरेज़ी सर-
कार जो दयावान और न्यायशीला सरकार है अवश्य करके इनको क्षमा करेगी सरकार
से इनको ख़रीते के लिफ़ाफ़े पर महाराजराना बिसियार मेहरबान दोस्ता
न महाराजराना ज़ालिमसिंह बहादुर सल्लमहु अल्लह तआला और
श्रीनामे पर महाराजराना साहब बिसियार मेहरबान दोस्तान सलामत
लिखा जाता है - ख़रीता सुनहरी कागज़ पर और थैली कमख्वाब की होती है -

राज्य करौली

राजपूताना के पूर्व दशा में करौली का राज एक छोटा परन्तु पुराना राज्य है - जिसके उत्तर
में भरतपुर और जैपुर - पश्चिम में जैपुर - दक्षिण में जैपुर और पूर्व में गवालियार और
धौलपुर का मुल्क है रक़बा १९०० मील मुरब्बा - आबादी ४०९७० आदमीओं की
और आमदनी ख़ालसा ५ लाख रुपिया सालाना - फ़ौज सवार व पैदल दोनों २००० से
अधिक है - इस राज में जागीरदारों के चार ठिकाने - हाडौती - अमरगढ़ - रानोतरा - इ-
नायती - अव्वल दर्जे के हैं - और राज का बन्दोबस्त ४ तहसीलों के द्वारा होता है -

करौली- मंडरायल- आदतगिर-मावलपुर- इसीरियासत की बहुधाजमीन पथरी-
लीहै- प्राय पूर्व और दखिरण मे चम्बलनदी के कारण बरसात में नाले और गढे पडजाते
हैं इसी राज्य में यादो राजपूतो के सिवाय गूजर-जाट-माली-मीना-आदि भीबस्ते हैं
करौली जोराजधानी है **गवालियार** से ८९ मील के फासले पर पश्चिम में बस्ता है-नग्र
के गिर्द व्रक्षो के होने से दूरतक लहलहाती हुई हरियाली दिखाई देती है- नदीनालों और
दलदल के होने से इस देशमे शत्रुओं का गुजर नही हो सकता करौली के गिर्द पुखता श-
हरपनाहहै- और बाहर दो पहाडियो पर रईस की गढियां मौजूद हैं- करौली की पूरी और
परसिध्य तवारीख नही मिलती तो भी जो कुछ मिली है लिखीजाती हैं- ॥

तवारीख करौली

करौली के रईस जैसलमेर वालों के समान यादों नसल के चन्द्रबंसी राजपूत हैं वह ब्रिज
(मथरा) ही के आस पास रहे- मुसलमानो ने जब **बयाने** से इनको निकाला तो इन्हों
ने चम्बल नदी के कनारे करौली और सबलगढ बसाया- परन्तु सं० १५१० में मालवा के
बादशाह खिलजी ने करौली फतह करके खालसा में मिला ली और वह लोग पहाडो
मे फिरते रहे- **अकबर बादशाह** ने राजपूताना फतह किया- तो करौली वालों
को भी कुछ जागीर और मन्सब दिया- राजा **गोपाल** जादों अजमेर मे बादशाही
किलेदार रहकर सं० १६२६ में मृत्यु को प्राप्त हुआ- तब उसका बेटा **कल्यानदास**
सं० १६६० मे बादशाही मन्सबदार बना- और बहुत सी लडाइयो मे बादशाही चा-
करी बहादुरी से की- मुसलमानों की सलतनत कमजोर हुई तो महाराजा सेंधिया
ने सबलगढ दबाकर करौली महाराजा ही के कबजे मे छोड दी- उसदिन से रईस करौ-
ली २५ हजार रुपिया सालाना खराज पेशवा को देने लगे सं० १८७३ मे सरकार-
अंगरेजी ने राजपूताना से मरहटो का कबजा उठाया तो महाराजा करौली भी अहद-
नामा करके सरकार की हिफाजत मे आये- और खराज माफ होकर मासलपुर का

परगना जिसको मरहटों ने खराज के बदले दबा रक्खा था- उलटा दिलाया गया सं० १८८१ में लावलद गुज़र गये-॥

महाराजा परताप पाल सं० १८९० में पाट बिराजे और सं० १९०४ में मृत्यु को प्राप्त हुए-॥

महाराजा नरसिंह पाल- यह राज का अधिकार पाने नहीं पाये थे कि सं० १९०८ में देवलोप होगये-॥

महाराजा भरत पाल सं० १९०८ में गादी बिराजे- परन्तु महाराजा नरसिंह पाल के बे औलाद मरने पर लार्ड डिल्होसी साहब गवरनर जनरल ने पुरानी क़ानून के अनुसार करौली को ज़बती का हुकम भेजदिया क्योंकि उक्त लार्ड साहब की सम्मति यही थी कि जिस रईस के असली औलाद न हो उसका मुल्क ज़बत करलिया जाय- गोद लेकर रईस न बनाया जाय- परन्तु पारलेमेन्ट ने लार्ड साहब की राय को नामंज़ूर किया- और रईस करौली को गोद लेने का अधिकार मिला (इसी लाट साहब ने झांसी- नागपुर आदि रियास्तों को रईसों के लावलद मरने पर ज़बत किया था)॥

महाराजा मदन पाल सं० १९१० में पाट बिराजे इन्हों ने सन १८५७ ई० के ग़दर में सरकार को मदद दीथी जिसके बदले में १ लाख ७० हज़ार रुपिया सरकारी क़रज़ माफ़ हुआ- और १५ तोपों की जगह १७ तोपों की सलामी होगई- नेकनामी का खिलअत पाया- १९२२ में सितारे हिन्द का तमग़ा मिला- यह महाराजा साहब १५ वर्ष राज करके सं० १९२६ में स्वर्गबासी हुए-॥

महाराजा जैसिंह पाल १९२६ में गोद आकर गादी बिराजे और १९३२ में ६ वर्ष राज करके देवलोप हुए-॥

महाराजा अर्जुन पाल सं० १९३२ में पाट बिराजे और जागीरदारान भवरतन- और इनायती को जो सरकशी करते थे फ़ौजी दबाव से ताबे किया- सं० १९३८ में-

दरबार के विरुद्ध रईयत व जागीरदारो ने अजन्टी मे फरयाद की जिस पर महा-
राजा से राज का अधिकार लेकर अजन्ट साहब को सोंपा गया- जिन्होने पंचाय
त द्वारा राज का बन्दोवस्त किया सं० १९४३ में महाराजा अर्जुनपाल देव लोप हुए।
महाराजा भंवरपाल साहब (चरजीव) सं० १९४३ मे पाट विराजे-यह रईस रहम
दिल और नेक मिज़ाज है- रियासत का बन्दोबस्त साहब अजन्ट की निगरानी में
लायक अहिलकार करते है- राज करौली मे ४५० गाव है जिन में से खालसा
के २५० ग्रामों की आमदनी ५ लाख रुपिया साल है- बाकी गांव जागीरदारों-
के कबजे में है- जिनकी सालाना आमदनी डेढ लाख है छोटे बड़े जागीरदारो
की तादाद ४० है- सरकार की तरफ से खरीता के लिफ़ाफे पर " बमुलाले-
महाराजा साहब मुशफ़िक मेहरबान मुखलिसान सलामत महाराजा यदुकु-
लचन्द्र भालची सिंह मालजी देव सलमहु अल्लाह तआला" और भीनामे-
पर महाराजा साहब मुशफक मेहरबान मुखलिसान सलामत लिखाजाता है-
कागज़ सुनहरी थैली कमखाब की होती है-

राज्य टोंक

राजपूताना के मध्य में टोंक मुसलमानो की रियासत है- जिसका बन्दोबस्त
टोंक-रामपुरा-नीमाहेडा- छबडा-सरोंज-पड़ावा- छ परगनो के द्वारा हो
ता है- एक परगना से दूसरा परगना बहुत दूर और दूसरी रियास्तो से घिरा हु-
आ है- इसलिये इस राज्य की कोई हद स्थिर नही हो सकती- टोंक जो राजधा
नी है- जैपुरराज के दक्षिणी इलाके से घिरा हुआ है- रामपुरा दक्षिण की ओर बूंदी
से मिला हुआ है- नीमाहेडा पश्चिम मे मेवाड और उत्तर में नीमच से मिला हुआ-
है- छपरा- बूंदी झालरापाटन और गवालियार से घिरा हुआ है- पिड़ावा हुलकर

और गवालियार के राजसे घिरा हुआहै- सरोंजके चारों ओर गवालियार व हुल कर का मुल्क मालवा और सागर का जिला फैला हुआ है- तीन परगने टोंक, सरोंज, नीम्बाहेड़ा, १० लाख के और बाकी तीन परगने पांच लाख की आमदनी के हैं- खराज और फौजखर्च इसराज्यको माफ़ है- ज़मीन सब परगनों की पैदावारी के लिये अच्छी है- टोंक चम्बल नदी के कनारे बस्ती है- और नदी के सदा बहने से गेहूं और खरबुज़ा बहुत उत्पत्ति होताहै- छपरा के पूरब में होकर **पारबती** नदी बहती है- इससे भी पैदावारको बड़ा फ़ायदा है- इसराज्य में समस्त ग्राम् ११५३ हैं और सब परगनों की ज़मीन मिलकर २२३० मील मुरब्बा, आबादी ३ लाख ३८ हज़ार - आम्दनी खालसा १५ लाख सालाना - फ़ौज सवार व पैदल ४००० खराजमाफ़ - सलामी १७ तोपें सर होती हैं॥

तवारीख टोंक

टोंक के रईस **बुनेरवाल** पठान हैं जिनका निकास बुनेर इलाके काबुल से हुआहै- महम्मदशाह बादशाह के अहद में **तालेखां** पठान **चोरहर** इलाके बुनेर से हिन्दोस्तान में आकर **अली महम्मदखां** रुहेला की फ़ौजमें नौकर हुआ- उन के मरने पर उनके बेटे **हैदरखां** ने रुहेलों से **सम्भल** ज़िले मुरादाबाद में थोड़ीसी जागीर पाई- सं० १८२३ में हैदरखां के बेटे **अमीरखां** उत्पन्न हुए- अमीरखां ने जवान होकर मालवा की रियासतों में नौकारियां कीं और ज़ोर पकड़ते पकड़ते वह दबदबा हासिल किया कि मालवा और राजपूताना के बड़े २ शूरबीर राजा इनसे डरते थे- सरकार अंगरेज़ी ने भी इनकी बहादुरी और ज़ोर देख कर सन १८०० ई० में इन के साथ अहदनामा किया- और जो जो परगने हुलकरने फ़ौज खर्च के लिये अमीरखां को दे रखे थे- सरकारने हमेशा के लिये उन्हीं के कब्ज़े में करा दिये और सन १८१७ में वह खुद मुख्तार रईस माने गये- नवाब अमीरखां सं० १८४२ में-

बीस वर्ष की अवस्था मे दस सिपाही और एक भाई को साथ ले कर घरसे नौकरी-
की तलाशमे निकले थे मालवा के रईसके यहां नौकरी की- फिर भोपालके नवाब
हयातमहम्मदखा की नौकरी की फिर राघोगढ के राजपूतों की चाकरी मे रहे-फिर
बालारावईगला के नौकर रहे- इसकेपीछे वह स० १८५४मे हुलकरकी चाकरी में
आये और यही से उनके भाग्य ने पलटा खाया-स० १८०६ मे जैपुरके महाराजा
जगतसिंहजीसे दोस्ती की - और नवाब की मदद से कछवाहों ने मारवाड की सी-
मा पर फतह पाई- जिस पर महाराजामानसिंहजीने नवाब को पगडी बदल भाई-
बनाया-और जैपुर पर मुसीबत आई दोनो रियासतो से लाभ उठाने के पीछे उदैपुर
के महाराना **भीमसिंह** की कवरानी जी **किशनकंवरजी** को कतल कराया-
जिस्से आजलों अमीरखा को जालिम कहाजाता है- इसके पीछे नवाबने नागपुर
के ऊपर चढाई की सरकार अगरेजीने यहजोर उनका देखकर यहांतक दबाया-कि
सन १८१७ मे उनको सरकार केसाथ अहदनामा करना पडा-जिसके अनुसार लूट
मार उन की बन्द होगई- तात्पर्य यह है कि नवाब अमीरखां ने बीसबरस नौकरी
और दसवर्ष लूटमार और १७ वर्ष टोकका राज करके स०१८९०मे ६७ वर्ष की अ-
वस्था मे देहत्याग कर परलोक कारास्ता लिया- मरने के समय नवाब अमीरखां
के ११ बेटे ८ बेटियां ५० पोता पोती - और ३० बेटियो की औलादथी ॥

नवाब वजीरुद्दौला वजीर महम्मद खां स० १८९० मे अपने पिता-
नवाब अमीरखां की जगह पाट बिराजे-यह धर्म कर्म में बहुतही सावधान थे-इन्हो
ने शराब गांजा -चरस आदि नशाकी बिकरी और लेनदेन अपने राज्यमें बन्द
करदिया-कोई पात्र या वेश्या राजमें नहीं रहनेपाती थी- नवाबरात दिन मौ
लवीयो की सोहबतमें रहकर धर्मके अनुसार राज का काम करते थे- गदर सन-
१८५७ के उपद्रव में नवाब ने सरकारकी अधिक सहायता की जिससे रईस-

टोंक को भी दूसरे रईसों के समान औलाद न होने पर गोद लेने का अख़्त्यार मिला और नीम्बा हेड़े का परगना जिस पर टोंक के बख़शी की सरकशी के बदले में करनल ईडन साहब पोलीटेकल एजन्ट ने मेवाड़ वालों का कबज़ा करा दिया था वापिस दिला दियागया - क्योंकि जागीरदार की बग़ावत से रियासत को बागी नहीं समझा जाता - १८ जून सन १८६४ ई० को ३० वर्ष राज करके नवाब वज़ीरमहम्मदखां देवलोक हुए ॥

नवाब महम्मद अलीखां यह सात भाईयों में से बड़े भाई पाटवी के मरजाने पर सं० १६२० में राज्य विराजे और राजके कामों मे भली भांति चित्त लगाया परन्तु सं० १६२१ में इनके खराजगुज़ार ठाकुर **लावा** में और इन में सरवरशाह प्रधान की नालायकी से झगड़ा खड़ा हुआ - ठाकुरने चाकरी में कमी की और नवाब ने नज़राना बढ़ा दिया - यह झगड़ा चलही रहाथा कि हकीम सरवरशाह प्रधान टोंक ने दगा करके ठाकुर को टोंक में बुलाया - और ठाकुर का काका **रेवत सिंह** २ कामदारों और १३ साथियों समीत दीवान के मकान पर बुलाकर क़तल किया गया - इस फ़िसाद की खबर जलदी से सरकार को मिली और एक अंगरेज़ आफ़ीसर फौरन टोंक भेजा पहुंचा - जिससे फ़िसाद बढने नहीं पाया - ठाकुर को लावा जाने की आज्ञा दी गई - और फ़िसाद की तहक़ीक़ात करके सरकार ने यह न्याय किया कि नवाब महम्मद अलीखां टोंक की गादी से उतार दिये जाये और १७ तोपो सलामी के बदले में ११ तोपें सलामी की जाय - दीवान सरवरशाह उमरक़ैद करके किसी किले में रखा जाय और लावा की जागीर एजन्टी के मातहत करदीजाय - इस हुकमकी तामील हुई - महम्मद अलीखां बनारस को भेजेगये और ६० हज़ार रु० साल रियासत से उनकी तनख़्वा मुकर्रर कीगई - हकीम सरवरशाह दीवान **चनार** गढ़ में उमरक़ैद किया गया - जहांवह सं० १८८८ ई० में मरगया - लावाका ठाकुर एजन्टी हाड़ोती में रेख भरदेताहै - वहां से टोंक के खज़ाने में जमा करदी-

जाती है- दरबार टोक से कोई वास्ता नही - मुहम्मद अलीखा बनारस में न-
जर बन्द है ॥

नवाब हाफ़िज़ महम्मद इबराहीम अलीखां साहब बहादुर-यह अपने बाप के गादी से उतारे जाने पर १२ भाइयो मे सब से बडे होने के कारण २० वर्ष की अवस्था में सं० १९२३ मे पाट विराजे- परन्तु भाई बेटो की सरकशी से जो साहबजादे कहलाते है और ८ लाख की जागीर पर कबज़ा रखते हैं राज्य का बन्दोबस्त न करसके इसलिये नवाबके काका साहबज़ादे महम्मद **अबीदुल्लाखां**- साहब बहादुर दीवान न्यत किये गये इन्हों ने रियासत का बहुत अच्छा बन्दोबस्त किया जनवरी सन १८७७ ई० के दिल्ली दरबार में नवाब साहब सामिल हुए जहा पर १७ तोपें सलामी की बहाल होगई-साहबज़ादे अबीदुल्लाखा दीवान-को सरकार ने प्रसन्न होकर- के० सी० एस० आई० का खिताब बखशा - पिछले २० वर्ष में १५ लाख रुपया का कर्ज़ रियासत पर हो गया था- दीवान और कौन्सिल ने अजमेरके राय बहादुर सेठ **समीरमल** जी लोढा से सं० १९४३ मे रुपया उधार लेकर करज़दारो की खन्दी करदी और खजाना राज्य का सेठजी की निगरानी मे रखागया- जबलो इनका रुपया न चुके- सन १८८७ ई० से न-वाबसाहब ने एक कौन्सिल (पंचायत) अपनी मातहती मे स्थिर की है - उसी के-द्वारा राज का कारुबार होता है - इस कौन्सिल के सभापती खुद नवाबसाहब और नायब सभापती साहबजादे अबीदुल्लाखाजी दीवान है -सन १८९० ई० मे नवाब साहब को अजमेर मे बुलाकर बडे लाटसाहब लार्ड लइन्सडौन साहब बहादुर ने सितारे हिन्द दर्जे अव्वलका तगमा इनायत किया- रियासत का काम आजकल ठीक चलरहा है- करजा भी उतरता जाता है- कुल आमदनी २० लाख रुपया की है जिसमे १५ लाख खालसा और ५ लाख जागीरदारों की है- सरकार की ओर से

खरीता के लिफ़ाफ़े पर "बमुताले नवाब साहब मुशफ़क़ मेहरबान मुख लिसान नवाब अमीनुद्दौला वज़ीरुलमुल्क नवाब महम्मद इबराहीम अली खां बहादुर सोलत जंग सल्लमहु अल्लह तआला" और अीनामे पर "नवाब साहब मुशफ़क़ मेहरबान मुखलिसान सलामत" लक़ब लिखा जाता है कागज़ सुनहरी और थैली कमख़्वाब की होती है ॥

राज्य अलवर

राजपूताना के पूरब और उत्तर दिसा में आमदनी के लेहाज़ से दूसरे दरजे की रियासत अलवर है - जिसके उत्तर में सिरकारी ज़िला गुडगांवा और कोट-कासिम राज्य जैपुर का इलाक़ा और पश्चिम में नाभा-*पटियाला और जैपुर-का राज्य है - दक्षिण में जैपुर - और पूरब में भरतपुर राज्य की अमलदारी है - लम्बाई उत्तर से दक्षिण को ८० मील - चौड़ाई पूब से पश्चिम को ६५ मील - रक़बा ३५७३ मील मुरब्बा - आबादी ६८२९३२ आदमीओं की - और आमदनी २० लाख रुपया सालाना - फौज सवार पैदल ४००० (शहन्शाही ख़िदमात के अलावा) है - सलामी की १५ तोपें और ख़राज माफ़ है - इस राज में **रूपा** और **साबी** - नदियों के बहने से जिनमें से पहिली नदी सदा बहती रहती है - पैदावारी खूब होती है - अलवर का राज्य चार भिन्न २ इलाक़ों में है (१) **दूंढाड़** में मालाखेड़ा - राजगढ़ - राजपुरा - टीला (२) **नीहड़ा** मेथाना ग़ाज़ी - परताबगढ़ - अजबगढ़ और बलदेवगढ़ (३) **राठ** जिसमें माडन - बीरोड - मंडावर - कस्नीकोट नीमराना - हरसोरा - जीदोली - ततारपुर - हाजीपुर - हमीरपुर - बालसाज़ - और रामनगर हैं - (४) **मेवात** - जिसमें अलवर - बहादरपुर - रामगढ़

* नाभा और पटयाले को सन १८५७ की खैरख्वाही में यह मुल्क सरकार ने बखशा है पहिले नवाब झभ्भर का था - मुहम्मद मुराद अली - ॥

गोविन्दगढ़ - पीपलखेड़ा - किशनगढ़ - इसमाईलपुर - तजारा - और पतो करा परगने हैं - राजका बन्दोबस्त करनेके लिये १२ तहसीलें हैं ॥

मेव और खानज़ादः जातिका इतिहास

अलवर राज्य के इलाके में मेव जाति के लोग अधिक रहते हैं जो सुलतान महम्मद **तुगलक** के समय में मुसलमान हुए थे- इतिहास बतलाता है - कि यह राजपूतो और मीनो से मिलकर एक जाति पैदा हुई है - सदामन्द से यह जाति डकैती और चोरी मे परसिद्ध है - जैसे इस देशके जाट - गूजर - और मीने है - राज अलवरके परगने तजारा में एक दूसरी जाति **खानज़ादः** के नामसे परसिद्ध है - जो श्री कृष्ण चन्द्रजी के वंस में चन्द्र बंसी यादौ राजपूतों की नसल है **खानज़ादः** नाम पड़ने के दो प्रमाण इतिहासो से मिलते हैं - एक यह कि **खान** नामी कोई यादौ नसल का राजपूत मुसलमान होगया था - अतएव उसका और उसकी औलाद का नाम **खानयादौ** पड़ गया - जिसको परजा सहस्सरो वर्ष विदीत होने से **खानयादौं** कहते २ **खानज़ादः** कहने लगी जैसे **अजैमेर** को अजमेर और **गंधार** को **कंधार** और असी को **हांसी** कहने लगे - **दूसरी कथन** - यह है कि **फीरोज़ शाह बादशाह** तुगलक के समय मे दोतीन राजपूत - मुसलमान हुए थे उनको बादशाहने **खानेज़ाद** की पदवी बखशी थी - उनकी औलाद आजतो खानाज़ाद अरथात खानजादा कहलाती है जिस का अर्थ चाकर है - दोनो बातों में से कोई बात हो परन्तु यह साबित है कि उक्त खानजादा यादो बंस राजपूत है - और उनके सम्बन्ध आजतो चौहान - भाटी आदि मुसलमान व हिन्दू राजपूतो के साथ होते हैं - जो हरयाने के देश मे फैले हुए है - और राघड कहलाते हैं - खान ज़ादा जाति के सरदार ५०० वर्ष से सूरबीर के नामसे परसिद्ध हैं - नवाब **हसनखां** मेवाती जिसका नाम पुराने इतिहासो में सूर्य के समान

चमकता हुआ दिखाई देता है - उदैपुर के महाराना हिन्दू पति संग्रामसिंह जी के साथ होकर **बाबर** बादशाह की लडाई में १००० सवारों के साथ काम आया था - दूसरी सूरबीर की बेटी के गर्भ से **बीरमखां** का पुत्र **अबदुलरहीमखां खान खाना** उतपन्नि हुआ था - और जो अकबर बादशाह का मुसाहब था - जिस ने हिन्दोस्तान के दातारों और सूरबीर छत्रियों में नाम पाया और एक **कवित्त** के बदले में **चाडा चारन** मारवाड़ वाले को ५ लाख रुपया दिया था - इन दो जातियों के उपरान्त अहीर - जाट - आदि भी बस्ते हैं - राजधानी शहर अलवर अबली परबत के ढलाव में बस्ता है - और ५० हज़ार आदमी उसमें रहते हैं - पहाड़ के ऊपर मज़बूत किला के अन्दर एक महल चार कुन्ड एक तालाब **सलेम सागर** और एक बावडी है - वर्तमान नरूकों के कब्ज़े से पहले जैपुर का क़िलेदार उसमें रहता था - अलवर की कच्ची शहर पनाह और खाई है - जिस को महाराजा **परताप सिंह** ने सं० १८३२ में तयार कराया था - कम्पिनी बाग़ और बने विलास से जो **मोती डुंगरी** पर है शहर की बहुत रौनक़ होगई है - इन बागों की सी नारंगियां कहीं नहीं होतीं ॥

तवारीख अलवर

अलवर के रईस जाति के कछवाहे हैं जो आंबेर के बारहवें राजा **उदयकरन** के परपोते **नरू** जी की औलाद में होने से **नरूके** कहलाते हैं - इनका कुरसीनामा यह है - महाराजा उदयकरन के बेटे बीरसिंह - उनके महाराज - उनके नरूजी - उनके लालाजी - उनके ऊदाजी - उनके लाडखां - उनके फ़तह सिंह - उनके कल्यान सिंह - उनके उग्रसिंह - उनके ज़ोरावर सिंह - उनके मोहब्बत सिंह - उनके राव राजा परताब सिंह - ग्यारह पीढ़ी लों यह जैपुर के मातहत जागीरदार रहे परन्तु बारहवीं पीढ़ी में राव राजा परताप सिंह ने अपनी असली जागीर **माचेरी** व रामपुरा पर अपने भाई ओउग्रसिंह

तेजसिंह - जोरावरसिंह - मोहब्बतसिंह को छोडा - और अपनी तलवार के ज़ोर से - जैपुर भरतपुर के राज मे से बहुत सा इलाका दबाकर १८३२ मे रियासत अलवर की बुनियाद कायम की - और रियासत स्थिर रहने के लिये उन्हों ने नवाब नजफखां के साथ बहादुरी से चाकरी करने और नवाब- को भरतपुर और आगरा पर कबज़ा दिलाने के बदले में दिल्ली के पिछले बादशाह शाहआलम से सनद और पंजहज़ारी मन्सब और माहीमरातिब का कुरब हासिल किया - जिससे जैपुर वालों का अलवर पर दावा न रहा और सं० १८३६ मे जब कि मरहटे लूटमार कर रहे थे इन्हों ने बड़ी बहादुरी- से बहुत सा मुल्क इधर उधर से दबा लिया - और २० लाख रुपया नकद पर- गने बिसवा को लूट कर खजाना भर लिया जिससे रियासत को पूरी ताकत हासिल हो गई - रावराजा परतापसिंह जी पूसवदी ५ सं० १८४७ मे पचास वर्ष की उमर पाकर देवलोक हुए ॥

महारावराजा बखतावरसिंह सं० १८४७ में गोद आकर पाट विराजे- सं० १८६० मे ग्राम सवाडी इलाके अलवर में मरहटों और अंगरेज़ी फौज से भ्या- नक युद्ध हुई - उसमें नवाब अहमदबख्शखां वकील अलवर - और ठाकुर समरथसिंह जी ने अंगरेजों को बहुत मदद दी - जिस से सरकार ने खुश होकर- बिना लेने रखराज के अहदनामा किया - और ८ परगने रावराजा को इनआम मे दिये - जिन मे लुहारू - दादरी - नीमराना भी है - और नवाब को लुहारू और फीरोज पुर के परगने इनआम मे मिले - महाराज बखतावरसिंह माघसुदी २ सं० १८७१ में मृत्यु को प्राप्त हुए ॥

महारावराजा विनयसिंह सं० १८८० में पाट विराजे - दूसरे दावीदार बल- वन्तसिंह को चार लाख की जागीर न्यारा दी गई थी जो बलवन्तसिंह के बे औलाद

मरने से २ वर्ष पीछे राज अलवर में पीछी मिलाई गई- सावन वदी ५ सं० १९१४ को ५० वर्ष की अवस्था में देवलोक हुए ॥

महारावराजा शिवदानसिंह १३ वर्ष की अवस्था में सं० १९१४ में अपने पिता की जगह पाट विराजे - यह महाराजा साहब फ़ज़ूलखर्ची और दातारी और बदनज़मी के कारण दो बेर रियासत से माज़ूल किये गये- और दोही बेर रियासत का अधिकार मिला - अन्त माज़ूली ही की हालत में सं० १९३१ में स्वर्गबाश हुये॥

महारावराजा मंगलसिंह १४ दिसम्बर सन १८७४ ई० को गोद लिये जाकर पाट विराजे - महारावराजा शिवदानसिंह जी के काका ठाकुर **लखधीर सिंह** जी गादी के दावीदार थे - पर अंगरेज़ी अफ़सरों ने उन को बूढ़ा समझकर गादी से महरूम रखा - ठाकर साहब ने महारावराजा के हुज़ूर में नज़र पेश न होंकी और खफ़ा होकर सरकार के हुकम से अजमेर में चले आये- और उसी हालत में मृत्यु को प्राप्त हुए - महारावराजा मंगल सिंह जी ने मेऊ कालिज में अंगरेजी विद्या सीखी - और सं० १९३४ में राज के अधिकार पाये - सं० १९४२ में जी० सी० एस० आई० का तमगा सरकार से पाया - और सं० १९४५ में सरकार ने **महाराजा** का खिताब बखशा - २२ ता० मई सन १८९२ ई० को नैनीताल के पहाड़ पर जहां वह दो वर्ष से आबो हवा की बदली के लिये जाया करते थे - जिगर की बीमारी से देव लोप हुये - ॥ और लाश अलवर में लाकर दाग दिया गया ॥

महाराजा जैसिंह जी (चरंजीव) १३ ता: जून सन १८९२ ई० को १० वर्ष की अवस्था में अपने पिता की जगह राज बिराजे - रईस होनहार मालूम होते हैं राज का काम एक कौन्सिल द्वारा चलरहा है - जो करनल फ़रीज़र साहब पोलीटिक [illegible] की निगरानी में है - अलवर में आजकल एक बिचित्र मुक़द्दमा चलरहा है - महाराजा साहब के नैनीताल में देवलोप होने से एक दिन पहिले अलवर

मे राज्यके दीवान कुंजबिहारीलाल सडकपरमारेगये- इसमुकदमाकीतह
क़ीकात अंगरेजी पुलीस के अफीसरों नेकरके रामचन्द्र आदि ६ मनुष्यो परकुंजबि-
हारीलाल के मारनेका दोष लगाया है -मुकद्दमादौरासिपुर्द होगया है ॥

राज्य भरतपुर

राज पूताना परदेश के पूरब दिसा में भरतपुर बिचले दरजे काराज है जिसकेउत्तर
में गुडगांवां जिला अंगरेजी पश्चिम मे अलवर और जैपुर- दक्षिण में जैपुर करो-
ली धौलपुर के इलाके और पूरब में जिला आगरा और मथुरा है- लम्बाई ७५
मील और चौड़ाई ४८ मील-रकबा १९७४ मील मुरब्बा-आबादी ६४५५४० आद
मीयों की-आमदनी २२ लाख-फौज सवार व पैदल ५००० है- खराज माफ़ है-
सलामी की १७ तोपें सर होती हैं- इस राजमे होकर चार नदियां बानगंगा-घम
बीर-कावन्द -और रूपारेल बही है - जिससे पानी की कोई कमी नही - इसके
उपरान्त देस की नीची जमीन होनेसे १२ महीने बरसात का पानी भरारहता है
और बहुधा यह पानी खेतो को नुकसान पहुंचाता रहता है- दक्षिण दिसामे
पहाडियां हैं जिनमे जंगली व्रक्षो के अधिकतर होने से पशुओ को घासचारा
हरमौसम मे बहुत मिलता है- बयानाकागट और दीग इसराज्यमे पुरा
ने और परसिद्ध स्थान हैं राजधानी भरतपुर नगर नीचीजमीन पर तीनमील
लम्बा और एकमील से अधिक चौडाई मे बस्ता है- शहरपनाह यद्यपि कच्ची है-
परन्तु उस के गिर्द जो खाई है वह सदा पानी से भरीरहती है और लडाई के स-
मय बाहर के तालाबो का पानी छोड देने से नगर एक टापू बनजाताहै - जिससे
शत्रुओ का नगर लो पहुचना कठिन और दुभर होजाताहै- इस नगर को महाराज
रामचन्द्र के भाई भरतने अपनेनाम पर बसायाथा- परन्तु किला आदिराजा सूर्जमल

के बनाये हुए हैं ॥

नवारीख

भरतपुरवालों के पुरखे कौमजाट संसनी नामी ग्राम के रहने वाले हैं- यह खेती बाड़ी के सिवाय लूटमार भी करते थे- **राजाराम** जाट को सं० १७४५ में आलमगीर बादशाह के पोते **वेदारबख्त** ने डकैती का दोश लगाकर कतल किया और गढ़ी संसनी को उजाड़ दिया था- आलमगीर के मरने पर फिर इन लोगों ने लूट मार शुरू की थी परन्तु **फर्रुखसेयर** बादशाह के वज़ीर सैयद अबदुल्ला ने **चूड़ामन** जाट को जो राजाराम के कतल होने से जाटों का मुखिया बना था लूटमार से बन्द रहने और रास्तों की हिफाज़त करने का ज़िम्मेवार ठहरा कर **राहदाररवां** का खिताब और कुछ गांव जागीर में बखशे- परन्तु यह लोग अपनी शरारत से बाज़ न आये इस लिये बादशाह ने सं० १७७४ में जैपुर के महाराजा सवाई जैसिंह को भेजा कि चूड़ामन को सज़ा दें- चूड़ामन वज़ीर से मिला हुआ था अतएव कुछ बन्दोबस्त न होसका- चूड़ामन ने ज़ोर पाकर अपने भतीजे **बदनसिंह** को कैद कर लिया- ३ वर्ष पीछे बदनसिंह कैद से छुटकर सवाई जैसिंह को अपनी सहायता के लिये चढ़ा लाया- ६ महीने महासरा रहा- अन्त को **डूंगन** नामी स्थान को महाराजा ने विजै करलिया- और चूड़ामन अपने पुत्र मोहकमसिंह समीत भागगया- सन १७२३ ई० में बदनसिंह जाटों का रईस नियत कियागया- महाराज सवाई जैसिंह ने इस को राज तिलक दिया- बदनसिंह ने बहुत से ग्राम इधर उधर से दबाये- परन्तु **इलाहाबाद** के बादशाही सूबेदार ने इसको मारकर भगादिया- अन्त को बदनसिंह मरहटों से मिलगया- जिस से राज भरतपुर की बुनियाद स्थिर होगई- जेठ सुदी १० सं० १८१२ में मरगया ॥

सूरजमल सं० १८१२ में अपने पिता की जगह राज विराजे और सन १७३३ में

छापा मार कर खीमा जाट से भरतपुर छीन लिया और सं० १८२० में इलाहाबाद के सूबेदार नजीबुद्दौला से लड कर मारे गये ॥

राजा जवाहर सिंह पूस बदी १३ सं० १८२० को गादी बिराजे और सं० १८२५ मे किला आगरा मे तलवार से घायल होकर परलोक बास हुए ॥

राजा रतन सिंह भादों बदी ९ सं० १८२५ मे पाट बिराजे, ७ महीने राजकरने के पीछे एक कीमियागर गुशाईं के हाथ से चैत सुदी ५ सं० १८२६ मे कतल हुये- इनके आदमीओं ने गुशाईं को वही मार डाला ॥

राजा केसरी सिंह सं० १८२६ मे राज बिराजे- बादशाह के वजीर नजफखांने सं० १८२९ में आगरे का परगना दबालेने के दोष में भरतपुर के सिवाय समस्त राज जबल कर लिया था परन्तु इनकी मां रानी **किशोरी** की लाचारी से नवाब ने राज- वापिस दे दिया चैत बदी १५ सं० १८३४ मे देवलोप होगए ॥

राजा रनजीत सिंह सं० १८३४ मे पाट बिराजे नवाब नजफखां को ९ लाख रु० नजराना का देकर राज तिलक पाया सं० १८४१ में शाह आलम बादशाह को महाराजा साहब दीग की सैर कराने को लाये - बादशाह ने खुश होकर **बदलबेग** से जिनके कबजे में दीग का गढ था राजा को दीग दिलादिया- और दाऊदबेग से आगरे का किला महाराजा सेंधिया को दिला दिया जिस से नाराज़ होकर गुलाम कादर रुहेला ने बादशाह की आंखें निकालली और दिल्ली के लाल किले को लूट लिया- परन्तु अन्त को पिंजरे में बन्द होकर बडे दुखों से मारा गया- सं० १८६१ मे अंगरेजी सैना ने भरतपुर पर हमला किया -जिसके सैनापत्ती लार्ड लीक साहब थे - बडी घमसान की लडाई हुई - ३००० आदमी अंगरेज़ी फौज के मारे गये- तोभी भरतपुर विजय नहो सका- अन्त को महाराजा ने १३ लाख रूपिया देकर- अंगरेजो से सुलह करली- अघन सुदी १५ सं० १८६२ में देवलोप हुए - ॥

महाराजा रनधीरसिंह सं० १८६२ में राज बिराजे और सम्वत १८८० में देवलोप हुआ - ॥

महाराजा बलदेवसिंह सं० १८८० में पाट विराजे और सं० १८८१ मे देव लोप हुआ - ॥

राव दुर्जनसाल - पाटवी तो बलवन्तसिंह थे परन्तु दुर्जनसालने जो महाराजा बलदेवसिंह के भतीजे थे फ़ौज और सरदारों की सहायतासे बलवन्तसिंह को गादी से उतार कर खुद मालिक बनगये सरकार ने फ़ौज भेज कर दुर्जन-साल को निकालने का बन्दोबस्त किया किन्तु फ़ौज के आने में देर हुई इस दोष में जनरल **अक्टरलोनी** साहब मौकूफ़ हुए - और उसी दुःख से मरगये - अन्त को २५ हज़ार अंगरेज़ी फ़ौज ने आकर भरतपुर लिया और दुर्जनसाल को पकड़ कर आगरे के क़िले में क़ैद करदिया और बलवन्तसिंहजी पाट बिराजे ॥

महाराजा बलवन्तसिंह सं० १८८२ में पाट बिराजे और सम्बत १९०७ में देवलोप हुआ - ॥

महाराजा जस्वन्तसिंहजी (चरनजीव) सं० १९२० में पाट विराजे ना-बालग़ी में सरकारी अफ़सरों की राय से राज का बन्दोबस्त हुआ - थाने - तहसील - कचहरियां - दीवानी - फ़ौजदारी - माल - आदि का बन्दोबस्त कियागया - सं० १९२५ में महाराजा साहब को राज के अख़तियारात दिये गये - सं० १९२८ में महाराजकुंवार **रामसिंह**जी उतपन्न हुए - १८७७ ईस्वी में महाराजा साहब को सितारे हिन्द दर्जे अव्वल का तमग़ा मिला - भरतपुर राज के समसत ग्राम ३७० हैं इनमें ३०० मन्दरों व धर्मार्थ के निमित्त हैं - बाकी खालसा हैं - कोई सरदार या जागीरदार नहीं हैं - महाराज को फ़ौज से बहुत मुहब्बत है - सरकार की ओर से ख़रीता के लिफ़ाफ़े पर "ब मुताले महाराजा साहब मुशफ़क़ मेहरबान मुख़लिसान महाराजा ब्रज इन्द्र -

सवांई जसवन्त सिंह बहादुर बहादुरजंग सल्लमहु अल्लहतआला" और भी नामे पर" महाराजासाहब मुशफक मेहरबान मुखलिसान सलामत" लिखाजाता है-का गज सुनहरी येनी कमखाब की होती है-॥

राज्य धौलपुर

राजपूताना की पूरब दिसा में एक छोटी सी रियासत है-जिसके उत्तर मे सरकारी जिला आगरा और पश्चिम भरतपुर करौली-दक्षिण और पूरब में गवालियार राज का इलाक़ा है-इसराजकी लम्बाई ५४ मील-चौड़ाई ३२ मील-रकवा १६२६ मील मुरब्बा-आमदनी ८ लाख रूपिया-और फोज सवार व पैदल ३००० के लगभग है-खराजमाफ-पदवी महाराजराना-सलामी की तोपें १५ सर होता है-इसराज की दक्षिण और पूर्वदिसा की सीमा पर चम्बल नदी ६० मील लों वह कर-गवालिआर और आगरे कीसीम बन गई है-पश्चिम व दक्षिण दिसा में पहाड़ियां है-और बाकी जमीन सीधा मैदान है-बर्षा होने पर पैदावारी अधिक होती है-आंब के वृक्ष इस देशमें अधिक है जिससे समस्त जमीन लहलहाती हुई दिखाई देती है- धौलपुर- बाड़ी-राजखेड़ा-तीन बड़े परगने है-राजधानी धौलपुर आगरा और गवालियार की सड़क पर गवालियार से ३७ मील उत्तर मे और आगरे से ३४ मील दक्षिण में बसता है-धौलपुर की-दक्षिण दिसा मे एक मील पर चम्बल नदी बड़े जोर से बहा करती है-नदी के बाईं ओर बहुत मजबूत किला बना हुआ है-और कई महल और मसजिद है-जिनमे एक मसजिद सन १६३७ ई० में शाहजहां बादशाह ने बनाई थी यह उन लोगो के निशान है जिनको सैकड़ो वर्ष हुए काल खागया-हां-इतिहास उनके नामो और कामों को भली भांति दरसा रहा है-॥

तवारीख

धौलपुर वालों का निकास **गोहद** नामक ग्राम से है- जो कि लागवालियार से २८ मीलपर बसता है- इन के पुरखे ने जो जाट जाति का ज़मीदार था **बाजेराव** पे श्वा की चाकरी में रहकर इज्जत पाई थी और सं० १७९६ में बाजेराव ने इनको गोहद जागीर में बख़्शी सं० १८१७ में **अहमदशाह** बादशाह अबदाली ने **पानीपत** के निकट बड़ी घमसान की लड़ाई लड़-कर मरहटों को भगा दिया उससम य गोहद का एक जाट जागीरदार **लोकेन्द्र** नामी गवालियार का क़िला दबाकर **राना गोहद** कहलाने लगा- राना पदवी इसको दिल्ली के बादशाह ने बख़्शी थी-

महाराज राना लोकेन्द्रसिंह से सं० १८२३ में मरहटों ने दूसरीबेर ज़ोर पकड़कर गोहद व गवालियार छीनली- परन्तु ३ लाख रुपिया लेकर अपना खराजगुज़ार बनाकर गोहद लौटादी- और गवालियार को अपने क़बज़े में रक्खा सं० १८३५ में सरकार अंगरेज़ी ने इनसे सन्धि करके अपनी ओर मिला लिया- और मरहटों से लड़कर गवालियर भी इन को दिला दिया- परन्तु ३ वर्ष पीछे दुशमनों से मिला रहने का दोष लगाकर सरकार ने इनका साथ छोड़ दिया- यह ख़बर सुनकर **माधोराव** सेंधिया ने हम्ला किया- और गोहद व गवालियर दोनों इन से छीनलिया- और राना को क़ैद कर दिया- २२ वर्ष लों यह क़ैद में रहे- और बड़े २ दुःख भुगत कर अन्तको सरकार अंगरेज़ी ही की सहायता से दूसरी बेर रईस बने- इन के देवलोप होने की मिती का पता नहीं मिलता- ॥

महाराज राना कीरतसिंह सं० १८५९ में सरकार अंगरेज़ी ने गवालियर का क़िला अपने क़बज़े में करलिया- और गोहद लोकेन्द्रसिंह के बेटे कीरतसिंह को दे दिया- किन्तु सं० १८६२ में जब दौलतराव सेंधिया और सरकार में अहदनामा होकर सुलह हो गई- तो सरकार ने गोहद और गवालियर दोनों सेंधिया के हवाले कर दिये- राना गोहद के पास कुछ भी न रहा- राना गोहद ने कोई क़सूर नहीं किया था जिसके बदले- में

उनकाराजमरहटों को दिया गया इसीबातकाविचारकरके सरकारने गोहदकेराना सेनयाअहदनामा किया और उसहानि के बदले मे जो गोहद के छिनजाने से हुई थी सरकारने रानाजी गोहद को धौलपुर- बाडी-राजाखेडा-तीनपरगने इनायत किये- तात्पर्य यह है- कि ४४ वर्षयह गोहद केरानाकहलाये और आजसे ८४ वर्ष पहिले गोहद छोड कर धौलपुर के रईसबने- सं० १८९२ में महाराज रानाकीरतसिंह मृत्यु को प्राप्त हुए - ॥

महाराजराना भगवन्तसिंह स० १८९२ मे- पाटबैठे स० १८५७ ई० के उपद्रव मे गवालियार से जो अंगरेज भागकर इनके पास आये थे- उनको हिफाजत से र कखा जिससे इनको भी दूसरे रईसो के समान गोदलेनेकी सनद मिली- स० १८८० मे धौलपुर और गवालियारदरबार मे सखतदुश्मनी हो गई जिसके कारण महाराजराना ने गवालियारके महाजनो को दुःख देनेके लिये पारसनाथजी का मन्दिर तोड दिया- इससे महाराजा साहबगवालियार का कोप भडका- परन्तु सरकारने फिसाद नही होने दिया स०१८२६ में इनको सरकार से दर्जे अव्वलका तमगा मिला **गजरा** नाम की वेश्याकी दोस्ती से रियासत के बहुधाकामो मेखराबी आगई थी और करजा भीकई लाखका होगया था **देवहंस** कामदारने रानाजी को दबा लिया था- अन्तको एजन्ट साहबने दखल देकर बुरे आदमीओ को राज से- निकाला कामदारकैद किया गया- पटियालाका मुन्शी अबदुल नवीखां और राजा उनकरराव के भाई **गजाधर** दीवान नियतकिये गये- उन्हो ने नये सिरे से राज के कामो को दुरुस्त किया परन्तु पहिले अबदुलनवीखां और पीछे महाराजराना देवलोक हुए - ॥

महाराजराना नहालसिंह (चिरनजीव) इनके पिता जो पाटवी थे अपने बाप महाराजरानाभगवन्त सिंजी ही के सामने स्वर्गवास होचुके थे अतएव यह स०१८२४

में अपने दादा की जगह ८ वर्ष की अवस्था में पाट विराजे इनकी नाबालगी में प-हिले राजा डनकरराव नफर मेजर डेन्ही साहब पोलीटिकल एजन्ट-इनके अतालीक और राज के मुन्तज़िम रहे- महाराना अंगरेज़ी- फ़ारसी- हिन्दी में भली भांति लिख पढ़ सकते हैं सं० १९४० में इनको राज का अधिकार मिला- परन्तु फ़जूल खर्ची और बदइन्तज़ामी के कारण मारटेली साहब पोलीटिकल एजन्ट की निगरानी में काम होने लगा- और दो वर्ष से रायबहादुर मुन्शी **बिशनस्वरूप** साहब जो अजमेर के ज़िले में डिपटी मजिस्ट्रेट थे राज्य के दीवान नियत हुए हैं- इनके परिश्रम से रियासत का काम अच्छी तरह से चलरहा है- सरकार की ओर से खरीता के लिफ़ाफे पर "बमुलाहिजे महाराजा साहब मुशफ़क बिसियार मेहरबान मुखलिसा नरईसुद्दौला सिपहदारुल मुल्क महाराजाधिराज श्रीसवाई राना लोकेन्द्र बहादुर दिलेर जंगजी देवसल्लम हु अल्लाह तआला" और अन्दर नामे पर "महाराजा साहब मुशफ़क बिसियार मेहरबान मुखलसान सलामत" लिखाजाता है- कागज़ सुनहरी थैली कमख़ाब की होती है- ॥

राज्य परतापगढ़

परतापगढ़ का इलाका जिस को कांठल कहते हैं- मेवाड़ के दक्षिण व पूर्व में है- इस के पश्चिमोत्तर में मेवाड़- दक्षिण में बांसवाड़ा- और पूरब में रतलाम-हुलकर आदि मुल्क मालवा फैला हुआ है- लम्बाई उत्तर से दक्षिण को ५० मील-चौड़ाई पूरब से पश्चिम को २५ मील- रक़बा १४६० मील मुरब्बा- आबादी १५०००० आदमी-ओं की- आमदनी खालसा ३५०००० रु० सालाना- फ़ौज सवार व पैदल ६०० आदमी तक भेजाते हैं- परताप गढ़ का वह भाग जो बागड़ कहलाता है- पहाड़ी और सूना है भील इस राज्य में अधिक रहते हैं पहाड़ने ब्रक्षों के उपरान्त बांस यहां

का परसिद्ध है- वह भाग जो कांठल कहलाता है- नीची धरती है- जिसमे गेहूं आदि उत्पन्न होते हैं - राजधानी परतापगढ ऊंची धरती पर स्तेहसमुन्दरसे १६५८ फीट ऊंचा और नीमच से ३३ मील पर दक्षिण में बस्ता है- इसके महल नगर से आध मील पर है देवलिया यहांकी पुरानी राजधानी है- खराज सरकारी ५६५०० रु॰ सलामी की १५ तोपें है- ॥

तवारीख

परतापगढ वाले सीसोदिया राजपूत सूर्य्यवंसी खान्दान की छोटी शाख होने से **महारावत** कहलाते हैं- आजसे चारसो बर्ष पहिले **चीतोड** की दूसरी लडाई में परतापगढ वालो के एक पुरखा **बाघसिंह** जी बहादुरशाह गुजरातीकी लडाई में महाराना बिक्रमादित्त के कायम मुकाम बनकर मारे गये थे इसकारण से जैसे मेवाड वाले अपने आपको श्री ईकलंगजी का दीवान कहते हैं उसी प्रकार परतापगढ वाले भी अपने नामके साथ दीवान का लकब लिखते हैं- ॥

महारावत खेमकरन स॰ १४९० में चीतोड के महाराना मोकल जी मारे गये तो उनके दो बेटों कूंभा व सोकलजी मे से कूंभाजी गादी बिराजे- और सोकलजी को सादडी जावद जागीर में मिली- जहां से वह तरक्की करके परतापगढ चले आये- और दूसरे राज्य की जड जमाई- ॥

महारावत सूरजमल स॰ १५१५ में पिताके मरने पर वहीं सादडी के मालिक बने- परन्तु चीतोड के पाटवी प्रथीराज से बखेडा रहने के कारण यह दक्षिण दिसा के पहाडों मे चले गये- और देवलिया बसाया- महाराना चीतोड ने इनकी जागीर जबत करली- ॥ ×

महारावत बाघसिंह स॰ १५७८ मे पाट बिराजे परन्तु अपनी पुरानी जागीर- के जबत होनेसे नाराज होकर बादशाह मालवा के पास चले गये वहां इन को

× अर्थात बडी सादडी

बादशाह ने डेढ लाख की जागीर बख़शी और इन्हो ने बाघवाडन ग्राम बसाया- सं० १५९५ में चीतौड़गढ़ की लड़ाई में बहादुरशाह बादशाह गुजराती से लड़कर काम आये- जहां वह महाराना साहब की सहायता के लिये मालवा से आये थे-

महारावत रायसिंह १५९२ में चीतौड़गढ के मुक़ाम पर पाट बिराजे- हुमायूं बादशाह के डर से गुजराती मेवाड़ से भागे- तो यह चीतौड़ महाराना को सौंपकर अपनी जागीर को चले गये- ॥

महारावत बीकाजी १६०८ में पाट बिराजे- और मेवाड़ छोड़कर मंदसोर के बादशाही हाकिम से जा मिले- इन के साथ सूरजमल का पोता कान्हल भी नीम्बाहेडा की जागीर छोड कर चला गया था- महारावत ने उक्त हाकिम के कहने से सोनगरा राजपूतों से सुहागपुर छीन लिया और इसी तरह खेरोद- कोटरी- ननौर दबा लिये- और अपने काका कान्हल को घमोतर जागीर में दी- सं० १६१० में **देवा मीना** को मारकर पहाड़ी मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लिया- इन्हो ने बादशाही चाकरी में कृष्णादास के बेटे समरसी को दिल्ली भेजा- १६३५ में देवलोप हुए ॥

महारावत तेजसिंह सं० १६३५ में राज बिराजे और १५ बर्ष राज करके देवलोप हुए- तेजसागर इन्हीं ने बनवाया था -॥

महारावत भानसिंह १६५० में पाट बिराजे- और सं० १६६० में **मकवन खां** जागीरदार मंदसौर के साथ जोधसिंह सीसोदिया को मारकर काम आये- ॥

महारावत सिंधा सं० १६६० में पाट बिराजे - और १९ वर्ष राज करके देवलोप हो गये- ॥

महारावत जसवन्तसिंह सं० १६७९ मे पाट बिराजे- सं० १६८८ में महाराना जगतसिंह ने उन को उदैपुर में बुलाकर चंपा बाग़ में ठहराया- इन के पाटवी कंवर- महासिंह भी साथ थे- रात हुई तो महाराना ने **रामसिंह** राठोड़ को बहुत सी फ़ौज

साथदे कर दागमें भेजा कि महारावत जीको चुककरो क्योंकि महाराना केदिल मे महारावतके वादशाह से मिलजाने कारंज था - महारावत अपने पादवी और साथियो समीत लड कर काम आए - ॥

महारावत हरी सिंह यह अपने पिता और बडे भाई के उदैपुरमें मारेजाने पर स० १६८० मेराजविराने और दिल्लीमें पहुंचकर महाराना के कृत्याचार और भाई और पिताके मरवाडालनेकाहाल अर्ज़कराया जिस परबादशाह ने इनको इनआम औरखिलअत व मन्सबदेकर हाकिम मन्दसौरके नाम हुकम लिखा कि मेवाड का कवज़ा देवलिया से उठवादो - दिल्लीसे लौटकर महारावत ने उक्त हाकिमकी सहायतासे - मेवाड का कवजा उठा दिया - और ३२ गांव और भी मेवाड - केदवा लिये - स० १७३० में देव लोप हुए - ॥

महारावत परताप सिंह १७३० मे पाट बिराजे ईडर विवाहने को गयेथे लौटते समय **सलूमर** केरावत किशन सिंह के पोते मनोहर दासको साथ ले आये उनको सं० १७३५में **बडलिया** आदि जागीरमें दिया जो चूंडावतो की जागीरमे आजलों है - स० १७५३ में अपने नाम पर परतापगढ बसाया - और गढ बनाया स० १७६४ मे देव लोप हुए -॥

महारावत प्रथवी सिंह स० १७६४ में पाठ बिराजे - १७७० में फर्रुखसेयर वादशाह ने दिल्ली मे हाज़िर होने पर रावत के उपरान्त राव की पदवी और खिलअत बखशा और राज्य मे टकसाल जारी करने का अधिकारदिया - सं० १७७३ में म्रत्यु को पराप्त हुए - ॥

महारावत राम सिंह १७७३ में पाट विराजे - और ६ महीने राज करके उसी सम्वत मे देवलोप हुए ॥

महारावत उमेद सिंह १७७४ में पाट विराजे - और पांचबर्ष राज करके - वे

औलाद ही देवलोप हुए-॥

महारावत गोपालसिंह सं० १७७६ में राज विराजे-सं० १७८८ में पेशवा हुलकर-मल्हारराव तीनों के साथ होकर महाराना उदैपुर ने डूंगरपुर घेर लिया-तब महा रावल शिवसिंह जी के बुलाने से यह डूंगरपुर गये और महारावलजी के-समझाने से डूंगरपुर बांसवाड़े का खराज पेशवा को देना स्वीकार किया-महासरा उठ गया-गोपालगंज बाज़ार बसाया- ३४ वर्ष राज करके स्वर्गवास हुए॥

महारावत सालमसिंह १८१४ में गद्दीनशीन हुए-परतापगढ़ की नई-शहरपनाह बनवाई-सालमपुरा बसाया-दिल्ली जाकर आलमगीर सानी से-टकसाल का हुकम लाये-सालमशाही रुपया आजलों हरजगह चलता है-महता सूरतसिंह को जिसने महाराना के विरुद्ध बग़ावत की थी सज़ा दी-हुलकर और-सेंधिया उदैपुर पर चढ़ आये-तो इन्होंने महाराना अड़सीजी को मदद दी-जिस से-रावत की पदवी जो बादशाह ने बख़शी थी बहाल रही-और धरयावद की जागीर-पाई-द्वारकाजी में एक सदावर्त जारी किया-जो आजलों है-१७ वर्ष राज करके देवलोप हुए-॥

महारावत सांवंतसिंह -छोटे भाई लालसिंह को अरनोद जागीर में मिली-और आप सं० १८३१ में राज विराजे-उदैपुर में सरदारों को चाकरी के लिये न भेजने से धरयावद महाराना भीमसिंह ने ज़ब्त करली-इनके समय में मरहट्टों ने राज्य परतापगढ़ को बहुत बरबाद किया-१५ हज़ार सालाना बादशाही ख़राज के बदले ७२ हज़ार ख़राज हुलकर ने लगा दिया-जिस के बदले में रुपया घोड़े-ऊंट-धान दिया जाता था-तो भी पूरा नहीं पड़ता था-अन्त को मरहट्टों के इन्त्याचार से छूटने के लिये सं० १८७५ में कपतान मेगडा लड की मारफ़त महारावत ने सरकार से सन्धि की-पाटवी कंवर रूपसिंह ने महारावत के विरुद्ध

फ़िसाद उठाया - सरकार अंगरेजी ने गिरनार के गढ मे कंवरजी को कैद करदिया जहां वह सं० १८८२ में मर गये - महारावत जी सं० १८४४ में ६० वर्ष की अवस्था मे परलोकवास हुए - ॥

महारावत दलपत सिंहजी कंवर दीपसिंहजी के दो बेटे थे बडे केसरी सिंह जी और छोटे दलपत सिंह जी - महारावत सावन्त सिंहजी ने पाटवी कं० के गिर-नार में मरजाने पर बडे पोते केसरी सिंहजी को आप गोद लिया और छोटे दलपत सिंहजी को डूंगरपुर महारावल जसवन्त सिंह जी की गोद भेजा - परन्तु केसरी सिंह जी सं० १८९० मे म्रत्यु को पराप्त हुए - जिनके कोई औलाद हीन थी - अतएव महारावत दलपत सिंहजी डूंगरपुर से उलटे आकर परतापगढ की गादी पर सं० १९०० मे बिराजे - और सरकार की मंजूरी से अपनी जगह डूंगरपुर की गादी पर - **आवरी** के कंवर उदै सिंह जी को गोद लेकर सं० १९०३ में बिठा दिया और सरदा रों व सरकार के कहने से आप दोनों रियास्तों का काम करते है - क्यों कि डूंगरपुर के महारावल जिन को इन्हों ने गोद लिया था - कम उमर थे - अन्न को आठ वर्ष लों डूंगरपुर का काम चलाकर परतापगढ में आगये - और फिर न हीं गये - क्यों कि महारावल उदै सिंह जी डूंगरपुर के रईस भी होशियार होकर अपनी रियासत - का काम अच्छी तरह चलाने लगे थे - सन १८५७ ई० के उपद्रव मे सरकार को मदद दी - जिससे नेकनामी का खरीता सरकार से आया - तातपर्य यह कि १९ वर्ष डूंगरपुर मे और २० वर्ष **परतापगढ** मे राज्य करके महारावत जी सं० १९२० स्वर्ग वास हुए - ॥

महारावत उदै सिंहजी १७ वर्ष की अवस्था मे सं० १९२० में पाट विराजे - पहि-ले - पहिले इन्हों ने भीलों और दूसरे लुटेरों को दण्ड देकर रियासत का अच्छा बन्दो-बस्त किया - सं० १९२२ मे श्रीमान करनल **ईडन साहब** बहादुर एजेन्ट राजपूताना

खांपके सरदार हैं- आजसे ३५६ वर्ष पहिले **डूंगरपुर में** शामिल थे- जिसकी शुनि
याद १७५ वर्ष पहिले पडी है- बांसवाडन वालों का कथन है कि हमारे पुरखा **जगमा
ल जी** ने तलवार के बल से डूंगरपुर का आधा राज खालिया- डूंगरपुर वाले कह
ते हैं- कि हमारे बडेरे **प्रथवीराज** जी ने प्रसन्न होकर अपने छोटे भाई जगमाल
को आधा राज बखश दिया- मेवाड वालों का कहना है कि जब यह दोनों भाई राज्य
के विषय में लडने लगे- तो हमने दोनों को आधा २ बांट दिया- परन्तु **तारीख फ-
रिश्ता** में **अकबर बादशाह** के वज़ीर अब्बुल फ़ज़ल ने असल हाल यूं लिखा
है- कि जब सं० १५८४ में डूंगरपुर के महारावल उदयसिंह जी महाराना **संगरामसिंह**
जी के साथ **बाबर बादशाह** से **बयाना** में लडकर काम आये- तो उनके बडे
पुत्र **प्रथ्वीराज** पाट विराजे ३ वर्ष पीछे सुलतान **बहादुरशाह** गुजराती डूं
गरपुर पर चढि आया- प्रथ्वीराज जी लाचार होकर बादशाह के हजूर में हाज़िर हो-
गये- उस समय जगा लूटमार करता था- और पहाडों में छिपा रहता था- वह पकडे
और मारे जाने के भय से चीतोड के महाराना रतनसी के पास चला आया- और-
महाराना की सिफ़ारिश से बादशाह ने उस की तकसीर क्षिमा करके प्रथ्वीराज जी और
जगमाल को आधा २ राज्य बांट दिया- और आप कई दिन बांसवाडन में शिकार
खेलकर चला गया- (देखो तारीख फरिशता मकाला ४) यह ग्रंथ ३०६ वर्ष पहि
ले अकबर के बडे मंत्री के हाथ से लिखा गया है- जिसकी सनद मान्न अंगरेज़ भी स्वी
कार करते हैं- इसी ग्रंथ में लिखा है कि सं० १६३३ में जब अकबर बादशाह अजमेर-
और मेवाड को विजय करके मालवा को जाता था- तो जगमाल के पोते **परतापसिंह**
ने हाजिर होकर अताअत कबूल की- और चाकरी देकर दूसरे रईसों की बराबर कुरब पाया
सं० १६५० में परतापसिंह के पोते **उग्रसेन** ने सरकशी करके बादशाही मुल्क को
लूटना प्रारम्भ किया- इस दोष में मालवा के सूबेदार मिरज़ा **शाहरूख** ने बादशाह

के हुकम से बांसवाड़ा जबत कर लिया - महारावल परतापसिंह अपने पोते समीत - भयके मारे पहाड़ने में जाछिपे - और वहीं से बादशाही राज्यमे लूटमार करने लगे - उ-नके सूबेदार खबर पाकर मालवा को गया पीछे से महारावलने बांसवाड़ा ले लिया - दूसरे वर्ष सूबेदार बड़ी फौज लेकर बांसवाड़ा पर चढि आया - परन्तु महारावल नेनजराना देकर अताअत कबूल करली - और फिर अंगरेजों का राज्य होने लो कभी नमकहरामी-नहीं की - सं० १६८५ मे महारावल के पोते **समरसी** जहांगीर बादशाह के हजूर में दिल्ली मे हाजिर हुए - ३००० नकद ३ हाथी १ पांन्दान १ खंजर नजर किया - बादशाह बहुत प्रसन्न हुए - और **शाहजहां** ने गादी पर बैठकर उन को १००० जात का म-न्सब १०० सवार का अधिकार - सोवर्णा का लंगर जड़ाऊ २५ हजार का - १ लाख न-कद - और ८० हजार का सरोपा बख्शा - महारावल जी के पोते **अजबसिंह** ने उदैपुर की सीमा पर झगड़ा किया - जिसका बैर महाराना **अमरसिंह** जीने लेना चाहा - परन्तु बादशाही वजीर नवाब **असदखां** ने दोनों को समझाकर राजीनामा-करा दिया - मुगलों का प्रताप शोक समुद्र में डूबने के समय सं० १७५० में महाराना **भीमसिंह** जीने जो **ईडर** ब्याहने पधारे थे - महारावलजी से कई हजार नजराना लेकर छोड़ा - ॥

महारावल उमेदसिंह जी गादी बैठकर दिल्ली के मालकों का भरोसा नहीं देखा - तो मरहटों को मुल्क से निकालने के लिये - जिन्हों ने मात्र देश को लूटकर बरबाद कर दिया था - सं० १८६८ में अपना वकील बड़ौदा के अंगरेजी रजीडन्ट के पास-भेजकर सरकार से अहदनामा करना चाहा - परन्तु वहां से जवाब मिला कि दिल्ली को जाओ - पांच वर्ष पीछे सं० १८७४ में इन के वकील ने दिल्ली जाकर रजीडन्ट द्वारा-सरकार से अहदनामा किया - इसी वर्ष में सरकार और महाराजा धार से जो अहद नामा हुआ था - उसके अनुसार धार ने ३५ हजार का खराज जो डूंगरपुर व बांसवाड़ा

से लियाजाताथा सरकारको देदिया - महारावल उमेदसिंहजीका देहान्त इसीवर्ष में होगया -॥

महारावल भवानीसिंहजी सं० १८७५ में पाट बिराजकर दूसरा अहदनामा सरकार से किया- सरकार ने धारवाले खराज के उपरान्त सं० १८८० में ८००० रुपया फौजखर्च भी बांसवाड़ा पर लगाया - किन्तु आमदनी के कम होने से कुछ दिन पीछे माफ़ होगया- इनके समय में फ़ज़ूलखर्ची और कामदारो की नालायकी से क़र्ज़ होगया- अतएव महारावल डूंगरपुर ने बन्दोबस्त में मदद दी- सरकार ने कप्तान सैपर्स साहब एजन्ट को बांसवाड़ा भेजा- उनको एक सिपाही ने मारडाला- जिसको काले पानी का दण्ड दिया गया- परन्तु रास्ते में से भागगया- सं० १८९३ में महारावल देवलोक हुए -॥

महारावल बहादुरसिंह गोद आकर सं० १८९४ में पाट बिराजे और कई वर्ष राज करके देवलोक हुए -॥

महारावल लक्ष्मनसिंहजी (चिरंजीव) सन १८४२ ई० में गादी बिराजे- ३ पुत्र महारानी साहबा और एक पासवान जी से हैं- महाराजकंवार हिन्दी उरदू लिख पढ़सकते हैं- महारावलजी पुरानी बातों को बहुत पसन्द करते हैं- १८४३ में महारावलजी ने मुसलमानों की ईदगाह (मसीत) को जो टूट गई थी राज का रुपया लगाकर मरमत कराकर दुरुस्त करादी- जिससे मुसल्मान रैयत इन से बहुत खुश है इसराज में समस्त ११८१ ग्राम हैं- जिनकी सालाना आमदनी ५ लाख है- इन में से ५३३ ग्राम खालसा के हैं उनकी आमदनी २६७४०८ रुपया और- ११२ ग्राम धर्मार्थ- नौकरी- बचारन आदि की जागीर में हैं- इनकी आमदनी २५ हज़ार सालाना है- और ५४३ ग्राम राजपूतों की जागीर में हैं- इनकी आमदनी ३ लाख सालाना है- इन में १४ सरदार अव्वल और १८ दूसरे दर्जे के हैं

नमक के कारखाने बहुत हैं - परन्तु डीडवाना - पचभद्रा - फलोदी - सांभर यह चार खाने मारवाड़ राज्य में प्रसिद्ध हैं जिनमें से सांभर की झील २२ मील लम्बी और ६ मील चौड़ी है - इसका लोन बहुत ही उत्तम होता है - पहिले बादशाही खालसा में थी - मुग़लों की बादशाहत जाने पर मारवाड़ ने उसपर कबजा कर लिया - परन्तु थोड़े दिनों पीछे नवाब अमीरखां ने दखल करके अपना थाना बिठाया - जब मीरखां चले गये - तो मारवाड़ और जैपुर दोनों ने मिलकर[°*] सं० १९४६ में एक लाख २५ हज़ार रुपया पर सरकार को सांभर का ठेका दे दिया - और ना बाका ७ लाख सालाना पर इजारा दिया गया - और १० मई सन १८७९ ई० को दरबार मारवाड़ ने - डीडवाना - पचभद्रा - फलोदी और लोनी का भी ५ लाख ३५ हज़ार ५८५ रुपया सवा पांच आना सालाना पर सरकार अंगरेज़ी को २१ वर्ष के लिये ठेका दे दिया - ॥

राजपूताना के चार भाग

सरकार अंगरेज़ी की अमलदारी में बन्दोबस्त की आसानी के लिये - राजिस्थान के चार हिस्से किये गये - और हर एक हिस्से का निगरां जिसमें कई रजवाड़े होते हैं एक २ रज़ीडेन्ट नियत किया गया जिसका - वृतान्त इसतरह पर है -

जनूबी राजपूताना रज़ीडन्ट साहब उदैपुर में रहते हैं - और डूंगरपुर परतापगढ़ - बांसवाड़ा आदि रियास्तें इस रज़ीडन्सी की निगरानी में हैं ॥ *

मग़रबी राजपूताना रज़ीडन्ट साहब जोधपुर में रहते हैं और सिरोही जैसलमेर की रियास्तें व मलानी उनकी निगरानी में हैं ॥

मशरकी राजपूताना रज़ीडन्ट साहब जैपुर में रहते हैं - किशनगढ़

° उसपर कब्जा कर लिया और आजकल दोनों ही का कब्जा है परन्तु इन्तजाम मारवाड़ने °

* कोटडह - छावनी खेरवाड़ह दोनो स्थानों में असिसटन्ट रज़ीडन्ट मेवाड़ रहते हैं जो मोगियों और पहाड़ी भीलों की निगरानी भी रखते हैं - मु० मुफ़स्सली - ॥

और शेखावाटी इनकी निगरानी में है-॥

एजन्सी हाडौती- एजन्टसाहब देवली में रहते हैं-टोंक-कोटा-बूंदी- झालावाड-शाहपुरा आदि इनकी निगरानी में हैं॥

इनके सिवाय **करौली- भरतपुर- अलवर- बीकानेर- कोटा- झालावाड**- में ख़ासतौर पर पोलीटिकल एजन्ट रहते हैं यह चारो रज़ीडन्सी और एजन्टी साहब रज़ीडन्ट राजपूताना के मातहत हैं जो **आबू** पर रहते हैं और ज़िला **अजमेर** की चीफ़ कमिश्नरी का अधिकार भी रखते हैं- और जनूबी रज़ीडन्टी के दो अंगरेज़ असिस्टन्ट कोटरा और खेर वाडा में भी रहते हैं- जो सरकारी सेना के अफ़सर हैं और बासवाडा वग़ैरा रियास्तों की निगरानी रखते हैं- जोजो रियास्तें जिन २ रज़ीडन्टो की निगरानी में हैं वह अपने २ वकील रज़ीडन्टी में रख ती हैं- और यह सब मिलकर पंच वकला कहलाते हैं- और अपनी रिया स्तों के मुशतरका मुकदमें फ़ैसल करते हैं-॥

राजपूताना में सरकारी फ़ौज

इन्तज़ाम और वक़्त पर काम लेने के लिये राजपूताना की हद में निमन लिखे हुए पांच स्थानों में सरकारी फ़ौज रहती है-नसीराबाद- देवली- एरनपुरा- खेरवाडा- अजमेर- इनमें से नसीराबाद और अजमेर की फ़ौज कवायद जान्ती है- बाकी बेकायदा है- नसीराबाद में एक तोपखा ना- गोरों की एक पूरी रिजमेन्ट- और पूरा ६०० सवारों का रिसाला रहता है समस्त सरकारी सेना की तादाद जो उक्त स्थानों में रहती है ६७५० आद मी हैं इनमें से ८८८ गोरा और बाकी देसी सेना हैं- नसीराबाद और अजमेर का ख़र्च सरकार देती है- बाकी फ़ौज का ख़र्च रियास्तों से इसतरह

पर लियाजाता है- **देवली** की फ़ौजके लिये कोटासे २ लाख सालाना- **येरनपुरा** के लिये जोधपुरसे एक लाख १५ हजार - **खैरवाड़ा** के लिये उदैपुरसे ५० हज़ार सालानालियाजाता है- (रजवाडने की कुल फ़ौज ७५००० गिनी जाती हैं)

सरकारीखराज

राजिस्थान के समस्त रजवाडनें और ज़िला अजमेर के जागीरदारों से मिलाकर कुल २१ लाख रुपया सालानाखराजसरकार को वसूल होता है-॥*

शाहिन्शाहीनौकरीदेनेवाली सेना

सं॰ १८८७ मेकि५वर्ष हुयेजे **पंज देह** नामी स्थान सों जोकाबुल की पश्चमी सीमा परहै- रूसी बढ़ आये थे- तो हिन्दोस्थान में कोलाहल मचगया था- उस समय पहिले पहिल हैदराबाद दखिन की रियासत ने सरकारको सहायतामें ६० लाख रुपया दिया और कहाकि यह रुपया हिन्दोस्तानकी हिफ़ाज़त में खर्च कियाजाय - सरकारने दरबार दखिण का शुकरिया (धन्यवाद) अदा किया- परन्तु रुपया लौटादिया- क्योंकि इतनी बडी सलतनत की- शान के खिलाफ़ है- कि खराजगुज़ार दोस्त रईसों से यों रुपया वसूल करे- परन्तु इसबात को सरकार ने मंजूर किया कि जो रियासत सरकार की सहायता के लिये अपनी ओर से फ़ौज देगी (जैसाकि मुसलमान बादशाहों के दरबार में समस्त रईसी रियास्तें चाकरी करती थी और अपनी २ फ़ौजें लेकर वक्त परसाथ होती थीं) तो सरकार मनजूर करसक्ती है- इसी दिनसे हिन्दोस्तान की बहुतसी रियास्तों ने सरकारके हज़ूर में फ़ौजें देने की दरख्वास्तें भेजनी शुरू करदीं- और सरकारने भी उनकी दरख्वास्तों को मंज़ूर करलिया- किन्तु यह कहा कि जिस फ़ौजको आप देना चाहते हैं उसको

* फ़ौज खर्च जिसका ब्योरा ग्रंथ करता ने किताब में लिखादै इस रकम में शामिल नहीं है-
म॰ मुरादअली

सरकारी फ़ौज के समान क़वायद सिखाकर तैयार रखना चाहिये- ऐसाही हुआ- इन फ़ौजोंका नाम ऋहिन्शाही खिदमात की फ़ौज रखा गया*और बरदी-तन ख़्वाह- हथियार आदि सरकारी सेना के समान दिये गये- और तीन अंगरेज़-सरकारी सेना के सरदार सरकार ने देसी रजवाडों की इन फ़ौजों पर अफ़सर नियत किये हैं जो साल भर में दो चार बेर इन को संभालते और क़वायद लेते हैं इसके उपरान्त यह भी हुकम है- कि रियासत के निकट जो सरकारी छावनी हो वहां यह फ़ौज सरदी के मौसम में तीन महीने रहकर क़वायद सीखे- हमारे सूबे में निम्न लिखी हुई रियास्तो ने फ़ौजें दी हैं - जोधपुर १ रिसाला-बीकानेर ऊंटों का१ रिसाला (या शुतरसवारों का रिसाला) जैपुर- फ़ौज-की बार बरदारी के लिये १००० टट्टू सामान समीत- अलवर- १ पियादा-पलटन - भरतपुर १ सवारों का रिसाला- उदैपुर १ पैदल पलटन - जिस रियासत की जो फ़ौज है उसका सब खरच रियासत ही के ज़िम्मः है-॥

राजपूताना में विद्या की उन्नती

सबसे पहिले जैपुर के महाराजा राम सिंह जी स्वर्गवाशी ने जैपुर नगर में-स्कूल जारी किया था जो आज के दिन महाराज कालिज कहलाता है- अव्वल दर्जे की तालीम इस में दी जाती है- सन १८७० ई० के पीछे जोधपुर- उदयपुर बीकानेर- अलवर- भरतपुर- धौलपुर- झालावाड- टौंक- शाहपुरा करौली- कोटा में बडे २ स्कूल जारी होगये- जिन में आज के दिन अंगरेज़ी फ़ारसी- हिन्दी ख़ूब पढाई जाती है- मेवाड- मारवाड- बीकानेर- अलवर-भरतपुर में मातहत हकूमतों के अन्दर भी पाठशाले जारी होगये हैं- इन-सब स्कूलों के विद्यार्थी अजमेर गवर्नमेन्ट कालिज की निगरानी में हरसाल परीक्षा देने को आते हैं और प्रति बर्ष विद्या की उन्नति राजपूताना में होती जाती है-॥

* अंग्रेजी में इम्पयल सरविस कहते हैं- म० मुरादअली होशियार- ॥
† बडे सरदार का नाम करनैल मेलस साहिब है- ॥ उक्त फौजों की देखभाल इन्हीं के सुपुर्द है- म० म० अली- ॥

तवारीख जैसलमेर- राजपूत

नम्बर गिन्ती	नाम रियासत	खिताब रईस-॥	नाम रईस व जाती -	
				ने राजराजामान समयसीस्तान फ़तहसिंहजीत लमिला है-॥
१	उदेपुरमेवाड़	महाराना-	फ़तहसिंहजी सीसोदिया	
२	जैपुर	महाराजा	माधोसिंहजी कछवाहा	मिलाहै- मशीरकैसरकीय
३	जोधपुर	महाराजा	जसवन्तसिंहजी (२)राठौड़	व्वलमिलाहै-
४	बीकानेर	महाराजा	गंगासिंहजी बीकाराठौड़	निकले हैं-॥
५	बूंदी	महारावराजा	रघुवीरसिंहजी हाड़ा	सन१८७७ई०
६	कोटा	महाराव	उमेदसिंहजी हाड़ा	लेहैं
७	टोंक	नवाव	इबराहीमअलीखांसाहव- पठान	-॥
८	भरतपुर	महाराजा	जसवन्तसिंहजी जाट	
९	करौली	महाराजा	भंवरपालजी यादोवंस राजपूत	
१०	अलवर	महाराजा	जैसिंहजीकछवाहा नरूका	न्तर्गतप्रा कीसरकार नाठालिया है जैपुर

नम्बर गिन्ती	नाम रियासत	खिताब रईस	नाम रईस व जाती	रियासतोंकी सन अंगरेजी में कायम हुई	रकबा मुरब्बा मील	कि... आ...
११	झालरापाटन	महाराजराना	जालिमसिंहजी झालाराजपूत	सन१८३८ई०	२५००	३४
१२	धौलपुर	महाराजराना	निहालसिंहजी जाट	सन१७६१ई०	१६२६	२४
१३	किशनगढ	महाराजा	शार्दूलसिंहजी राठौड़	सन१६०८ई०	७२४	१९
१४	जैसलमेर	महारावल	शालबाहन जी भाटी	सन७३१ई०	१२२५२	१०
१५	सिरोही	महाराव	केसरी सिंहजी देवड़ाचौहान	सन१२०४ई०	३० २४	१५
१६	डूंगरपुर	महारावल	उदैसिंह जी सीसोदिया	सन१३२५ई०	१०००	१५
१७	बांसवाड़ा	महारावल	लछमन सिंहजी सीसोदिया	सन१५३१ई०	१५५०	१५
१८	परताबगढ	महारावल	रघुनाथसिंहजी सीसोदिया	सन१४३४ई०	१५००	१७
१९	अजमेर	कमिश्नरसाहब	मिस्टरमार्टेंडलसाहब बहादुर	सन१८१८ई०	२७५५	४६०

नोट कमिश्नरी के उपरान्त ७ कचहरियां खास अजमेर में और २ ब्यावर में स्टेट...
...फौजदारी मुकद्दमों के फैसले का अधिकार है और यह सब कमिश्नरी के...

मयो कालिज अजमेर

राज पूताने में ऐसा कोई पाठशाला न्हीं था जिस में राजा महाराजओं के पुत्र सिक्षा पाये अतएव सन १८७० ईसवी में हिन्दुस्थान के गवर्नर जनरल श्री मान लार्ड **मयो साहिब** बहादुर स्वर्गवाशी ने (जिनको काले पानी अर्थात इन्डमान के टापू में एक उमर कैदी मुसलमान ने छुरी से मार डाला) अजमेर में दरबार किया जिस में इस सूबे के समस्त राजा महाराजा एकत्तर हुये थे इस दरबार में लाट साहिब ने कहा कि रईसों की औलाद के लिये एक कालिज होना अवश्य है इस बात को सब रईसों ने मनजूर कर के सालाना चंदा देना स्वीकार किया और ६ लाख से अधिक उसी दम एकत्तर होगया और लाट साहिब ही के नाम से अजमेर में मयो कालिज बनाया गया इस में राजपूताने के रईस जिन की अवस्था २९ वर्ष से कम हो सिक्षा पाते हैं सिपाहियाना करतब भी सिखाये जाते हैं सब रईसों के एक जगह रहने से एक दूसरे में मुहब्बत हो जाती है और पिछला रंज दुख जो सैकडों बरसो से चला आता था दूर हो जाता है यह सरकार की राजनीती है - ॥

॥ - तवारीख के मुतअल्लिक जानने के योग्य बातें (मनसब)

इस ग्रंथ में बहुत जगह माही मरातब और मनसब का शब्द लिखा गया है इस लिये हम चाहते हैं कि पाठकों को इन शब्दों के मतलब से वाकिफ करें - ॥

विदित हो कि **मनसब** एक मुलकी और फौजी दरजा है - **मौलवी उबै दुल्लाह फरहती** ने तुहफे राजिस्थान में आईन अकबरी के हवाले से लिखा है कि मनसब और माही मरातब दोनो **अकबर बादशाह** के समय से हिन्दुस्थान में प्रचालित हुये हैं - अकबर से पहिले बादशाह १०० और १००० नम्बर के सरदार रखते थे परन्तु अकबर बादशाह ने गादी पर बैठ कर इस रीति को

कायदे के साथ प्रचलित किया मनसब में २ भाग किये एक जात दूसरा सवार का जात से मतलब ओहदेदार की तनख्वाह अर्थात पंजहजारी को ५ हजार और ७ हजारी को ७ हजार रुपया महीना बादशाही खजाने से जागीर के उपरान्त तनख्वाह मिलती थी और सवार से उसकी फौज की जामईयत समझी जाती थी- बादशाही राज्य में फौज के अंदर सबसे जियादह इज्जत इक्कों की थी और उनसे बकरार मनसबदार गिने जाते थे जिसका मनसब अधिक होता था वही युध्य के समय सेना पती नियत किया जाता था **अकबर** के समय से **आलमगीर** के मरने लों अव्वल दर्जे के सरदारों को केवल ५ हजारी मनसब मिलता था और ७ हजारी किसी मंत्री या खास मुसाहिब को दिया जाता था १० - २० - अथवा ३० हजारी मनसब शाहजादों ही को मिल सक्ता था - राजपूताने के रईसों में से **मिरजा राजा मानसिंह** कछवाहा को अकबर ने और **महाराजा जसवन्तसिंह** राठोर को शाहजहां बादशाह अकबर के पोतेने सात २ हजारी मनसब दिया था और किसीको न्हीं मिला - बीकानेर के **रावरायसिंह** और बूंदीके **रावरतन** ने पांच २ हजारी मनसब का कुर्ब पाया था आलमगीर के पीछे **किशनगढ** वालों को **मुहम्मद शाह** बादशाह ने भी जोउनका भानजा था यह कुर्ब दिया था परन्तु बिना तनख्वाह के केवल जबानी जमा खर्च होने से लोगों की नजरों में उस का कुछ मान न्हीं किया गया (यह भूल है सरकार अंग्रेजी का खिताब भी तो जबानी जमा खर्च है बलकि खिताब पाने वाले को उलटा कई हजार रुपया खर्च करना पडता है परजोउसका मान न करे मूर्ख है) - ॥

माही मरातब

माही फारसी मे **मछली** को बोलते है और "चांदवाली" भीइसका

अर्थ है और मरातिब या मरतबा दरजे को कहते हैं - इस का वृत्तान्त पुराने इतिहासों में यों लिखा है कि ईरान के बादशाह **नोशेरवां** के पोते **खुसरो** को जब देश निकाला दिया गया तो वह रूम में जहां के बादशाह की बेटी **शीरीं** नामी उससे ब्याही थी चला गया और वहां से फौज की मदद लेकर अपने देश पर चढाई की रूमी फौज की सहायता से उसने ईरान विजै कर लिया फतह पाने के समय चन्द्रमा मीन (मछली) का था खुसरो ने उस चन्द्रमा को अपने लिये जोतिष के अनुसार अच्छा शगुन समझ कर सरदारों को जो निशान दिये उनपर चांदी सोने से चन्द्रमा और मछली की मूर्त्यां बनाकर लगादी थीं इसी चीज का नाम माही मरातब पड गया - मुगल बादशाहों ने भी जो ईरानियों के पडोसी होने के कारण बहुधा बातों में उन की नकल उतारा करते थे हिन्दुस्थान में इस को रिवाज दिया और पांच या सात हजारी मनसब वालों को माही मरातब मिलता था - ॥

सरदार या जागीरदार

राजपूताने की मान्य रियास्तों में तीन अथवा चार दरजे के जागीरदार हैं जिन को किसी बहादुरी या रईस की रिश्तेदारी के कारण जागीर मिली है - पहिले दरजे की जागीरें लाख से सवा - डेढ लाख तक की हैं इनको साल भर में दसेहरा या शादी गमी के मौके पर दरबार में हाजिर होना पडता है मेवाड में ३ महीने और जोधपुर - जैपुर में साल भर तक जमईयत रखनी पडती है पहिले जमाने में यह लोग फौज के सरदार बनकर चाकरी देते थे किन्तु आज दिन अमन व अमान होने से इनको साहिब लोगों की पेशवाई या राज्य के कामों में सलाह देने का काम पडता है ऐसे सरदार बहुत कम हैं मेवाड में १६ - जोधपुर में ८ और जैपुर में १२ - और कोटा में ३ बाकी रियास्तों में इनकी बराबर आमदनी का कोई सरदार नहीं है - **दूसरे** रईस की जात के सरदार होते हैं वह महाराज कहलाते हैं इनकी जागीरें २० हजार से ५० हजार तक हैं यदि कोई रईस लावल्द फौत होजाय

तो इनमें से जो नजदीक का हो उसका बेटा गोद लिया जाता है ॥

तीसरे जागीरदार १० हजारी से ५० हजारी तक जागीरें रखते हैं यह भी राज धानी में अव्वल दरजे वालोंसे जियादह चाकरी देते हैं और राज्य के कामो में सलाह भी दिया करते हैं **चौथे** दरजा के जागीरदार ५ हजार रुपये सालाने की जागीर से जियादह नहीं रखते यह परगनो में हाकिमो के पास चाकरी देते हैं ॥

पांचवे दरजे के जागीरदार ब्राह्मण - चारन - मंदिरों के पुजारी - जोगी - अतीत आदि हैं इन के सिवाय उपर के चारों दरजे वाले जागीरदार रेख भरने के उपरान्त वक्त पर अपने स्वामी की चाकरी भी करते रहते हैं ॥

हिन्दुस्थान की मजमूई कैफियत

हिन्दुस्थान का कुल रकबा १५८०००० मील मुरब्बा है जिसमें से अंग्रेजी राज्य के कबजे में ९४०००० मील मुरब्बा और देसी रियास्तों के कबजे में ६४०००० मील मुरब्बा जमीन है अंग्रेजी अमलदारी में (सन १८९१ ई० की मनुष्य गिणना के अनुसार) ५२९०३७०० घर हैं जिनमें केवल २२०००००० आदमी बसते हैं - और देसी रजवाडो के राज्य में १८०५६२१५१ हैं जिनमें ६६०००००० आदमी बसते हैं अंग्रेजी और देसी रजवाडो की समस्त आबादी २८७२८९७८३ आदमियों की है हिसाब से मालूम हुवा कि अंग्रेजी राज्य में फी मील मुरब्बा ९६२०७० और देशी रजवाडो मे फी मील मुरब्बा ९५१२६ आदमी बस्ते हैं पिछले (सन १८८१ ई० की मनुष्य गिणना को सन १८९१ ई० की मनुष्य गिणना के मिलाने से ज्ञात हुवा कि अंग्रेजी राज्य में पिछले दस वर्ष के अंदर सेकडे पीछे ९३ और देशी रियास्तों मे १३/२ आबादी की उन्नती हुई इन पिछले दस वर्षों में मरदों से स्त्रीयां अधिक उतपन्न हुई एक अद्भुत बात यह भी पाई गई कि अंग्रेजी राज्य मे कन्या १२ फी सेकडा अधिक और देसी रजवाडों में लडके १६ फी सेकडा जियादह

उतपन हुये जिसका ठीक कारण मालूम नही हुवा कि क्यों ऐसा हुवा * सूबे वार देखा गया तो ब्रह्मा देशमे सेकडे पीछे २३ सिन्ध में १९ अजमेर मे १६ मन्दराज में ५ई बम्बई में १२ आसाम और अवध व पंजाब में ११ बंगाले में ८ की अधिकताई हुई - ॥

हिन्दुस्थान के बडे २ नग्रो की आबादी निम्नलिखे समान सावित हुई बम्बई ८ लाख २१ हजार ७६ आदमी - कलकत्ता ७ लाख ५१ हजार १५० आदमी मदरास ५ लाख ५५ हजार ५२० आदमी - हैदराबाद दक्षण (बादर के मुहल्लो को मिलाकर) ४१५०० लखनौ २७३०३० बनारस (काशीजी) २१९५७० अमरतसर १३६८८० इन के उपरान्त २२ शहर ऐसे हैं जिन की आबादी १ लाख से अधिक है बडे नग्रों मे से पटना - अमरतसर - मिरजापुर मे कुछ तरक्की न्ही हुई - तोभी सन १८८१ ई० की मनुष्य गिणना का मुकाबिला सन १८९१ ई० की मरदुम शुमारी से किया गया तो मालूम हुवा कि पिछले १० वर्ष के अंदर हिन्दुस्थान की आबादी मे ३ करोड ३३ लाख ८६२०१ आदमियों की जियादती हुई इनमें से २५ करोड ६ ई लाख आदमी अनपढ हैं और ४ लाख २६ हजार कुष्टी - ९ लाख ८५ हजार अंधे एक लाख ९६ हजार गूंगे बहिरे और ८६ हजार दीवाने (पागल) ७ करोड ९ लाख १८ हजार आदमी बेकार हैं - ॥ *

हिन्दुस्थानमे देशीरियास्तें

हिन्दुस्थान में समस्त रियास्तें छोटी बडी १०१ हैं जिनमे १५ पर मुसलमान रईस

इस मुआमले में हमारा यह अभिप्राय है कि अंग्रेजी राज्य में वैश्या और रंडियां आजादी से रहती हैं और हर प्रकार के भले बुरे आदमी खुले बन्दों काला मुह करते हैं जिस से उन का बल घट जाता है व्यादक के अनुसार निर्बल मर्द होतो स्त्री की मनी अधिक होने से कन्या और मर्द का बल गालिब हो तो लडका उतपन्न होता है (देखो ग्रंथ कानूनचा) म० मुरादअली - ॥

* सन १८९१ ई० की मनुष्यगिणना पर ९५०००० आदमी कुल हिन्दोस्थान में थे एक २ ने २०० या ३०० आदमियों की गिनती की मरदुम शुमारी १७ भिन्न २ जबानों मे लिखी गई कुल [illegible] इन के कागज से कागज जोड [illegible] तो १५००० मील लम्बे हों मरदुमशुमारी का खर्च हजार पीछे १० रुपया पडा - ॥ मुहम्मद मुराद अली - ॥ (२८ मन का १८ मन होता है)

और ८६ पर हिन्दू रईसों का कबजा है इन में से ३ मुगल १ बल्लोच ११ पठान-
६६ राजपूत ५ मरहठा ३ ब्राह्मणा ५ जाट १ जोगी ३ सिख १ कन्या १ गूजर अ्
हीर १ राज बंगशी १ केनर १ खत्री है - ॥

दुन्या के बडे नग्रों की आबादी

आज दिन समस्त दुन्यां में बडे और प्रसिद्ध ११ नग्र हैं जिस में निम्न लिखे समान आदमी बस्ते है (१) लेगडिन राजधानी इंगलिस्थान में ४१ लाख ४८ हजार ५३३ (२) पैरिस राजधानी फ्रांस २२ लाख ५४ हजार ५५० (३) बिरलन राजधानी जरमनी १३ लाख १४ हजार ४११ (४) निउयार्क राजधानी इमरीका १२ लाख २ हजार २८६ (५) असतम्बोल या कुसतुनतुन्या राजधानी तुरकी रूम १२ लाख (६) वयाना राजधानी इसटिरया ११ लाख ३ हजार ८५७ (७) सैन्ट पीटर्सबर्ग राजधानी रूस ९ लाख २९ हजार - ॥
(८) कलकत्ता वर्तमान राजधानी हिन्दुस्थान ७ लाख १५ हजार [illegible] - ॥
(९) फलाडलफिया मुल्क इमरीका ८ लाख ४७ हजार १७० - ॥
(१०) बम्बई मुल्क हिन्दुस्थान ८ लाख २१ हजार ७६ (११) मासको राजधानी रूस ८ लाख ५३ हजार ४६८ - इस हिसाब से लेगडिन नग्र राजधानी इंगलैन्ड की आबादी सबसे अधिक पाई जाती है जिससे अंग्रेजों की उन्नती का पूरा सबत मिलता है - ॥

॥ राजपूताने में राज्य करने वाले राजपूत

सूर्यबंसी व चन्द्रबंसी राजपूत

हिन्दुस्थान में पहिले पहिल इक्ष्वाक नामी राजा सूर्यबंसी ने राज्य की जड जमाई थी इनकी औलाद सूर्यबंसी कहलाती है - इनके पीछे बुध नामी एक मनुष्य ने तातार से आकर राजा इक्ष्वाक की पुत्री इला नामी से बिवाह किया इनकी औलाद

चंद्रवंसी कहलाते हैं ॥ **सूर्यबंसी** राजपूतों में पहिले गहलो तफिसी जो-
दिय राठोर कछवाहे आदि हिन्दोस्थान और राजपूताने में राज्य करते आये हैं
फिर **चंद्रवंसी बंस** के राजा भाटी - यादो - जारीजा - समतीजा आदि है जो हि
न्दोस्थान के प्राचीन रईस माने जाते हैं राजपूताने के सिवाय इस बंस की वडी शा
स भाटीयों की हकूमत खुरासान - गजनी काबुलसीस्तान - और पंजाब में बहुत वर्षो
तक रही है - अगनी कुल की चार खांपे सो लंखी चौहान - परमार पडहार भी
इस देश में हुकूमत करते आये हैं जिनमें से चौहान तो मुसलमानो के आनेतक
बडे दरजे के रईस थे ॥ इन के उपरान्त तंवर भी पुराना बंस है जो यवनों के आ
ने तक हस्तनापुर (दिल्ली) का मालिक था इस के सिवाय जावरा ताक यात
सव - झाला - गोड - जतीयूह - गोहल - काटी - बाल - सरोया - हानी - डोहर
ह - पीरवाल - बुंदेले - बडगूजर - सोनगरा - संगरवाल - वैस - वाडिया - जोहल
गोहल - निकोम्पा राजपाली - दाहरया - यादी आदि राजपूतों की बहुत सी खां
पें राजपूताने मे पाई जाती है परन्तु कोई रियासत आज दिन इन के कबजे में न्ही है
अलबत्ता बुंदेले राजपूतों के कबजे में पन्ना - चरखारी ओडछा दत्या यह चार रि
यासते आज दिन बुंदेल खंड में मौजूद है - तातपर्य यह है कि समय के हेर फेर से
बहुत से राजपूतों की रियासते नाबूद हो कर नाम व निशान ही जाता रहा तो भी सूर्य
वंसी और चंद्रवंसी व अगनी कुल के पंवार - सोलंखी चौहान वगैरह इस देश के
प्राचीन क्षत्रिय गिने जाते हैं ॥

राजपूताने के सिवाय हिन्दोस्थान में जितनी रियासते कायम है उनका नाम

हैदराबाद दखण - भोपाल - भावलपुर - जूनागढ - रामपुर - जावरा पधनपुर पाल
नपुर - खंबे - खैरपुर - मालियरकोटला बावनी वालासिनोर - कोडवाई - अने

गढ़ अलीराजपुर - बांसदा - वरया - बडोध्या बडवानी - बनारस - बरोंदा - भावन
ग्र - बिजावर - कशमीरवजम्बू - चंबा छतरपुर - चरखारी - छोटाउदयपुर - कोची
न - दतिया - देवास - धार - धर्मपुर - धरवल - दरंगदरह - ईडर - फरीदकोट -
डिठी - गोंडाल - गवालियार - इन्दौर - भाबुवा - जेंद - कछ - बिलासपुर - कपूरथ
ला - खरोंद - खलजीपुर - कोलापुर - कोचबेहार - नेमडी लोनांवाडह - मैसूर -
मंडी - मनीपुर - मोरवी - मेहर - नाभा - नागौद - नरसिंगगढ़ - नवानगर -
पन्ना - पालीताना - पटियाला - पुरबन्दर - राजपीपला - राजकोट - रीवां - रतलाम
समथर - सावंतवाडी - सल्लाना सरमोरनाहन - सीतामों - सोंदा सोकेत - बेतर -
ट्रावनकोर, ओरीछा - बरद्वान - वंकानेर - राजगढ़ - जोड ८३ - राजपूतानेकी
रियास्तें १८ कुलजोड - १०१ - ॥

इतिश्रीतवारीखजैसलमेरकातीसराभागसम्पूर्णम् शुभम्

विज्ञापन

कोटा कोट धन्यवाद है श्री जगदीश्वर को जिन की कृपा से यह ग्रंथ आज स
माप्त हुवा बहुत से हालात जो पीछे से मालूम हुये हैं - जैसे भावलपुर खैरपुर
व केलन जी वगैरह के हालात उनको हम अगामी चल कर ग्रंथ के अंत में
जमीमों अर्थात किरोड पत्र के तौर पर छापकर लगादेते हैं पाठक किताब
से मिला कर उन को भी पढ़ें - ॥ देश हितैषी सेवक लखमीचंद - ॥

التماس

ہزار ہزار شکر ہے پرمیشور کا کہ آج تواریخ جیسلمیر کا تیسرا حصہ بھی اوسکی عنایت سے تمام ہوگیا - عقب
سے حالات معلوم ہوئے ہیں مثلاً تواریخ بہاولپور - خیرپور سندھ - کیلن جی کا اتہاس وغیرہ وغیرہ
اونکو ہم آگے چلکر بطور ضمیمہ کے لگا دیتے ہیں ناظرین مضمون کتاب سے ملاکر پڑہیں -
راقم خیرخواہ ملک سیوک لکھمی چند -

ज़मीमानम्बर (१)

तरोोंटकेउनड़ोका हाल *

सफ़ा १६६ परगने नरोोंट के हाल में सतर ५के बाद पढ़ना चाहिये

म० लाखावट काजी के सहर में उनड़ो का राज है कमाल का बेटा बंदा भायां से नाराज हो नोहवर में आरहा वड़ा बेटा सांहणा की सादी नोहवर में कोम कटा के और छोटे बीसे की सादी झूडे की वस्ती कोम बंदां के करी नोहवरीया कहीजे सांहणा का पड़पोता लखमीर जैसलमेर से पीछा जाने को नोहवर का कामदार मिला कि पिकाडीगकटक आता है यह बोला अब अगाड़ी नहीं आने दूंगा चुनाचे कटक से मुकाबिला हुआ वलो चों को मारके मरा श्री दरबार ने उस के बेटे हमीर को बुलाकर कुरव वस रोपाव दिया - हमीर ने सांहणा के बड़े बेटे दीने के खमी से को पघड़ी बंध वाई - सो पाटवी है फेर नरोोंट में आबाद कर कोट सौंपा - पावतों से - पानी पर तकरार हुई तो खमीसे का पड़पोता ताहरखां बहावलपुर गया खान साहब कही नरोोंट लिख दे जवाब दिया मेरे लिखने से लेसको - तो दिल्ली भी लिख दूं जब ताहर को कैद किया - सो श्री दरबार ने व- कील भेज के छुडाया - जब दूसरे धुड़े बीसा को भी साथ लाया - नरोोंट पर खांन साहब की फौज आई सो हारकर पीछी जाती गांओं लेगई - एवज में खांन के सवारी के १२० ऊंट लाये सो बेच के पड़कोटा बना या - जब से नवाब का खिताब दिया धुड़े सांहणा में जाम ताहर - व बीसां में जांम ताहर की तनखा रु ३) रोज वदांण में कनोनी व गांम

* यह हालात किताब लिखने वाला का तिब अपनी जिन्द्रगी से छोड़ गया था इस लिये अर्मी मेंमे लिए गये हैं पाठक मन्य शीर्म जानकर पढ़े - मुहमद मुफ्स्स्ती -

धावद पर दिया सो इनोफ़ है और नौकरी में रहे तो तनख्वा दीजावे १५ आदमी तो हमेशा रात को भी कोट में रहें और काम पड़े ज़रूरत हो जितना हाज़िर होवें और जैसलमेर में तो आदमी व घोड़े की तलवा- रगा और दूसरी जगह कोट फ़तहगढ़ पर जोधपुर की फ़ौज सिंघी फतैरा ज लेआया और यहां से भी फ़ौज गई वक्त मुकाबिले के भाटी भागगये उनहों ने फ़तह पाई सोरठा

खिसीया खेत सौ होत पग ठाम्या सांसांसद पन्ना ।

ताहर ने तरगोट अचल राखे दूसरी ॥ १ ॥

औदरवार ने ताहर से फ़रमाया कि किल्ला किशनगढ़ का क्यों हाले दिया अर्ज़ करी बना हुआ लेहूंगा और वहां जाकर सुरंग लगा ई पर कोट वाले चेतने से ताहर बाहर आना नहीं आये गये कामयाब न हुए मगर इतबारी भरोसेहार समझ गये कि श्रीजी साहबों के सफ़र में तम्बू के अगाड़ी भाटी रूपसीं और पिछाड़ी उनड़ों का डेरा होता है ॥

सांहशा के बेटे डेहर का डेहर मंधु का मंधुसांगोत का ढेले का काढेला और वीसे के बेटे लहड़ का लहड़ हींगो ले का हींगोला कहीजे है दोनों के घर २०० तो कन्हड और बहुत से वलाक हार हैं ॥

ज़मीमानम्बर (२)

इतिहासकोमरवालतजो१२पाड़ना हैं

सफ़ा१६४ परगनेरामगढ़के हालमें सतर ४ के बाद पढना चाहिये

मोंज़े टुकरोलेके सोलंखी राजे मूलराज का कुं॰ महेसदास लुद्रवा के पुवार राय सांवतसी भाग भोज की पुत्री परनीजे और तणोट में आरहे इसके कुं॰ षेतसी को नानी हुलरावतीनेरवालत्त कहा जिससे खालतक- हीजे- खेतसी के बेटे रूपसी के ३ पुत्र १ देवराज ने श्री घंटीयालराय का थान व १ कुंवा जो चूड़ाले विजैराव का बनाया हुआ मिसमारथा तयार कराया दूजे बिजे देवराज तीजे सिद्ध देवराजका बेटा मायेथी ने राम गढ से पश्चिम कोस ६ मायेथी नाम कुंवा बनाया व जुझार हुआ सो पुजीजे है और देवराज के ७ बेटों में दूजे रतुनु कुवा २ रतंडीया- बनाया और बडे बेटे चामुंड॰ का बेटा मारु को सरवाड़ के ओढांणां मार कर तणोट लूटी और मारुका बेटा बीसल अपने नानेरे गां॰ जसोल- में नाबालिगथा सो जवान हुआ तब मौज़े हाडे में आकर महारावल श्री बाकुजी से रुप्या व फ़ौज की मदद लेकर ओढाणां को वफ़ात दी और सरवाड़ लूट दरवाजेका किवाड़॰ ले आया- और श्री दरबार में सालीयाना- रक़म जिसको माल कहते हैं लिखदीया सो हनोज़ भरता है तथा - त- णोट में कुवा एक चौतीना जो मौजूद है बनाया और एक पगवाव बनाई थी पानी खारा होने से अकवाव कह कर बूरदी और मौज़े राम गढ़ में श्रीदर बार से कोट बनाया जब खालतभी यहां आरहे ॥ बीसल के पुत्र जैतकोबेटा

भोजले कुंवा ५ भोजसर नाम से बनाया सो दूरा हुआ भोन्चर कहते हैं ॥ और भोजके पुत्र १२ सब्धे बडे चूंडे का चांवड गांव वारू में रहते हैं दूजे साराक ने रसाड नाम दो कुंवा वनाया और इसके वेटे जैपालका बेटा भाग चंद ने भागसर नामी कुंवा जो रसाड से पूर्व १॥ कोस दूरोंडा है बनाया- और तीजे भार का भारा कहीजे और चौथे सालरासी के बेटा अडकमल के ७ बेटां में से चार का बंस चला एक सरगा का सरगा षालत मुसलमान गांम सतोष वगैरे में हैं तीजे मांडरा का बेटा सेठ व सांयत का सेठ व सांयत कहीजे है और चोथे सूजन के बेटे सजन का सजन कहीजे व तलाई १ सजन की खुदाई ॥ और दूजे लूंभे के ३ बेटां में दूजे रणधीर का रणधीर कहीजे है - और तीजे उदैराव व बेटा तोगायत दोनों को षीये ने मारकर जासोलाईली उदैराव की औलाद का गांम महेरेरी में भायां के बिराड से न्यारा रहते हैं और बडे बेटे अजे के १२ बेटे हुए जिसमें एक जोगे का जोगा जो माल में बहारस भरते हैं चौथे कोले के बेटे राघव का राघव सुइन गढ में व दसवे गोड का गोड और बारहवे मींहे का मींहा व इग्यारवें षीवें के ९ बेटे हुए जिसमें दूजे रास के हेम व नेनसी बपेरासर पर है व पांचवें सिदे का सिदा गांम कांगोद में व छठे सते के वस्ते का वस्तांरा गांम कांयरा में है व आठवे आंबे का आंबा और बडे बेटे धारे के तीन बेटा में से महेस के दो बेटा बडा तो भोजराज का पाड़ भोजराज जो सबका जासो लखेरड पर रहते हैं जामो त कालल आज पर्यंत नीचे लिखा गया और दूजे रुजे का रुजा कहीजे है भोजराज के भोपत भोपतके देवीदान २ के सुजांरा २ के जगन्नाथ २ के आपमल ३ के भीमा २ के सरूपा ३ के सेरा २ के मूला - मूला के बाहादरा ॥

ज़मीमा तवारीख जैसलमेर· नं० (३)

जो इस देशमे नीमा पहाड बहुत लंबा चौडा व ऊंचा जिससे पानी का झरना व अच्छे २ दरख्त तो कोरन्दी नाम का भाखर जिसको डुंगर वमगरा कहतेहै तफसील जैल है अव्वल शहर गेरहरा जिसपर गढ है सामने सुली डुंगरसे उत्तर सर्या वगेरह ८ कोस बराबर गां० चाहडू व काले डुंगर तक वहा से ख चम गां० वर्मसर व रूपसी फेरदः गां० कुलधर व काकनय वहांसे प० मुहार फेर पू० तेमडे वहा से उ० जायग फेर पू० धनवा व सागांणा वहांसे वा० गां० हमीरा तक चौडातो २से ८कोस और लंबाई मे लगता हुवा घेरा शहरसे चौतर्फ ४० कोस होगा नाम हरक ग्राम के पास जुदा २ होते है तथा इससे जुदी डुंगरी मोलासर नाचनरा भझेटा वगेरह कई हैं · त्या काले डुंगर से काकनय तक मगरा सजीवन है चुनांचे कबीरेरीसाल वह भीमरो गोडो ब्रह्म कुंड रामकुंड रुचीकाकुंड सुंदडीभुवांद मे कहतसा ली मे भी पानी बहुतरहा शहर मे भी वहींसे आता था जिस में अनुमान होता है कि इस मगरे व ब्हालों में खोदने से पानी नजदीक ही निकलेगा और सुना भी है कि ब्रह्माजी ने वै शाखी पर यग्य किया था जब मात्र रिषि देवता वनदी आये थे जबसे नदी गोमती यहां गुप्त चलती है इस के गुप्त गति का साखा सिकंद पुराण में है कि ऊर्ब रिषि के बेटे अग्नि को मारने के लिये नदीयों को ब्रह्मा जी ने आज्ञा करी जब सरस्वती वगोमती बीडा उठाय अग्नि को धकेल समुद्र मे बैठाया सो सरस्वती के कुंडल मे बैठा हुवा है गोमती अग्नि को धकेलने से तपजातीथी तब जमीन मे घुस कर ठंढा होने बाद प्रगट होती थी इस से संभव है कि यहा भी गुप्त चलती है खैर क्यों ही हो पानी तो बेशक नजदीक है और पर बतो का हाल खाने में लिखा है और परगनात में पहाडियों का नाम नीचे

लिखा है बाकी हाल लंबा चौडा ऊंचा व दूर दिसा वगैरह का नकशा में लि
खा जावेगा तथा इस देश के भाखरों व मगरों मे बाज २ जगह कुं मटीया
गुंदया गूगल बलसीडा के सिवाय कुछ भी पैदा न्ही होता है -॥
प्र० जेसलमेर में १ सूरमाली २ कीतां का डुंगरा ३ बाभगीया ऊहरी का भाखर
प्र० देवीकोट मे १ - - - २ - - -
प्र० लखोमे- १ रणधां वालो २ गुप्चरीयेरामाडी ३ - - -
प्र० देवामे- १ भूरेरो डुंगर २ बालाडी डुंगरी ३ सिलाडी डुंगरी ४ पालाडुं
गरी ५ चांचोली डुंगरी ६ कालो डुंगर ७ हईखा को डुंगर ८ आसदेयं को
९ गोसीरसर १० डहीयेरो ११ जर्रवालो १२ जोगणीयावालो १३ चेरा
लो १४ बदाडो १५ जगांवालो -॥
प्र० वापमे- १ घटोरीमाली २ तीधीमाडी ३ कोडीयो भाखर ४ गेदायतमा
डीबारह ५ तोडेरीमाडी ६ मनुजीरो पहाड ७ जाव मरो पहाड ८ भोजालवा
रो पहाड ९ रतेपीरो १० कोठीवाडो ११ मोटी ढाढरेह वालो १२ लखुवालो
१३ कुभारीयेरीमाडी १४ गोतरडीमाडी १५ देरयडुरी भा- १६ कीतोतमाडी-
१७ मोतीसेरो भा- १८ थंभणारी भा- १९ गोव भा- २० नेहरारे टेचरी २१ चांप
लासरोवलो २२ बोवणी भा- २३ न्हीचो भाखर भा- २४ मेणागटीया भा- होय-

इन महलों में सिंधव संत जमाने साबिक में बहुत थे उन्होंने ठिकाना बनाया सो हाल बरहने वालों के नाम

जमीमा नं० (४) **अतीत मंडीयां**

आयस का मठ- रावल जोगीरतन नाथ वाले शहर से बाहिर सं० १३०७ सा
सुद ५ (१) गणेसीनाथने मठ बनाया भोमीया के गांवों में कटाला व सेर
से भी भिक्षा का लगसान है (२) धनानाथ (३) फतेनाथ (४) धननाथ

(५) सिधनाथ (६) समनाथ (७) रतननाथ (८) रामनाथ (९) पीथानाथ (१०) सांवतनाथ (११) गोपीनाथ (१२) जीवननाथ (१३) आदनाथ (१४) सतीनाथ (१५) भानीनाथ (१६) थाननाथ (१७) फूलनाथ (१८) लालनाथ (१९) गोपालनाथ (२०) लहुनाथ (२१) जीवानाथ (२२) किशननाथ (२३) गंगानाथ (२४) हीरानाथ (२५) बादलनाथ (२६) खेमनाथ जी अब मौजूद है ॥

(बावडी) आस के मठ में जीवननाथ का भार (१) बडनाथ जुदा हुवा (२) दरयानाथ ठिकाना बनाया (३) सिधनाथ (४) सीधरनाथ १न्यातनी को रक्खी जबसे घरबारी हुये (५) विजेनाथ (६) रूपनाथ (७) उतरनाथ (८) प्रागनाथ (९) भगवाननाथ है; और चतरनाथ के भेरूनाथ का बे लान्देन नाथ हैं सु. नारा वदरजी सेवक है ॥

(धुनीनाथ का मट) यहा एक कोटा में आसब वेराग नाथ का पादक रहनेसे वेराग नाथ का मट भी कहते हैं - गंगा पार से रमता सामी एक धुनी नाथ आया - श्री मूलराज जी साहबा को कैद होकर फिर राज करने का चमतकार बताने से सिलावटों के बास में मठ बना दिया सो पातरीयां का गुरद्वारा है फिर नाथजी बीकानेर ऊसतां को लाने गया ऊसी वक्त भी राज का बल भाटी ले गया था सो नाथ जी के बचनसों साडीया पी ही और जब राजा जी ने मठ को कड़ी फेर दीवी था १ वे रुयासेदोसर खेलते थे उसके सतां की रक्षा से लंगोट खोला और लडका हुवा सो चेला (२) मस्त नाथ घरबारी हुवा (३) देवनाथ का चेला मोजनाथ तो सिध्धी पाने से रमता रहा वेटा (४) लालनाथ अब है (५) रूख्यानाथ ॥

(म्हादेव का मट) रमता सामी (१) हरवसगिर आया सो दात्त अमर

सिंहजी के हालमे लिखा है (२) लालगिर महंत हुवा (३) जगरूपगिर (४) थानगिर (५) हरनाथगिर (६) जनगिर (७) रिधगिर (८) हरीगिर (९) भावगिर (१०) पेमगिर (११) धनीगिर सं० १८६५ से कच्चा मठ था सो पक्का बनाया (१२) रतनगिर अबम्हंत है छडी नगारा भी है इन को कहागया कि इस मंडल के ठिकाने में अतीत हुये वहैं सो नाम वगैरत रसम वगेरे हाल पंचायती बही मे लिखो - भंडारानाथ के तो ठिकाने मे बाकी सबके - वैसाखी का मेला मे होता है - और जमाती इनसे जुदे है सो गुरु महाराज के निशान फते है - ॥

(कपुरीया का मठ) रमता फकड (१) सुंदरपुरी जो सिध थे गांवमें आरहे (२) बालपुरी ने जो राम कुंडा का साध को ईराजतरामजी वडाया था एक चमार की पुकारपर ५ भाई भोमिया जुनकी गती मरने से जमीन मे द्रव पाया व गांव मे सीव व वसी जुदी करी (३) हरवरपुरीने शहरमे (४) गुणेस पुरी ने गांव में पक्का मठबनाया (५) निरमलपुरी (६) चंचलपुरी के हरीयाल पुरी तो जोगी राज रमता रहेताहै (७) बालपुरी तक सिधथे (८) सागरपुरी त्रीनाग के काठीये को बचाता है त्या गणेस पुरी के दुजा चेला ज मनपुरी का छत्रपुरी ने गाव सुंदरे का सोढा गाये लेगया किसन सिंहजी सोढा को पनाह दी जिससे गाव सतोरे मे संमाधली जब से सतोरे मे अतीत नही रहे सकता और कुवा का पानी भी बिरवा होगया चमारों ने धुई की टहल करी थी उसका कुवा अन्छाहा चेला गोयंद पुरी के मनछापुरी के जो [illegible]पुरी के चेला सो अब है - ॥

([illegible] मठ था जल्लार मे) सेजनाथ वनोरव मे देववन - व बेसारवी मे फतेपुरी वाप मे हलुनाथ के ठिकाना का चीत्रु पहेले लिखा है और गाव देवा मे पीर कोठारी मे नकबीर लाडोला में औघड व शहर मे अजब पुरी वाले रूखड

कहाते है त्या संत पुरी रत्ननाथ देवनंदे सपुरी का मठ - नीलकंठ-डुंगरपुरी-चंपापुरी-हीकर नाथवगेरेके ठिकाने शहरमें और गांवमें बहुत अतीत रहते है सो कहां तक लिखे टीव गांव भाडली मे मानीगिर सिध्द है - ॥

(जमीमा) नं० (५) साध

(रामकुंड) रामानंदी रमताराम (१) दूगत राम जी जो संत थे यहां आकर श्रीअगर सिंहजी साहिबके गुरु हुये ठिकाना व मंठ बनाया बहुत वर्ष बाद खालीसनाथ बनाये नमालूम चोला कहां छोडा (२) तुलशीदास (३) बालकदास नकासिध्द थी (५) रामदासके समयमे सिंधका किलोडामीयाने १ महल बनवादिया जहां दूगत रामजी की गुदही-टोप-माला-वाधंवर-विराजे है (५) बदरीदास ६ श्यामदास (७) माधोदास (८) किशनदास (९) जीवणदास (१०) लछमणदासने विलाणी करनेवगेरे मरजाद तोडी व शहर की हवेली बेचीतो भी करजा रहा-खडीन भी गिरवी रक्खा था (११) गोपालदासजी अब महंत है मंडलके साधोंका जोरसठिकानेके कंठीबध्द है दिलहाथमे लेकर करजा भी उतारा और मरजादसे चलते है शहरमें हनुमानका ठिकाना भी रामकुंडका है - **(कबीरपंथी साध)** ईसरदासजीने सिंधहैदराबादमें मसजिदपास पेशाव करनेसे मुसलमानोंका दावा करनेवाला चाहा तब लंगोट खोलकर १०० इंद्रीयां दिखायक मुसली हुये सो काटो केरगादा थीस ध्यकी विनतीसे गांव खुहडीमे ठिकाना बांधकर बहुत लोगोंको कंठी बंधकिया और गुरुभाई बोलकदास आकर यहांही रहा त्या चेला श्रीदासके तो चेला नहीं रहा और पाटवी मगनीरामके जगजीवन दास भी ग्यानी थे इनके चेला रतनदासके अब गरीबदास है और दूसरे हरीदासके जेरामदास ने जुदा ठिकाना गां० चोहावपोक्रनमे भी बारके लोगोंको मंत्रोपदेस करते है इनका चेला पीतांबरदास अब है जिसके सारंगदास (मुनीजीका ठिकाना) रामसनेही साधूका चेला जो पण्डित था पोकरनसे आकर १२ बरस मुनरक्खी सो पलीवालोंने छोडाय हनुमानके चौतरफ ठिकाना बनाया और लगमात्रीथा धदिया यहां शास्त्रग्रंथ पढ़ते है परन्तु पीछे कोइ साधू पण्डित नहीं रहा-ठिकानेके चोकमें पानीका टांका बनाना जरूर है-त्या बरकतवाले मुसलमान फकीरोंका जिक्र किताबमे मोकारपर लिखा गया है बाकी तकिया व पीर मुकामतो शहर व इलाकेमे बहुत जगह है सो कहां तक लिखा जावे - ॥

※ यह फिकरा असली लेखमे ऐसा ही है ठीक नहीं पढागया -

(जमीमा) नं॰ (६) **रियासत भावलपुर**

इस रियासत का रकबा ३८२६६ मील मुरब्बा है जिस मे सन १८९१ ई॰ की मरदुम शुमारी (मनुष्य गिणना) के अनुसार ५,२५६,६७० आदमी बसते है आमदनी सालाना ५७,३५९५ रुपया है खिराज माफ है अहदनामे मे दोस्ताना मदद देने का सरकारने वादा किया है रईस कोम अब्बासिया दाऊदपुत्रा कहलाते है सलामी की १७ तोपें सर होती है भावलपुर के जनूब व मशरक में जैसलमेर और बीकानेर का रेगिस्तानी मुल्क है और शिमाल व मगरब मे सरकारी इलाका है चुंकि पैगम्बर साहिब के चचा हजरत अब्बास से कोम अब्बासी सुलतान रूम के खानदान से ८५ पुश्त बाद कुरेशी दाऊद खां मुल्क सिंध मोजे लखी मे आर है शिकार की जगह शहर शिकारपुर बसा या दाऊद पोते २ व्ह जार से उपर है १ केहर के १२ बेटों के केहराती २ आर्फ के अर्फानी ३ ओज के पीर प्रजानी ५ आबे पाश वानीया के अरबांसी केहर १४० मनुष्यों से खडीन भलारी जो देरावर से उत्तर ३२ कोस है जा बैठे बेटे नूर का गा॰ नूरवाला बसा ह जांअवकोट में हाकिम रहता है देरावर रावलजी से आधा २ रखने का शर्त पर बहुत सा मुल्क लेने बाद रावलजी कहा जैसलमेर ले दो तो यह सब तुम्हारा वर्ना निकल जाओ जिस पर फतेखांने देरावर दी लेकर बाप के कहने से ओज के बेटे फतेखां को मारूफखा किल्ले शिकारपुर मे कंधार के बादशाह का साला नवाब सैफुल्लाखां दुरानी जो इनकी वरि सहित सोया था मारकर कैद से निकाल लाया था गादी बैठाय मालिक मुल्क करके आप सलामी हुये फिर गढ व शहर बनाये सो लिखे है और छोटे २ गांव तो सदहा बसाये इनकी बहादुरी व वफादारीपने केर तान कहां तक लिखे जावे गादी धर नवाब याने खां साहिब के नाम लिखे गये है १ फतेखां २ सादिक मुहम्मद ३ भावलखां ने देरावर से ३० ई॰ ३२ कोस

कनारे दरया के अन्दर आवल पुर बसाया राजधानी करी परन्तु गादी बैठने का दस्तूर देरावर मे ही होता है ७ मुबारकखां ५ व्हावलखां मुल्कगीर ने मुल्क बधाया ६ सादक मुहम्मद ७ व्हावलखां सालिस विलखैर वडे ही अकलवंद ये दूर अंदेशी से सरकार दौलतमदार अंग्रेजी की मदद हाजरी याने मुलतान व गिरहकी लडाइयों मे ७ सो ज्वाद पोते मारे गये सरकार आली ने मुल्क दरिया पार को जो सिख रनजीत सिंह ने ले लिया था दिया सो पीछा देकर रियासत व अख्तियार रहने याने सरकार दस्त अंदाजी न करने व मदद देने वगैरह कलमा लिखवाली ८ फतेखां फिर ५ म्हीने पासवानी याहाजीखांने भी राज्य किया था. २ व्हावलखां १० सादकमुहम्मद ७ वर्ष के सं० १९२२ मे राज्य बैठे जब दरख्वास्त पर सरकार से मीन्चन साहिब मुखतार होकर आबादी वतरणी वगैरह से आमदनी बहुत बधाइ फिर इनको अखतियार मिला बाद पुस्तों का खजाना निकाल कर मोजां करते हैं. खुदा खैर करे ०॥

नकशह गढ व शहरोंका जो इलाके जात में नामी हैं

केहरके मारूफके २२ ही बेटे नकार बंधोके					नम्बर	नाम किला	कोस फासला	किसने बनाया	अब किस के पास है
नम्बर	नाम किला	कोस फासला	किसने बनाया	अब किस के पास है					
					५	हासलगढ	५० पू.	हासलखां	हासलखां
					६	मुबारकगढ	६० पू.	मुबारकखां	खा॰
१	खैरपुर	२५ पू.	खैरमुहम्मद	दुरमुहम्मद	७	शहदपुरा	२५ पू.	शहमुहम्मद	खा॰
२	मीरगढ	५५ अ	मीरखां	खालसे	८	गढीअखतियारखां	६६ पू.	अखतियारखां	अल्लावखश
३	मौजगढ	२५ द	मोजदीन	खा॰	९	अल्लाबाद	५० पू.	अल्लादाद	नजरमुहम्मद
४	दुरपुर	१६ पू.	दुरमुहम्मद	खा॰					

१०	कायमपुर	२५ पू	कायमखां	खा॰	५	रूकणपुर	७२ पू	से
११	सबजल्दा कोट	१०० प	सबजलखां	खा॰	६	थानगढ	५० ई	से
					७	खेरपुरटोहरी	३२ वा	खेरमुहम्मद
१२	खानगढ	२८ ई	खानमुहम्मद	खा॰		मुगलं बने हुये		
१३	लतीफगढ	२ ई	लतीफखां		१	बीभरपोट	६० ई	
१४	गोरदाशा	८५ पू	नवलअली	खा॰	२	भरोट	२५ अ	
१५	शादरफरीद	६० पू	फरीदखां	स्माइलखां	३	न्हवर	७२ नै	
१६	ददुहा कोट	१५ वा	देदुखां	अलीदार	४	जजा	४६ प	
१७	रव्वनदीगोठ	१६ पू	रव्वनखां	खा॰		किल्ला देहनूर उर्फ उच्च मंदो पीर गिल्यानी व वुषारी है ॥ केदरसे ५ पुस्त हालाके हालाजीयोंने		
१८	श्रेहाडा	२५ ई	श्रेहाडखां	खा॰				
१९	अहमदपुर	२० पू	अहमदखां	खा॰				
२०	सेकादरेहा	८२ प	कादरेखां	खा॰	१	नवसारा	८० प	नवलअली
२१	स्माबेदाकोट	४८ प	स्माथेखां	खा॰	२	दीनगढ	७२ नै	बुदेव्हादुर खां	राज्यजैसलमेर
२२	ताजगढ	६८ प	ताजमुहम्मद	सरफराज खां	३	ताजगढ	७० प	ताजमुहम्मद	खुदा बखश
	प्रजाणीगदी घरोंने ॥				४	वदली	८६ प	
१	फतैगढ	१०० प	फतैखा नं १		५	संजरपुर	से	संजरखां
२	मुबारकपुर	५८ अ	मुबारकखां नं ५		६	मुहम्मदपुर	से	मुहम्मदखां
३	खानपुर	४० प	व्हावलखां नं ५		७	जाफरपुर	से	जाफरखां
४	देरा व्हावल खां	२२ नै	व्हावलखां नं		८	कबूलवाला बाहूर	८० प	कबूलखां	जालमुहम्मद कावेदा

(जमीमा) नं॰ ७ दुकान —

राज की दुकान जो नुष्पका कोठार सं ५ से हुवा श्री गिरधारीजी के मंदिर व रसोडा

व घोड़ा हाथीयों का रातब रंज मसाला व पेटियो सरोपाव वगैरह जिन्स का-
खर्च व दूसरे मन्दरों सरदारों व धर्मादे वगैरः के रुज़गार का हिसाब साहू
कारी रीत ज्यों तो रक्खा ही था सं० ४१ से हरएक हिसाब समभने की सु
गम तरकीब की गई है- और कामदार केई पलटे मगर बधत व उडन्ती का
हिसाब किसीने नहीं दिया साल भर में २४ से ३० हज़ार का खर्च है- क़-
हत साली व बीका सरदारों के रहने से ४० के ऊपर रहा- ॥

ज़मीमा नं० ८ कोठार अन्नपूर्णा

जोराज का अव्वल खर्च का क़दीम स्थान है- खास तबेला व बारगीर वगैरह
घोड़ों का दाना व तेल का खर्च व ज़नाना सरदार दराजवीयों व हज़ूरियों का रुज़
गार देनगी व कई चाकरों व धर्मादे का पेटिया व सिपाहियों व कारीगर हर क़ौम-
का व तबायफ़ वगैरे लोगों को वलांकि हिसाब का दस्तूर अद्भुत है- सो मुफ़स्सिल-
लिखने में जुदी किताब चाहिये- ज्यों बहुत लोगों की नगदी तनख्वाह होगई व जिस
को नहीं हुई है- सो भी होने की सलाह है- जिससे पुराना दस्तूर लिखना ज़रूर भी-
नहीं रहा- तया उड़न्ती नहीं निकलने के कारण बिजेसिंह पूनमचन्द वगैरे-कामदार व-
दरोगा याने ४ । ५ आदमी शामिल होकर कोठार खोलते हैं यहां कोई आकर पल्ला बि
छावे सो निरास नहीं जाता- और तहसील का महकमा भी इसके शामूल है- सं० ४१ से हर
पष वाडे-हिसाब समभने की ठीक तजवीज़ रक्खी गई है- इस काम पर बहुत वर्षों से-
कामदार मुख़्तार व्यास पोलजी व दरोगा हज़ूरी साबजी है- और जिन्स खरीद फ़रो
ख़्त पर मोकाती बलदेवदास जिसके ताल के तलाव व साठियों वगैरे का काम भी है-॥

ज़मीमा नं० ९ तजवीज़

चौपाया-देवा की घोड़ियों ऊंट सांडों का बरग व गायों भैंसियों की थाटों जो
लाखों रुपये का माल है- इसका जुदा महकमा होकर वाजिब तजवीज़ से कारखाई

कारकायदा लिखे मूजब होने की जवाके भी श्रीजी साहब मंजूर फ़रमावेंगे तो बहुत मा
लव धने व राज का ठाठ रूपक दीखने व बहुत से मुलाज़म परवरी पाने व कई काम आ
सानी से होकर आराम रहने के अलावा व घती खर्च निकलकर २० पचीस हज़ार रुप्ये
साल का फ़ायदा होहीगा -
रास्ता काम से अलाहदा फन्ड की आमदनी में खास शहर व जोधपुर बालोतरा के रास्तों
ई० हाज़ा में बंगला व पोह धर्मसाला व दूसरे रास्तों सिंध वग़ैरे के मेंकुवा वग़ैरा जो
मुनासिब हो - बनाया जावेगा - और हर उपाव से लोगों के कराने उपरांत राज में रु
१० हज़ार साल का देस में जाबजा कुवा बनाने वग़ैरे आराम व फ़ायदे के काम में लगा-
ने की तजवीज़ है - सो ज़माना अच्छा आने से होगी - ॥

ज़मीमा नं० १० महकमा गिराई

इस काम पर सं० २१ से कभी २ महता फूलचंद जी व अखैराज जी वग़ैरह दौरा-
के तौर पर जाते थे - सो दीवानी फ़ौजदारी का काम करने से प्र० के हाकमों के हुकम से -
ज़ोफ़ आने के बायस आपस की तकरार वग़ैरा कभायत रहती थी सं० ७१ से यह तज
वीज़ ठहराई कि इलाके जात में ४ गाई की जावें जिसकी रिपोर्ट तो महकमे सदर में -
अदालत में होवे - और मुक़दमात दीवानी फ़ौजदारी का हर प्र० के हाकम को शामिल
रखकर किया करें व पैदा हो सो भी प्र० का हाकिम लेवे - और इनका खर्च कामदार की
तनख्वाह रुपै भत्ता व जो सवार वग़ैरह का मुक़र्रर किया जावेगा हर महीने दौरा आने
पर खज़ाने खास या हकूमत वग़ैरे से दिला या जावेगा जुने के कोद लाठी से उत्तर देस
में महता अखैराज जी को रखकर - लाठी सूं दक्षिण प्र० लखात क जहां अकसर चोरि
यों का गुमान रहता है - गिराई का जुदा महकमा किया - और महा जलार पांचा सम
साहा गढ घोटडु - का इलाका मूलचन्द जी के तालुक रखा - तथा कोय खारा के मोहन
चंद मं. मैं कायम रहा था - और इसमें व भी तजवीज़ थी कि गिराई वाले तालुके का काम

के अलावा हरएकगांवका जुगराफियाववर्तमानहालातलिख भेजे- और लोगों के आराम व फायदायाने मुल्क में आबादी आमदनी बधनेकी बाबत जो ख्याल दरपेश हुने यादिलसे सम भें सो मुफसिल लिखकर कौन्सिलमे रिपोर्ट कियाकरे तो मुनासिब तजवीज़ होतीरहेगी- पर० कहत साली वकामदारों के आपुसकारएक वगैरह कई सबब ऐसे हुये कि मन्शा मूजब यह काम भी नहीं चला सो भी अच्छे होनेके समय मे होवेहींगा-॥

ज़मीमा नं० ११

सुनअह्लके इतिहास पूगलरावरानगदे व केलणजी व चाचाजी वगैरह

जोतवारिखके सफे १११ पर अलुकाहै

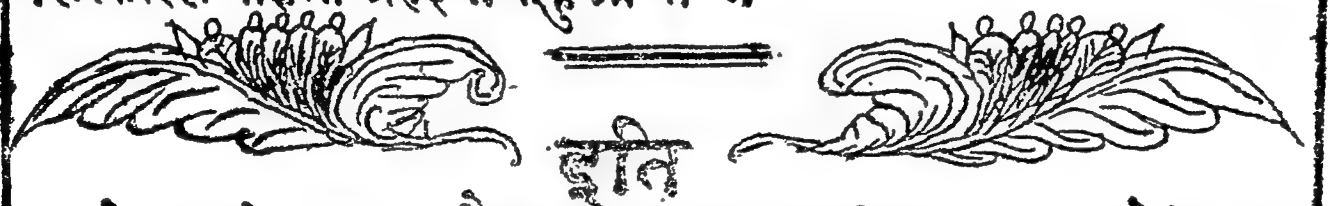
चाचाजीके वंसके शेखाजीराव भीकनीजी कीकृपासे नामीग्रामी हुये-कल वायों से वैर लेने आदि बहुत प्रवाडा मेंवीरता देखाय अपनी मृतुका पूछी जबकनीजीने कहा कि वैर की छाया आककी खट पीपका पारा भूरोमे: कादही ख्या घेटा कापल एक जगह मिलेगा तब मरेगा सो ऐसा मेल हुआ तो आपही कहा कि ऐसे भाता आया जब से मृतुके मौका परये आवारा है तथा किशनावत पारवाडमेंना मीहरा यह मारह्या नपत सिंघजी गोपालसिंहोत सपूत हैं- सं० मेंजेशलमेर भी आयेथ-॥

शेखाजी के पोता मेलउत्यायोजी भी सूरवीर हुये-गढ़ रामके नाम से बसाया खनाया वबादशाहीखजाना मुलतानसे लूटलाया-जब फौज आई तो साका करके कुम्भेतसिंह वासनपुर-॥ चहुजेकर्न अमरा साईदास गोपालदास चन्द्रसेन-जगतसिंह रेवीदास परसासिंह इन्द्रसिंह खेतसी भीमसिंह हुंडवतसिंह कुंवर्ने नी रावतजैमलसरलो भाय रह वंकानेरहे- ॥तीजे धनराज खेतसी-सेरसिंह-राघोदास-माधोदास अखै लाल-विकमतसिंह-किर्नसिंह-भानसिंह-भामजा-

मदूजी जरामाल· मुकुनजी· कुं० जोरजी· ठा० बीठनोक भी अब इ० बीकानेर ॥

जमीमा नं० १२ रियासत खैरपुर सिंध

यह रियासत ६१५९ मील मुरब्बा और सन १८९१ ई० की मरदुमशुमारी के मुआफिक १२९१८६० आदमीयों की आबादी· आमदनी सालाना ७१६०००₹ की है· खिराज माफ है· मगर ज़रूरत के वक्त फौज की मदद देने का इकरार है रईस यहां का **मीर अली मुरादखां** साहब है· जो बिलोची पठान है· सन १८३८ ई० में सरकार से पहिला अहदनामा हुआ था· ॥



इति

कोटान कोट धन्यवाद है श्री सच्चिदानन्द जगदीश्वर महाराज को जिनकी कृपासे आज दिन जबकि ३० दिसम्बर सन १८९२ मुताबिक ११ रबीउलआखर सन १३१० हिजरी व अगहन सुदी १२ सं० १९५० विक्रमी व फ़सली अगहन की २७ सन १३०१ है· यह ग्रंथ समापत हुआ· पाठक विचार कर सक्ते हैं कि जैसलमेर जैसे उजड देस का इतिहास लिखना श्री महताजी नथमलजी ही ऐसे पुर्ष का काम था इन के शीश्रम से जाना गया कि हमारे सूबे के पिछले रज़ीडन्ट करनल सर ट्रेवर साहब बहादुर ने इन की सच्ची तारीफ़ की थी· हम भी महताजी साहब को धन्यवाद देते हैं· कि इनकी महनत का फल परापत हुआ· ॥

خاتمة الطبع

ہزار ہزار شکر ہی پروردگار عالم کا جسکی عنایت سی آج ۳۰ دسمبر ۱۸۹۲ع کو یہہ کتاب ختم ہوئی یہہ مہتہ صاحب جی ہی ایسے عاقل اور محقق شخص کا کام تہا کہ جیسلمیر ایسے اوجاڑ ملک کی تواریخ ہندی مین تیار کی یہہ بہی مہتہ صاحب موصوف کو مبارکباد دیتے ہین - الہ العالمین اونکو خوش رکہی - کہ اونکی یہہ یادگار ہزاروں برس تک دنیا مین بنی رہی

غرض نقشیست کز ما یاد ماند ✤ کہ ہستی را نمی بینیم بقائے ✤

جریدہ خاکسار محمد مراد علی ہوشیار
مالک مطبع راجپوتانہ گزٹ واقع راجستان اجمیر

लितस्मः तवारीख जैसलमेर नम्बर (१)

अब मैं अपार अफसोस के साथ थोड़ा सा पिछला हाल लिखता हूं कि सं० ४७ फागुन को श्रीजी साहिब वैकुंठ पधारे तो मानु जीव जड व चैतन को ऐसा गम हुआ कि कलम को लिखने की ताकत नहीं गोया राज का जहाज ही शोक समुद्र में डूब गया फिर राजा श्रीखुसालसिंहजी के कुंवर साम सिंहजी को जो ३ वर्ष के थे राज बैठाकर बमूजिब वसीअत के नाम शालिवाहनजी रक्खा और इस खियाल से सबने दिल को तसल्ली व सबर दिया कि इस जमाने में आला सरकार अंग्रेज बहादुर मालिक मुल्क हाकिम यहां रियास्तों के खास दोस्त हैं - जहां नाबालगी होती है तो अपनी निगरानी से ऐसा तजवीज फरमाते हैं कि रियासत खातिरख्वाह तरक्की पर आने के सिवाय मातहत लोग जो रियासत में हैं अपने हक़ बमूजिब हक वइनसाफ पाने से आसूदे होकर व आराम रहते हैं और यहां तो आगे व मे हजूर श्रीगजसिंहजी साहिब वैकुंठ पधारे व श्रीरणजीतसिंहजी को जो २॥ वर्ष के थे गोदनासे बुलाय राज बैठाये जब माजी श्री राणावतजी साहबा ने हाथ ईश्वर अन्देशी से अपना काम ईश्वर भजन को रख कर राजरीत वठाठ बदस्तूर रखने के लिये मुखतार राज श्री केसरी सिंहजी के रहने का दरख्वास्त सरकार में की थी सो मनजूर होकर सरकार की मदद व महरबानी से राज बना रहा। फिर सं० २१ में श्री वेरीसालजी साहिब राज विराजे जब बाजे लोगों ने अपना मतलब निकालने को माजी श्री कीजी को मुखतारी का धोखा देकर ठाकुर केसरी सिंहजी की झूठी शिकायतें व सब को बदनाम करा भारी बखेड़ा कराया था परन्तु जनाब कर्नल साहिब कर्नल इडन साहिब बहादुर जी सदर से मंजूरी मंगा कर यहां तशरीफ लाये और नाहक की सब शिकायतों के वहम हटा ठाकुर साहिब को कुल मुखतार रख कर भट्टी नथमलजी को राज की सच्ची खैरख्वाह [illegible] ध्यान नहीं [illegible]

अपनी रजामन्दी की सनद लिखवादी वदीवानरखा था सोअब नोकर्नेल पौलटसा हिब बहादुरजो बहुतवर्षों से रजीडन्ट साहिबरियास्तों के रिवाज सेवाकिफ मुनसिफ मिजाजहैं सो जरूर वैसही करावेंगे १६ मार्च सं ४९ कोआयेउसवक्त तो कुवर शिवदानसिंहजी को लेजाने या कोईऔर खयालहोगा गोलमोल कारखाईरख कर फरमाया था कि ताहुक्मसानी अबहै जियों ही रहेइसमें बुंजाना था कि बिल्फेल बखेडा होनेके गुमान सेऐसारखा है परन्तु सदरसे मनजूरी मंगाकर सरकारकी सुराई व अपनी नेकनामी रखने को साबक मूजिब तजवीजकरावें हीगे - फिरथोड़े ही दिनोंबाद कि अभी सोगहीन्हीं वदला था मांजी साहिबा नेवल्मा अपनी सुखतारीके धोखा खाकर दीवानजगजीवनजीको पैरमें सोनाइनायत करके आबूजी भेजे उन्होंनेअपनी सुखतारीकाबन्दोबस्तकरके सरदारों को तर्नष्वान देनेका हुक्म भेजा तव भी यहउमेदरही कि अभी सदरसे हुक्मआनेकान्हीं फरमायाहैसो जबहमारेरजीडन्टसाहिब कर्लांसाहिबसे पकी सलाहकरके आवेंगे वेशकसब तरहका लिहाजहर एकके वाजिब हक वरियासतके कदीमरिवाजका फरमावेंहीगे सबखामोशरहे - यही खयालखामहोकर विजारत व अदालत से मान कारखाइ बिल्काकायदे नाजेबा बेजाइन्साफके खिलाफ होने लगी औरजरजीडन्ट साहिबबहादुरजी भी स० ४९ के पहोसुदि २ को फिरतसरीफलाये जब साहिबमौसूफकी मुनसफीके भरोसे पर राजवीआदि सबसरदारवसाहूकार बेपारी वगैरह सदहालोग अपनावाजिबहक बइन्साफ पानेके लिये नालसी होकर दीवानजी कीनाफहमी वहाकिम अदालतकीबेबन्दोबस्ती वगैरइन्साफीके शाकी होने पर वाजिबतजवीजकीउमेद हुई थी उसी रातको दीवानजीने साहबजीकोदासमे लेकर कहा कि ये सबलोग नालीज आपा भूलहैं सिर्फ सिखावेसे शाकी हुयेबाकीकुछ नहीं कर सके ज्यों ही राजवी वसरदारों को धमका

करदबालिया और जैसे चाहा साहिबसे कराया चुनाचे राज के खैरख्वाहों की सलाहसे नथमलजी ने भी जो काम छोड़ने बाद किसी के आकी सिफारशी न्हीहै अपनी शिकायत की तहकीकात कराने और हिसाब वरोजगार की बाबत नबूजी साथ के फित भेजी सो लेकर १० बजे मिलने का हुक्म दिया था फिर दीवानजी के झूठे कहनेसे कहलाया कि आपलोगों से फितनह कराते हैं और २० वर्ष से दफतर साफ न्हीं मे नाराज हूं मिलना न्हीं चाहता - नबूजी ने हरचंद कहा की यही लिखा है कि तहकीकात हो कर असल भेद और सच झूठ तो समझिये कि सबब क्या है परन्तु कुछ भी न्ही बोले जिसपर फिर कैफियत भेजी सो न्हीं ली जब डाक में चिट्ठी भेजी तो भी खयाल न्हीं किया सो बड़ी गल्ती करी कियों कि नाराजगी का जो सबब फरमाया सो महज गलत और खुदगर्जियों की कोताअंदेशी का जाल है इनसे मिलने में तो दीवानजी को भी काम में आसानी से राज्य का बहुतही फायदा होना कियों कि ५०वर्ष सच्ची खैरख्वाही से नोकरी दीवानी कर के अपनी खुशी से काम छोड़ा है सो सबके हक में अच्छे होने की सलाह देते - मगर मालूम हुआ कि साहिब मोसूफ को राज्य के फायदे व अपनी मुनसफी के गर्ज न्हीं सिर्फ दीवानजी का कहना ···रखना था वरनह इतना तो जरूरही था कि श्रीहजूर साहिब पास या खुशहालसिंहजी का रखकर डोढी पर लायक शखस को मुकर फरमाते व सब लोगों को हिकमतअमली से हीतसल्ली वरखातिर तो करते सो ही न्हीं किया जो २ फरियादी थे इनसा फन पाकर सबमहरूम रहे सो सारी उमर रोते ही रहेंगे कियों कि किसी ही तरहसे ऐसी ताकत कोई नहीं रखता कि जो श्री बड़े लाटसाहिबजी तक तो क्या बड़े साहिबजी तक ही पहुंच कर कामयाब हो सके सबलोग यही समझते हैं कि कलां साहिबजी भी हिकमतअमली से अर्जटों के कहने को ही सही रखते हैं किसी फरयादी ने दाद नहीं पाई कियों खराब हुये आगे जैसी न्यतहाकमों की न्हीं है - बार २ यह कहते हैं कि यह कोताहअंदेशी व हिमात

हार कौ बात दैलिखनातो चाहये फिर चाहे सो हो मगर बहुत लोग ना उमेद हो कर कहते हैं कि कुछ न्हीं होगा होनहार तो देखो कि मुनशी निरंजन कौनका पडना वनथम लजी जैसे सब तरह लायक सच्चे सामध्यरमी का काम छोडना और जो वैरी सालजी साहिब सवके सच्चे माबापका धाम पधारना व दोनो माजी साहिब दानुजी खुसाजी की अकल पर चलने से खैरख्वाहों को लायक न समझकर चोरवे बाजों पर एतबार रखने से राज्य काज का अधिकार हाथ से खोना व शिवदानसिंहजी जो बोल चाल मे लायक राजवी थे निकालना और कछीजी की लाफ हम कारखाई जो कच्चे सलाह कारों के बाअस होती है व पंजाबी की गैरहनसाफी साहिबजी को बखूबी मालूम होने परही इन को ही सुखतार रखना दूसरे किसी ही की वाजिब अर्ज सुन कर इनसाफ न करना देश वशियों में किसी का ऐतबार न्हीं होना वगैरः २ खराबी ही खराबी का बाइस होगया है इसके सिवाय खुदा का कहर है कि इस ११ महीने में शहर वदेश में २ हजार आदमी तो मर गये व बहुत से देहाती लोग इलाके सिंधसे जा रहे हैं सो तो फिर सुख होने पर शायद के पीछे भी आवेंगे मगर शहर के लोग सावा बीतने बाद निकलना कहते हैं सो खुदा ऐसा न करे वरनः यह लोग पीछे नहीं आवेंगे - महा शोक की बात है इस रियासत में श्री कृष्णचन्द्र भगवान औतार से आदि लेकर देवराजसिंहसे वैरीसालजी पर्यन्त वडे २ नामी ग्रामी राजा हुये सबने राज का बोझ व लाज गाल देशियों पर रखने से अपने मुल्क मे आपही हुकमरान रहे - अब खोसा खी मिलीजो लूणकरनजी के हाल में लिखी है कि बिलान्दु चिरा के जादवों से जेसलमेर जावेगा - इस का बदनामी का टीका कर्नैल पौल्टर साहिबजी ने लगाया कि आजी उनका कहना न्हीं मानने से बहुत कहीं रहे थे सो सरहद के निकालने में बहुत सा नुकसान देने पर ही ध्यान लाकर श्रीजी के वैकुंठ पधारने बाद उनकी वसीअत नसीहत का कुछ भी लिहाज न करके साहिबजी का मनशा था ज्यों किया वरनः नाबालगी

तो श्री राणा जी नसिंहजी व बैरीसालजी साहिब राज बिराजे जब ही था बल्कि पिछले वक्त तो आपस की फूट का भी भारी रोल था तो भी नेक नाम जनाब कर्नल साहिब ने बसलाह मदद तानथमलजी दूरअन्देशी से कि भादी बंस में १ नाम की रियासत भी सिर्फ यही है दस्तअन्दाजी न करके राजा श्री केसरी सिंह जी को जिम्मेवार रखने से यहां के सब लोग जो देश बिदेश में रहते हैं दुआ यखैरसे साहिब ममदूह को याद कर रहे हैं और अब जो रियासत की तरक्की के लिये निगरानी रखनी थी तो भी नाम का मुखतारी श्री मानसिंजी या खुशालसिंहजी का रख कर बेजा खर्च घटाना वाजिब पैसे बढ़ाना करजा उतारना चोरी धाड़े आदि सब तरह से मुल्क का बन्दोबस्त रखना वगैरह २ जो २ बातें जरूर व फर्ज हैं हिदायत करके साहिब रजीडंट बहादुर जी को रपोर्ट देने और सलाह व मदद लेकर देसी ढंग कायदे से कार्रवाई करने का हुक्म लिखा देते तो दोनों बातें रह सक्ती थी और अब तो रियासत सरसबज हो कर आमदनी दुचन्द सेचन्द होनी सहज है कियों कि राजधिराज की मरजी से बाज्जाई खर्च व नुकसान का काम होता था सो न्हीं रह कर जो ही तजवीज फायदे व सुधार का रजीडन्ट साहिब की मनशा मूजिब की जावे हो सक्ती है सो अगर इनसे ऐसा न्हीं होता तो साहिब मौसूफ को अखतियार ही था कि दूसरा मुखतार कर देते तथा सब जान्ते हैं कि नथमलजी ने राज व रयत के फायदे व आराम की जो २ बातें सोची व लिखी है उस मूजिब कारवाई होती या अब इस तफसील से होवे तो सदर में हाजरी की रिपोर्ट का मौका जल्दी हासिल हो सक्ता है मगर बडा ही अ

फ सोस है कि साहिब मौसूफ ने वह कारिवाइ देखी जो सुनी बल्कि खुद
गर्जियों के धोखे में आकर दरयाफ्त न्हीं फरमाया सो तो उमेद है कि हा
कि मआला व दूसरा रजीडन्ट साहिब जो इस रियासत का अच्छा होना चा
हेंगे तो पूछेहींगे परन्तु तअज्जुब है कि पौलट साहिब बहादुरजीं ने रिया
सतजोधपुर व सिरोही को देशके रिवाज का लिहाज रख कर बहुत तरह
परलाने मे सरदार मुसाहिब वगैरह किसी ही का हतक व हजे न्हीं किया यां
बरखिलाफ कर के कियों जुल्मी कहलाये और सरकार से सुपरिन्डनटी
ही करनी चाही तो किसी युरोपियन साहिब को मुखतार रखना चाहिये
ताकि अदावत से किसी का बुरा नहो कर सब लोग अपना वाजिब हक
व इन्साफ पाने से हत्तिउल व सःहर तरह हाजरी दिया वें कि जिसमें रा
ज व लोगों के फायदे का काम आसानी से होता रहे ज्याद: क्या लिखा
जावे - भावी जोग भया सो देखा - होगा सो देखेंगे - ॥ परन्तु बिलफैल
अच्छे होने की कोई सूरत नजर में न्हीं आती कारण कि यहां के आला व अ
दना मान आदमी आपा भूल होगये कि देसी जात जो ४० पीडी से हक
दारी का घमंड रखते थे किसी लायक न्हीं रहने का खयाल ही न हो कर आ
पस के वसवको धवइ रखा में यहां तक भर रहे है कि एक दूसरे के जीव
जीवाइ जीवका व इज्जतजाने में खुश हो कर हत्तुलवसा गुमाने की को
शिश में कोताही न्हीं करते यह न्हीं समझते कि इस निर्धन देश मेंजो
आगे ऐसी अकिलवरी होती तो इतनी पुशतों तक बडी नामवरी के सा
थ कियों कर निबाह होता और अकिलव नीयत का फल परमेश्वर देवे
ही है कि इसदो वर्ष में स्वपना की माया ज्युं क्याथा और क्या होगया जिस

को अच्छी तरसे देखने पर भी किसी को किसी ही तरह से कुछ भी खयाल नहीं सिर्फ अपने पेट का फिकर धर्म अधर्म से रख कर वा हिया त गल मारने व हरएक की गिल्ला करने में जैसे हरी भक्त भजन करने में संतोश व आलस न हीं करते ज्युं होरहे हैं और यह भी नीत धर्म का कौल है कि **दोहा** कपटी कृत घन अधर्मी । मूरख हीन बढी नार । बाल निबल अनीत पति । सुरपु र होत उजार ॥ १ ऐसे होने से उजडने में आश्चर्य क्या है - बडे हजूर श्रीवै रीशाल जी साहिब को अपने बुजुर्गों की रियासत रयत वरीत को निभाने व खास कर इस दूरअंदेशी से कि यहां के लोग देशावरों से धन्य कमाय यहां ला कर खर्च करते हैं इनकी हर तरह से इज्जत व खातर रखने से ही जर हैंगे इसलिये कार मुखतार देशी ही जरखना मुनासब जाना चुनांचे **नथम लजी** के काम छोडने बाद गिरधारीलाल जी व नथमल जी की सिफार शसे लायक बिदेशी जैसा जान कर **कछीजी** को बुलाया था कि सब के वाजिब हक व कदर वगैरह इनसा फका लिहाज रखेंगे इन्होंने कच्छेरा ला हिगीरों की अकिल पर चल कर श्रीजी साहिबों की दूरअन्देशी और र न शाका कुछ भी खयाल न्हीं किया और नाजेबा कारखाई जो इस देश के ढंगसे बिरुध है करने से मात्र लोग नाउमेद हो कर हद से परेशान हो गये जिससे तरक्की व सुधारा होना तो दरकनार रहा काम का आराम व यस भी हरगिज न्हीं रहेगा सो जो नेकनामी व अपनी बात का खयाल क रेंगे तो बेशक इसती फा देवेंगे वरनः दिल में पशेमान हो कर बहुत पछ तावेंहींगे कियों कि जैसलमेर को **सिंधों की** सुल्लाक तो आगे ही कह ते थे इस वक्त में तो यहां के लोग विधाता बल कि परमेश्वर को ही कुछ

नहीं समझते हैं इस हालत में कच्चे सलाहकारों की अकिल पर चल
ने से अच्छे बन्दोबस्त होने की उमेद कैसे हो सक्ती है बस खुदाही हाफि
ज है और जनाब कर्नल साहिब बहादुर जी नौरजीडन्ट साहिब के
भरोसे पर हैं और रजीडन्ट पौलट साहिब जी किया सो सबने देख लि
या सिर्फ १ हुक्म वाजिब दिया था जिसकी भी तामील न्हीं हुई अब
देखिये नये रजीडन्ट साहिब बहादुर जी क्या मुनासिब जान कर तज
वीज करेंगे . ॥

बिनयपत्र अज़तरफ़

खाकसार मुहम्मद मुराद अली होशियार मुहतमम राजपूताना गज़ट अजमेर . चुंकि कर्नैल
प्र.सी.डबल्यु . जनाब पौवलट साहिब बहादुर रजीडन्ट गरबी राजिस्थान की सलाह व महा
राजाधिराज महारावल श्री बैरीसालजी साहबों की आज्ञा अनुसार महता नथमलजी दी
वान श्री दरबार जैसलमेर ने ५ वर्ष पर्यंत श्रम करके से वग लखमीचंदनी ऐ यह किताब तयार करा कर
मेरे पास छपवाई है . इस १ जिल्द में ३ भाग तवारीख महाराजगान रियासत मौं सूफ व जगराफिया
मुल्क मांड ३ हिस्से में रियासत हाय राजपूताने की तवारीख के नाम वगैरह जो २ हालात देखे नजर में गुज
रेंगे सो मालूम होगे . अगरचे तालइल्लमी के बायस तहरीर वगैरह कायदे से न्हीं मगर मिश्रत भा
षा सबके समझने को रखी है और यह किताब इस देश के लिये कामआमद याने बहुत ही वाकफी
का यादगार जानकर पसंद फरमावेंगे और नुक्स हो या कमबेश करना वाजिब हो सो बराह
कदरदानी व मिहरबानी से लिखावेंगे ताकि दोबारह छापने में ठीक हो जावे ऐसी आशा है
सं० १९४८ कामिति मः मुराद अली

التماس

یہ کتاب حسب الحکم سرکار حضور مہاراول بیری سال جی صاحب بہادر سورگ باشی سابق والی جیسلمیر عہد
مہتہ نتھمل جی صاحب بہادر دیوان ریاست ممدوحہ نے بڑی جانفشانی و سرکاری کاغذات وغیرہ کے حوالہ سے سیوگ
جی سے پانچ برس کی محنت میں تیار کرا کر طبع کرائی ہے اول حصہ میں والیان جیسلمیر کی تواریخ (۲) جغرافیہ ملک ماند
(۳) تمام خود مختار ریاستہائے راجپوتانہ کی تواریخ مع حالات اجمیر اور اکثر روسا و شرفا ہندوستان کے حالات ضروری
نقشہ درج ہیں نسخ تو یہ ہے کہ ایسی مبسوط کتاب آجتک ہندی میں تیار نہیں ہوئی امید کہ ناظرین کوئی غلطی پائیں تو
عنایت اطلاع بخشیں تاکہ دوبارہ طبع ہونے میں صحت ہو سکے - خاکسار محمد مراد علی ہوشیار مالک و مہتمم مطبع چراغ راجستان و راجپوتانہ گزٹ اجمیر المرقوم

Damodar Lal [illegible]